Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

विश्वासघात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
167984

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वासघात

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की प्रतिनिधि रचनाएं

श्री गुरुदत्त की सशक्त लेखनी से लिखे 200 के लगभग अनुपम उपन्यासों में से चुने हुए उपन्यास दस खण्डों में उपलब्ध -

<u>*खण्ड 1*</u> - मेघवाहन, सागर तरंग, विक्रमादित्य साहसांक (ऐतिहासिक उपन्यास)

<u>*खण्ड 2*</u> - सहस्त्रबाहू, गगन के पार, अन्तरिक्ष में (विज्ञानिक उपन्यास)

<u>*खण्ड 3*</u> - कला, कामना, अनदेखे बन्धन (सामाजिक उपन्यास)

<u>*खण्ड 4*</u> - एक और अनेक, मानव (भावनाप्रधान सामाजिक उपन्यास)

<u>*खण्ड 5*</u> - परित्राणाय साधूनाम् (सम्पूर्ण महाभारत कथा उपन्यास रूप में)

<u>*खण्ड 6*</u> - स्वाधीनता के पथ पर, पथिक (राजनीतिक श्रृंखला के प्रथम उपन्यास)

<u>*खण्ड 7*</u> - स्वराज्यदान, दासता के नए रूप (राजनीतिक श्रृंखला की दो कढ़िया)

<u>*खण्ड 8*</u> - देश की हत्या, विश्वासघात (राजनीतिक श्रृंखला के अन्तिम उपन्यास)

<u>*खण्ड 9*</u> - प्रभातवेला, कुमार सम्भव, उमड़ती घटाएं (पौराणिक उपन्यास)

<u>*खण्ड 10*</u> - गंगा की धारा (मुगल काल पर उपन्यास)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वासघात

081
167984

गुरुदत्त

Central Library
167984
Gurukula Kangri ... Haridwar

हिन्दी साहित्य सदन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

© सुरक्षित

R
089.9143
GUR-V

मूल्य : ₹ 150.00

प्रकाशक : **हिन्दी साहित्य सदन**
2 बी. डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005
फोन : 9213527666, 7065618655
email : indiabooks@rediffmail.com
hindisahityasadan@gmail.com
website : hindisahityasadan.com

संस्करण : **2018**

मुद्रक : नवशक्ति प्रिंटर्स, दिल्ली-32

VISHWASGHAAT (Based on India's Partition)
a novel by Guru Dutt

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

उपन्यासकार गुरुदत्त का जन्म जिस काल और जिस प्रदेश में हुआ है उस काल में भारत के राजनीतिक क्षितिज पर बहुत कुछ विचित्र घटनाएँ घटित होती रही हैं। गुरुदत्त जी इसके प्रत्यक्षद्रष्टा ही नहीं रहे अपितु यथासमय वे उसमें लिप्त भी रहे हैं। जिन लोगों ने उनके प्रथम दो उपन्यास 'स्वाधीनता के पथ पर' और 'पथिक' को पढ़ने के उपरान्त उसी शृङ्खला के उसके बाद के उपन्यासों को पढ़ा है उनमें अधिकांश ने यह मत व्यक्त किया है कि उपन्यासकार आरम्भ में गांधीवादी था, किन्तु शनैः-शनैः वह गांधीवाद से निराश होकर हिन्दुत्ववादी हो गया है।

जिस प्रकार लेखक का अपना दृष्टिकोण होता है उसी प्रकार पाठक और समीक्षक का भी अपना दृष्टिकोण होता है। पाठक अथवा समीक्षक अपने दृष्टि-कोण से उपन्यासकार की कृतियों की समीक्षा करता है। उसमें कितना यथार्थ होता है, यह विचार करने की बात है। इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि व्यक्ति की विचारधारा का क्रमशः विकास होता रहता है। यदि हमारे उपन्यासकार गुरुदत्त के विचारों में विकास हुआ है तो वह प्रगतिशीलता का ही लक्षण है। किन्तु हम उन पाठकों और समीक्षकों के इस मत से सहमत नहीं कि आरम्भ का गांधीवादी गुरुदत्त कालान्तर में गांधी-विरोधी रचनाएँ लिखने लगा। इस दृष्टि से गुरुदत्त की विचारधारा में कहीं भी परिवर्तन हमें नहीं दिखाई दिया। गांधी के विषय में जो धारणा उपन्यासकार ने अपने प्रारम्भिक उपन्यासों में व्यक्त की है, क्रमशः उसकी पुष्टि ही वह अपने अवान्तरकालीन उपन्यासों में करता रहा है।

जैसा कि हमने कहा है कि गुरुदत्त प्रत्यक्षद्रष्टा रहे हैं। उन्होंने सन् १९२१ के असहयोग आन्दोलन से लेकर सन् १९४८ में महात्मा गांधी की हत्या तक की परिस्थितियों का साक्षात् अध्ययन किया है। उस काल के सभी प्रकार के संघर्षों को न केवल उन्होंने अपनी आँखों से देखा है अपितु अंग्रेजों के दमनचक्र, अत्याचारों और अनीतिपूर्ण आचरण को स्वयं गर्मदल के सदस्य के रूप में अनुभव भी किया है। अतः लेखक ने घटनाओं के तारतम्य का निष्पक्ष चित्रण करते हुए पाठक पर उसके स्वाभाविक प्रभाव तथा अपने मन की प्रतिक्रियाओं का अंकन किया है। 'स्वाधीनता के पथ पर', 'पथिक', स्वराज्यदान', 'दासता के नये रूप', 'विश्वासघात' और 'देश की हत्या' को जो पाठक पढ़ेगा उसको यह सब स्वयं स्पष्ट हो जाएगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त के उपन्यासों को पढ़कर उनका पाठक यह सहज ही अनुमान लगा लेता है कि राजनीति के क्षेत्र में वे राष्ट्रीय विचारधारा के लेखक हैं। सच्चे राष्ट्रवादी की भाँति वे देश के कल्याण की इच्छा और इस मार्ग पर चलते विघ्न-संतोषियों पर रोष व्यक्त करते हैं। लेखक के राष्ट्रीय विचारों को ईर्ष्यावश साम्प्रदायिक कहनेवाले सम्भवतया यह भूल जाते हैं कि उनके किसी भी उपन्यास में कहीं भी किसी सम्प्रदाय विशेष की उन्नति या उत्तमता की चर्चा तथा अन्य सम्प्रदायों का विरोध नहीं किया गया है। हाँ, इसमें कोई सन्देह नहीं कि अपनी कृतियों में वे स्थान-स्थान पर राष्ट्रवादियों के लिए हिन्दुस्तानी अथवा भारतीय अथवा 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग करते हैं। यह सम्भव है कि भारत की तथाकथित धर्मनिरपेक्ष सरकार, विशेषतया कांग्रेसी और कम्युनिस्ट 'हिन्दू' शब्द को इसलिए साम्प्रदायिक मानते हों कि कहीं इससे मुसलमान रुष्ट न हो जाएँ। वास्तव में हमारा लेखक तो हिन्दुत्व और भारतीयता को सदा पर्यायवाची ही मानता आया है।

इसके साथ ही इस उपन्यास में कांग्रेसी नेताओं और कांग्रेस सरकार के कृत्यों पर भी विशेष प्रकाश डाला गया है। यह सब प्रसंगवशात् नहीं अपितु कथानक की माँग को देखकर यह विशद वर्णन स्वाभाविक ही था। इस काल पर जितने भी उपन्यास लिखे गये हैं, लेखक के दृष्टिकोण में अन्तर होने के कारण नेताओं तथा दल की राजनीति पर विभिन्न प्रकार की आलोचना हुई हो किन्तु निष्पक्ष लेखक अथवा उपन्यासकार तथ्यों की अनदेखी नहीं कर सकता। यही गुरुदत्त जी ने अपने इस उपन्यास में किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वासघात

देश में नदी-नाले हैं, पहाड़ तथा झीलें हैं, फूलों से लदी घाटियाँ हैं, ये सब बहुत सुन्दर हैं परन्तु इनसे भी सुन्दर स्थान अन्य देशों में हो सकते हैं।

देश-प्रेम नदी-नालों, पहाड़ तथा झीलों से प्रेम को नहीं कहते, देश-प्रेम देश में बसे लोगों से प्रेम को कहते हैं। देश की बहुसंख्यक समाज का अहित करना, उनकी सभ्यता तथा संस्कृति का विनाश करना देश के साथ द्रोह करना ही होगा।

कांग्रेस को तन-मन-धन से सहायता दी देश की बहुसंख्यक समाज अर्थात् हिन्दू समाज ने परन्तु हिन्दुओं के साथ विश्वासघात करती रही है कांग्रेस।

इसी विश्वासघात की यह कहानी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राक्कथन

यदि कोई हावड़ा के पुल पर खड़े होकर, पुल के नीचे बहते गन्दे जल को देखे और उसमें अनेक प्रकार तथा आकार के जहाज, नौकाओं अथवा बजरों को तैरता देखे तो एक विशेष प्रकार का भाव उसके मन में उत्पन्न होगा। मन पूछेगा कि जिस पानी में अनेक नगरों का मल-मूत्र, अनेक कारखानों का कचरा और नौकाओं के असंख्य यात्रियों की थूक इत्यादि मिली हुई है, क्या यही पतितपावनी गंगा का जल है ?

हरिद्वार तथा उससे भी ऊपर गंगोत्तरी में जो शीतल, स्वच्छ, मधुर और पावन जल है, क्या यह वही है जो इस पुल के नीचे से गंधाता हुआ चला जाता है ? दूर पूर्वी किनारे के एक घाट पर, अमावस्या के पर्व पर स्नानार्थ आए असंख्य नर-नारी दिखाई देते हैं। दूर-दूर के गाँव तथा नगरों से आए ये लोग इस हुगली के पानी में डुबकी लगाने को व्याकुल प्रतीत होते हैं। यह क्यों ? यह तो वह पतित-पावनी गंगा नहीं, जिसके दर्शन-मात्र अथवा नाम-स्मरण से पापी देवता बन जाते हैं।

कलकत्ता के घाट पर गंगा में स्नान करने वाले के मुख से, "हर-हर गंगे" के शब्द क्या अनर्गल हैं ? अतः इसमें सार पूछने की लालसा वाले जिज्ञासु को भक्त के मन में बैठने की आवश्यकता है।

"ओ भक्त ! देखो जल में यह क्या बहता जा रहा है ?"

किसी जहाज द्वारा छोड़ी गन्दे तेल की धारा थी।

"जै गंगा मैय्या की।" भक्त के मुख से अनायास-निकल गया और फिर उसने प्रश्नकर्ता के मुख की ओर देखते हुए कहा, "वह देखो, कौन स्नान कर रही है ?"

जिज्ञासु की दृष्टि उस ओर घूम गई। एक कुबड़ी, कानी, वृद्धा गले तक पानी में पैठी हुई, सूर्य की ओर मुख कर भगवान की अर्चना कर रही थी। जिज्ञासु की समझ में कुछ नहीं आया। उसने प्रश्न-भरी दृष्टि से भक्त की ओर देखा। भक्त ने पूछा, "कैसी है वह भक्तिनी ?"

"अति कुरूप है।"

"आँखों वाले अन्धे ! उसकी आत्मा में पैठकर देखो। आज वह निर्धन, अपा-हिज और निस्सहाय लोगों का एकमात्र आश्रय बनी हुई है। सत्य-मार्ग की पथिक सत्तर वर्ष का मार्ग लाँघकर उस आलोक में लीन होने वाली है जिसमें लीन होने के लिए संसार लालायित रहता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'परन्तु मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं मिला।"

"बाहरी रूप-रंग देखने वालों को वास्तविक श्रेष्ठता दिखाई नहीं देती। भाई, संसार में जो कुछ दिखाई देता है कितना कुरूप है, परन्तु इससे यह नहीं कहा जा सकता कि सब कुछ सारहीन है! भगवान शिव की जटाओं से स्रवित जल इस नदी के कण-कण में व्यापक है। उसका तो एक बिन्दु-मात्र पूर्ण सागर को पवित्र करने की सामर्थ्य रखता है।"

"यह मन की भावना-मात्र है भक्त ! डुबकी लगाकर देखो कि तुम्हारे शरीर को भगवान की जटाओं से निकला जल लगता है अथवा उस जहाज का फेंका हुआ कचरा?"

इस भावना में कुछ तत्त्व है क्या? यह प्रश्न मन में उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। परन्तु संसार में कहीं शुद्धता-पवित्रता मिलती भी है? प्रकृति में प्रायः सब वस्तुएँ मिश्रित तथा अन्य वस्तुओं से संयुक्त अवस्था में पाई जाती हैं और बुद्धिमान पुरुष मैल-मक्खी को निकाल शुद्ध वस्तु उपलब्ध कर लेते हैं।

भारतीय संस्कृति भी गंगा की पवित्र धारा की भाँति बहुत ही प्राचीन काल से चली आती है। वेदों के काल से चली हुई, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, दर्शन-शास्त्र अथवा रामायण, महाभारत इत्यादि कालों में समृद्ध होती हुई और फिर बौद्ध, वेदान्त, वैष्णव इत्यादि मतों से व्याख्यात होती हुई बहती चली आई है। कालान्तर में इस सभ्यता में कचरा और कूड़ा-करकट भी सम्मिलित हुआ है और अब हुगली नदी की भाँति एक अति विस्तृत, मिश्रित और ऊपर से मैला प्रवाह बन गई है।

इस प्रवाह में अभी भी वह शुद्ध, निर्मल और पावन ज्योति विद्यमान है। आँख के पीछे मस्तिष्क न रखने वाले के लिए वह गन्दा पानी है। परन्तु दिव्य दृष्टि रखने वाले जानते हैं कि इसमें अभी भी मोती-माणिक्य भरे पड़े हैं। भारतीय सभ्यता गंगा की भाँति हुगली का पानी नहीं, प्रत्युत वह पवित्र जल है जो त्रिपुरारि की जटाओं से निकलता है।

वैदिक सभ्यता आज हिन्दुस्तानी तहजीब बनने जा रही है; हुगली का मटियाला गंधाता हुआ जल बनने जा रही है। उसमें स्नान करने का अर्थ यह होगा कि पूर्ण विदेशी सभ्यता इसको आच्छादित करने जाए। केवल देखने वाले, इसको पूर्ण रूप में परिवर्तित हो गया समझते हैं, परन्तु समझने वाले इस हुगली के पानी में गंगोत्तरी के जल को व्यापक पाते हैं।

कुछ ऐसी बातें हैं जो इस सभ्यता की रीढ़ की हड्डी हैं। पुनर्जन्म, कर्म-फल, विद्वानों का मान, विचार स्वातन्त्र्य, व्यक्ति से समाज की श्रेष्ठता, चरित्र-महिमा इत्यादि इस सभ्यता के अमिट अंग हैं। ये सब-के-सब वैदिककाल से आज तक अक्षुण्ण चले आते हैं। भारतीय सभ्यता की ये वस्तुएँ सार-रूप हैं। जब-जब भारतीयों ने इसको छोड़ा है और विदेशी सभ्यता रूपी मिले हुए कचरे को भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभ्यता माना है तब-तब ही देश तथा जाति आर्थिक, मानसिक और आत्मिक पतन की ओर अग्रसर हुई है।

जब कचरा अधिक होने लगता है तो मनुष्य पवित्रता के स्रोत पर पहुँच डुबकी लगाने की सोचता है। यदि वर्तमान सभ्यता वेदों की पवित्र सभ्यता का गंदला रूप है और गंदलापन इतना अधिक है कि असल को खोज निकालना कठिन हो रहा हो तो इसके स्रोत वेदों में डुबकी लगाने की आवश्यकता है।

गंगा की महिमा जमुना, घाघरा इत्यादि उसमें मिलने वाली नदियों के कारण नहीं है। उसमें मिला हुआ कीचड़ अथवा मैला उसकी शोभा को नहीं बढ़ाता है। उसकी महिमा तो उसके स्रोत के निर्मल जल के कारण है। बुद्धिमान मैले को पृथक् कर सार को प्राप्त कर उसका भोग करता है। यही परम साधना है।

यह उपन्यास है। ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख कहानी का वातावरण बनाने के लिए किया गया है। पात्रों का नाम, स्थान और घटनाओं की तिथियाँ, सब-की-सब कल्पित हैं। इनका वास्तविक बातों से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है।

१५.८.१९५१ —गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

: १ :

"मैं फिरोजपुर जा रहा था। दूसरे दर्जे का टिकट ले प्लेटफार्म नम्बर एक पर पहुँचा तो कलकत्ता से डाक गाड़ी छुक-छुक करती हुई प्लेटफार्म पर आ खड़ी हुई। फिरोजपुर के लिए जाने वाली गाड़ी प्लेटफार्म नम्बर सात पर खड़ी थी और एक नम्बर के पूरे प्लेटफार्म को लाँघकर वहाँ जाना पड़ता था।

"कलकत्ता से आ रहे यात्रियों के स्वागत के लिए, आए हुए उनके मित्रों और सम्बन्धियों की भारी भीड़ थी। इससे प्लेटफार्म को लाँघना कठिन हो रहा था। जब तक मैं एक नम्बर के प्लेटफार्म को लाँघकर सात नम्बर पर जाता, कलकत्ता की गाड़ी के मुसाफिर गाड़ी से उतर कुलियों से सामान उठवा स्टेशन से बाहर जाने लगे थे। उस समय मेरी दृष्टि एक मुसाफिर पर जा पड़ी।

"मुसाफिर सिर से नंगा था। श्वेत कुर्ता और धोती पहने था। धोती का एक छोर कन्धे पर डाले और पाँव में मोटे चमड़े की चप्पल पहने, वह भीड़ से एक ओर हो, अनिश्चित मन से कुछ सोच रहा प्रतीत होता था।

"मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि मैंने उसको कहीं देखा है। मैं उसके समीप मे निकल गया। समीप से निकलते समय मैंने उसको एक गम्भीर साँस लेते देखा। मेरा मन अपनी पूर्व स्मृतियों को टटोलने लगा। मैं याद कर रहा था कि मैंने उसको कहाँ देखा है। इस बीच मैं कुछ दूर निकल गया। इस समय मुझको कुछ याद हो आया, परन्तु मैं सोचता था कि यह कैसे हो सकता है। उनको तो अण्डमान में होना चाहिए था। यह सोच मैं आगे बढ़ना चाहता था, परन्तु मेरे पाँव रुक गए। मन के पट पर चित्रित चित्र ने कहा, वही तो हैं।

"मैं लौट पड़ा। मैंने देखा कि वे वहीं पर खड़े प्लेटफार्म पर लटकी घड़ी को देख रहे थे। जब मैं उनके पास आकर खड़ा हुआ तब भी वे सिर उठाए घड़ी की ओर ही देख रहे थे। इतनी बड़ी घड़ी में समय देखने के लिए इतनी देर नहीं लगनी चाहिए थी। अतः मैं समझ गया कि वे कुछ विचार करने में मग्न हैं।

"मुझे समीप खड़ा देख उनका ध्यान उखड़ा और वे मेरी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगे। मैंने अब समीप से देखा तो मुझको विश्वास हो गया। मेरे मुख से निकल गया, 'प्रोफेसर साहब !'

"संतोष की एक क्षीण रेखा उनके मुख पर दिखाई दी। परन्तु वह शीघ्र ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलीन हो गई। उन्होंने मुझको केवल यह कहा, 'मैंने पहचाना नहीं।'

"इसका अभिप्राय था कि मेरे पहचानने में भूल नहीं हुई। मैंने झुककर उनके चरण स्पर्श किए। उन्होंने मुझको बाँहों से पकड़कर उठा लिया और गले लगा लिया।

"'आप यहाँ कैसे?' कहते-कहते मेरा गला रुँध गया और आँखें भीग गईं। उन्होंने बाहर निकलने के दरवाजे की ओर चलते हुए कहा, 'मैं छूट गया हूँ। यहाँ तक तो सरकारी टिकट से पहुँच गया हूँ। अब सोच रहा था कि किधर जाऊँ। न जाने कौन-कौन परिचितों में कहाँ-कहाँ हैं?'

"मैं अपना फिरोजपुर जाना भूल गया और उनके साथ लौट पड़ा। मैंने कहा, 'आइए! मेरे साथ आइए।'

"'कहाँ?'

"मैंने उत्तर दिया, 'मेरे साथ मेरे घर, मोहनलाल रोड पर। मैं आपका विद्यार्थी हूँ और आपके विचारों का प्रशंसक हूँ। आप जब अमेरिका से फार्मास्यूटिकल शिक्षा लेकर आए थे तो आपके पास कभी-कभी संगति करने जाया करता था।'

"हम दोनों रेल के स्टेशन से बाहर आ गए। मैंने देखा कि प्रोफेसर साहब का बिस्तर इत्यादि कुछ नहीं है। मैंने पूछा, 'आपका सामान?'

'भगवान् का धन्यवाद है कि जान वापस आ गई है।'

"यह बात सत्य ही थी। प्रोफेसर साहब को फाँसी की आज्ञा हो चुकी थी। फाँसी से आधा घंटा पूर्व प्राणदण्ड के स्थान पर आजन्म कैद की आज्ञा उन्हें मिली और फाँसी की टिकटिकी से लटकाये जाने की अपेक्षा अण्डमान भेज दिए गए थे। ताँगे में बैठते हुए उन्होंने कहा, 'यह सब कुछ पुनः देखने की आशा नहीं थी।'

"ये भाई परमानन्द जी थे। मैंने अपनी राष्ट्रीयता की दीक्षा सर्वप्रथम उनसे ही प्राप्त की थी। आर्यसमाज मन्दिर में व्याख्यान देते हुए उन्होंने 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' का पाठ पढ़ाया था।

"छः वर्ष तक अण्डमान में रहने के कारण, उनका मन हिल गया था। अतएव भाई जी का अपनी स्त्री से पुनर्मिलन अति हृदय-विदारक घटना थी। जब से वे कैद हुए थे, उनकी स्त्री आर्य कन्या पाठशाला में बीस रुपए महीना पर पढ़ाने का काम कर अपना तथा अपने बच्चों का पालन-पोषण कर रही थी। उसे सूचना मिली तो वह उनको लेने आई। यह दम्पति-मिलन दुःख तथा उल्लास का एक विचित्र मिश्रण था।

"समय बदल चुका था और भाई जी की स्त्री के मन में एक क्षीण किरण की भाँति अपने पति से पुनः मिलने की आशा बनी हुई थी, परन्तु इस मिलन के पूर्व जो अन्तिम समाचार उसे मिला था वह भाई जी के आमरण अनशन करने का था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कारण उनको इस प्रकार सामने खड़ा देख, उसके मन में उठते भावों का उल्लेख करना असम्भव है। यह केवल अनुभव का विषय ही है।

"भाई जी सन् १६१५ में जेल भेजे गए थे और अब १६२१ था। अब तक देश की अवस्था में भारी परिवर्तन आ चुका था। महात्मा गांधी देश के मनोनीत नेता बन चुके थे।

"खिलाफत आन्दोलन चला और बन्द हो गया। इस आन्दोलन की बुझती हुई चिंगारियाँ कुछ राष्ट्रीय स्कूल, कॉलेज तथा विद्यापीठों के रूप में रह गई थीं। इस काल में मैं अपने व्यवसाय को पुनः जीवित करने के लिए युरोप के भ्रमण के लिए चला गया था। वहाँ से मैं सन् १६२३ में लौटा।

"युरोप से लौटने पर 'आकाशवाणी' पत्रिका के दर्शन हुए। यह साप्ताहिक पत्र भाईजी निकाल रहे थे। इस पत्र को पढ़कर मेरे मन में कई बार एक संशय उत्पन्न हो जाता था। उस संशय के निवारण के लिए मैं भाईजी से मिलने की उत्कट इच्छा करने लगा था।

"एक दिन भाईजी ब्रैडलॉ हॉल की ओर से, धूप से बचने के लिए, अपने सिर पर एक श्वेत चादर डाले हुए और हाथ में एक मोटा-सा डण्डा लिये हुए आते दिखाई दिये। मैं दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज कमेटी के प्रधान महात्मा हंसराज जी से मिलने जा रहा था। भाईजी को देख मैंने उनके चरण स्पर्श किए और हाथ जोड़ नमस्ते की। उन्होंने पहचान लिया, 'ओह ! जीवनलाल जी, कहाँ रहते हैं आप ? आपके कभी दर्शन नहीं हुए ?'

" 'जी, मैं अभी-अभी युरोप से लौटा हूँ।'

"मैं अपने मन का संशय निवारण कराने की आशा में उनके साथ ही चल पड़ा। भाईजी के साथ एक और सज्जन थे और वे उनको कह रहे थे—'ब्रैडलॉ हॉल के कम्पाउंड में एक नैशनल कॉलेज खोला है, परन्तु यह सब पानी मथने के समान प्रतीत होता है।'

"मैंने इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा, 'अराष्ट्रवादी राष्ट्रीयता की दुर्गति कर रहे हैं। भारत में राष्ट्र हिन्दू है, परन्तु यह कांग्रेसी इसको ऐसा नहीं मानते।'

"यही तो मेरे मन का संशय था। मैंने अपना संशय प्रकट किया तो उन्होंने अपने कथन की व्याख्या करते हुए कहा, 'राष्ट्र एक सजीव वस्तु है। इसके एक अंग को कष्ट होने से, पूर्ण शरीर को दुःखी होना चाहिए। देश के जिस बसने वाले को देश के हित-अहित से अरुचि हो, वह देश में रहता हुआ भी, राष्ट्र का अंग नहीं माना जा सकता।'

"इस विवेचना ने मेरे मन में हलचल मचा दी। एक बार इस राष्ट्रीयता के पुजारी ने मुझको 'स्वर्गादपि गरीयसी' का उपदेश दिया था। इस दिन उसने एक पद में राष्ट्र शब्द के अर्थ का निरूपण कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"राष्ट्र एक सजीव पुरुष है, यह मंत्र है जिसका मैं सन् १६२३ से जप कर रहा हूँ। इस जप से जो साक्षात्कार मुझको हुआ है वह वर्णनातीत है, मैंने तुम्हारी कांग्रेस के पूर्ण इतिहास को इस मन्त्र की कसौटी पर कसा है और उसे राष्ट्रीयता से रिक्त पाया है।"

: २ :

लाहौर में मोहनलाल रोड पर, तीन छत के एक विशाल मकान के एक कमरे में एक वृद्ध एक युवक को अपनी जीवन-स्मृति में से उक्त घटना सुना रहा था।

१६४५ के निर्वाचन हो चुके थे। पंजाब धारा-सभा के जितने भी हिन्दुओं के स्थान थे सब कांग्रेस के लोगों ने प्राप्त कर लिए थे। भाई परमानन्द हिन्दू महासभा के टिकट पर खड़े हुए थे किन्तु एक कांग्रेसी सदस्य से पराजित हो चुके थे। यह युवक, कांग्रेस के टिकट पर, जिला गोरखपुर की ओर से निर्वाचित हुआ। अपनी सफलता और अपने दल की सफलता पर उसका मुख चमक रहा था। युवक के हाथ में 'ट्रिब्यून दैनिक' का एक अंक था जिसमें देश-भर के निर्वाचन के आँकड़े छपे थे। युवक ने कहा था, "पिताजी, देश-भर में कांग्रेस की जीत हुई है।"

पिता ने हँसते हुए कहा, "मैं तो समझता हूँ कि कांग्रेस के सिद्धान्तों की हार हुई है।"

"कैसे?"

"देखो चेतन!" यह युवक का नाम था, "कांग्रेस की स्थापना ही इस सिद्धान्त पर हुई थी कि देश में हिन्दू-मुसलमान और अन्य मत-मतान्तरों के लोग एक ही जाति के अंग हैं। इस जाति का नाम कांग्रेस ने 'हिन्दुस्तानी कौम' रखा था। साठ वर्ष के निरन्तर प्रचार और घोषणाओं के पश्चात् भी मुसलमानों ने यह निर्विवाद सत्य प्रकट कर दिया है कि वे हिन्दुओं तथा अन्य मत के लोगों से एक पृथक् जाति हैं। उन्होंने मुसलिम लीग को, जो मुसलमानों को एक पृथक् जाति मानती है और उनके लिए एक पृथक् देश भी माँग रही है, ६६ प्रतिशत मत दिए हैं।"

"परन्तु पिताजी! हिन्दुओं ने तो सर्वसम्मति से कांग्रेस को अपनाया है।"

"ठीक! परन्तु इस शर्त पर कि तुम अंग्रेजों को भारत से निकालने का काम कर रहे हो और तुम लोग अखण्ड भारत के लिए यत्न करोगे। ये दोनों बातें हिन्दुओं को प्रिय हैं। इससे हिन्दुओं ने तुम्हें वोट दिए हैं। ये दोनों बातें मुसलमान पसन्द नहीं करते, जिससे उन्होंने तुमको वोट नहीं दिए। अब कांग्रेस के लिए केवल दो मार्ग बचे रह गए हैं। या तो निर्वाचन में दिये अपने वचन पर दृढ़ रहे और पूर्ण मुसलमान जाति का विरोध करे। यदि आवश्यकता पड़े तो उन पर शासन करे। अथवा एक दूसरा मार्ग है। वह यह कि हिन्दुओं को दिया वचन भंग करे और पाकिस्तान बनने की स्वीकृति दे। अपने को हिन्दू-मुसलमान, दोनों का, प्रतिनिधि तो अब वह कह नहीं सकती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतनानन्द को अपने पिता के ये वाक्य रुचिकर प्रतीत नहीं हो रहे थे। उसने उन वाक्यों को कड़वा घूंट समझकर पी लिया और कहा, "आप निश्चिन्त रहिए। इन दोनों में से एक भी बात नहीं होगी।"

"अच्छी बात है। यद्यपि मुझे तुम्हारे कहने पर विश्वास नहीं है, तो भी धीरज से प्रतीक्षा करने के अतिरिक्त और कोई उपाय भी तो नहीं है। देखो, मैं तुम्हें अपने गुरु का परिचय देता हूँ।"

इतना कह जीवनलाल ने अपने पुत्र को अपनी आपबीती सुना दी जो ऊपर लिखी जा चुकी है।

"आप भाई परमानन्द जी को अपना गुरु मानते हैं?"

"हाँ, राजनीतिक विचारों में। उन्होंने कांग्रेस के विषय में एक बार कहा था कि इसकी नीति देश को धरातल में पहुँचा देगी।"

"यह सब भ्रम है पिताजी···"

"भ्रम नहीं।" जीवनलाल ने जोश में आकर कहा, "मैं तुम्हें अपने अनुभव की एक बात बताता हूँ। महात्मा गांधी ने कोहाट में हिन्दू-मुसलमानों के झगड़े के पश्चात् आत्मशुद्धि के लिए बीस दिन का व्रत रखा था। इस झगड़े में मुसलमानों ने हिन्दुओं की पूर्ण जनता को कोहाट से बाहर निकाल दिया था अथवा मार डाला था। इससे महात्माजी को भारी दुःख हुआ। उन्होंने अपने विश्वस्त लोगों को कोहाट भेजकर वहाँ का विवरण मँगवाया। ऐसा कहा जाता है कि इस जाँच के पश्चात् महात्माजी को विश्वास हो गया था कि इस झगड़े में पूर्ण दोष मुसलमानों का था। परन्तु जब वक्तव्य देने का समय आया तो महात्माजी ने वहाँ के मुसलमानों को दोष देने की अपेक्षा पंजाब के सिखों और आर्यसमाजियों की निन्दा की थी।

"मालाबार में भी जब हिन्दू-मुसलमानों का झगड़ा हुआ तो दोष मुसलमानों का था और महात्माजी ने मालाबार के मोपलों को दण्ड से बचाने का यत्न किया था।

"ऐसी अवस्था में मैं भाईजी के कहने को भ्रम नहीं मानता। वह सत्य ही प्रतीत होता है।"

चेतनानन्द और उसके पिता के विचारों में आकाश-पाताल का अन्तर था। चेतनानन्द कई वर्षों से कांग्रेस का कार्य कर रहा था। १९४२ के आन्दोलन में बन्दी बनाकर दो वर्ष तक जेल में रखा जा चुका था।

पिता-पुत्र का संवाद तब बन्द हुआ जब बगल के कमरे से किसी ने आवाज दी, "मम्मी! देखो कौन आई हैं।" तत्पश्चात् दो लड़कियों के हँसने का शब्द सुनाई दिया।

चेतनानन्द, हँसी की आवाज पहचान, उठ खड़ा हुआ और पिताजी से बोला,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं जरा देखूं कौन आया है।"

जीवनलाल की हँसी निकल गई और उसने उर्दू का 'मिलाप' उठाकर पढ़ना आरम्भ कर दिया। चेतनानन्द बाहर निकल गया।

: ३ :

चेतनानन्द पिता के कमरे से निकल दूसरे कमरे में, जहाँ से लड़कियों के हँसने की आवाज आई थी, चला गया। एक लड़की ने उसे देखकर कहा, "भैया, देखो। किसे पकड़ लाई हूँ।"

दूसरी लड़की ने सोफे पर से उठ, हाथ जोड़ उसे नमस्कार की। चेतनानन्द ने हाथ जोड़ कहा, "ओह पार्वती जी ! सुनाइए, आज मन में दया कैसे आ गई है ?" फिर उसने दूसरी लड़की को, जिसने उसे भैया कहकर पुकारा था, कहा, "रेवा ! ये तुम्हें कहाँ मिल गईं ?"

रेवा और पार्वती सोफे पर बैठ गईं और चेतनानन्द उसी सोफे पर पार्वती की दूसरी ओर रेवा के पास बैठ गया। रेवा ने एक बाँह पार्वती के गले में और एक चेतनानन्द के गले में डालकर कहा, "भैया, मैं तुमसे नाराज हूँ। तुमने यह इलैक्शन क्या लड़ा, सब संसार की ही सुध-बुध विसार दी। मैं आज इनके घर गई और मैंने इनसे कहा कि मिलने नहीं आतीं, तो ये कहने लगीं, तुम्हारे भैया भी कब मिलने गए हैं। मैं समझ गई और जबरदस्ती इनको पकड़ लाई हूँ। लो अब दोनों को मिला देती हूँ।"

इतना कह उसने दोनों की गर्दनों को, जिनके गिर्द उसने बाँहें डाली हुई थीं, मिलाने का यत्न किया। इस समय रेवा की माँ आ गई और उनको इस प्रकार रेवा की बाँहों से छूटने का यत्न करते देख हँस पड़ी। माँ ने हँसते हुए कहा, "क्या कर रही हो, रेवा ?"

"दोनों में मनमुटाव समाप्त कर रही हूँ।" रेवा ने बाँहें निकाल दोनों को मुक्त करते हुए कहा, "माँ ! अब तम आ गई हो, लो अपने पुत्र और पुत्र-वधु को···।"

पार्वती ने रेवा के मुख पर हाथ रख उसको आगे कुछ भी कहने से रोक दिया। रेवा की माँ हँस पड़ी और पार्वती का मुख लज्जा से लाल हो गया। रेवा की माँ ने पार्वती से उसके माता-पिता का कुशल-क्षेम पूछना आरम्भ कर दिया। उधर रेवा ने अपने भाई को कहा, "भैया, अब तो तुम खाली हो न ? चुनावों के परिणाम भी निकल गए। बताओ आज पिक्चर दिखाने ले चलोगे ?"

"यदि तुम्हारी सहेली साथ चलेगी तो।"

"अजी भाई साहब, उसी की बात तो कह रही हूँ। मुझे साथ क्या ले जावेंगे आप ? मैं दूध-पीती बच्ची नहीं हूँ। मैं तो अकेली भी चली जाती हूँ।"

"तो क्या वह दूध-पीती बच्ची है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, सामाजिक जीवन में।"

"तो फिर ले चलूँगा। तुम भी साथ चलोगी न ?"

"यदि कहो तो।"

"तो चलो।"

रेवा सोफे से उठ खड़ी हुई और माँ से बोली, "मम्मी, इनके लिए चाय बनवाओ और मैं कपड़े बदलकर आती हूँ।"

"इन कपड़ों को क्या हुआ है ?"

"यह सिनेमा जाने योग्य नहीं हैं।"

वह उठकर चली गई। रेवा की माँ ने भी उठते हुए कहा, "लो, मैं अभी चाय बनवाकर लाती हूँ।"

इस प्रकार चेतनानन्द और पार्वती अकेले रह गए। एक क्षण तक दोनों चुपचाप बैठे रहे। तत्पश्चात् पार्वती ने नाखून छीलते हुए और भूमि की ओर देखते हुए कहा, "कांग्रेस वालों की दिग्विजय हुई है।"

"हाँ, तीन मास की भाग-दौड़ सफल हुई। अब सिवाय पंजाब और बंगाल के अन्य सब प्रान्तों में कांग्रेसी सरकार बन जावेगी। इसका केन्द्रीय सरकार पर भी प्रभाव पड़ेगा।"

"आप तो बधाई के पात्र हो गए हैं।"

"और तुम पार्वती ?" चेतनानन्द ने उसके हाथ को पकड़ अपने दोनों हाथों की तलियों में दबाते हुए पूछा।

"यह भी आपके अधीन है।"

"मैं तो इस अवसर की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"इसी कारण मुझे यहाँ आकर पूछना पड़ा है न ? उत्सुकता के विचित्र लक्षण हैं यह !"

चेतनानन्द ने लज्जा का भाव बनाकर कहा, "यह बात नहीं प्रिये ! कहो तो मैं अभी अपने विवाह की तिथि निश्चित कर लूँ ?"

"पहले अपने और मेरे माता-पिता से तो पूछ लीजिए। तिथि बाद में स्वयमेव निश्चय हो जावेगी।"

"क्यों ? तुम्हारी क्या आयु है ?"

इस प्रश्न से पार्वती का मुख लज्जा से लाल हो गया। वह इसका प्रयोजन नहीं समझी। चेतनानन्द को उत्तर की प्रतीक्षा करते देख बोली, "आज तक इतना कुछ हो जाने पर भी आपको आयु पूछने की क्या सूझी है। मैं समझती हूँ कि आपसे कम उम्र की ही हूँ।"

चेतनानन्द को अपनी भूल का ज्ञान हुआ, तो क्षमा माँगने लगा, "प्रिये ! मैं तुम्हें आयु में बूढ़ी समझकर नहीं पूछ रहा। मेरा अभिप्राय यह है कि तुम वयस्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गई हो। कानून से भी हम अपने विषय में स्वयं निर्णय कर सकते हैं। अतएव तिथि का निर्णय कर अपने माता-पिता को सूचित कर देना पर्याप्त होगा।"

पार्वती इस सफाई से सन्तुष्ट तो हो गई पर अभी भी इस योजना पर अपना विचार स्थिर नहीं कर सकी। वह बोली, "बात तो आप ठीक कहते हैं, परन्तु मुझसे यह कहा नहीं जा सकेगा। मुझको तो लज्जा लगती है। अपने पिताजी के सम्मुख मुझसे यह बात निकल ही नहीं सकेगी।"

"क्या बहुत कठोर हैं वे ?"

"नहीं ! मुझमें लज्जा अधिक है।"

"तो उनसे भी मैं ही जाकर कह दूंगा। तुम चुपचाप मेरे साथ खड़ी रहना।"

"हाँ, यह हो सकता है। फिर भी उनको पहले विचार करने का अवसर मिल जाता तो ठीक था।"

"मैं इसकी आवश्यकता नहीं समझता। विचार करना मेरा और तुम्हारा काम है। वह हमने कर लिया है। देखो पार्वती ! मैं कल सायंकाल तुम्हारे घर आऊँगा और हम दोनों तुम्हारे माता-पिता के सम्मुख उपस्थित होकर अपना निर्णय बतावेंगे। तुम मेरे साथ खड़ी रहना। मैं कह दूंगा कि हम अगले रविवार सायं चार बजे अपना विवाह करेंगे।"

"पहले आप अपने माता-पिता से तो पूछ लेते।"

"इसकी आवश्यकता नहीं समझता। हाँ, उनको भी परसों दोपहर के समय सूचना दे देंगे। मकान में तुम्हारे रहने योग्य कमरा है। खाने को रोटी और पहनने को कपड़े हैं।"

"बस ? क्या यही सब कुछ है ? मैं आपके घर आऊँगी तो आपके माता-पिता का आशीर्वाद, सहानुभूति और वात्सल्य भी तो चाहिए।"

"अरे बाबा ! यह सब कुछ मिलेगा। उतना ही जितना मुझे प्राप्त है।"

इस समय माँ वापस लौट आई। उसके पीछे-पीछे नौकर एक ट्रे में चाय का सामान लगाकर ला रहा था।

: ४ :

पार्वती पण्डित श्रीधर पाठक, एम० ए०, एम० ओ० एल० की लड़की थी। वह बी० ए० पास कर सनातन धर्म कन्या विद्यालय में अध्यापन-कार्य करने लगी थी। रेवा की सहपाठिनी होने से लाला जीवनलाल के घर आना-जाना था। वहाँ चेतनानन्द से भेंट हुई और फिर परस्पर प्रेम हो गया। रेवा और चेतनानन्द कई बार पार्वती के घर भी आ-जा चुके थे। वहाँ उनका सदैव आदरसहित स्वागत होता था।

पार्वती का एक छोटा भाई था। वह बी० ए० के द्वितीय वर्ष में पढ़ता था। रेवा से उसका विशेष अनुराग हो गया था। इस प्रकार दोनों परिवारों के युवा वर्ग में पर्याप्त मात्रा में घनिष्ठता थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेवा की माँ का अपने पति जीवनलाल से विचार-सामंजस्य नहीं था। जीवनलाल सरल और शुद्ध विचार का आदमी था। उसके मस्तिष्क में देश, राष्ट्र वेद, शास्त्र एवं आचार-व्यवहार की भारी महिमा थी। जीवनलाल की स्त्री सुभद्रा के मस्तिष्क में साड़ी, जम्पर, भूषण, शृंगार, खाना-पीना, और सज-धज की महिमा भरी हुई थी।

सुभद्रा जीवनलाल की दूसरी स्त्री थी। विचार-भेद और जीवनलाल के व्यापार में व्यस्त रहने के कारण, चेतनानन्द और रेवा माँ के प्रभाव में पले थे। चेतनानन्द कांग्रेस के भँवर में पड़ राजनीतिक क्षेत्र में जा पहुँचा था। मोटे खद्दर के कपड़े, सिर पर सफेद खद्दर की टोपी और पाँव में चप्पल पहनता था। वह शरीर का हृष्ट-पुष्ट और अच्छा-खासा सुन्दर युवक था। रेवा इसके विपरीत थी। स्वस्थ परन्तु छरहरे शरीर की, अट्ठारह-उन्नीस वर्ष की युवती थी। उलटी साड़ी, सिर के बाल बहुत घने परन्तु कटे हुए, जो केवल कन्धों तक ही पहुँचते थे; बारीक रेशम की टाईट जैकेट, जो साड़ी से ऊपर ही रह जाती थी, पहनती थी। होंठों और गालों पर हलकी सुरखी और पाउडर का हलका-सा छींटा लगाती थी। प्रायः हाथों और पाँवों के नाखूनों पर गहरा लाल चमकदार रंग लगा रहता था।

जैसे भाई-बहिन के रहन-सहन और पहरावे में अन्तर था, वैसे ही दोनों के स्वभाव में भी अन्तर था। भाई गम्भीर तथा दृढ़ विचारों का परन्तु मोटी बुद्धि वाला था। बहिन चंचल, चपल और अत्यन्त तीव्र बुद्धि वाली थी। चलते-फिरते अथवा बैठे बातें करते, वह निश्चल नहीं रह सकती थी। उसका कोई-न-कोई अंग चलता ही रहता था।

रेवा ने बी० ए० तो पार्वती के साथ ही पास कर लिया था, परन्तु वह अभी तक किसी कार्य में नहीं लगी थी। उसका कार्य 'यंग विमेन्स क्रिश्चियन एसोसिएशन' की क्लब में जाना, खेलना, कूदना या सिनेमा देखना था। पार्वती के छोटे भाई महेश से उसका परिचय हुआ और तत्पश्चात् प्रेम हो गया था। दोनों प्रायः मिलते रहते थे।

पण्डित श्रीधर निस्बत रोड पर भाड़े के एक मकान में रहते थे। उन्होंने संस्कृत की उच्च शिक्षा प्राप्त कर संस्कृत साहित्य की सेवा, जीवन का उद्देश्य बना रखा था। सांख्य पर भाष्य लिखकर कलकत्ता से छपवाया था, जो तीन हजार पृष्ठ की पुस्तक बनी थी। इस पुस्तक की विदेश में बहुत महिमा हुई थी और केवल यह एक पुस्तक उनके जीवन-निर्वाह का साधन बनी हुई थी। पचास रुपए एक प्रति का दाम था और डेढ़-दो सौ प्रतिवर्ष बिक जाती थीं। इसके अतिरिक्त पण्डितजी दो-चार विद्यार्थियों को संस्कृत पढ़ाकर जीवन की गाड़ी चला रहे थे। पण्डितजी अपने जीवन को और अपने बच्चों के जीवन को एक स्थिर नियन्त्रण में रखे हुए थे। वे ब्रह्म-मुहूर्त में उठ स्नानादि से निवृत्त हो, डेढ़ घण्टा पूजा में लगाते थे। तत्पश्चात्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाय, मक्खन, रोटी खाकर घूमने चले जाते थे। दिन के आठ बजे वे अध्यापन-कार्य आरम्भ करते थे। ग्यारह बजे वे भोजन करते थे; फिर थोड़ा आराम कर स्वाध्याय करते थे। सायं चार बजे फलाहार कर मित्रों से मेल-मिलाप होता। यह कार्यक्रम सायंकाल सात-साढ़े सात तक चला करता था। तत्पश्चात् संध्या कर भोजन करते और कुछ घूमकर रात को सो जाते थे। यह एक स्थिर कार्यक्रम था जो २५ वर्ष से निरन्तर चल रहा था।

आज पार्वती चेतनानन्द की प्रतीक्षा कर रही थी। उसने पार्वती को साथ ले सायंकाल उसके पिता से अपने विवाह की घोषणा करनी थी।

प्रतीक्षा करते-करते सात बज गए; चेतनानन्द नहीं आया। साढ़े सात बजे पण्डितजी उठे और संध्या के लिए जा बैठे। तत्पश्चात् उन्होंने भोजन किया और घूमने को निकल गए। जाने से पहले उन्होंने पार्वती से पूछा, "महेश कहाँ है ? क्या अभी आया नहीं ?"

"नहीं पिताजी," पार्वती का उत्तर था, "शायद उनके कॉलेज में संगीत सभा है।"

"नहीं, वह तो कल है। मुझे भी निमन्त्रण मिला है।"

"तो मैं नहीं जानती।"

"उसका रेवा के साथ घूमना मुझे ठीक प्रतीत नहीं होता।"

पार्वती चुप रही, परन्तु उसका हृदय धक-धक करने लगा। आज पहली बार उसके पिता ने रेवा के विषय में यह कहा था। इस कारण उसे डर लग गया था कि कहीं चेतनानन्द के विषय में भी कुछ कह न दें।

पार्वती की माँ बहुत पढ़ी-लिखी स्त्री नहीं थी। फिर भी घर के काम-काज के विषय में अति सुघड़ थी। उसने बिना किसी नौकर की सहायता के घर की देख-रेख भली-भाँति कर रखी थी। उसके दोनों बच्चे, पार्वती और महेश, उसकी भाँति पण्डितजी से डरते थे और परिवार की मान-मर्यादा का ध्यान रखते थे। पण्डितजी की स्त्री और बच्चे, सब, कभी भी पण्डितजी के कहने का उल्लंघन नहीं कर सकते थे।

चेतनानन्द के, अपने वचनानुसार, न आने से पार्वती के मन में क्षोभ हो रहा था। कुछ महीनों से चेतनानन्द उसकी उपेक्षा करता प्रतीत होता था परन्तु अभी तक तो यह उपेक्षा उसके निर्वाचन-कार्य में संलग्न होने के कारण मानी जा रही थी। अब निर्वाचन समाप्त हो चुका था और निर्वाचन के परिणाम भी घोषित हो चुके थे। इससे पार्वती को चेतनानन्द के न आने पर भारी दुःख हो रहा था।

रात, पार्वती चौका-बासन करती थी। आज उसका मन इस कार्य में नहीं लगा। इस कारण उसने माँ से कहा, "माँ, मेरा सिर दर्द करने लगा है। क्या मैं जाकर सो जाऊँ ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी माँ ने आँखें उठा पार्वती के मुख पर देखा। वह कुछ फीका दिखाई दिया। उसने कह दिया, "थोड़ा चूर्ण खा लो, शायद वायु बन रही है।"

पार्वती 'अच्छा' कह ऊपर की छत पर अपने कमरे में जाकर लेट गई।

चेतनानन्द आया तो पार्वती की माँ चौका-वासन कर चुकी थी। दरवाजे का खटखटाना सुन, वह बाहर का दरवाजा खोल चेतनानन्द को खड़े देख बोली, "आओ, महेश तो घर है नहीं और पारो के सिर में दर्द हो रहा है।"

"मुझे उसके पिताजी से काम है।"

"वे घूमने गए हैं। अभी आते होंगे। आओ, बैठ जाओ।"

चेतनानन्द भीतर बैठक में जा पहुँचा और एक कुर्सी पर बैठ गया। पार्वती ने दरवाजे का खटखटाना सुन लिया था और चेतनानन्द की आवाज पहचान नीचे आ गई। माँ ने उसे आया देख कहा, "लो पारो तो आ गई है। सिर दर्द कैसा है बेटी !"

"अभी तो है माँ !"

माँ उन दोनों को वहीं छोड़ बिस्तर लगाने भीतर चली गई। चेतनानन्द ने अपनी देरी से आने की सफाई दे दी—"आज कांग्रेस पार्टी की मीटिंग थी। विचार था कि दो घण्टे में समाप्त हो जावेगी और मैं यहाँ छः बजे पहुँच जाऊँगा; परन्तु मीटिंग इतनी लम्बी हुई कि नौ वहीं बज गए। वहाँ से छुट्टी पा सीधा मोटर में यहाँ ही आ रहा हूँ।"

"आपको आज तो देरी नहीं करनी चाहिए थी। मेरा दिल धक-धक कर रहा है और इस अनिश्चित अवस्था से दिल पर बोझा अनुभव हो रहा है।"

"पारो प्रिये ! मैं क्षमा चाहता हूँ। आज सब निश्चय करके ही जाऊँगा।"

"मेरा तो सिर घूम रहा है। पता नहीं क्यों, मेरे मन में सन्देह हो रहा है।"

"यह तुम्हारे संस्कारों के कारण ही है। वे ही भूत बनकर तुम्हें डरा रहे हैं।"

इस समय महेश और रेवा भी आ गए। "ओह भैया यहाँ हैं ?" रेवा ने कहा, "हमें आपके यहाँ होने की आशा नहीं थी।"

"कहाँ से आ रहे हो दोनों ?"

"हम 'राही' चित्र देखने गए थे।" महेश ने कहा।

इस समय पार्वती की माँ बिस्तर लगा बैठक में लौट आई। उसने महेश को देख कहा, "देखो, पिताजी के आने से पहले भोजन कर लो।"

"माँ, मैं तो खा आया हूँ।"

"कहाँ से ?"

"होटल में खा लिया है।"

माँ चुपचाप मुख देखती रह गई। वह रेवा के सम्मुख और अधिक कहना नहीं चाहती थी। इसी समय पण्डितजी भी घूमकर लौट आए। सबको बैठक में एकत्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख पूछने लगे, "क्या बात है ?"

"कुछ नहीं," पार्वती की माँ ने कहा, "महेश इत्यादि आए तो दरवाजा खोलने चली आई थी।"

पण्डितजी ने महेश आदि में चेतनानन्द को भी समझ लिया। इस कारण चेतनानन्द से पूछने लगे, "किधर गए थे आप लोग ?"

प्रश्न चेतनानन्द से पूछा गया था। इसलिए महेश ने चुप रहना ठीक समझा। चेतनानन्द ने बात बदलकर कहा, "मुझे आपसे और माताजी से कुछ काम है। मैं आना तो जल्दी चाहता था, परन्तु कांग्रेस पार्टी की मीटिंग में देरी हो गई।"

"हाँ, क्या काम है ?" श्रीधर ने गम्भीर हो पूछा।

"पृथक् में बात करना चाहता हूँ।"

इससे पण्डितजी ने सतर्क हो चेतनानन्द की ओर देखा। फिर कुछ सोचकर कहा, "तो मेरे स्वाध्याय के कमरे में आ जाओ।"

चेतनानन्द ने पार्वती की ओर देखा और उठकर पण्डितजी के साथ चलने को तैयार हो गया। पार्वती भी उठ खड़ी हुई। रेवा ने इस समय सबको गम्भीर हुआ देख कहा, "भैया, मैं जाती हूँ। मेरी मोटर मेरे पास है।" बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए उसने हाथ उठा सबको 'बाई, बाई', कहा और बैठक से बाहर निकल गई।

पण्डितजी ने चेतनानन्द की ओर देखा और कहा, "इधर आ जाओ।"

: ५ :

चेतनानन्द ने पार्वती की माता को भी बुला लिया। महेश अपने कमरे में चला गया। पण्डित जी अपने स्वाध्याय करने के कमरे में पहुँच तख्तपोश पर बैठ गए। पार्वती की माँ उनके समीप बैठ गई। पार्वती और चेतनानन्द तख्तपोश के समीप रखी कुर्सियों पर बैठ गए। पण्डित जी चेतनानन्द की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगे।

चेतनानन्द ने अपनी मन की बात कहनी आरम्भ कर दी, "मैं तीन वर्ष से पार्वती देवी को जानता हूँ और आप भी मुझे कई बार मिल चुके हैं। हमने परस्पर विचार-विनिमय कर विवाह करने का निश्चय किया है। अगले रविवार सायं चार बजे विवाह संस्कार का समय निश्चित हुआ है।"

पण्डितजी ने सुना और माथे पर त्यौरी चढ़ा ली। चेतनानन्द चुपचाप अपने कथन का उत्तर सुनने की प्रतीक्षा करने लगा। पार्वती का मुख सूख गया था और वह भूमि की ओर देख रही थी। पार्वती की माँ का मुख विस्मय में खुला रह गया था।

सबसे पहले श्रीधर कर्तव्यारूढ़ हुआ। उसने अपनी डायरी उठाई और उसके पन्ने उलट रविवार का पन्ना निकाला। अपना 'फाऊनटेन पेन' उठा, खोल, पन्ने पर लिख लिया। लिखते-लिखते बोलता गया, 'आज चार बजे सायं, श्री चेतनानन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पार्वती देवी से विवाह करेंगे।'

पण्डितजी ने इतना लिख कलम और डायरी को बन्द कर उन्हें अपने-अपने स्थान पर रख चेतनानन्द से कहा, "सूचना के लिए अति धन्यवाद है चेतनानन्द ! अब तुम जा सकते हो।"

चेतनानन्द इस व्यवहार के लिए तैयार नहीं था। वह तो समझता था कि या तो पण्डितजी उनके विवाह के निश्चय पर आपत्ति उठाएँगे अथवा विवाह सम्बन्धी प्रबन्ध पर बातचीत करेंगे। दोनों में से कोई बात नहीं हुई। पण्डित जी ने डायरी पर ऐसे लिखा, जैसे किसी साधारण परिचित के घर विवाह हो। चेतनानन्द चाहता था कि कुछ और कहे परन्तु पण्डितजी के कहने पर कि वह जा सकता है, विवश वह उठा, हाथ जोड़ नमस्कार कह बाहर चला आया। पार्वती भी उसके पीछे-पीछे बाहर निकल आई। बाहर बैठक में पहुँच चेतनानन्द ने पार्वती से कहा, "कल मध्याह्न के भोजन के समय आना। मैं अपने माता-पिता को सूचित कर देना चाहता हूँ।"

पार्वती पत्थर की मूर्ति की भाँति खड़ी थी। उसका गला सूख गया था और उसके मुख से आवाज नहीं निकल रही थी। चेतनानन्द ने पार्वती का हाथ पकड़ दबाया, नमस्कार कही और चला गया।

पार्वती बैठक में कितनी ही देर तक खड़ी रही और अपने पिता के व्यवहार पर विचार करती रही। वह समझ नहीं सकी थी कि पिताजी प्रसन्न हैं अथवा रुष्ट। उसे चेतना तब हुई जब उसकी माँ ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "पारो।"

पार्वती ने घूमकर माँ की ओर देखा। माँ ने कहा, "जाओ आराम करो। सिर-दर्द बढ़ जाएगा।"

रात सोने के समय पार्वती की माँ ने अपने पति से पूछा, "पार्वती के विषय में क्या सोचा है आपने ?"

"मुझे सोचने के लिए कहा ही किसने है ?"

"फिर भी आप बड़े हैं। बच्चों का ख्याल रखना आपका काम है।"

"जब बालक वयस्क हो जाते हैं तो उनको अधिकार हो जाता है कि वे अपने माता-पिता की अवहेलना कर सकें।"

"वे बच्चे हैं। आपको तो बचपना नहीं करना चाहिए।"

"देखो, पारो की माँ ! मेरे पास न तो समय है कि मैं किसी निश्चित बात पर पुनः विचार करूँ, न ही मेरा अधिकार रहा है। जाओ, सो जाओ।"

पं० श्रीधर कड़ा नियन्त्रण रखने वाले थे। इस कारण उनकी बात को न करने की शक्ति किसी में नहीं थी। माँ चुपचाप वहाँ से निकली और पारो के कमरे में जा पहुँची। पार्वती लैम्प बुझा खाट पर लेटी रो रही थी। उसने, अब तक, मन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण परिस्थिति का विश्लेषण कर लिया था। इस विषय में, उसके पिता की स्पष्ट अस्वीकृति थी। इस कारण, पिता की इच्छा का उल्लंघन करे अथवा न करे, विचार कर वह रो पड़ी थी। आज तक घर में किसी ने भी पिता की इच्छा का विरोध नहीं किया था।

माँ कमरे में दबे पाँव पहुँची। अँधेरे में पार्वती को सिसकियाँ भरते सुन एक-दो क्षण चुप खड़ी रही। तत्पश्चात् उसने, स्विच दबा, लैम्प जला दिया। प्रकाश होने पर पार्वती ने उठकर माँ को खड़े देखा तो और भी विह्वल होकर रोने लगी। माँ उसकी चारपाई पर बैठ गई और उसकी पीठ पर हाथ फेर पूछने लगी, "पारो बेटा, रोती क्यों हो?"

"मैं क्या करूँ माँ, समझ में नहीं आता। पिताजी नाराज हैं। मैं उनकी इच्छा का विरोध कैसे करूँ?"

"देखो बेटी, यदि तुम्हारी इच्छा उससे विवाह करने की है तो कर लो। पिताजी मान जाएँगे। इसमें रोने की कोई बात नहीं।"

"माँ, तुम क्या समझती हो?"

"मैं तो तुम्हारे जितना पढ़ी-लिखी नहीं हूँ। मेरी माँ ने तुम्हारे पिता को देखा, पसन्द किया और मेरा विवाह कर दिया। मैंने अपनी माँ की समझ पर विश्वास किया और खुशी-खुशी ससुराल चली आई। तुम्हारे पिता देवता हैं। उन्होंने कभी भी मुझसे कठोर बात नहीं कही।"

"माँ, मेरा दिल तो करता है, परन्तु पिताजी की अस्वीकृति खलती है।"

"तुम चिन्ता न करो बेटी। मैं उनसे कल बात करूँगी।"

: ६ :

अगले दिन जीवनलाल के घर एक और ही घटना घटी। पार्वती मध्याह्न के समय वहाँ पहुँची तो चेतनानन्द उसे अपनी माँ के सम्मुख ले गया और कहने लगा, "माँ! हमारा विवाह इस रविवार को होना निश्चित हुआ है।"

माँ ने आशीर्वाद दिया और इस पर प्रसन्नता प्रकट की। परन्तु जब चेतनानन्द ने अपने पिता के सम्मुख पार्वत को ले जाकर यही बात कही तो उन्होंने कहा, "मूर्ख, किसी सभ्य-समाज में बैठे होते तो बात करने का ढंग जानते।"

"पिताजी! कौन-सी असभ्यता की बात हो गई है?"

"तुम विवाह करोगे?"

"हाँ, पिताजी?"

"किससे?"

"पार्वती देवी से।"

"इनके पिताजी से पूछा है?"

"उनको भी सूचित कर आया हूँ। मैं समझता हूँ कि यह पर्याप्त है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो ठीक है। विवाह कर सकते हो, परन्तु विवाह करोगे कहाँ?"

"यहाँ, इस घर पर।"

"नहीं, यहाँ नहीं कर सकते।"

"क्यों?"

"मेरी इच्छा है।"

"पर माताजी ने तो आशीर्वाद दे दिया है।"

"यह ठीक है, पर घर मेरा है। तुम्हारी माता का नहीं।"

"यह कैसे?"

"यह उसी कानून से, जिसके अनुसार तुम बालिग हो, अपना विवाह अपनी इच्छा से करने योग्य हो।"

"मैं समझ नहीं सका पिताजी।"

"देखो, अंग्रेजी कानून से तुम बालिग हो और अपना विवाह स्वयं कर सकते हो। उसी अंग्रेजी कानून से मैं सम्पत्ति का स्वामी हूँ और तुम्हारी माँ केवल स्त्री-धन की। यह मकान उस स्त्री-धन का भाग नहीं है।"

"तो हम विवाह किसी अन्य स्थान पर कर लेंगे।"

"तुम स्वतन्त्र हो।"

चेतनानन्द अपमान से भरा हुआ पिता के कमरे से बाहर चला गया। उसका विचार था कि पार्वती उसके साथ ही बाहर निकल आएगी, परन्तु वह वहीं भूमि की ओर देखती हुई खड़ी रह गई। जीवनलाल ने जब लड़की को खड़े देखा तो पूछा, "क्यों बेटी! तुम क्या चाहती हो?"

"पिताजी! मैंने क्या अपराध किया है!"

"मेरे मूर्ख पुत्र को वरने की इच्छा की है।"

"मैंने तो उन्हें श्रेष्ठ मानकर वरा है।"

"तो तुम भूल कर रही हो बेटी।"

इस समय चेतनानन्द की माँ जो बाहर खड़ी सब कुछ सुन रही थी, भीतर आ गई और क्रोध में कहने लगी, "यह आपने क्या कहा है कि मकान पर मेरा अधिकार नहीं है? विवाह के समय तो आपने अपनी प्रत्येक वस्तु मेरे साथ बाँटकर प्रयोग करने का वचन दिया था।"

"ठीक है। पर उसी समय तुमने भी वचन दिया था कि तुम मेरी आज्ञानुसार चलोगी।"

"तो औरतों की आजादी का क्या हुआ?"

"वह विवाह के वचनों में नहीं थी।"

"इसी से तो हम औरतें अपनी आजादी चाहती हैं।"

"देखो चेतन की माँ! जितनी आजादी मैंने दे रखी है उससे अधिक तुम्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं नहीं मिलेगी;. परन्तु तुम तो दोनों बातें चाहती हो। आम खाना भी चाहती हो और रखना भी।"

"मैं आपकी बातें नहीं समझती। चलो बेटी, बाहर आ जाओ। ये सठिया गए हैं।" उसने पार्वती को बाँह से पकड़कर बाहर ले जाते हुए कहा।

जीवनलाल अपने काम में लग गया। वह देशीय ओषधियाँ विदेश भेजने का काम करता था। यह कार्य युद्ध के कारण बहुत दिनों से बन्द था और अब पुनः आरम्भ हो रहा था।

चेतनानन्द बिना इस बात का विचार किए कि उसका पिता इस विवाह के विरुद्ध है, इसकी तैयारी करता गया। इसमें उसकी माँ उसको प्रोत्साहन दे रही थी।

विवाह, स्पेशल मैरेज ऐक्ट के अनुसार, करने का प्रबन्ध किया गया। मैजिस्ट्रेट की फीस ज़मा करा दी गई और नगर कांग्रेस कमेटी के कार्यालय में विवाह की रस्म करने का आयोजन हो गया।

चेतनानन्द के पिता ने स्पष्ट कह दिया था कि वह विवाह पर नहीं जाएगा। उसकी माँ और बहिन दोनों जाने वाली थीं। पार्वती इस सबमें ऐसे तैयारी कर रही थी जैसे कोई निर्जीव वस्तु धकेलकर ले जाई जा रही हो। उसकी माँ ने उसे इतना बता दिया था कि उसके पिता दर्शक के रूप में विवाह में जाने का विचार रखते हैं, पिता के रूप में नहीं। वह स्वयं भी उनके साथ वहाँ उपस्थित होगी।

पार्वती ने, उस रात के पश्चात्, जब चेतनानन्द ने विवाह करने का निश्चय उसके पिता को सुनाया था, पिता के सम्मुख उपस्थित होना ठीक नहीं समझा। उसे लज्जा और भय प्रतीत होता था। वह समझती थी कि उसे देखते ही पिताजी का क्रोध फूट पड़ेगा और उसे भय था कि कहीं श्राप न दे बैठें।

विवाह से एक दिन पूर्व, अर्थात् शनिवार तक तो वह अपने निश्चय पर दृढ़ थी। फिर भी धीरे-धीरे, उसका मन दुर्बल पड़ता जाता था। उसके पिता ने उनको आशीर्वाद देने में अरुचि प्रकट की थी। चेतनानन्द के पिता ने तो स्पष्ट अपना विरोध प्रकट किया था। उनकी उस दिन की बात, 'मेरे मूर्ख पुत्र को वरकर भूल कर रही हो,' वार-बार उसके मन में आ रही थी। चेतनानन्द ने उसे समझाया था कि उसके पिता उसके कांग्रेस में कार्य करने के कारण उससे क्रुद्ध हैं। पर पार्वती को इस पर विश्वास नहीं होता था।

शनिवार को वह स्कूल को जाने लगी तो चेतनानन्द मकान के बाहर मोटर लिये खड़ा था। वह उसे मोटर में बैठा स्कूल छोड़ने गया। मार्ग में उसने रविवार का कार्यक्रम समझा दिया। उसने बताया, "कल सायं चार बजे मैजिस्ट्रेट नगर कांग्रेस कमेटी के कार्यालय में आएगा। तीन बजे रेवा मोटर ले तुम्हें लेने आएगी और ठीक पौने चार बजे तुम उसके साथ वहाँ पहुँच जाना। मैं स्वयं तुम्हें लेने नहीं आऊँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GA GUR-V
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Central Library
167984
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

"विवाह के पश्चात् वहीं पर चाय-पार्टी का प्रबन्ध है। चाय-पार्टी के पश्चात् हम सीधे हवाई जहाज के अड्डे पर पहुँच जाएँगे। वहाँ मैंने दो सीटें बम्बई के लिए रिज़र्व की हुई हैं। सोमवार प्रातः हम बम्बई पहुँच जाएँगे। वहाँ ताज होटल में मैंने एक डबल-सीटर कमरा आठ दिन के लिए रिज़र्व करया रखा है।"

पार्वती ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप सुन रही थी पर भीतर ही भीतर उसे यह सब कुछ विचित्र प्रतीत हो रहा था।

चेतनानन्द कुछ समय तक उसके मनोभावों का अनुमान लगाता रहा। तत्पश्चात् बोला, "पारो प्रिये ! ठीक समझ गई हो न। हाँ, तुम्हें घर से कुछ लेकर नहीं आना। तुम्हारे विवाह के समय पहनने के कपड़े और बम्बई में रहने के समय के लिए कपड़े मैंने बनवा लिये हैं। कल के पहनने के कपड़े रेवा तुम्हारे पास लेकर आएगी। बम्बई साथ ले जाने वाले कपड़े हवाई जहाज पर पहुँच जाएँगे।

"यदि तुम्हारे माता-पिता कुछ देना चाहेंगे तो कहना वहाँ पधारें और जो कुछ देना चाहते हैं, स्वयं दें। यदि न देना चाहें तब भी कुछ हानि नहीं। वे आएँ तो उनकी अत्यन्त कृपा होगी।"

पार्वती चुपचाप सुनती रही। उसकी आँखें, माता-पिता की बात सुन, भीग गईं।

: ७ :

रविवार के दिन चेतनानन्द खाना खा, रेवा को पार्वती के लिए कपड़े दे और उसे सब समझा, मोटर में सवार हो कांग्रेस के दफ्तर में जा पहुँचा। दफ्तर के बाहर एक खुला मैदान था। वहाँ पाँच सौ के लगभग लोगों की चाय का प्रबन्ध ऐलफिन्स्टन होटल वालों के द्वारा किया जा रहा था। ऊपर जहाँ मैजिस्ट्रेट के सम्मुख विवाह की रस्म होने वाली थी, रायल-नर्सरी वालों ने कमरा सजाया था। उस कमरे को पुष्प-मंडप का रूप दे दिया गया था।

प्रबन्ध को देख और जहाँ कहीं कोई त्रुटि प्रतीत हुई उसे ठीक करने को कह, वह अपने मित्र मिस्टर सराजदीन पराचा के घर जा पहुँचा।

बैरिस्टर सराजदीन पराचा प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का सदस्य था। जब चेतनानन्द उनके घर पहुँचा तो बैरिस्टर साहब घर पर नहीं थे। उनकी बीवी मुम्ताज बेगम ने चेतनानन्द को बहुत आदर के भाव से बैठाया और कहा, "बैरिस्टर साहब आते ही होंगे, बैठिए।"

चेतनानन्द ने एक सोफा पर बैठते हुए कहा, "बैरिस्टर साहब से तो मिलने का वक्त मुकर्रिर था।"

"तो ठहर जाइए, क्या कुछ पीने को मँगवाऊँ ?"

"हाँ, अगर रैफरिजरेटर में पानी ठण्डा किया हो तो।"

मुम्ताज ने नौकर को आवाज दी और पानी लाने को कह दिया। तत्पश्चात्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर-उधर की बातें होने लगीं।

"आज आप चाय-पार्टी पर आ रही हैं या नहीं ?"

"जी वाह, यह भी खूब कही। 'इन्वाईट' करके भी न करना चाहते हैं आप ?"

"नहीं, नहीं, मेरा यह मतलब नहीं है। मैं पूछ रहा था कि आप भूली तो नहीं। ख़ैर, बैरिस्टर साहब भी तो साथ आ रहे हैं न ?"

"उनकी तो उनसे ही पूछ लीजिएगा। आप बम्बई से कब लौटिएगा ?"

"सिरफ आठ दिन वहाँ रहने का विचार है। बाद में आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी की बैठक दिल्ली में होनी है। वहाँ भी तो जाना है।"

"मिसेज को यहाँ किसलिए छोड़ जाइएगा। क्या वह 'प्रिजैन्टेबल' (दूसरों के सामने लाने योग्य वस्तु) नहीं है ?"

"बहुत सुन्दर है वह ! मुझे डर लगा रहता है कि कहीं किसी की नजर न लग जाए।"

"ओह ! यह बात है। ठीक है, तब तो उसे महफूज (सुरक्षित) रखना ही चाहिए। दिल्ली में तो गाँठ-कतरे बहुत हैं और उसके कतरकर ले जाए जाने का डर करना ही चाहिए।"

"हाँ, मगर अब तो दिल्ली वाले लाहौर में भी आने लगे हैं।"

"और उनमें एक मैं हूँ।"

इस समय सराजदीन साहब आ गए। चेतनानन्द को बैठा देख बहुत स्नेह से हाथ बढ़ाकर मिलाते हुए बोले, "तो आ गए चेतनानन्द ! सुनाओ, सब इन्तजाम ठीक हो गया है या नहीं ?"

"मालूम तो होता है। आप तो आइयेगा न ?"

"सुना है आपके श्वसुर साहब पुराने ख्याल के हिन्दू हैं ?"

"हाँ।"

"तो क्या लड़की भी वैसी ही है ?"

"नहीं, वह निहायत ही आजाद ख्याल वाली लड़की है।"

"मैं चाहता था कि हवाई जहाज के अड्डे पर जाने से पहले हमारे घर को रौनक बख्शते !"

"सो तो है ही। मैं तो यह कहने आया हूँ कि मैं अपनी मोटर गाड़ी यहाँ छोड़ जाऊँगा और आप अपनी गाड़ी में हमको 'एयरोड्रोम' पर छोड़ आइएगा।"

"तो ठीक है। यह पक्की रही।"

चेतनानन्द वहाँ से अपने घर गया। रेवा और उसकी माँ अपने घर से पार्वती के घर को जा चुकी थीं। चेतनानन्द खद्दर के कपड़े पहन और कपड़ों से लदे दो सूट-केस नौकर से उठवा मोटर में रखवा 'एयरोड्रोम' ले गया। वहाँ उनको तुलवा, बुक करवा दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय तीन बज चुके थे। इस कारण वह सीधा परी-महल में कांग्रेस कमेटी के कार्यालय जा पहुँचा। रेवा और उसकी माँ अभी नहीं पहुँची थीं। चेतनानन्द चाय-पार्टी का प्रबन्ध देखने चला गया। वहाँ सब ठीक पा वह कार्यालय की सजावट देखने चला आया। वह बहुत सुन्दर सजाया गया था। एक खम्भे पर रंग-रंग के गुलाब के फूल लगे थे। चेतनानन्द ने एक लाल फूल उतारा और अपनी अचकन के बटन-होल में लगा लिया। इस प्रकार प्रबन्ध से सन्तुष्ट हो मेहमानों के स्वागत के लिए कुछ मित्रों को खड़ा कर स्वयं पार्वती की प्रतीक्षा करने लगा।

ठीक पौने चार बजे पंडित श्रीधर और पार्वती की माँ आए। स्वागत करने वालों ने उन्हें कार्यालय में बैठाया। चार बजे रेवा अकेली मोटर में आई और चेतनानन्द उसे अकेली आते देख लपककर उसके समीप पहुँचा और पूछने लगा, "सब आ गए रेवा?"

"पार्वती आ गई है भैया?" उलटा रेवा ने प्रश्न कर दिया।

"नहीं तो।"

"वह घर पर तो नहीं है। उसकी माँ से मैंने पूछा तो उन्होंने बताया कि दो बजे की गई हुई है। वे तो घर को ताला लगाकर चले आए हैं।"

चेतनानन्द का मुख विवर्ण हो गया। उसका गला सूख गया। उसने भर्राये गले से पूछा, "कहीं पंडित जी ने उसे घर में कैद तो नहीं कर दिया?"

"नहीं भैया! मैं मकान को भीतर और बाहर से देख आई हूँ। महेश मेरे साथ था। वह घर से डेढ़ से अढ़ाई बजे तक अनुपस्थित रहा था और पार्वती उस बीच में घर से निकली थी।

"पार्वती की माताजी विवाह के अवसर पर सोने का एक हार देना चाहती हैं। जब उन्होंने पंडितजी से पूछा तो पंडितजी ने कहा कि वह उसकी माँ का है, वही उसकी स्वामिनी है। यदि चाहे तो दे सकती है। वह हार पार्वती की माताजी अपने साथ लाई हैं। मैं माताजी को महेश के साथ वहाँ घर के बाहर छोड़ आई हूँ और स्वयं यहाँ देखने चली आई हूँ।"

चेतनानन्द के मस्तिष्क में चक्कर आने लगे। वह नहीं समझ सका कि क्या हुआ है।

इतने में सराजदीन साहब अपनी स्त्री मुम्ताज बेगम के साथ आ गए। उन्हें बैठने को कह, वह मोटर में बैठ पार्वती के घर पता करने चला गया। वहाँ उसकी माता तथा महेश घर के सामने खड़े प्रतीक्षा कर रहे थे। वह वहाँ से लौट आया। कांग्रेस कार्यालय में पहुँचा तो मैजिस्ट्रेट आ चुका था। चेतनानन्द को आया देख सब मित्र उससे मिलने के लिए आगे बढ़े। परन्तु वह सबको छोड़ पार्वती के माता-पिता के पास जा पहुँचा। वे पुष्प-मंडप के बाहर खड़े विवाह की रीति के पूर्ण होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। चेतनानन्द ने पार्वती की माता से पूछा, "पार्वती नहीं आई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपको मालूम है कि वह कहाँ है ?"

"हम समझते थे कि वह तुम्हारी ओर गई है ?"

"नहीं, हमारे घर नहीं गई।"

"तो फिर कहाँ गई है ?" पार्वती की माँ के मन में एक भय समा गया। पंडित श्रीधर गम्भीर खड़ा रहा। जब चेतनानन्द घबराया हुआ कांग्रेस कार्यालय से बाहर निकल गया तो पंडित श्रीधर ने अपनी स्त्री से कहा, "कुछ गड़बड़ हो गई है; मूर्ख लड़की कहीं आत्मघात न कर बैठे। कई दिन से मैं उसे चिंतित देख रहा था।"

पार्वती की माँ की आँखों में आँसू छलकने लगे थे। पंडितजी ने देखा तो बोले, "चलो, चलकर पारो का पता करना चाहिए।"

साढ़े पाँच बजे मैजिस्ट्रेट वापस चला गया। मेहमान भी एक-एक दो-दो कर लौट गए। रेवा और महेश एक गाड़ी में लौटे, चेतनानन्द और उसकी माँ दूसरी गाड़ी में। ये सब मोहनलाल रोड वाले मकान पर पहुँच गए। लाला जीवनलाल मध्याह्न का खाना खा घर से चले गए थे और अभी तक लौटे नहीं थे।

चेतनानन्द बैठक में पहुँच सोफे पर ऐसे बैठा जैसे डेढ़ मन का पत्थर लुढ़क पड़ता है। उसकी माँ कपड़े बदलने अपने कमरे में चली गई। रेवा और महेश उसके साथ सहानुभूति प्रकट करने वहीं बैठ गए।

एकाएक चेतनानन्द को स्मरण हो आया कि हवाई जहाज का टिकट वापस किया जा सकता है। उसने घड़ी में समय देखा, हवाई जहाज के जाने में अभी दो घंटे थे। उसने महेश से कहा, "महेश भैया ! मेरा एक काम कर दो। 'एयर इंडिया' के कार्यालय में चले जाओ और ये टिकट वापस कर आओ। दस प्रतिशत काटकर शेष रकम मिल जावेगी। दफ्तर 'माल' पर है और रेवा तुम्हें मोटर पर ले जावेगी।"

इतना कहकर उसने अपनी जेब से दो टिकट निकालकर महेश को दे दिए। महेश और रेवा जाने लगे तो चेतनानन्द ने एक बात और कह दी, "ताज बम्बई में तार कर देना कि चेतनानन्द ने जो कमरा रिजर्व किया है, कैन्सिल कर दें।

"जाओ भैया ! यह काम कर दो। एक हजार फोकट में जाता बच जाएगा।"

रेवा और महेश कमरे से बाहर निकल आए। रेवा अपने कमरे में गई तो महेश भी उसके साथ था। उसने पेट्रोल के 'कूपन' निकालने के लिए, मेज का दराज खोला तो उसमें आठ-नौ सौ रुपए के नोट पड़े दिखाई दिए। रेवा रुपयों को देख सोचने लगी। एकाएक उसने नोट उठा अपने पर्स में रख लिये और महेश को साथ ले नीचे उतर आई।

मकान के नीचे गराज में मोटर गाड़ी रख दी गई थी। रेवा दो क्षण तक गराज के बाहर खड़ी विचार करती रही, तत्पश्चात् बोली, "ताँगे में चलेंगे। जितनी देर पेट्रोल डलवाने में लगेगी, उतनी देर में तो हम ठिकाने पहुँच जावेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान से महेश और रेवा मोरी दरवाजे की ओर चल पड़े। कुछ दूर जाने पर ताँगा मिला तो दोनों सवार हो माल पर जा पहुँचे। वहाँ पहुँच रेवा ने हवाई जहाज के कार्यालय के क्लर्क से पूछा, "कार्यालय की बस कितनी देर में 'एयरोड्रोम' जावेगी ?"

क्लर्क ने पूछा, "आपका नाम ?"

"मिस्टर और मिसेज आनन्द।"

"हाँ, आपकी सीटें रिजर्व हैं।"

महेश रेवा की बात सुनकर हँसने वाला था कि रेवा ने अपना पाँव उसके पाँव पर रखकर उसे संकेत कर दिया। वह अचम्भे में मुख देखता रह गया। कार्यालय के क्लर्क ने बताया, "बस जाने में अभी डेढ़ घंटा है। ठीक साढ़े सात यहाँ से जावेगी।"

रेवा ने कलाई पर बँधी घड़ी देखी और कहा, "अच्छी बात, उससे पहले हम आ जावेंगे।" तत्पश्चात् उसने महेश की ओर घूमकर कहा, "चलिए, खाना खा लें।"

महेश 'किंकर्तव्यविमूढ़' की भाँति रेवा की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखता रहा। वहाँ से बाहर आ, उसने पूछा, "मैं कुछ नहीं समझा ?"

"मेरी इच्छा बम्बई सैर करने जाने की हो गई है।"

"मुझको साथ लेकर ?"

"हाँ, देखिए महेश जी, ताज होटल में कमरा रिजर्व है। वहाँ हम पति-पत्नी बनकर रहेंगे।"

"वंडरफुल !" महेश ने खड़े हो रेवा की आँखों में देखते हुए कहा। रेवा ने महेश का हाथ पकड़ दबाते हुए कहा, "आज की दुर्घटना से मुझे यह प्रतीत हो रहा है कि हमारे विवाह की भी स्वीकृति हमारे माता-पिता नहीं देंगे। मेरी माताजी आपको अभी तक आदर की दृष्टि से देखती थीं। वह अब आपकी बहिन की करतूत के कारण आपसे घृणा करने लगेंगी।

"ऐसी अवस्था में हमें अपना विवाह स्वयं ही कर लेना चाहिए। बाद में माँ अवश्य, अपना नाक रखने के लिए, पिताजी से आपके कारोबार के लिए धन दिलवा देंगी।"

महेश का मस्तिष्क इतने साहस की बात सुन घूमने लगा। वह चुप रहा। दोनों 'फैलटीज होटल' में जा खाना खाने लगे। महेश अति गम्भीर हो अनिश्चित माधुर्य के पाने की आशा में स्वप्न देखने लगा था। रेवा ने उसे गम्भीर देख पूछा, "आपको पसन्द नहीं आई मेरी योजना ?"

"भला इसमें न पसन्द करने की बात ही क्या है ? मगर मैं सोचता हूँ कि क्या इतनी मीठी और सुनहरी बात सत्य होगी ?"

"यत्न करना हमारा काम है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ८ :

जीवनलाल ने देखा कि जब विवाह जैसी बात में भी चेतनानन्द उससे राय करने को तैयार नहीं है तो उसके मन में यह बात बैठ गई कि उसकी स्त्री सुभद्रा और उसका लड़का तथा लड़की उसे मूर्ख समझते हैं। इस कारण उसने उन लोगों से पृथक् हो, अपने काम-धन्धे और अपनी सम्पत्ति के प्रबन्ध की योजना बनानी आरम्भ कर दी।

दो दिन में उसकी योजना बन गई। उसने अपनी सम्पत्ति की सूची बना डाली और वसीयत लिखने का विचार स्थिर कर लिया।

उसका एक लंगोटिया मित्र पंडित अम्बिकाप्रसाद था, जो हाईकोर्ट का वकील रह चुका था। अब काम-धन्धा छोड़ वानप्रस्थ लिये हुए था। फिर भी कभी-कभी किसी सिद्धान्तात्मक बात पर कोई मुकदमा आ जाता तो सिद्धान्त की प्रतिष्ठा स्थिर रखने के लिए निःशुल्क ही भिड़ जाता था।

अम्बिकाप्रसाद आयु बड़ी हो जाने के कारण कुछ झक्की अवश्य हो गया था, फिर भी उसका मस्तिष्क खूब चलता था। गम्भीर-से-गम्भीर कानूनी पेंचों का विश्लेषण इस प्रकार करता था कि न्यायाधीश दाँतों तले उँगली दबा लेते थे।

पंडित अम्बिकाप्रसाद और जीवनलाल आर्यसमाज के प्राचीन सदस्यों में थे। तब से दोनों में मित्रता थी। जीवनलाल का अब दूसरा विवाह हो चुका था। उसकी पहली स्त्री दस वर्ष तक निस्सन्तान विवाहित जीवन व्यतीत कर स्वर्गवास कर गई थी। उसका दूसरा विवाह राय साहब कमल नारायण की लड़की सुभद्रा से हुआ था।

जिस दिन चेतनानन्द ने अपने विवाह करने की सूचना दी, उसके तीसरे दिन जीवनलाल ने पंडित अम्बिकाप्रसाद को टेलिफोन पर अपनी इच्छा प्रकट कर दी। उसने कहा, "मेरा विचार वसीयत लिखने का है और आपसे उसमें सहायता चाहता हूँ।"

"ओह! बहुत रुपया इकट्ठा कर लिया प्रतीत होता है।" अम्बिकाप्रसाद ने व्यंग्य के भाव में कहा।

"हाँ, आप जैसे मित्रों के आशीर्वाद से।"

"पर लाला जीवनलाल! एक ही तो लड़का है, फिर यह झगड़ा करने का क्या प्रयोजन?"

"बात यह है कि पुत्र को शिक्षा-दीक्षा देकर योग्य बना देना तो पिता का कर्तव्य है, पर उसकी सब बेहूदगियों के लिए उसे धन देना पिता के कर्तव्यों में नहीं आता। यह धन उनको मिलना चाहिए जो इसके अधिकारी हैं और जिन्होंने इसके पैदा करने में सहायता दी है।"

"तो यह बात है।" अम्बिकाप्रसाद ने हँसी में कहा, "परन्तु मित्र! यह धन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपार्जन करने में कौन-कौन सहायक हुए हैं ?"

"बहुत लोग हैं। शायद पूर्ण हिन्दू-समाज है। इतना तो निश्चय ही है कि मेरी स्त्री, मेरी लड़की और लड़का इसमें कोई भाग नहीं रखते।"

"अच्छी बात है।" वकील साहब ने कह दिया, "आप रविवार के दिन आ जाइए। मध्याह्न का भोजन यहीं करिएगा। तत्पश्चात् आपका काम कर दूँगा।"

"भोजन की छोड़िए, आपका···?"

"भाई ! बहुत दिन के बाद ऐसा अवसर मिला है। ठीक है न ?"

जीवनलाल ने कुछ विचारकर कहा, "अच्छी बात है, परन्तु ऐसा करिए। मैं मध्याह्नोपरान्त आऊँगा और रात के खाने तक ठहरूँगा।"

बात तय हो गई।

रविवार दो बजे चपरासी उन्हें अम्बिकाप्रसाद के बैठक-खाने में ले गया। वकील साहब खाना खा आधा घण्टा आराम कर चुके थे। जीवनलाल को एक कपड़े में, अपने कारोबार के रजिस्टर और लेखा-जोखा के अन्य कागजात लपेटे हुए लाते देख वे हँस पड़े और बोले, "तो यह पापों की गठरी यहाँ उठा लाए हैं, जीवनलाल !"

जीवनलाल ने अपना बस्ता मेज पर रखते हुए कहा, "भाई अम्बिकाप्रसाद, यहाँ के हाईकोर्ट से तो कितने ही अपराधियों को छुड़ाया होगा। अब जरा हमारा मुकदमा बड़े न्यायालय में कर हमें मुक्त कराओ तो जानें।"

पण्डित अम्बिकाप्रसाद ने खिलखिलाकर हँसते हुए कहा, "वहाँ से छूटना सुगम है। यहाँ के न्यायाधीश तो केवल न्याय करना जानते हैं और भगवान तो दयानिधि भी हैं। प्रायश्चित करने पर मनुष्य दया का भागी बन जाता है।"

"प्रायश्चित के निमित्त ही तो यह वसीहत लिखने आया हूँ। आप चेतनानन्द को तो जानते ही हैं। उसकी एक बहिन भी है। उसका नाम रेवा है। दोनों को उनकी माँ ने बिगाड़ रखा है। एक तो विकृत राजनीति में कूद पड़ा है, और दूसरी क्लब, डांसिंग और सिनेमा की शौकीन हो गई है।

"लड़का कांग्रेस टिकट पर प्रान्तीय धारा-सभा में सदस्य बन भगवान ही बन बैठा है। मुझे उसकी बेहूदगियों पर आपत्ति न होती यदि वह पारिवारिक जीवन पर विश्वास रखता। मैंने खून-पसीना एक कर धन कमाया है और वह उस धन के बल-बूते पर परिवार की भावना को ही मिटाना चाहता है। मुझे यह सह्य नहीं है। एक दिन एक लड़की को मेरे सामने खड़ा कर बोला, 'मैं इस रविवार को इससे विवाह कर रहा हूँ। आप पधारिएगा।' बताइए, जो पुत्र, पिता को जब इस प्रकार अपने विवाह की सूचना देता है तो परिवार कहाँ गया और फिर पिता उस परिवार के लिए क्यों कुछ करे ?

"अब लड़की की बात भी सुन लीजिए। मुझको 'पापा' और माँ को **'मम्मी'**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहती है। क्लब जाने के अतिरिक्त और कुछ काम नहीं। सिर के बाल कटवा लिए हैं और सज-धजकर शुतरबेमुहारों की भाँति घूमती-फिरती है।

"मैं समझता हूँ कि ये दोनों मेरी मेहनत के भागी नहीं हो सकते। इस कारण मैंने वसीयत लिख देनी उचित समझी है।

"मेरे पास सब सम्पत्ति तीस लाख रुपये से ऊपर है। अचल सम्पत्ति पन्द्रह लाख की है और चल सम्पत्ति बैंकों तथा 'डिफैंन्स-बांड्ज' अथवा शेयर्ज में दस लाख के लगभग है। पाँच लाख मेरा व्यापार में लगा हुआ है।

"इसको मैं इस प्रकार देना चाहता हूँ। मेरी सब अचल सम्पत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा को वेद-प्रचार के लिए, मेरी चल सम्पत्ति की आय में से मेरी स्त्री को दो सौ रुपये मासिक उसके मरणपर्यन्त; मेरी लड़की के विवाह पर खर्च के अतिरिक्त और कुछ नहीं। चेतनानन्द की स्त्री पार्वती को दो सौ रुपए मासिक आजीवन। तत्पश्चात् वह धन भी आर्य प्रतिनिधि सभा को वेद-प्रचार के लिए मिल जाए। मेरा व्यापार में लगा धन, मेरे मरने के पश्चात् व्यापार में कार्य करने वाले कर्मचारियों में उस अनुपात में, जिसमें वेतन मिलता हो, बाँट दिया जाए।

"मेरे रहने के मकान में मेरी स्त्री, जब तक रहना चाहे रह सके। पश्चात् यह भी वेद-प्रचार के लिए जावे।"

"इस सबका क्या मतलब है जीवनलाल ?"

"यह धन बहुत रुचि से एकत्रित किया था, परन्तु अब इसके भोगने में रुचि नहीं रही। यह सब राय साहब की लाड़ली ने बिगाड़ दिया है। उसे मेरा सीधा-सादा पहरावा पसन्द नहीं, मेरी पंजाबी में बातें पसन्द नहीं, मेरा आर्यसमाज में जाना और भगवान में मेरी निष्ठा पसन्द नहीं। मैं व्यापार में लगा रहा हूँ और उसने लड़के-लड़की को अपने ही साँचे में ढाल दिया है।

"मुझको ऐसा प्रतीत हो रहा है कि एक दिन माँ-बेटा मुझे सत्तर-बहत्तर गया घोषित कर मकान में बन्द कर देंगे और रोटी का टुकड़ा ऐसे डाल दिया करेंगे जैसे किसी जानवर को डाल दिया जाता है। जो मुझसे विवाह जैसे कार्य में राय लेना पसन्द नहीं करते, वे भला मेरे बुढ़ापे में मेरी क्या परवाह करेंगे ?"

विवाह की चर्चा सुन पण्डित अम्बिकाप्रसाद गम्भीर हो पूछने लगा, "और तो सब ठीक है; परन्तु यह चेतनानन्द की बीवी का जन्म-भर का प्रबन्ध करने में क्या प्रयोजन है ?"

"एक भले घर की भोली-भाली लड़की को वरगलाकर विवाह कर यह उसे कष्ट देगा। ऐसी मेरी कल्पना है।"

"किसकी लड़की है वह ?"

"आप जानते तो हैं उन्हें। पण्डित श्रीधर जिन्होंने सांख्य-मीमांसा नामक पुस्तक लिखी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह ! तो यह बात है। अब समझा हूँ। परन्तु···अच्छा ठहरो।"

पण्डित अम्बिकाप्रसाद ने मेज पर रक्खी घण्डी बजाई और चपरासी के आने पर बोले, "मीरा देवी को बुला लाओ।"

जीवनलाल इस बात को समझ नहीं सका और विस्मय में मित्र का मुख देखता रहा। पण्डित अम्बिकाप्रसाद मुस्करा रहा था।

मीरा आई तो उसे सम्मुख रखी कुर्सी पर बैठने को कह वकील साहब ने उस का परिचय जीवनलाल को करा दिया, "यह मेरी दूसरी लड़की है। विधवा है और सनातन धर्म कन्या विद्यालय में मुख्याध्यापिका है। श्रीधर जी की लड़की पार्वती इन्हीं के विद्यालय में पढ़ाने का कार्य करती है।"

तत्पश्चात् मीरा को जीवनलाल का परिचय करा दिया, "देखो बेटी मीरा, यह मेरे चिरकाल के मित्र लाला जीवनलाल हैं। कल जिस अध्यापिका की कथा तुम सुना रही थीं, वह इनके लड़के से विवाह करने वाली है। इन्होंने उसके लिए अपनी वसीयत में दो सौ रुपये मासिक लिख दिए हैं। मैं समझता हूँ मीरा, तुम उसे बता सकती हो जिससे उसे विवाह करने में संकोच न हो।"

"परन्तु पिताजी !" मीरा ने आँखें नीची किए हुए कहा, "पार्वती तो विवाह कराने के स्थान भागकर आ गई है और विवाह न कराने का निश्चय कर बैठी है।"

"विवाह नहीं कराएगी !" लाला जीवनलाल ने अचम्भे में पूछा।

मीरा ने सिर हिला अपने कहने का समर्थन व्यक्त कर दिया।

"तो उसे दो सौ रुपये मासिक के स्थान पर पाँच सौ मासिक मिलने का विधान कर दीजिए।"

"वाह !" पण्डित अम्बिकाप्रसाद ने चकित हो कहा।

लाला जीवनलाल ने वैसे ही गम्भीर भाव धारण रखते हुए कहा, "पण्डितजी, मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि लड़की को चेतनानन्द की बेहूदगी का ज्ञान हो गया है। उसने चेतनानन्द को शायद इसलिए वरने का विचार किया होगा कि वह एक धनी का पुत्र है और अब उसके वरने का विचार छोड़ भारी त्याग कर रही है। मैं इस त्याग का फल उसे देना चाहता हूँ।"

पण्डित अम्बिकाप्रसाद ने मीरा से पूछा, "तुम तो कहती थीं कि वह अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध विवाह के लिए जा रही है।"

"जी, कल तक उसका यही विचार था। मैंने उसे यह सम्मति दी थी कि ऐसी अवस्था में उतावली करना उचित नहीं। विचार कर और अपने आचरण से अपने बड़ों को अपने अनुकूल कर लेना चाहिए। वह इस बात को मानती थी, परन्तु कहती थी कि विवाह कर लेना भी तो आचरण है और इससे दोनों के माता-पिता शीघ्र उनके विचारों के अनुकूल हो जाएँगे। यद्यपि मैंने कहा था कि यह उन्हें विवश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके बात मनाने का आयोजन है। जिस विषय में उन्हें अपने अनुकूल बनाना है, उसे करने के उपरान्त अनुकूल करने का यत्न करना तो उनका अपमान करना हो जावेगा। इस पर भी वह नहीं मानी थी।

"मुझे उसने अपने घर बारह बजे बुलाया था। मैंने वहाँ जाना उचित नहीं समझा और नौकर के हाथ कहला भेजा कि मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। वह नौकर के साथ ही यहाँ चली आई है। कहती है कि उसे मेरे कहने में सार प्रतीत होता है। वह विवाह पर नहीं जाएगी।"

"तो वह अब यहाँ पर है?" जीवनलाल ने पूछा।

"जी हाँ।"

"उसे तुम यहाँ बुला सकती हो?"

"मैं कह नहीं सकती कि वह यहाँ आना पसन्द करेगी या नहीं।"

"उसे कहोगी कि मैं बुलाता हूँ तो शायद आवे। मैं उसके इस निश्चय का कारण जानना चाहता हूँ।"

पार्वती आई तो पण्डित अम्बिकाप्रसाद ने उससे पूछना आरम्भ कर दिया, "तो तुम विवाह पर नहीं जा रहीं?"

पार्वती आँखें नीची किए बैठी थी। उसने उसी प्रकार बैठे हुए कह दिया, "जी नहीं।"

"क्या हम जान सकते हैं, क्यों?"

"लालाजी ने जो कहा था कि मैं उनके मूर्ख पुत्र को वरकर मूर्खता कर रही हूँ।"

इस पर लाला जीवनलाल ने कहा, "पर यह तो कितने ही दिन की बात है। आजकल में कोई नई बात हुई है क्या?"

"जरा मोटी बुद्धि है, सोच धीरे-धीरे आती है।" पार्वती ने वैसे ही आँखें नीची किए, मुस्कराते हुए कहा।

"तो तुम्हें अपनी भूल का ज्ञान हो गया है?"

"जी।"

"अपने आप या किसी के कहने पर?"

"तीन दिन हुए मैंने अपनी माताजी से पूछा था कि वे मेरे विवाह पर आएँगी क्या? तो उन्होंने उत्तर दिया कि वे पिताजी की स्वीकृति के बिना नहीं जाएँगी।

"मैंने पूछा कि क्या उनको इतनी भी स्वतन्त्रता नहीं कि वह अपनी लड़की के विवाह पर अपनी इच्छा से जा सकें? माताजी का कहना था कि मेरा विवाह परिवार का विषय है। एक बाहर के व्यक्ति को घर में ला बैठाने की बात है। इस कारण परिवार की स्वीकृति के बिना ऐसा काम नहीं किया जा सकता। उनका कहना था कि मैंने परिवार के पुरुषों की स्वीकृति बिना यह करने का यत्न किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इस कारण ठीक नहीं किया।

"यह बात थी जो कई दिन से मेरे मस्तिष्क में चक्कर काट रही थी। कल वहिन मीरा जी ने वही बात एक दूसरे ढंग से कही। मैं रात-भर सोचती रही और एकाएक मेरे मन में यह आया कि हिन्दुओं में, विशेष रूप में और साधारण रूप में भारतवासियों में विवाह एक पारिवारिक कार्य है। इसमें परिवार की स्वीकृति आवश्यक है।

"यह विचार कर मैंने विवाह स्थगित करने का निश्चय कर लिया। इसी कारण मैं वहाँ नहीं जा रही।"

: ६ :

चेतनानन्द के कमरे का दरवाजा उसकी माँ ने रात के बारह बजे खटखटाया। वह घबराकर उठा और दरवाजा खोल पूछने लगा, "क्या है माँ ?"

"रेवा कहाँ है ?"

"अपने कमरे में सो रही होगी।"

"वहाँ नहीं है। कांग्रेस कार्यालय से आने के पश्चात् तो मैंने उसे देखा ही नहीं।"

"तो वह हवाई जहाज के दफ्तर से लौटी नहीं ?"

"वहाँ किस काम से गई थी ?"

चेतनानन्द चुप रहा। उसने उठकर हवाई जहाज के कार्यालय में टेलीफोन कर दिया। दफ्तर बन्द था। बहुत देर तक घंटी बजती रही, परन्तु कोई नहीं बोला। अन्त में चिन्तातुर हो उसने माँ से कहा, "मैंने महेश को और उसे हवाई जहाज के कार्यालय में टिकट वापस करने भेजा था। ऐसा प्रतीत होता है कि वे दोनों बम्बई चले गए हैं। रेवा के पास कुछ रुपये थे क्या ?"

"होंगे क्यों नहीं ? घर का सब खर्च तो उसी के पास रहता है।"

"तो चले गए, दोनों चले गए हैं।"

"तुम्हारे पिताजी को कहूँ ?"

"व्यर्थ है। मैं कल बम्बई जाऊँगा और उन्हें पकड़ लाऊँगा।"

प्रातःकाल महेश की माँ महेश का पता करने के लिए आई। उसे चेतनानन्द ने यह कहकर टाल दिया कि उसे विशेष काम से बम्बई भेजा गया है।

"हमें कहकर भी नहीं गया ?" महेश की माँ का कहना था।

"यह तो आपके घर वालों का स्वभाव है। पार्वती का पता मिला ?"

"अपनी एक सहेली के घर चली गई थी। उसका विचार विवाह स्थगित करने का हो गया था। महेश कब तक लौटेगा ?"

"तीन दिन में आ जाएगा।"

चेतनानन्द ने महेश के साथ रेवा के भाग जाने की बात उसकी माँ को नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताई। परन्तु लाला जीवनलाल से बात छिपी नहीं रह सकी।

वह जब स्नानादि से छुट्टी पा प्रातः का अल्पाहार करने बैठा, तो उसने रेवा को पूर्ववत् आँखें मलते हुए बिस्तर से उठ आ चाय पीते नहीं देखा। जब उसके विषय में पूछा तो उसकी माँ ने बहाना बनाकर बात को टाल दिया।

"उसे उठाओ, नौ बज रहे हैं।" इतना कह उसने नौकर को आवाज दे दी, "रामू !"

वह आया तो उसे आज्ञा दे दी, "रेवा बीबी का दरवाजा खटखटाकर कहो, बाबूजी बुलाते हैं।"

"आ जाएगी। आखिर जल्दी किस बात की पड़ी है ?"

जीवनलाल ने नौकर को डाँटकर कहा, "जाओ ! दरवाजा खटखटा दो।"

नौकर गया तो आकर कहने लगा, "रेवा बीबी कमरे में नहीं हैं।"

"टट्टी-पेशाब को गई होगी।" माँ ने कह दिया।

जीवनलाल को जल्दी थी। उसे छावनी जाना था और उसकी अपनी गाड़ी मरम्मत के लिए कम्पनी गई हुई थी। इस कारण वह रेवा की गाड़ी में जाना चाहता था। अल्पाहार समाप्त कर उठते हुए उसने रेवा की माँ से कहा, "जल्दी रेवा की गाड़ी की चाबी ला दो। मुझे छावनी जाने के लिए उसकी गाड़ी चाहिए।"

रेवा की माँ उसके कमरे में गई। यदि चाबी पड़ी मिल जाती तो बात बन जाती।

परन्तु चाबी तो रेवा के हैंड-बैग में बम्बई चली गई थी। लालाजी ने मकान के नीचे उतर, 'गैरेज' के बाहर खड़े हो, चाबी की प्रतीक्षा करनी आरम्भ कर दी। जब पन्द्रह मिनट तक चाबी नहीं आई तो उसने ड्राइवर को, जो समीप खड़ा था, कहा, "जाओ भाई ! चाबी ले आओ, देरी क्यों हो रही है ?"

ड्राइवर गया तो वह भी नहीं लौटा। इस पर जीवनलाल स्वयं रेवा के कमरे में जा पहुँचा। वहाँ उसने रेवा की माँ को चीजों को उलट-पुलट करते और चाबी ढूँढ़ते देखा। अब जीवनलाल ने सशंक हो पूछा, "तुम ढूँढ़ रही हो ? रेवा कहाँ है ?"

रेवा की माँ ढूँढ़ना छोड़ चुपचाप खड़ी रह गई। इस पर तो जीवनलाल का सन्देह पक्का हो गया। उसने कहा, "क्या है, चुप क्यों हो, देवीजी ?"

"नीचे अपने कमरे में चलिए, मैं चाबी लेकर आती हूँ।"

जीवनलाल ड्राइवर को वहाँ खड़े देख समझ गया कि कोई गम्भीर बात है, जो उसके सामने नहीं बताई जा रही। वह नीचे बीच की मंजिल में चला गया और रेवा की माँ बिना चाबी के उसके कमरे में पहुँच दरवाजा भीतर से बन्द कर बोली, "रेवा बम्बई गई है।"

"बम्बई, क्यों ?"

"ऐसे ही, घूमने।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कब गई है ?"

"रात हवाई जहाज से।"

"पर चेतनानन्द तो अभी यहीं था। किसके साथ गई है ?"

"म···महे···महेश के साथ।"

रेवा की माँ के मुख का रंग उड़ गया था। जीवनलाल ने त्यौरी चढ़ाकर कहा, "मुझसे झूठ क्यों बोला था ?"

वह चुप रही। जीवनलाल नीचे उतर, भाड़े की टैक्सी मँगवा, काम पर चला गया।

: १० :

चेतनानन्द जब रेवा को लेने बम्बई गया तो उसे उनको ढूँढ़ लेने में कठिनाई नहीं पड़ी। ताज होटल के रजिस्टर में 'चेतनानन्द विद वाइफ' लिखा मिला। वह दिन-भर वहाँ होटल में उनकी प्रतीक्षा करता रहा। रात को खाने के समय दोनों आए तो चेतनानन्द को अपनी प्रतीक्षा करते देख उन्हें विस्मय नहीं हुआ। वे उसके अपने पीछे आने की आशा करते थे। चेतनानन्द उनके साथ ही ठहरा। रेवा ने उसे बता दिया कि उन्होंने विवाह कर लिया है।

"विवाह ? भला यह कैसे ?"

"प्रातःकाल उदय होते सूर्य को नमस्कार कर हमने परस्पर पति-पत्नी होने का वचन दे दिया।"

"बस ?"

"और क्या ?"

"इसकी भी क्या आवश्यकता थी ?" चेतनानन्द ने व्यंग्य में कहा।

"मैं भी यही सोचती थी, पर ये माने ही नहीं।"

अगले दिन चेतनानन्द ने हवाई जहाज के दो टिकट खरीद रेवा से कहा, "चलो।"

"तो आप हमारे साथ नहीं जा रहे क्या ?" रेवा ने चेतनानन्द से पूछा।

"चल तो रहा हूँ।"

"पर टिकट तो दो ही खरीदे हैं ?"

"एक मेरा और एक तुम्हारा।"

"और ये ?" महेश की ओर देखते हुए उसने पूछा।

"ये," चेतनानन्द ने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर कहा, "ये जाएँगे जहन्नुम में।"

"पर भाई साहब," महेश ने गम्भीर हो कहा, "वहाँ भी तो टिकट के बिना नहीं जा सकते।"

"तो संखिया खाकर मर जाओ।"

"उसके लिए भी दाम नहीं हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो मैं क्या करूँ ?" चेतनानन्द ने उसकी ओर पीठ करते हुए कहा।

उत्तर रेवा ने दिया, "भैया, तुम लाहौर जाओ। हम दोनों इकट्ठे ही जहन्नुम में जाएँगे।"

"मैं इसे पुलिस के हवाले कर दूँगा।"

"क्यों ?"

"तो तुम नहीं जानते क्यों ? यह तुम्हें घर से भगाकर लाया है।"

"परन्तु बात इससे उलटी है," महेश ने रेवा की बातों से साहस पाकर कहा।

"चुप रहो," चेतनानन्द ने उसे डाँटकर कहा।

रेवा ने महेश की बाँह में बाँह डालकर कहा, "आज हमारा प्रोग्राम 'ऐली-फेण्टा केव्ज' देखने का है न ? चलो।" फिर चेतनानन्द की ओर घूमकर बोली, "चीयरो !"

चेतनानन्द उनका मार्ग रोक खड़ा हो गया और बोला, "देखो रेवा, बहुत हल्ला न करो। नहीं तो सबके सामने पीट दूँगा।"

"भैया ; तुम क्या करने को कहते हो ?"

"लाहौर वापस चलो।"

"बहुत अच्छा। सायं रेलगाड़ी से लौट चलेंगे।"

"हवाई जहाज से क्यों नहीं ?"

"उसके लिए दाम नहीं हैं।"

"दाम तो मैं दे रहा हूँ।

"हम दोनों का ?" रेवा ने प्रसन्न हो पूछा।

"नहीं ! केवल तुम्हारे टिकट का।"

"तो मैं नहीं जाऊँगी। हम दोनों इकट्ठे जाएँगे।"

रेवा के हठ से चेतनानन्द विवश हो गया। वह एक टिकट और खरीद लाया। तीनों हवाई जहाज में सवार हो लाहौर जा पहुँचे।

लाहौर 'एयरोड्रोम' पर से चेतनानन्द ने हाथ जोड़, मिन्नत कर महेश को अपने घर चले जाने को कहा। रेवा ने भी यही उचित समझा और महेश से कहा, "मैं पत्र लिखूँगी। उसकी प्रतीक्षा करना।"

घर पहुँच उसे माता के सामंने उपस्थित होना पड़ा। माँ ने डाँटकर कहा, "रेवा ! एक लड़के के साथ अकेले जाते तुम्हें लज्जा नहीं लगी ?"

"एक लड़का नहीं, मम्मी, महेश जी थे। हमने विवाह कर लिया है।"

"झूठ है।"

"हाँ, सत्य कहती हूँ। जब हम बम्बई पहुँचे तो सीधे चौपाटी पर गए। वहाँ सागर की तरंगों पर कलोल करती हुई सूर्य किरणों को साक्षी कर हमने पति-पत्नी बने रहने का वचन ले लिया। तत्पश्चात् एक दिन और एक रात पति-पत्नी के रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बम्बई में रहे भी हैं।

"चुप," माता ने डाँटकर कहा, "क्या पागलों की-सी बातें करती हो। विवाह इस प्रकार थोड़े ही होता है?"

"मम्मी! मेरा विवाह महेश जी से हो गया है।"

"नहीं हुआ। तुम्हारा विवाह मैं किसी वहुत धनी के लड़के से करूँगी।"

"तो महेश में क्या खराबी है?" जीवनलाल ने कमरे में प्रवेश करते हुए पूछा।

"आप भी विचित्र बात करते हैं? भला ऐसे लड़के से मैं लड़की का विवाह कैसे कर सकती हूँ?"

"कैसे लड़के से? वह अन्धा है, लँगड़ा है, काना है, क्या खराबी है उसमें?"

"वह गरीब है।"

"तो मैं उसे अमीर कर दूंगा।"

"रेवा से दो वर्ष आयु में छोटा है।"

"यह कोई कारण नहीं।"

"पर आप उसमें क्या विशेषता देख रहे हैं?"

"विशेषता तो तुम्हारी लाड़ली ने देखी है। मैं तो कहता हूँ कि एक हिन्दू लड़की जब किसी की पत्नी हो गई तो जीवन-भर के लिए हो गई। इसे ही तो पतिव्रत-धर्म कहते हैं। यही हिन्दू स्त्री की विशेषता है?"

"आपकी बातें मेरी समझ में नहीं आ रहीं। एक बच्चा भूल कर बैठा, तो बस जन्मभर के लिए फाँसी चढ़ गया?"

"श्रीमती जी! हिन्दुओं में तलाक का रिवाज अभी नहीं चला, जिससे वे भूल सुधार सकें।"

"पर मैं पूछती हूँ विवाह ही कहाँ हुआ है, जो तलाक की बात पैदा हो गई है?"

"वास्तविक विवाह, अर्थात् परस्पर सम्बन्ध तो हो ही गया है। संस्कार ही नहीं हुआ न? सो हम एक-आध दिन में कर देंगे। इसे हमारे शास्त्र में गांधर्व-विवाह कहते हैं।"

"लोगों में हमारी भारी बदनामी हो जावेगी।"

"बदनामी तो हो चुकी है। अब तो बिखरे धान को बटोरने की बात रह गई है।"

परन्तु यह बात सुभद्रा की समझ में नहीं आई और वह रेवा के महेश से विवाह के लिए राजी नहीं हुई।

रेवा को आज विदित हुआ कि उसका पिता कितना विशाल हृदय रखता है। इससे पूर्व, उसकी माँ ने उसके मस्तिष्क में यह बात बैठा रखी थी कि सोसायटी के विषय में उसके पिता को कुछ ज्ञान नहीं है। वे तो धन कमाने की मशीन हैं। न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी क्लब में गए हैं और न ही पढ़े-लिखे सभ्य लोगों में कभी बैठे हैं। आज की बात से रेवा समझ गई कि उसका पिता उसकी माँ से अधिक संसार का ज्ञान रखता है। उसकी सब बातें युक्तियुक्त थीं।

जब जीवनलाल की बात सुभद्रा ने नहीं मानी तो वह कमरे से बाहर निकल गया। फिर कुछ सोचकर लौटा और रेवा से कहने लगा, "जब माँ की बात सुन लो तो मेरे कमरे में आना।"

इतना कह वह कार्यालय में चला गया। रेवा भी पिता के पीछे-पीछे जाने लगी तो रेवा की माँ ने डाँटकर कहा, "देखो रेवा, महेश बहुत गरीब का लड़का है। अभी उसने बी० ए० भी पास नहीं किया। तुम्हारा खर्चा वह सहन नहीं कर सकेगा और पूर्ण जीवन एक नरक-कुण्ड बन जावेगा।

"तुम्हारे पिता को कुछ भी ज्ञान नहीं है। वे संसार की बातों से सर्वथा अनभिज्ञ हैं। घास-फूस बेच धन बटोरने के सिवाय और कुछ भी नहीं जानते। मेरी बात याद रखो, यदि तुमने महेश से विवाह किया तो तुम मेरे लिए मर गईं और मैं तुम्हारे लिए।"

रेवा बिना उत्तर दिए माँ के कमरे से बाहर निकल गई। वह पिता के कमरे में जाना चाहती थी कि चेतनानन्द मार्ग में मिला और पूछने लगा, "माँ क्या कहती हैं?"

"कहती हैं किसी और से विवाह होगा।"

"पार्वती ने मुझे धोखा दिया है, रेवा!"

"तो बहिन का अपराध भाई पर लादना चाहते हैं?"

इतना कह वह पिता के कमरे में चली गई। पिता ने उसे सामने की कुर्सी पर बैठाकर कहना आरम्भ कर दिया, "सुनो रेवा! मैं हिन्दू हूँ, आर्यसमाजी हूँ। तुम्हारी माँ ने तुम लोगों को न तो हिन्दू जाति की, न आर्यसमाज की महानता समझने का अवसर दिया है। इसी कारण तुम लोग मेरी आंतरिक भावना को समझ नहीं सके।

"यह ठीक है कि जीवन-नौका बहुत सोच-समझकर चलानी चाहिए। फिर भी जल्दी-जल्दी जीवन के परीक्षण बदलने से मनुष्य किसी परिणाम पर नहीं पहुँच सकता। विवाह भी जीवन की भावनाओं और शक्तियों के साथ एक प्रकार का परीक्षण ही है। यह परीक्षण जीवन में एक बार ही हो सकता है। एक बार वचन दिया तो फिर सुख-दुःख, अमीरी-गरीबी, रुग्ण अथवा निरोगावस्था, सब समय इस सम्बन्ध को स्थिर रखने में ही कल्याण है।

"यदि तुम मुझ से बम्बई जाने से पूर्व पूछतीं तो शायद मैं तुम्हारे महेश से विवाह को पसन्द न करता, परन्तु जब तुमने उससे विवाह का वचन दे ही दिया है तो मैं तुम्हारे सम्बन्ध-विच्छेद को पसन्द नहीं करता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम एक जन्म को अपने पूर्ण जीवन का एक बहुत छोटा भाग मानते हैं। अनेक जन्म तथा मरण एक जीवन में होते हैं। पूर्ण जीवन के ध्येय को समझ एक आयु अति अल्प काल प्रतीत होने लगती है। इस अल्प काल के किंचित् सुख के लिए वचन-भंग तो एक ऐसा कार्य है जो आत्मा को जन्म-जन्मान्तर के लिए कलुषित करने की सामर्थ्य रखता है।

"इस कारण से मैं कहता हूँ कि यदि तुमने महेश से विवाह सच्चे प्रेम-वश किया है तो यह हो गया। अब इसे निभाने का ढंग सोचो।"

"पिताजी", रेवा की आँखों में आँसू छलकने लगे थे, "मुझे नहीं मालूम था कि आप इतने अच्छे और दयालु हैं!"

"सुनो, यदि महेश से तुम्हारा विवाह हो गया तो मैं उसे अपने कारोबार में साझीदार कर लूँगा। आशा करता हूँ कि तुम लोग अपना जीवन आनन्द से व्यतीत कर सकोगे। अब तुम जाओ और आराम करो। मुझे कुछ सोचने का अवसर दो।"

रेवा अपने कमरे में जाकर सोचने लगी। उसे आशा के विरुद्ध अपने पिता के व्यवहार में साक्षात् भगवान का हाथ दिखाई दिया। बम्बई में महेश ने कहा था कि सूर्य उसका इष्टदेव है और उसका नाम लेकर यदि विवाह करेंगे तो वह अवश्य उनकी सहायता करेगा। उस समय वह उसके इस मानसिक भ्रम पर हँसी थी। आज पिता को अपनी बात और इच्छाओं में सहायक पा उसे जहाँ विस्मय हुआ, वहाँ महेश के कहने पर विश्वास भी हुआ था।

अगले दिन उसने महेश को पत्र लिखा, "मेरे पिता जी ने मेरा आपसे विवाह स्वीकार कर लिया है। उन्होंने कहा है कि यदि विवाह हुआ तो वे आपको अपने कारोबार में साझीदार बना लेंगे। इसका अर्थ यह है कि आपको लगभग एक सहस्र रुपए मासिक तुरन्त मिलने लगेगा।

"मुझे कल सायंकाल गोलबाग में, लाला लाजपतराय की मूर्ति के समीप मिलना। घर पर नहीं आना। मेरी माता और भाई विवाह का विरोध कर रहे हैं।"

: ११ :

महेश बम्बई से लौटा तो चुपचाप घर पहुँच माँ के सामने जा खड़ा हुआ। माँ ने उसे देख पूछा, "कब आए हो बेटा? जिस काम गए थे कर आए हो न?"

महेश ये वाक्य सुन चकित रह गया। वह नहीं समझा कि किस काम के विषय में माँ पूछ रही है। फिर सब बात एकदम न बताने का निश्चय कर बोला, "हाँ माँ! पर अब बहुत थक गया हूँ। स्नान कर सोना चाहता हूँ। पिता जी कहाँ हैं?"

"अपने कमरे में आराम कर रहे हैं। उनकी चिन्ता न करो। मैं सब बता दूँगी।"

"बहिन कहाँ है? स्कूल जाती है अभी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ क्यों ? अच्छा, विवाह के विषय में पूछ रहे हो ? विवाह नहीं हुआ और पारो नियमित रूप से स्कूल जा रही है।"

महेश सायंकाल उठा तो उसके पिता बैठक में बैठे मित्रों से बातचीत कर रहे थे। महेश वहाँ पहुँच गया। पंडित जी ने उसे देख पूछा, "क्या काम था बम्बई में ? जाने से पहले मिल तो जाते।"

महेश को अब फिर अचम्भा हुआ। उसने यहाँ फिर गोल-माल बात कर दी, "कांग्रेस कमेटी का कुछ काम था।"

"देखो महेश ! यह कांग्रेस के जाल में फँसकर अपनी शक्ति का अपव्यय न करो।"

महेश को तो यह आशा थी कि घर पहुँचते ही खूब पीटा जाएगा और बुरा-भला कहा जावेगा। अब बात को इतनी सुगमता से टलते देख वह चुप रहा। कुछ काल तक वहाँ बैठ घूमने चला गया। रात को भोजन कर सो रहा।

तीसरे दिन उसे रेवा का पत्र मिला। पढ़कर वह चकित रह गया। सायं गोलबाग में जाकर लाला लाजपतराय की मूर्ति के नीचे खड़ा हो वह प्रतीक्षा करने लगा। दूर से रेवा को पैदल आते देख उससे मिलने के लिए मार्ग पर ही जा पहुँचा। दोनों ने घास पर एक ओर खड़े होकर अपने-अपने घर की बात बताई। महेश ने बताया कि उसके पिता जी को तो सन्देह भी नहीं हुआ कि वह किस कारण बम्बई गया था। रेवा का कहना था, "उनसे भी तो स्वीकृति लेनी है ?"

"यही तो सोच रहा हूँ कि कैसे बात करूँ ?"

"मैं दो दिन से यही सोच रही हूँ, कुछ योजनाएँ बनाई हैं पर कोई भी ठीक नहीं जँची। एक बात है, जो कुछ ठीक प्रतीत होती है। आप मुझे एक पत्र लिखिए। उसमें मेरी अपने से विवाह की स्वीकृति माँगिए। इस पर मैं आपकी माता जी को लिखूंगी।"

महेश को यह योजना पसन्द नहीं आई, फिर भी उसने और कोई योजना न पा रेवा को पत्र लिखने का विचार पक्का कर लिया। घर पहुँच उसने पत्र लिखना आरम्भ किया। लिखकर जब पढ़ा तो पसन्द नहीं आया। अत: उसे फाड़कर फेंक दिया। फिर एक और लिखा। वह भी पसन्द नहीं आया। इसे भी फाड़कर फेंकने वाला था कि पार्वती कमरे में आकर बोली, "महेश ! चलो पिता जी बुलाते हैं।"

महेश ने पत्र को समेटते हुए पूछा, "क्या है दीदी ?"

"तुम्हारे कान खैंचे जाएँगे। तुमने झूठ बोला है।"

महेश समझ गया कि दाल में कुछ काला है। बात भी कुछ ऐसी थी। बम्बई जाने का रहस्य खुल गया था। बैठक में उसके पिता और रेवा के पिता बैठे थे। महेश अपराधियों की भाँति उनके सम्मुख जा खड़ा हुआ। बात पंडित श्रीधर ने शुरू की। उसने कहा, "महेश ! तुम्हें अपनी करतूतों पर लज्जा अनुभव करनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए। तुम्हारे जैसे पुत्र के उत्पन्न होने से मुझसे आँखें ऊँची नहीं की जातीं। मैं नहीं समझ सका कि इनके परिवार को जो हानि तुमने पहुँचाई है, उसका मूल्य कैसे दूँ! मैंने तो अपना सिर नंगा कर इनके पाँव पर रख दिया है कि इस पर जूते लगाएँ, जिससे तुम्हारे जैसे नीच पुत्र को जन्म देने का प्रायश्चित हो सके।"

महेश का मुख, पिता को ऐसी दीनता की बातें करते सुन, पीला पड़ गया। उसका हृदय धक-धक करने लगा और आँखें तरल हो उठीं।

श्रीधर ने फिर कहा, "क्षमा याचना करो इनसे। रखो इनके चरणों पर सिर। तुम्हारा अपराध क्षमा करने योग्य तो नहीं है। शायद ये तुम पर दया कर दें।"

महेश भूमि पर बैठ गया और झुककर सिर भूमि के साथ लगा सिसकियाँ भरकर रोने लगा। जीवनलाल ने उसे हाथों से पकड़कर उठा लिया और अपने सामने कुर्सी पर बैठा लिया। पंडित श्रीधर ने गले में दुपट्टा डाल लाला जीवनलाल को कहा, "बाप-बेटा दोनों के आप मालिक हैं। जो दंड उचित समझें, दें।"

जीवनलाल ने गम्भीर भाव में कहा, "मैं यही चाहता हूँ। मैं महेश के काम का मूल्य माँगने ही तो आया हूँ।"

"क्या मूल्य मैं दे सकता हूँ?"

"इस अपराध का एक ही मूल्य है और वह है आपका लड़का। इसे मुझे दे दीजिए। इसे रेवा से विवाह करना होगा।"

महेश का मुख खिल उठा। श्रीधर लाला जीवनलाल का, रेवा तथा महेश के बम्बई जाने की कथा सुनाते समय, क्रोध देख चुका था। अब इस समय विवाह के प्रस्ताव पर वह चकित रह गया। जीवनलाल ने अपनी माँग की व्याख्या कर दी, "मैं समझता हूँ कि जब लड़के-लड़की में पति-पत्नी का सम्बन्ध बन जावे तो उसे विवाह कर पक्का कर देना चाहिए। लड़की के घर वालों का जो अपमान हुआ है, उसका केवल यही एक प्रतिकार है।

"यदि इन दोनों की प्रकृति मिलती है तो ये सुखी रहेंगे और यदि इन्होंने केवल वासनावश यह खराबी की है तो जन्म-भर के लिए इनको परस्पर बाँधकर दण्ड देने में ही भलाई है।"

"बताओ महेश?" उसके पिता ने पूछा।

महेश का मुख देदीप्यमान हो रहा था। उसके लज्जा और दुःख के आँसू सुख के आँसुओं में बदल गए थे। उसने केवल यह कहा, "जैसी आज्ञा हो।"

जीवनलाल ने मुस्कराते हुए कहा, "आज्ञा माँगते हो अब?"

इसके पश्चात् जीवनलाल उठ खड़ा हुआ और पंडित श्रीधर से बोला, "महेश की माँ और बहिन को कल मध्याह्न के पश्चात् हमारे घर पर भेज दीजिएगा। विवाह की तिथि निश्चय करके बता दूंगा।"

अगले दिन जब महेश की माँ और पार्वती जीवनलाल के घर गईं, तो रेवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की माँ और चेतनानन्द गायब थे। चेतनानन्द को गुजराँवाला जाने का काम याद आ गया और रेवा की माँ ने तो स्पष्ट कह दिया कि वह अपनी लड़की का विवाह इन ब्राह्मणों के घर नहीं करना चाहती। यह कह वह अपने पिता के घर चली गई।

जीवनलाल ने महेश की माँ और पार्वती का स्वागत किया। उन्हें फल दिए, मिठाइयाँ दीं और साथ ही एक सहस्र रुपए नकद दिये।

विवाह के समय भी चेतनानन्द का आवश्यक कार्य से बम्बई जाना बन गया और रेवा की माँ के पेट में पीड़ा होने लगी। रेवा का विवाह उनकी अनुपस्थिति में ही हो गया।

: १२ :

रेवा को अपनी ससुराल का वातावरण सर्वथा भिन्न प्रतीत हुआ। उसे अनुभव हुआ कि इस घर में उसे अधिक स्वतन्त्रता प्राप्त है। यद्यपि घर वाले उससे अपना आचार और व्यवहार ठीक रखने की आशा करते थे, तो भी कभी किसी ने उसे आज्ञा नहीं की थी। उसकी सास प्रत्येक कार्य स्वयं करती थी और उसे करते देख रेवा को भी वही करना ठीक प्रतीत होता था। उससे उलट करने में उसे लज्जा अनुभव होने लगी थी।

उसने देखा कि उसकी माँ की भाँति उसकी सास अपने पति की निन्दा नहीं करती। वह संतोष और प्रसन्नता से जीवन के सुख-दुःख सहन करती है। एक दिन रेवा ने पूछ ही लिया, "पिता जी इतनी मेहतत करते हैं पर प्राप्ति बहुत कम होती है।"

"बेटी," सास ने उत्तर दिया, "वे मेहनत धन कमाने के लिए नहीं करते।"

"तो किस लिए करते हैं?"

"ऋषि-ऋण उतारने के लिए। हमारे पूर्वजों में जो विद्वान् थे, उन्हें हम ऋषि कहते हैं। उन्होंने हमें वेद, शास्त्र, पुराण और अनेकानेक विद्याओं के ग्रन्थ विरासत में दिए हैं। उनकी देन को जीवित रखने के लिए प्रत्येक काल में कुछ लोग अपना सर्वस्व न्यौछावर कर उनके बनाए ग्रन्थों को पढ़ते और पढ़ाते हैं और साथ ही उनके दिखाए पथ पर चलकर उनकी दी हुई विद्या में उन्नति करते हैं। यदि किसी काल में ऐसा करने वाला कोई न हो तो समाज उन ऋषियों के ऋण से मुक्त नहीं हो सकता। ऐसा ऋणी समाज ऋण के बोझ के नीचे पिसकर नष्ट हो जाता है।"

"तो समाज को, उन्हें खाने, पहनने और रहने को तो देना चाहिए?"

"देती तो है। अब देखो न, तुम्हारे पिता जी ने ही उन्हें तुम जैसी लड़की दे डाली है।"

एक दिन रेवा महेश के साथ अपने माता-पिता के घर गई तो चेतनानन्द भी वहाँ आया हुआ था। चेतनानन्द को विदित हो चुका था कि उसके पिता ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसीयत लिख दी है। वह चाहता था कि उसे पता चल जाए कि वसीयत में क्या है। इस कारण जब सब भोजन कर चुके तो वहीं, खाने की मेज पर बैठे-बैठे ही, वह पूछने लगा, "पिता जी, क्या आपने वसीयत लिख दी है ?"

"हाँ चेतन ! उसमें मैंने तुमको कुछ नहीं दिया।"

"कुछ नहीं ?"

"तुमको पढ़ा-लिखाकर योग्य बना दिया है। क्या यह कम है ?"

"और महेश को ?"

"महेश को वसीयत से कुछ नहीं मिला। हाँ, यह मेरे व्यापार में चार आने का भागीदार बन गया है। इसने पढ़ना-लिखना छोड़ मेरे साथ काम करना आरम्भ कर दिया है।"

"और रेवा को ?"

"कुछ नहीं दिया।"

"यह मकान ?"

"मेरे मरने के पश्चात्, यदि तुम्हारी माँ जीवित रही तो इस मकान में रह सकेगी।"

"बस ?"

"उसे मरण-पर्यन्त दो सौ रुपए मासिक भी मिलेगा।"

"यह तो कुछ नहीं ?"

"मैं समझता हूँ कि यह ठीक है।"

"और यह सब धन-वैभव किसको दिया है आपने ?"

"आर्य समाज को, वेद-प्रचार के लिए।"

चेतनानन्द खिलखिलाकर हँस पड़ा। जीवनलाल ने मुस्कराते हुए आगे कहा, "हाँ, एक बात और है। मैंने पार्वती को उसके जीवन-काल के लिए पाँच सौ रुपए मासिक देने को लिखा दिया है।"

"और हमारा बिस्तर गोल है इस घर से ?"

"मैंने यह नहीं कहा। व्यापार में मेरा पाँच लाख लग रहा है। इसकी वार्षिक आय लगभग चालीस हजार होती है। मेरे बारह आने के हिस्से में मुझे तीस हजार मिलेगा। इसमें से मैं तुमको कुछ तो दे सकता हूँ। बताओ तुम क्या चाहते हो ?"

"मैं कुछ नहीं चाहता।"

महेश यह सब कुछ सुन रहा था। उसने अपने मन में उठ रहे भावों को प्रकट करना उचित समझा, "पिता जी ! एक बात कहूँ ?"

"हाँ महेश ! कहो, क्या कहते हो ?"

"मैं कुछ ऐसा समझ रहा हूँ कि मैंने भाई चेतनानन्द के स्थान पर अनधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वत्व कर लिया है। इससे मैं अपने-आपमें बहुत छोटा अनुभव कर रहा हूँ।"

"यह भ्रम है तुम्हारा, महेश! देखो मेरा व्यापार चेतनानन्द को और उनकी माँ को पसन्द नहीं है। मैं अब बूढ़ा होता जा रहा हूँ और इस बने-बनाए काम को बिगड़ने से बचाने के लिए मुझे किसी सहायक की आवश्यकता थी। कोई भी सहायक होता तो मैं उसे अपना पत्तीदार बना लेता। अतएव मैंने तुम्हारे साथ कोई भी अनुचित रियायत नहीं की।"

"मैं अपने साथ रियायत की बात नहीं कर रहा, पिता जी! मेरा अभिप्राय तो यह है कि आपका प्रेम भाई साहब के लिए कम हो गया है।"

"यह बात भी नहीं।" जीवनलाल ने गम्भीर होकर कहना जारी रखा, "बात यह है कि मनुष्य अपने बच्चों से प्रेम करता है। वह इस कारण कि उसके भीतर पशुपन का अंश विराजमान है। ज्यों-ज्यों मनुष्य मननशील हो अपने में मानवता का विकास करता जाता है, उसके प्रेम का क्षेत्र अपने परिवार की परिधि से बाहर निकल विस्तृत हो जाता है। मनुष्य के लिए आचार-विचार, सिद्धान्त और जीवन-लक्ष्य अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाते हैं।

"चेतनानन्द मेरा लड़का है अवश्य, परन्तु उसकी विचारधारा अपने देश की नहीं है। मुझे भारतीयता पसन्द है। उसे भारत की बातें जंगलीपन प्रतीत होती हैं। अब विवाह की बात ही देख लो। तुम दोनों ने चेतनानन्द से अधिक अपराध किया था। फिर भी अपराध की श्रेणी में अन्तर था। तुमने वासनावश अपने कर्तव्य की अवहेलना की थी। वासना एक प्रबल शक्ति है और इसके वशीभूत होकर कोई अनुचित कार्य कर डालना क्षम्य हो सकता है। तुमने विवाह कर उस अपराध का प्रायश्चित कर लिया। परन्तु चेतनानन्द ने जो उच्छृंखलता की है वह किसी वासना जैसी विवशता के कारण नहीं की। प्रत्युत उसने सोच-विचारकर और सब कुछ जानकर परिवार व्यवस्था पर लात मारी थी। विवाह से, एक बाहर के व्यक्ति को परिवार में लाना होता है। इसने उसके लिए परिवार के लोगों से राय करनी उचित नहीं समझी। यदि इसने यह किया है तो फिर इसको परिवार से कुछ आशा नहीं करनी चाहिए।"

महेश चेतनानन्द के व्यवहार की यह विवेचना सुन चकित रह गया। उसने अपने पिताजी को परिवार की महत्ता पर कहते सुना था। आज अपने श्वसुर को भी उसी बात पर बल देते सुन उसके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। एक संशय उसके मन में अभी भी था और उसका निवारण करना उचित समझ पूछने लगा, "आपने कहा है कि भाई साहब की विचारधारा भारतीय नहीं है। क्या परिवार-प्रथा भारतीय है और यह भारतीयता का प्रधान लक्षण है?"

"प्रधान लक्षण तो नहीं, एक लक्षण अवश्य है। परिवार-प्रथा से इकाई एक व्यक्ति न रहकर एक परिवार हो जाता है। इससे एक व्यक्ति की श्रेष्ठता अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ्रष्टाचार उसके परिवार का माना जाता है। इस कारण एक परिवार के प्रत्येक व्यक्ति के आचरण को ठीक रखना परिवार का कर्तव्य हो जाता है। इस प्रकार समाज में एकाकी भावना कम हो समष्टि की भावना उत्पन्न होती है। यह भारतीयता का एक आवश्यक अंग है।"

चेतनानन्द ने अपने स्थान से उठते हुए कहा, "यह सब वागाडम्बर है। हिन्दू समाज में बनियापन बहुत बढ़ गया है और उसका परिणाम ही यह परिवार-प्रथा है। मैं इसे एक व्यक्ति के व्यक्तित्व पर आघात मानता हूँ। मैं अपने व्यक्तित्व को आपके लाखों पर भी न्यौछावर नहीं कर सकता।"

चेतनानन्द उठ घर से बाहर निकल गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

: १ :

बम्बई की वुर्ली नाम की एक बस्ती में, एक खद्दरधारी युवक हाथ में उस दिन के 'बाम्बे क्रॉनिकल' की एक प्रति लिये, लम्बे-लम्बे पग उठाता हुआ मकानों के एक ब्लाक की ओर जा रहा था। मकानों के कई ब्लाक बने थे, जो प्रायः चार-चार छत के थे। प्रत्येक ब्लाक के सामने पानी भरने के लिए और स्नानादि के लिए दो या तीन नल लगे हुए थे। स्त्रियाँ घरों की सफाई और चौका-बासन में लगी थीं और पुरुष कारखानों में काम पर गए हुए थे। प्रत्येक नल पर पानी भरने वाली स्त्रियों की भीड़ लगी थी।

मकानों के समूह में कमरों की पंक्तियाँ थीं और आगे बरामदे थे, जिनमें रसोई के लिए चूल्हे-चौके बने थे। कई मकानों में दो-दो कमरे थे और कइयों में केवल एक-एक ही था। कमरों के पिछली तरफ खिड़कियाँ और रोशनदान थे।

कमरे छोटे-छोटे थे। एक में दो चारपाई लग जाने पर कठिनाई से खड़े होने को स्थान बचता था। जिन मकानों में दो कमरे होते, तो एक की बगल में दूसरा होता और एक से दूसरे में जाने को मार्ग होता। बरामदे के अन्त में सब मकानों के साँझे शौचालय थे।

वह युवक एक मकान-समूह को लाँघ दूसरे समूह में बीच की सीढ़ियों पर चढ़ दूसरी छत पर पहुँच गया। वहाँ एक सौ पचपन नम्बर के कमरे के सम्मुख बरामदे में जा खड़ा हुआ। बरामदे में एक ओर हदबन्दी बनी हुई थी। इसके बीच बने चौके में चौदह-पन्द्रह वर्ष की एक लड़की बर्तन समेट रही थी। वह खद्दरधारी युवक को आया देख बोली, "नमस्कार दादा।"

"अभी काम से छुट्टी नहीं पाई, टुनिया ?"

"आज बाबा ज्यादा बीमार हैं। इससे काम समाप्त करने में देरी हो गई है।"

"तो फिर दौरा पड़ा है क्या ?"

"बहुत जोर का। इस समय कुछ आराम हुआ है। वे सोये हैं तो काम करने बैठी हूँ।"

"अच्छी बात है। निपटकर जल्दी आओ।"

"अभी आई।"

टुनिया लड़की का नाम नहीं था। दुबली-पतली होने से बाबा ने प्रेम में यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम दे रखा था। लड़की का असली नाम लक्ष्मी था।

लक्ष्मी का बाबा दमे का बीमार था। पिछली रात-भर साँस का दौरा चलता रहा था और वह सो नहीं सका था। अब कुछ शान्ति हुई तो वह सो गया। सिर की ओर बड़े-बड़े तकिये रखकर उसका सिर ऊँचा किया हुआ था। वह खद्दरधारी युवक आधा मिनट तक समीप खड़ा बूढ़े के क्षीण, पीत मुख को देखता रहा। तत्पश्चात् वह बगल के कमरे में चला गया। इस कमरे में खाट नहीं थी। भूमि पर दरी बिछी थी और उस पर एक चादर थी जो अधमैली हो रही थी।

युवक चादर के ऊपर बैठ गया और हाथ में पकड़े समाचार-पत्र को पढ़ने लगा। लक्ष्मी ने चौका-बासन का काम समाप्त किया और एक गिलास में ऊष्ण दूध ले गई। कमरे में आ उसने गिलास खाट के समीप तिपाई पर रख दिया। बाबा को सोते देख वह दूसरे कमरे में आ गई।

लड़की का रंग गंदमी था, नख-शिख सुन्दर और छोटा-सा मुख जिसमें बड़ी-बड़ी आँखें थीं; माथा चौड़ा और बाल घुँघराले थे। वह उन्नाबी रंग की छींट की कुर्ती और उसी कपड़े का लहँगा पहने थी, सिर से नंगी और पाँव में चाँदी की दो बारीक कड़ियाँ थीं।

जब लड़की आई तो युवक ने मन भरकर उसको सिर से पाँव तक देखा। जब लड़की से उसकी दृष्टि मिली तो लड़की ने आँखें भूमि की ओर कर लीं। उसने पूछा, "जल लाऊँ?"

युवक ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "नहीं, इधर मेरे समीप आकर बैठो।"

लड़की युवक के सम्मुख पलथी मारकर बैठ गई। युवक ने कहा, "देखो टुनिया! तुम्हारे बाबा अब बहुत दिन नहीं जी सकते। तुम्हारे भैया तो जैसे हैं, तुम जानती हो। तब तुम कहाँ जाओगी?"

टुनिया की आँखें तरल हो उठीं। "सच? बाबा की अवस्था बहुत खराब है?" उसने पूछा।

"मैं जानता हूँ। मैंने डॉक्टरी पढ़ी है। इससे कहता हूँ कि हमें बाबा के सम्मुख कुछ निश्चय कर लेना चाहिए।"

"क्या निश्चय कर लेना चाहिए?" लड़की ने आँखें नीची किए हुए धीमी आवाज में पूछा।

"यही, कि तुम कहाँ रहोगी? राने भैया तो नित्य रात को शराब पीकर आएगा और तुम्हारा यहाँ रहना कठिन हो जाएगा।"

"कठिन क्यों होगा?"

"तुमसे राने भैया का कोई शराबी मित्र विवाह कर लेगा।"

"मैं विवाह नहीं करूँगी। इसी कारण तो आपसे पढ़ती हूँ।"

"ठीक है! पर तुम्हें पढ़ने कौन देगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो क्या करूँगी ?"

"मेरे साथ मेरे घर पर चलकर रहना। मेरी पत्नी बनकर। बाबा से आज मैं कह दूंगा और बात पक्की कर लूंगा।"

"पर मैं तो पढ़ना चाहती हूँ। क्या आप मुझे पढ़ाएँगे ?"

"अरे बाबा, हाँ। अच्छा अब अपनी पुस्तक और कापी निकालो।"

लक्ष्मी उठी और दीवार में लगी अलमारी में से हिन्दी की पाँचवीं पुस्तक निकालकर पढ़ने बैठ गई। युवक उसे बहुत ध्यान से पढ़ाता रहा। अभी पढ़ाई समाप्त नहीं हुई थी कि बाबा के खाँसने का शब्द हुआ। लक्ष्मी किताब वहीं छोड़ बाबा की चारपाई के समीप जा खड़ी हो, देखने लगी। बाबा ने आँख खोली और लक्ष्मी को सामने खड़ी देख पूछ लिया, "सदाशिव आया है बेटी ?"

"हाँ बाबा। दूध लाऊँ ?"

"आज भूख नहीं मालूम हो रही। अच्छा, देखो गरम है या ठंडा ?"

लक्ष्मी ने तिपाई पर रखे ग्लास को हाथ लगाकर देखा और बोली, "अभी गरम किये देती हूँ।"

सदाशिव भी अब वहाँ आ गया था। लक्ष्मी दूध गरम करने बाहर चली गई। सदाशिव बाबा की चारपाई के बाजू पर बैठ गया। बूढ़े ने उसे देख कहा, "मुझे उठाओ सदाशिव !"

सदाशिव ने हाथ का आश्रय दे उसे सीधा कर दिया। थोड़ा खाँस और गले में अटकी बलगम निकाल, चारपाई के नीचे रखे टीन के डब्बे में थूक, वह बोला, "बेटा सदाशिव ! अब मैं हार गया हूँ। मुझसे और जीते नहीं बनता। मैं चाहता था कि लक्ष्मी का विवाह अपने हाथों करता, परन्तु भगवान को यह मंजूर नहीं है। मेरा शरीर ठण्डा पड़ता जाता है।"

कुछ साँस ले और खखार निकाल बूढ़े ने कहा, "मैं जीवित रहता तो लक्ष्मी का विवाह तुमसे कर देता। वह दो मास में पन्द्रह वर्ष की हो रही है। परन्तु अब इतनी प्रतीक्षा करने का समय नहीं रहा। देखो, तुम उसके पति हुए। बताओ मंजूर है ?"

सदाशिव चुप बैठा रहा। बूढ़े ने फिर कहा, "विवाह-संस्कार करने का अब समय नहीं है। वह तुम अवसर देख करा लेना।"

बूढ़े को खाँसी आने लगी थी। लक्ष्मी दूध गरम कर लाई। सदाशिव ने लक्ष्मी के हाथ से गिलास पकड़ बूढ़े के मुख से लगा दिया। उसने तीन-चार घूंट पिये और दूध की गरमी से दो बड़े-बड़े खखार निकाल कुछ शान्ति अनुभव करने लगा। बूढ़े ने लक्ष्मी को कहा, "बेटी, इधर आओ। यहाँ बैठो।"

लक्ष्मी खाट पर सदाशिव के दूसरी ओर बैठ गई। बूढ़े ने लक्ष्मी का हाथ पकड़कर कहा, "बेटी, मुझे अपना अन्त समय आ गया प्रतीत होता है। इससे अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक शेष कर्तव्य पूरा कर देना चाहता हूँ। मैं तुम्हारा विवाह नहीं कर सका, सो वह अब सदाशिव से करता हूँ।"

इतना कह बूढ़े ने लक्ष्मी का हाथ सदाशिव की ओर बढ़ाया। सदाशिव ने हाथ बढ़ा उसे पकड़ लिया। अब बूढ़े ने कहा, "बेटी, आज से ये तुम्हारे पति हुए। तुम्हें इनके साथ पतिव्रता स्त्री बनकर रहना है। जन्मभर तुम इनको अपना देवता मान इनकी आज्ञानुसार चलना।"

इतने से ही बूढ़े को हँफनी चढ़ गई। उसने कुछ समय तक चुप रह हँफनी रोकी और फिर कहा, "तुम्हारा भाई राने आ जाता तो अच्छा था। मैं उसे भी कह देता···सदाशिव···किसी को भेजकर बुला लो···शायद···वह समय···पर··· आ जाए।"

बूढ़े का साँस उखड़ने लगा था। सदाशिव ने लक्ष्मी से कहा, "मीना की माँ से कहो, कारखाने से बुला लाए। उसका घरवाला वहीं काम करता है।"

: २ :

राने के आने से पूर्व बूढ़े ने साँस तोड़ दिया था।

राने ने पिता का संस्कार किया। चौथे दिवस का शोक समागम भी हो गया। इतने दिन तक सदाशिव राने के पास रहा और उसे सांत्वना देता रहा। पाँचवें दिन राने अपने काम पर जाने लगा तो सदाशिव भी जाने को तैयार हो गया। राने ने उसे जाते देख कहा, "लक्ष्मी को पढ़ाने के लिए आपके आने की आवश्यकता नहीं है। सज्ञान लड़की के साथ अकेले में आपका मिलना ठीक नहीं।"

"पर," सदाशिव ने कहा, "बाबा की इच्छा थी कि लक्ष्मी का विवाह मुझसे हो। उन्होंने मरते समय उसका हाथ मेरे हाथ में पकड़ा दिया था।"

"मुझे इसका विश्वास नहीं। मैं लक्ष्मी का विवाह कहाँ करूँगा, कह नहीं सकता। हाँ! मैं तुम्हें फिर कहता हूँ, अब हमारे घर में नहीं आना। नहीं तो ठीक नहीं होगा।"

सदाशिव ने कहा, "राने भैया! क्रोध करने की आवश्यकता नहीं। मैंने जो कुछ कहा है सत्य है। यदि यह सत्य न भी मानो तब भी मैं पढ़ा-लिखा और सब प्रकार से योग्य वर हूँ। मैं चाहता हूँ कि उसका विवाह शीघ्र कर दिया जाए।"

"अच्छा, अच्छा! अब तुम जाओ। मैं तुम्हारे प्रस्ताव को उचित समझूंगा तो बुला लूंगा।"

विवश सदाशिव चला गया; फिर भी वह आशा करता था कि लक्ष्मी के लिए उससे अच्छा वर नहीं मिलेगा और शीघ्र ही राने उसके पास आकर बात-चीत करेगा।

सदाशिव की आशा पूरी नहीं हुई। आशा के विपरीत उसे मीना के भाई ने सूचना दी कि लक्ष्मी का विवाह मन्नू जमादार से होना निश्चित हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीना के भाई का नाम गोविन्द था और उसके माता-पिता राने के साथ के क्वार्टर में रहते थे। सदाशिव गोविन्द को जानता था, इससे उसे देख उसने पूछा, "गोविन्द ! सुनाओ भाई, कैसे आये हो ?"

"बाबूजी, एक बहुत जरूरी काम से आया हूँ।" गोविन्द का उत्तर था, "कई दिन से आपको ढूँढ़ रहा था। आज यहाँ की कांग्रेस कमेटी के मंत्री से पूछकर यहाँ पहुँचा हूँ।"

सदाशिव एक मन्दिर के पुजारी का लड़का था और उसी मन्दिर के पिछवाड़े में अपने पिता के साथ रहता था। १९४२ में एम० बी० बी० एस० पास किया तो 'क्विट इण्डिया' आन्दोलन के भँवर में फँस गया। १९४५ में छूटा तो उसमें लोक-सेवा की भावना जाग उठी। वह कारखानों के कर्मचारियों के बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखाने लगा। उसकी सेवाएँ निःशुल्क थीं। इससे वह कुछ काल में ही एक विख्यात सार्वजनिक कार्यकर्ता हो गया। १९४६ में वह कांग्रेस के टिकट पर बम्बई धारा-सभा का सदस्य निर्वाचित हो गया। इस निर्वाचन में कामगार यूनियन ने उसका विरोध किया था। इस कारण निर्वाचन में सफल होने पर यूनियन के लोग उसके विरोधी हो गए थे। राने यूनियन का प्रमुख कार्यकर्ता था। उसने सदाशिव की निन्दा करनी आरम्भ कर दी। सब कामगार यूनियन के सदस्यों ने अपने बच्चे उसकी पाठशाला से उठा लिये और फिर एक दिन उसकी पाठशाला के सामान को लूटकर उसे ताला लगा दिया।

राने के पिता को यूनियन के लोगों का यह काम अच्छा नहीं लगा। उसकी लड़की लक्ष्मी भी उस पाठशाला में पढ़ने जाती थी। इस कारण लक्ष्मी की शिक्षा को जारी रखने के लिए वह सदाशिव को अपने घर ले आया। जब उसे पता लगा कि घर आकर पढ़ाने का भी वह कुछ नहीं लेगा तो वह उसे देवता समझने लगा।

लक्ष्मी को घर पर पढ़ाते हुए दो मास के लगभग हो चुके थे कि राने के पिता का देहान्त हो गया। यह मार्च १९४६ की बात थी।

गोविन्द ने जब कहा कि वह एक आवश्यक काम से आया है, तो सदाशिव समझा कि लक्ष्मी के विषय में बात करने आया है। इससे वह उसे एक ओर पृथक् में ले जाकर पूछने लगा, "हाँ, क्या बात है ?"

"बाबूजी, लक्ष्मी का विवाह होने वाला है।"

"किससे ?"

"मन्नू जमादार से। वह राने की मील में फोरमैन है।"

सदाशिव के मुख का रंग उड़ गया। अपने मन के भावों को छिपाते हुए उसने पूछा, "तुमको किसने बताया है ?"

"लक्ष्मी ने स्वयं कहा है। उसने मुझको कहा है कि आपको ढूँढ़कर बता दूं। वह माँ के सामने कहती थी कि उसके बाबा ने उसका विवाह आपसे कर दिया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदाशिव गम्भीर हो खड़ा रहा। गोविन्द ने अपना कहना जारी रखा, "लक्ष्मी कहती थी कि आप आकर उसे ले जावें। मन्नू मुसलमान है और वह उसकी बीवी बनना नहीं चाहती।"

सदाशिव ने गोविन्द को यह कहकर लौटा दिया कि वह आवेगा। वह दिन-भर सोचता रहा कि क्या करे। वह जानता था कि राने और कारखाने के अन्य कर्मचारी उसकी चलने नहीं देंगे।

उसने उस इलाके के कांग्रेस के मन्त्री को बुलाकर उससे राय ली। मन्त्री, मौलाना अब्दुल हलीम रिजवी ने सदाशिव की कहानी सुनी और तहकीकात करने का वचन दे, सदाशिव को राने के घर जाने से रोक दिया।

: ३ :

लक्ष्मी को जब पता चला कि उसका विवाह किसी और से होने वाला है तो उसने अपने भाई से पूछा, "भैया! मेरा विवाह किससे कर रहे हो?"

"चुप रहो! तुम्हें यह पूछते लज्जा नहीं लगती?"

"पर बात यह है कि मेरा विवाह बाबा ने···।"

राने ने एक चपत उसके मुख पर लगाकर कहा, "चुप रहो, उसका नाम नहीं लेना।"

लक्ष्मी चुप रही और रात-भर सोचती रही कि क्या करे। उसने अपने बाबा से सुन रखा था कि हिन्दुओं में जब एक बार विवाह हो जावे तो फिर टूट नहीं सकता और वह अपने को विवाहिता समझती थी।

अगले दिन जब उसका भाई मील में काम करने चला गया तो वह अपने पड़ोस में मीना की माँ के पास गई और पूछने लगी, "चाची! मुझे एक बात बताओगी?"

"हाँ, बेटी! कहो क्या बात है?"

"बाबा जब मरने लगे थे तो मेरा विवाह मास्टर साहब से कर गए थे।"

"कैसे?"

"उन्होंने मेरा हाथ उनके हाथ में पकड़ाते हुए कहा था कि मैं उनकी धर्मपत्नी हो गई। मुझे जन्म-भर उनकी पतिव्रता स्त्री बनकर रहना चाहिए।"

"तब तो टुनिया, तुम भाग्यवान हो। मास्टर बहुत अच्छे आदमी हैं। पढ़े-लिखे हैं और पुजारी के लड़के हैं।"

"पर चाची! भैया राने मेरा विवाह किसी और से करना चाहते हैं। मैं चाहती हूँ कि मास्टर जी को सूचना भेजी जावे और बुलाया जावे।"

मीना की माँ ने मीना के पिता को राने के पास भेज पता किया कि लक्ष्मी का विवाह किससे होने वाला है। जब पता लगा कि लक्ष्मी का विवाह मन्नू जमादार से होने जा रहा है तो सदाशिव को ढूँढ़ने और बुलाने के लिए गोविन्द को भेजा गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदाशिव का समाचार मिला कि वह आ रहा है। परन्तु वह नहीं आया। इसके विपरीत विवाह की तैयारियाँ खूब धूम-धाम से होने लगीं। उसी गृह-समूह में कुछ मुसलमान रहते थे। वे भी इस विवाह में रुचि दिखाने लगे।

मीना के पिता ने पुनः गोविन्द को सदाशिव के पास भेजा। इस बार उसने यह सन्देशा भेजा कि वह सरकार में कार्यवाही कर रहा है। इस सन्देश को पहुँचे भी बहुत दिन हो गए। लक्ष्मी रो-रोकर दिन गुजार रही थी। मीना की माँ से उसका रोना नहीं देखा जाता था। इससे एक रात उसने अपने पति से कहा, "धिक्कार है तुम लोगों पर। एक हिन्दू लड़की का जबरदस्ती विवाह किया जा रहा है और तुम लोगों के कान पर जूँ तक नहीं रेंगती।"

"मैं क्या करूँ? मेरी समझ में कुछ नहीं आता।"

"उस बेचारी बच्ची को बचाओ। जैसे भी हो बचाओ। बेचारी मलेच्छ के घर जावेगी तो अनर्थ हो जावेगा।"

मीना का बाप समझता था कि यह ठीक नहीं हो रहा, पर वह सोचता था कि जब लड़की का बड़ा भाई उसका विवाह कर रहा है तो वह किस प्रकार रोक सकता है! फिर भी अपनी स्त्री से डाँटे-फटकारे जाने पर वह अपने मित्रों से बात करने पर तैयार हो गया। सबने मिलकर यह निश्चय किया कि इलाका कांग्रेस कमेटी के मन्त्री के पास जाकर सहायता माँगी जावे। मौलाना रिजवी के पास ये लोग पहुँचे तो उसने पूछा, "आप लोगों को इस मामले में क्यों दिलचस्पी है?"

मीना के बाप ने उत्तर दिया, "हम लोग राने के पड़ोसी हैं।"

"मगर पड़ोसी होने से उसकी बहिन के विवाह में दखल देने का हक कैसे हो गया?"

"शादी तो साहब हो चुकी है।"

"क्या भँवर चढ़ गए हैं?"

"भँवर तो नहीं चढ़े, पर जब लड़की का हाथ पकड़ा दिया गया तो भँवर चढ़ने के बराबर ही हो जाता है।"

"भाई कानून ऐसा नहीं मानता। देखो, मेरी राय मानो। अपना काम सँभालो। कहीं ऐसा न हो कि हिन्दू-मुसलमान फसाद हो जावे। इससे कांग्रेस सरकार बदनाम हो जावेगी।"

"पर मौलाना साहब! लड़की उससे विवाह करना नहीं चाहती।"

"यही तो मैं कह रहा हूँ। लड़की नाबालिग है। उसका विवाह करना उसके भाई का हक है और अगर तुम लोगों ने इसमें दखल दिया तो झगड़ा हो जाने का इमकान है। स्वराज्य तो अब मिलने ही वाला है, इससे दूर हट जावेगा।"

मीना का पिता और उसके साथी कांग्रेस कार्यालय से बाहर निकल आए। इस समय उनकी दृष्टि सदाशिव पर पड़ी। वह भी कांग्रेस कमेटी के कार्यालय में आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था। वह तो बिना उनकी ओर ध्यान दिए कार्यालय में चला जाता, परन्तु मीना के पिता ने उसे रोककर कहा, "मास्टर जी! लक्ष्मी आपकी प्रतीक्षा कर रही है। आपने आने को कहा था पर आए नहीं।"

सदाशिव खड़ा हो एक क्षण तक उन लोगों का मुख देखता रहा। पश्चात् सोचकर बोला, "भाई! मैं विवश हूँ। देश का हित मेरी इच्छा के विरुद्ध बैठता है।"

मीना के पिता ने कहा, "यही मौलाना साहब कह रहे थे। परन्तु हमारी समझ में नहीं आता कि अन्याय के आधार पर स्वराज्य कैसे मिलेगा?"

सदाशिव ने मुस्कराकर कहा, "यह बात तुम लोगों के समझने की नहीं है। इस समय हिन्दू-मुसलमानों में झगड़ा नहीं होना चाहिए। इसके लिए जो भी कुर्बानी की जावे, कम है।"

यह कह सदाशिव कांग्रेस कार्यालय में चला गया। मीना का पिता और उसके साथी विस्मय में एक-दूसरे का मुख देखते रह गए।

मीना के पिता ने कहा, "भाई, मुझसे मीना का रोना नहीं देखा जाता। पर हम कर ही क्या सकते हैं?"

उनमें से एक बोला, "अभी एक उपाय और है। लड़की का विवाह मुसलमान से किया जा रहा है, इससे कोई मुसलमान हमारी सहायता नहीं करेगा। एक आदमी बम्बई में है जो दुःखी हिन्दुओं की सुनने वाला है। मैं उसके पास जाता हूँ।"

"कौन है वह?"

"हमारी मील में एक औरत काम करती थी। उसे एक दिन कुछ गुण्डे उठाकर ले गए। रास्ते में वह औरत शोर मचाती जाती थी। एक साहब मोटर में जाते-जाते रुक गए और उन्होंने पिस्तौल दिखा उस औरत को छुड़ा दिया। औरत को उठाकर ले जाने वालों को पकड़वाया, मुकदमा करके दण्ड दिलवाया। यही नहीं, उस औरत और उसके घरवाले को मील के बाहर नौकरी दिलवा दी। मैं उस आदमी के घर का पता जानता हूँ। मैं उसको सूचना देना चाहता हूँ।"

सब उसका मुख देखते रहे और वह ट्राम-गाड़ी में सवार होकर कालबा देवी रोड की ओर चला गया।

: ४ :

सदाशिव मन में यह सोच रहा था कि एक लड़की मुसलमान के घर जाती है या हिन्दू के, हिन्दुस्तान को स्वराज्य मिलने से इसकी कोई तुलना नहीं। एक बार स्वराज्य मिल गया तो सहस्रों स्त्रियाँ-पुरुष सुख-शान्ति और स्वतन्त्रता का जीवन व्यतीत करने लगेंगे, देश धनवान होगा। सबको खाने, पहरने और रहने को साधन प्राप्त होंगे।

वह टुनिया से प्रेम करता था। पर उसका प्रेम अन्धा नहीं था। वह टुनिया से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं अधिक अपने देश की स्वतन्त्रता से प्रेम करता था। अतएव वह अपने मन में दुनिया को देश की स्वतन्त्रता की वेदी पर स्वाहा कर चुका था। उसने निश्चय कर लिया था कि वह राने से मिलने नहीं जावेगा।

वह सत्यनारायण के मन्दिर में बैठा चर्खा कात रहा था कि एक आदमी पतलून और 'बुश-शर्ट' पहने उससे मिलने आया। सदाशिव ने मन्दिर के वाहर मोटर का शब्द सुना और फिर एक हृष्ट-पुष्ट पंजाबी को अपने सामने आ यह प्रश्न करते सुना, "क्या मैं सदाशिव जी से बात कर रहा हूँ ?"

"जी हाँ, आइये ! बैठिए।" सदाशिव ने चटाई पर, जिस पर वह स्वयं बैठा था, बैठने को स्थान देकर कहा।

नवागन्तुक चटाई पर बैठ गया। वह बूट पहने था। इससे उसने टाँगें चटाई के बाहर रखीं। सदाशिव ने चर्खा चलाते हुए पूछा, "आज्ञा करिए ?"

"मेरा नाम खुशीराम है। मैं 'लॉ-जर्नल प्रेस' का मैनेजर हूँ। कुछ सार्वजनिक कामों में रुचि रखता हूँ। इस कारण लोग मेरी सहायता लेने के लिए आया करते हैं। मेरे पास एक प्रार्थना आई है कि वुर्ली ब्लाक नम्बर दो, टेनेमैण्ट नम्बर १५५ में, एक लड़की लक्ष्मी देवी का विवाह आपसे होने का वचन हो चुका है। अब उसका भाई, लड़की की इच्छा के विरुद्ध किसी अन्य से, उसका विवाह करना चाहता है। क्या यह ठीक है ?"

"विवाह का वचन तो हुआ है, पर इसे विवाह नहीं कह सकते। कानून मेरे हक़ में नहीं है।"

"मैं समझता हूँ कि तुम लड़की के बालिग होने तक विवाह पर 'इंजंक्शन' जारी करवा सकते हो।"

"इससे हिन्दू-मुसलमानों में झगड़ा हो जाने की सम्भावना है।"

खुशीराम की हँसी निकल गई। उसने कहा, "किसी को झगड़े से डरकर अपनी बीवी छोड़ते मैंने पहले कभी नहीं देखा।"

सदाशिव को इससे लज्जा अनुभव हुई, परन्तु खुशीराम को एक व्यापारी समझ और उसे देश की परिस्थिति से अनभिज्ञ मान वह अपने मन के भावों को बता नहीं सका। उसने केवल यह कहा, "आपको वास्तविक परिस्थिति का ज्ञान नहीं है।"

"क्या आप उसका ज्ञान करा देंगे ?"

सदाशिव ने चर्खे से ध्यान ऊपर उठाकर कहा, "क्या करिएगा जानकर ?"

"ज्ञान-प्राप्ति से लोग क्या करते हैं ? आप तो बहुत पढ़े-लिखे युवक प्रतीत होते हैं। ज्ञान-प्राप्ति आचरण सुधारने के काम में आती है। क्या मैं भूल कर रहा हूँ ?"

सदाशिव ने चर्खे पर तार निकालने का यत्न किया पर तार टूट गई। पूनी को एक ओर रख, चर्खे से मुख मोड़कर खुशीराम की ओर देखते हुए कहने लगा, "मेरा अभिप्राय यह है कि यह आपका काम नहीं है। आप इसमें हस्तक्षेप कर, क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेंगे ?"

"ठीक ! आपको उस लड़की से विवाह करने पर मैं विवश नहीं कर सकता; परन्तु एक हिन्दू लड़की का एक मुसलमान से विवाह किया जाना एक भिन्न बात है। इसमें हस्तक्षेप ऐसे ही है, जैसे आप लोगों का, मेरा मतलब कांग्रेस का, विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना देना था।"

"वह तो एक जातीय प्रश्न था। जाति का धन विदेश में जाने से रोकना हमारा अधिकार था।"

"भाई सदाशिव ! यही कारण है मेरे इस बात में हस्तक्षेप करने का। स्त्री तो किसी भी जाति का एक अत्यावश्यक अंग होती है। इसे कोई दूसरा ले जावे तो जाति की हानि होगी। जाति को इस हानि से बचाना हम सबका कर्तव्य है। यदि तुम लक्ष्मी से विवाह नहीं करोगे तो मैं उसका विवाह किसी अन्य हिन्दू से करने का यत्न करूँगा।"

"तो मुसलमानों को आप अपने में नहीं समझते ? उनको किसी दूसरी जाति का समझते हैं ?"

"मेरे समझने अथवा न समझने का प्रश्न ही नहीं है। मुसलमान स्वयं अपने को हमसे पृथक् जाति मानते हैं। आपने पिछले निर्वाचनों के परिणामों को तो अवश्य पढ़ा होगा ?"

"यह तो मुस्लिम लीग के भ्रमजनक प्रचार का परिणाम था।"

"मैं भी यही मानता हूँ। साथ ही यह भी मानता हूँ कि मुस्लिम लीग से पहले ऐसे ही भ्रमजनक प्रचार करने वाले, सर सैयद अहमद हुए थे और उससे भी पहले समय-समय पर, हमें काफिर कहने वाले बहुत हो चुके हैं। जब तक इस प्रकार का भ्रममूलक प्रचार करने वालों का असर मुसलमानों पर है तब तक तो हम अपनी लड़कियों को उपहार के रूप में उनको नहीं दे सकते।"

"आप जो इच्छा हो करें।" सदाशिव ने वाद-विवाद बन्द करते हुए कहा, "मैं इस झगड़े में पड़ना नहीं चाहता। आपके मस्तिष्क में साम्प्रदायिकता इतनी भरी हुई है कि आप देश का सत्यानाश करके छोड़ेंगे। मुझे आपकी युक्तियाँ ठीक प्रतीत नहीं होतीं।"

इतना कह सदाशिव पुनः अपना चर्खा कातने लगा।

: ५ :

लक्ष्मी सर्वथा निराश हो चुकी थी। मीना की माँ ने भी कह दिया था कि सदाशिव इस विषय में कुछ नहीं कर सकता। वह सोचती थी कि वह शायद स्वप्न था और उसमें सत्यता नहीं थी। उसके अपने मन में एक मुसलमान की स्त्री बनने के चित्र खिचने लगे। इससे उसके मन में एक प्रकार की ग्लानि उत्पन्न होने लगी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन उसने भीतर के कमरे में बैठे-बैठे सुना कि मन्नू जमादार, जिससे उसका विवाह होने वाला था, बाहर के कमरे में बैठा, उसके भाई से विवाह की बातें कर रहा है। बाहर के कमरे से भीतर के कमरे में आने का द्वार बन्द था। वह इच्छा न रहते हुए भी उठी और द्वार की दरार में से देखने और सुनने लगी।

मन्नू प्रौढावस्था का पुरुष था। घनी मूँछें और दाढ़ी रखी थी। देखने में सदाशिव से अधिक शक्तिशाली परन्तु गन्दा और मैला प्रतीत होता था। सदाशिव के मुख पर सौम्यता और आकर्षण था और मन्नू के मुख पर क्रूरता थी।

राने कह रहा था, "भाई मन्नू ! विवाह तो मजिस्ट्रेट बुलाकर हो जाएगा परन्तु सब खर्चा तुम्हें करना पड़ेगा। मेरे पास खर्च करने को कुछ नहीं। बाबा के मरने और बीमारी पर सब खर्च हो चुका है।"

"मजिस्ट्रेट के बुलाने पर पच्चीस रुपये फीस लग जावेगी। इससे मेरी राय है कि हम सब लोग कचहरी चले जावें। वहाँ पर सब कुछ हो जावेगा। केवल एक स्टाम्प-पेपर पर प्रार्थना-पत्र देना होगा। फिर घर पर मुल्ला बुलाकर निकाह पढ़ाने में भी तो खर्चा होगा।"

"इसकी क्या जरूरत है ?" राने का प्रश्न था।

"मेरी रूह नहीं मानती न।"

इस पर मन्नू के साथ आए लोग राने को अपने साथ बाहर ले गए। बाहर बरामदे में जाकर वे कुछ बातचीत करने लगे। तदनन्तर मन्नू भी उनमें जा सम्मिलित हुआ। जब वे सब लोग चले गए तो राने भीतर आया। बाहर का दरवाजा बन्द कर हाथ में पकड़े नोटों की गड्डी गिनने लगा। लक्ष्मी यह सब कुछ दरवाजे की दरार में से देख रही थी। उसने राने को यह कहते हुए सुना था कि उसके पास खर्च करने को रुपया नहीं है। अब उसने देखा कि दस-दस रुपये के कितने ही नोट उसके पास थे। वह समझ नहीं सकी कि ये सब रुपये उसके पास कहाँ से आए।

इस समय लक्ष्मी ने दरवाजा खोल दिया। राने ने लक्ष्मी को दरवाजे के भीतर खड़े देख प्रसन्नता से फूलते हुए कहा, "देखो टुनिया ! तुम्हारे लिए बढ़िया कपड़े और भूषण खरीदने को इतने रुपये लाया हूँ।"

"भैया ! कहाँ से लाए हो ये रुपये ?"

"कहीं से भी हुए, पर हैं ये सब तुम्हारे लिए।"

लक्ष्मी इसका यह उत्तर देना चाहती थी कि उसे इनकी आवश्यकता नहीं, परन्तु उसे भय था कि ऐसा कहने पर पीटी जावेगी। इस कारण चुप रही।

अगले दिन वह मीना के घर गई हुई थी कि एक स्त्री उससे मिलने आई। वह लक्ष्मी का घर बन्द देख पड़ोस में मीना की माँ का दरवाजा खटखटाने लगी। जब मीना ने दरवाजा खोला तो उस स्त्री ने पूछा, "नम्बर १५५ में जो लक्ष्मी रहती हैं, वह कहाँ गई हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों ? क्या काम है ?"

"उनसे मिलना है।"

मीना ने लक्ष्मी की ओर देखकर कहा, "वह बैठी है।"

वह स्त्री मकान के भीतर हो गई और पूछने लगी "तुम लक्ष्मी हो ?"

"हाँ, क्यों ?" लक्ष्मी ने पूछा।

"मैं तुमसे मिलने आई हूँ। अपने घर नहीं चलोगी ?"

"आप कौन हैं ? यहीं बैठ जाइए। यह," उसने मीना की माँ की ओर देखकर कहा—"चाची हैं।"

"अच्छी बात है।"

इस समय मीना की माँ ने एक चटाई निकाल बिछा दी और आई हुई स्त्री से बैठने को कहा, "आप बैठिए।"

उस स्त्री ने कहा, "मैं इस लड़की के विवाह के विषय में बात करने आई हूँ।"

सब चटाई पर बैठ गईं। उस स्त्री ने अपना परिचय देते हुए कहा, "यहाँ के एक रहने वाले ने प्रार्थना-पत्र दिया है कि एक हिन्दू नाबालिग लड़की का विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध एक मुसलमान से किया जा रहा है। मैं यह जानने आई हूँ कि इसमें कितनी सचाई है ?"

उत्तर मीना की माँ ने दिया, "बात तो आपकी सत्य है, पर आप क्या कर सकती हैं और आप कौन हैं ?"

उस औरत ने कहा, "यदि लक्ष्मी यह कह दे कि वह उससे विवाह नहीं करना चाहती, तो मैं उसकी सहायता कर सकती हूँ।"

मीना की माँ ने पूछा, "कैसे ?"

"मैं विवाह रुकाने का यत्न करूँगी।"

"परन्तु मीना के पिता तो कहते थे कि जब लक्ष्मी का भाई उसका विवाह करने के लिए राजी है तो इसको कोई भी रोक नहीं सकता।"

"यह बात नहीं है। यदि यह मजिस्ट्रेट के सामने कह दे कि यह मन्नू से विवाह नहीं करना चाहती और अपने इस कहने पर डटी रहे तो इसके भाई की इच्छा नहीं चल सकती।"

"सत्य ?" लक्ष्मी ने प्रसन्नता से उछलते हुए कहा। परन्तु तुरन्त ही उसका मुख मलिन पड़ गया। उसने कुछ सोचकर कहा, "एक सदाशिव मास्टर जी हैं। बाबा ने उनको मेरे साथ विवाह कर लेने को कहा था। चाचाजी उनके पास गए थे, परन्तु उन्होंने कहा है कि यदि इस विवाह को रोकने का यत्न किया गया तो हिन्दू-मुसलमानों में झगड़ा हो जावेगा। उनका कहना है कि झगड़े में खून की नदियाँ बह जाने की सम्भावना है।"

उस औरत ने हँसते हुए कहा, "शायद सदाशिव तुमसे विवाह करना नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहता है। इसी कारण वह यह बहाना बना रहा है। देखो लक्ष्मी! सदाशिव तुमसे विवाह करता है या नही, मैं नहीं जानती। हाँ, हिन्दू-मुसलमान के झगड़े से डरकर तुम्हें एक मुसलमान से विवाह करने की आवश्यकता नहीं। तुमने सीता और राम की कथा सुनी है? रावण सीता से बलपूर्वक विवाह करना चाहता था। इसलिए राम ने लंका को फूंक डाला, रावण के परिवार के लोगों को मार डाला। लंका के युद्ध में सहस्रों मारे गए पर सीता को छुड़ा लिया गया। स्त्रियों की मान-प्रतिष्ठा स्थिर रखने के लिए युद्ध हो जाते हैं। इस पर तुम्हें डरना नहीं चाहिए। महारानी पद्मिनी को हरने के लिए सम्राट् ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया था। उसकी रक्षा के लिए चित्तौड़ के वीर सहस्रों की संख्या में युद्ध करते हुए मारे गए थे और जब वे लड़कर भी उसकी रक्षा नहीं कर सके तो पद्मिनी ने जलती चिता में बैठ अपने प्राणान्त कर दिए थे। अपनी इच्छा के विरुद्ध किसी दूसरे की बीवी बनना उसे स्वीकार नहीं हुआ।"

इन कथाओं को सुन लक्ष्मी के मन में छुपी हुई ग्लानि उभर उठी। उसने आवेश में पूछ लिया, "तो मैं क्या करूँ?"

"कल सरकारी अफसर यहाँ आवेंगे और तुमसे पूछेंगे। तुम उनको अपना निश्चय बताना। तुम यदि यह बात दृढ़ता से कह सको तो वे तुम्हारा विवाह मन्नू से रोक देंगे और फिर तुम्हारी रक्षा का प्रबन्ध भी कर देंगे।"

"अच्छी बात है। जब वे आवेंगे तो मैं कह दूँगी, परन्तु विवाह के दिन समीप आते जाते हैं।"

"तुम डरो नहीं। मैं उनके साथ आऊँगी और हाँ, आज मेरे आने की बात और कल किसी सरकारी अफसर के आने की बात किसी से नहीं कहना।"

अगला दिन रविवार का था। मील बन्द थी। राने शनिवार रात को पेट-भर शराब पीकर आया था और रात-भर लकड़ी के लट्ठे की भाँति सोया रहा। रविवार के दिन वह ग्यारह बजे दोपहर के समय उठा और चाय पी शौचादि में लग गया। वह स्नान कर घर में आया ही था कि दो कान्सटेबलों को साथ ले मैजिस्ट्रेट वहाँ आ पहुँचा। उनके पहुँचने के साथ ही वह स्त्री जो पिछले दिन लक्ष्मी से बात कर गई थी, दो अन्य स्त्रियों और एक वकील को साथ लिये हुए वहाँ पहुँच गई।

राने उन सबको अपने मकान के सामने खड़ा देख विस्मय करने लगा। लक्ष्मी चौके में बैठी रसोई कर रही थी। वह उस स्त्री को आया देख सब समझ गई और चौके से उठ भीतर के कमरे में चली गई।

एक कान्सटेबल ने मकान का नम्बर पढ़ राने से पूछा, "यहाँ कौन रहता है?"

"मैं रहता हूँ। क्या काम है?"

"तुम्हारा नाम?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"राने।"

'लक्ष्मी तुम्हारी बहिन है ?"

"हाँ।"

"ठीक है, यहाँ बाहर बरामदे में चारपाई जौर कुर्सियाँ लगा दो।"

राने एक कुर्सी अपने घर में से और दो कुर्सियाँ अपने पड़ोसियों के घर से ले आया। मैजिस्ट्रेट, वकील और पहले दिन वाली स्त्री कुर्सियों पर बैठ गईं। दो अन्य स्त्रियाँ खाट पर बैठ गईं और कान्सटेबल खड़े रहे।

मजिस्ट्रेट ने राने से कहा, "लक्ष्मी को बुलाओ।"

लक्ष्मी किवाड़ के पीछे खड़ी सब कुछ सुन रही थी। अतएव मजिस्ट्रेट के कहते ही बाहर आकर खड़ी हो गई।

मजिस्ट्रेट ने अपनी कलम निकाली और इस मुकदमे की फाइल चमड़े के अपने 'पोर्टमेण्टू' से निकाली। इस फाइल में रखे प्रार्थना-पत्र को निकाल और उस का कुछ काल तक अध्ययन कर लिखने को तैयार हो पूछने लगा—

"तुम्हारा क्या नाम है ?"

"लक्ष्मी।"

"बाप का क्या नाम है ?"

"कान्हा।"

"राने तुम्हारा क्या लगता है ?"

"सगा भाई है।"

"कान्हा जीवित है ?"

"मर गए हैं। एक मास से ऊपर हो गया है।"

"तुम्हारी आयु कितनी है ?"

"अभी पन्द्रह की नहीं हुई।"

"तुम्हारा विवाह होने वाला है ?"

"भैया कहते हैं दो सप्ताह में होगा। तब तक मैं पन्द्रह वर्ष की हो जाऊँगी।"

"विवाह किससे होने वाला है ?"

"भैया के अफसर हैं। नाम मन्नू जमादार है।"

"वे किस जाति के हैं ?"

"मुसलमान है। मैं उससे विवाह करना नहीं चाहती।"

"क्यों ?"

"वह मुसलमान है और शराब पीता है।"

इतना लिख मजिस्ट्रेट ने जक्ष्मी के हस्ताक्षर करवा लिए। तत्पश्चात् राने के बयान हुए। मैजिस्ट्रेट ने पूछा, "तुम्हारा नाम ?"

"राने।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या काम करते हो ?"

"कपड़ा मील में बुनाई का काम करता हूँ।"

"मन्नू को जानते हो ?"

"जानता हूँ।"

"उससे लक्ष्मी का विवाह करना चाहते हो ?"

"हाँ।"

"वह शराब पीता है ?"

"पीता होगा। मैं नहीं जानता।"

"तुम शराब पीते हो ?"

"हाँ, कभी-कभी।"

"बस ठीक है। हस्ताक्षर कर दो।"

इसके पश्चात् दो पड़ोसियों के बयान हुए। उन्होंने बताया कि मन्नू शराब पीता है और जब लक्ष्मी उससे विवाह करने को मना करती है तो राने उसे पीटता है।

अन्त में मजिस्ट्रेट ने यह आज्ञा लिख दी कि लक्ष्मी को आर्य समाज कन्या पाठशाला में रखा जावे और वहाँ की मुख्याधिष्ठात्री से इसकी रसीद ले ली जावे। लक्ष्मी जब तक बालिग न हो जावे, उसका विवाह न किया जावे।

राने की पाँच सौ की जमानत और पाँच सौ का मुचलका ले लिया गया, जिस से वह कोई अनियमित बात न कर सके।

यह सब कार्यवाही खुशीराम के प्रयत्न से हुई थी। शनिवार को आने वाली स्त्री खुशीराम की धर्मपत्नी राधा थी। वह रविवार को भी आई थी और उसके साथ आने वाली स्त्री आर्य समाज कन्या पाठशाला की मुख्याधिष्ठात्री थी। लक्ष्मी उसके साथ चली गई।

: ६ :

रविवार के दिन कर्मचारी यूनियन की कार्यकारिणी की बैठक थी। मन्नू जमादार इसका एक सदस्य था। कार्यवाही समाप्त हुई तो किसी ने जमादार के विवाह की बात चला दी।

"कहाँ ?" सबके मुख से निकल गया।

"यहीं। इनकी मील में राने नाम का हमारा सदस्य है। उसकी बहिन लक्ष्मी से।"

"मुबारिक हो मन्नू भाई।" यूनियन के प्रधान ने मन्नू से हाथ मिलाते हुए कहा।

इस प्रकार हर्ष की बातें हो रही थीं कि राने आया और मन्नू को एक ओर ले जाकर, उसके कान में, जो कुछ घर पर हुआ था, बता दिया। मन्नू यह सुन पागल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो उठा और राने को साथ ले कार्यकारिणी के सदस्यों के समक्ष आ उसने सब बात बता दी। सबने बात सुनी तो क्रोध और विस्मय में बैठे रह गए। यूनियन के प्रधान ने पूछा, "तुमने नहीं कहा कि तुम उसके भाई हो और उसके कुदरती 'गार्जियन' हो ?"

"सब कुछ कहा था। मेरे पड़ोसियों ने मेरे विरुद्ध साक्षी दी। लक्ष्मी ने भी यह कहा कि वह मन्नू से विवाह करना नहीं चाहती क्योंकि वह मुसलमान है।"

यूनियन के प्रधान ने दाँत पीसते हुए कहा, "यह हिन्दू इतनी बदकार कौम है कि देश में से साम्प्रदायिकता की आग बुझने नहीं देती। हम तो यह समझते हैं कि यह सरमायादारों का षड्यन्त्र है। हमारी हर कोशिश यह होनी चाहिए कि लोगों का ध्यान मजहब से हटाकर दुनियादारी की ओर लगावें।"

मन्नू ने कहा, "भाई जान ! यह सरमायादारों की बात नहीं। यह तो कांग्रेसी लोगों की शरारत मालूम होती है। सदाशिव कांग्रेसी नेता है। लक्ष्मी उससे प्रेम करती है। उसने ही अफसरों से मिल-जुलकर यह सब-कुछ किया मालूम होता है।"

प्रधान ने सभा विसर्जित कर दी और मन्नू को पीछे रोक लिया। जब दोनों अकेले रह गए तो उसने मन्नू से कहा, "देखो मन्नू भाई, हमारा उसूल यह है कि मकसद के हासिल करने के लिए हर एक तरीका इस्तेमाल हो सकता है। इसलिए मेरा यह कहना है कि तुम इसे हिन्दू-मुसलमान सवाल बनाकर मुसलमानों से मदद ले सकते हो। जब झगड़ा होगा तो हमारी यूनियन के मुसलमान सदस्य तुम्हारी मदद करेंगे।"

"पर यूनियन में फूट पड़ जावेगी ?"

"इसकी चिन्ता न करो। हमारे लोग डिसिप्लिन में ऐसे बँधे हुए हैं कि वे हमारे कामों को नीति मान लेते हैं। हमारे सब लोग समझते हैं कि उपायों की श्रेष्ठता का अनुमान उद्देश्यों की श्रेष्ठता से लगता है।"

मन्नू को लक्ष्मी की सूरत बहुत भाती थी। इस कारण वह विवाह के लिए बहुत लालायित हो रहा था। अपनी संस्था के प्रधान द्वारा मार्ग-प्रदर्शन किए जाने पर, वह मुस्लिम लीग के कार्यालय में जा पहुँचा। वहाँ उसकी 'नेशनल मुस्लिम गार्ड' के कप्तान से मुलाकात हुई। उसने इसकी कथा सुनी और सोचकर कहा, "भाई, तुम पता करो कि लड़की कहाँ रखी है। हमें कायदे आजम की खुफिया हिदायत (आज्ञा) मिली है कि हम बम्बई में 'डायरेक्ट ऐकशन' की तैयारी करें। उसमें हम तुम्हें कुछ गार्ड दे देंगे। तुम उनको साथ लेकर और अपनी यूनियन के मुसलमान सदस्यों को साथ लेकर उस लड़कियों की पाठशाला पर धावा बोल देना। फिर एक लड़की क्या, सब तुम्हारे अधिकार में होंगी।"

मन्नू आशा बाँध वहाँ से लौटा और अपनी मील में मुसलमान कर्मचारियों को संगठित करने लगा। राने तथा अन्य हिन्दू कर्मचारियों को बताया जाता था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजदूरों का राज्य स्थापित करने के लिए तैयारी की जा रही है। मील के समय के पश्चात्, लाठी चलाना, कुश्ती करना और गदका इत्यादि खेल होते थे। इस प्रारम्भिक शिक्षा के बाद चुने हुए लोगों को दरगाह शाह मुराद में छुरा चलाना, बन्दूक चलानी और लड़ाई के दूसरे ढंग सीखने के लिए वहाँ भेजा जाने लगा।

बम्बई की प्रत्येक मसजिद में इस प्रकार की यह तैयारी हो रही थी। मन्नू जमादार सप्ताह में एक-दो बार मुस्लिम लीग के कार्यालय में भी जाया करता था और अपने कार्य की प्रगति वर्णन कर आया करता था। वहाँ नेशनल मुस्लिम गार्ड के कप्तान से उसे प्रोत्साहन मिला करता था।

एक दिन कप्तान ने पूछा, "जमादार, कितने आदमी तैयार हैं?"

"तीन सौ से ऊपर हैं?"

"उनमें कितने छुरा चलाना जानते हैं?"

"पचास से ऊपर हैं।"

यह सब कप्तान ने अपने रजिस्टर में लिख लिया।

मन्नू ने पूछा, "क्यों साहब, हमारी कब जरूरत होगी?"

"अभी तैयारी काफी नहीं है। कोशिश करते जावो।"

: ७ :

'मौण्ट प्लैजेण्ट' मालाबार हिल, बंगला नम्बर १० पर एक दिन भारी चहल-पहल थी। मुस्लिम लीग के प्रेजिडेण्ट मिस्टर मुहम्मद अली जिन्ना दिल्ली से लौट आए थे और उनके अपने घर में मुस्लिम लीग की कार्यकारिणी की बैठक हो रही थी। बाहर लॉन में समाचार-पत्रों के संवाद-दाताओं की भीड़ लगी थी। कोठी के बाहर मुस्लिम नेशनल गार्ड के वालेण्टियर खड़े पहरा दे रहे थे।

भीतर एक कमरे में एक दर्जन से अधिक लोग बैठे कायदे-आजम की प्रतीक्षा कर रहे थे। कायदे-आजम मिस्टर जिन्ना, एक दूसरे कमरे में नेशनल मुस्लिम गार्ड के भिन्न-भिन्न स्थानों के कप्तानों से मिल रहे थे। कप्तान अपने-अपने स्थान की तैयारी का वृत्तान्त बता रहे थे। कितने वालेण्टियर भर्ती हुए हैं, कितने क्या-क्या जानते हैं, आग लगाने के कितने बम्ब बने, इत्यादि सूचनाएँ दी जा रही थीं।

अन्त में कायदे-आजम ने मुस्लिम गार्डों के कप्तानों को कार्यक्रम समझाया, "हम लोगों ने मुसलमानों के लिए हिन्दुस्तान का एक हिस्सा पाने की माँग की है। अब इंग्लैंड में मजदूर सरकार बन चुकी है। यह सरकार टोरी सरकार से ज्यादा ईमानदार है। सरकार हमारी माँग के पीछे हमारी ताकत देखना चाहती है। कैबिनेट मिशन से गुफ्तगूह करते हुए कई बार मुझसे पूछा गया कि कांग्रेस के पीछे तो तमाम मुल्क है, सन् १९४२ के दंगों में भी बीस हजार से ऊपर लोग कैद हो गए थे जिन्होंने मुआफ़ी नहीं माँगी थी। मुस्लिम लीग के पास ऐसी कोई ताकत नहीं है और यदि मुल्क के एक हिस्से की सरकार मुस्लिम लीग को दे दी गई तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे कैसे उसमें हुकूमत कायम करने में कामयाब हो सकेंगे। मुसीबत यह है कि जहाँ पाकिस्तान बनना है वहीं हमारी ताकत कम है। सरहद्दी सूबा, पंजाब, बंगाल और मालाबार इन सब जगहों पर न तो काबिले जिकर कोई लीडर है, न ही कोई लड़ने-मरने वाला जांबाज। हैदराबाद हमारा गढ़ जरूर है, परन्तु वहाँ जनता हिन्दू है।

"अब यह काम मैंने तुम लोगों को दिया है कि एक तो अपने में इतना डिसिप्लिन पैदा करो कि बिना हुक्म तुम्हें कुछ नहीं करना, चाहे दूसरी ओर से तुम पर गोली चले। दूसरे, जब हुकुम मिले तो हिन्दुओं के साथ दोस्ती, हमसायापन अथवा रहम नहीं दिखाना। आपने तो अपना फर्ज बजा लाना है।

"मकसद एक है। कम-से-कम उन इलाकों को जहाँ पाकिस्तान बनना है हिंदुओं से खाली कराना है। या तो उनको डरा-धमकाकर वहाँ से भगा दें, या उन सबको मुसलमान बना लें। पाकिस्तान के लिए दो शहर बहुत जरूरी हैं। एक कलकत्ता और दूसरा लाहौर। दोनों को हिन्दुओं से खाली करना है। वहाँ से इनको भगा दो, मुसलमान बना लो, नहीं तो मौत के घाट उतार दो।

"अब आप लोग जाओ और हुकुम का इन्तजार करो।"

इसके पश्चात् कायदे-आजम मुस्लिम लीग की वर्किंग कमेटी की मीटिंग में जा पहुँचे। वहाँ 'डायरेक्ट ऐकशन' को आरम्भ करने के स्थान, ढंग और समय पर विचार हो रहा था। इस कार्य को आरम्भ करने के लिए तीन स्थान विचाराधीन थे। एक बम्बई, दूसरा लाहौर और तीसरा कलकत्ता।

जब कायदे-आजम को बातचीत के विषय का पता चला तो उसने कहा, "मैंने अभी नैशनल गार्ड्स के कप्तानों से बात की है। उन लोगों से जो ब्यौरा मिला है, उस पर मेरा यह ख्याल बना है। बम्बई में नेशनल गार्ड्स की तादाद बहुत कम है। यहाँ मरहट्ठे और विशेष रूप में भट्टी लोग लड़ाके हैं और भारी तादाद में मौजूद हैं। यहाँ सरकार तो कांग्रेसी है मगर महात्मा गांधी की अहिंसा की नीति के मानने वालों की तादाद बहुत कम है। यहाँ हिन्दू महासभा का जोर भी काफी है। इन तमाम वजूहात से डायरेक्ट ऐकशन शुरू करने के लिए बम्बई अच्छी जगह नहीं है। मैं शुरू-शुरू में नाकामयाबी देखना नहीं चाहता।

"लाहौर में यूनियनिस्ट पार्टी का सिक्खों और कांग्रेसियों से समझौता हो जाने से, सरकार हमारे हाथ में नहीं आ सकी। वहाँ आर्य समाज का भी जोर है और हिन्दू तुलेवा बहुत ज्यादा तादाद में रहते हैं। इसलिए मैं इस काम को शुरू करने के लिए लाहौर को भी ठीक जगह नहीं समझता।

"इस लड़ाई की शुरुआत ऐसी जगह से होनी चाहिए जहाँ हमें पूरी कामयाबी हासिल हो सके। जब कोई काम अच्छे तरीके से शुरू हो जावे तो उसे आधे से ज्यादा कामयाब हो गया समझ लेना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसलिए मैंने फैसला किया है कि यह काम कलकत्ता में शुरू किया जावे। वहाँ हिन्दुओं की आबादी ज्यादा तो है पर यह आबादी उन लोगों की है जो या तो धोतीपोश बाबू हैं या बलदार पगड़ी पहनने वाले मारवाड़ी। न वहाँ आर्यसमाज का प्रचार है न हिन्दू-महासभा का। कलकत्ता क्लर्कों का नगर है। वहाँ मुसलमानी सरकार है। वहाँ के प्रीमियर हमारी वर्किंग कमेटी के मेम्बर हैं और वहाँ के गवर्नर हिन्दुओं के विरोधी हैं। कलकत्ता पुलिस में ज्यादा मुसलमान हैं।

"मैं चाहता हूँ कि पहले दिन ही इतना खौफ पैदा कर दिया जावे कि बंगाली और मारवाड़ी एक दूसरे पर गिरते-पड़ते ऐसे भागें कि कलकत्ता से जाने वाली सड़कों पर स्थान न रहे। इस डायरेक्ट ऐकशन का यह असर होना चाहिए कि कलकत्ता के हिन्दुओं की साठ फी-सदी आबादी तीन दिन में कम होकर चालीस फी-सदी रह जावे।"

: ८ :

बाहर घास के मैदान में समाचार-पत्रों के संवाददाता बैठे-बैठे थक गए तो छोटी-छोटी टोलियों में बैठ या तो ताश खेलने लगे या हँसी-ठट्ठे की बातें करने लगे। इनमें एक मिस कर्टिस 'न्यूयार्क टाईम्स' की संवाददात्री थी। वह तीस-बत्तीस वर्ष की अमेरिकन युवती, दुबली-पतली परन्तु चंचल और चमकदार आँखों वाली थी। वह संवाददाताओं की टोलियों में इधर-उधर घूम रही थी। हिन्दुस्तानी पत्रों के प्रतिनिधि उसका, स्त्री होने के नाते, आदर करते थे और उसे देख हँसी की बातें बन्द कर लेते थे। इससे मिस कर्टिस यह समझती थी कि वे लोग उससे कोई समाचार छुपाकर रख रहे हैं। यह बात उसकी बेचैनी बढ़ा रही थी।

उत्तरी भारत के रहने वाले कुछ संवाददाता एक पृथक् मंडली बनाए घास पर बैठे थे। पंजाबियों के विशेष हास्यप्रद गुणों का उल्लेख हो रहा था। सीधे, सरल, हँसोड़ मुख और मोटी बुद्धि के पंजाबियों की बातें हो रही थीं। कोई सुना रहा था, "पंजाब के एक मंत्री एक सायं, सर खिजर के यहाँ खाना खा रहे थे। खाना बहुत स्वादिष्ट था और कई कोर्सिज थे। खाने के साथ बढ़िया स्काच-ह्विस्की का भी प्रबन्ध था।

"इस प्रकार खाते-खाते बहुत देर हो गई और मंत्री-महोदय कुछ अधिक पी जाने के कारण अपनी कोठी को जाना कठिन अनुभव कर रहे थे। सर खिजर ने कह दिया कि श्रीमान, रात को उनकी कोठी पर ही रह जावें तो ठीक है।

"धन्यवाद कहकर मंत्री महोदय रात वहाँ रहने के लिए तैयार हो गए।

"मंत्री महोदय के लिए एक कमरे में बिस्तर लगवा दिया गया और वे सोने की पोशाक पहन बिस्तर पर लेट गए। एकाएक वे उठे और उन्हीं कपड़ों में अपनी मोटर में, जो कोठी के पिछवाड़े खड़ी थी, जाकर उसे स्टार्ट करने लगे। सर खिजर कोठी के बरामदे में खड़े एक अन्य मेहमान को विदा कर रहे थे। उनकी दृष्टि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन मोटर स्टार्ट करते हुए मंत्री महोदय पर चली गई। उन्होंने समीप जा पूछा, "ऑनरेबल मंत्री किधर जा रहे हैं?'

" 'मैं समझता हूँ कि 'मिसेज' को वता आऊँ कि मैं रात यहाँ से आ नहीं सकता।' "

सब खिलखिलाकर हँस पड़े। इस हँसी की ध्वनि सुन मिस कर्टिस इस मण्डली की ओर आ पूछने लगी, "वट प्लेजेण्ट न्यूज हैव यू गाट?" (आपको कौन-सा आनन्दप्रद समाचार मिला है?)

"आइए! आइए!! वहुत समाचार हैं", ट्रिब्यून दैनिक के संवाददाता ने उससे कहा। अन्य सब लोग चुप रहे। वह उसके पास आकर बैठ गई। 'ट्रिब्यून' दैनिक के संवाददाता ने उसका अपने साथियों से परिचय कराया, "यह मिस कर्टिस 'न्यूयार्क टाईम्स' की संवाददाता हैं। मुझे आपके दर्शन का सौभाग्य १९४४ में गांधी-जिन्ना वार्तालाप के समय हुआ था।"

"हाँ, मुझे याद है", मिस कर्टिस ने कहा, "आपने मुझसे शर्त लगाई थी कि मिस्टर जिन्ना संवाददाताओं को पानी भी नहीं पूछेंगे। मैंने कहा था कि अंग्रेजी पढ़ा-लिखा आदमी इतना तो सभ्य होगा ही कि घर आए हुए लोगों को सायं समय चाय तो पूछ ले। वह शर्त आप जीते थे और मुझे आपको उस रात 'ताज' में 'डिनर' खिलाना पड़ा था।"

"आपकी स्मरण-शक्ति बहुत अच्छी है। मिस कर्टिस! आज का 'स्कूप' यह है कि वर्किंग कमेटी की बैठक के पश्चात् मिस्टर जिन्ना कोठी के बाहर भी नहीं आएँगे और चपरासी के हाथ संवददाताओं को कहला भेजेंगे कि देने को कोई समाचार नहीं है। बताओ शर्त लगती है?"

मिस कर्टिस ने कहा, "मैं समझती हूँ कि आप 'स्कूप' लगाने में बहुत चतुर हैं। इस कारण शर्त नहीं लगाती। परन्तु इतना बता देना चाहती हूँ कि मुझसे विशेष भेंट होगी।"

एक भद्दी काय वाले दिल्ली के एक पत्र के प्रतिनिधि ने कहा, "यह तो आपकी सुन्दर चमकदार आँखों के देखने के लिए हो सकता है। इसमें, यदि ये शर्त लगावेंगे तो निश्चय हार जावेंगे।"

"आपकी प्रशंसा के लिए धन्यवाद।" मिस कर्टिस ने कहा।

मिस्टर सिंह ने कहा, "यदि मिस कर्टिस शर्त लगाएँ तो मैं हारने के लिए भी तैयार हूँ। इनके साथ 'डिनर' खाने के आनन्द के लिए हार भी पसन्द है।"

"शर्त मंजूर है।" मिस कर्टिस ने कहा।

इस समय सायंकाल के पाँच बज रहे थे। भीतर से चपरासी आया और समीप आकर पूछने लगा, "मिस कर्टिस कौन हैं?"

मिस कर्टिस ने पूछा, "क्या है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपको साहब भीतर बुलाते हैं।"

मिस्टर सिंह के एक साथी ने कहा, "आप हार गए, खाना खिलाना होगा ?"

"उनके साथ खाना खाने का आनन्द प्राप्त करना भी जीत ही है, यह हार नहीं है।"

इस समय मुस्लिम लीग के मन्त्री महोदय बाहर आए और बोले, "कायदे-आजम साहब का कहना है कि उनके पास आपको देने लायक कोई समाचार नहीं। आप लोग जा सकते हैं।"

सब संवाददाता मिस्टर सिंह का मुख देखने लगे। वे हैरान थे कि उसे यह सब कैसे सूझी थी। मिस्टर सिंह ने सबसे आगे हो मन्त्री से पूछा, "पर साहब, इतना तो आप भी बता सकते हैं कि 'वर्किंग कमेटी' की बैठक समाप्त हो गई है या नहीं ? क्या ये कल भी जारी रहेगी ?"

मन्त्री ने बता दिया, "खतम हो गई।"

"क्या यह सत्य नहीं कि वर्किंग कमेटी के मेम्बरों को कायदे-आजम ने डाँटा है ?"

मन्त्री हँस पड़ा और बोला, "मिस्टर सिंह ! तुम इतने पुराने काम करने वाले होते हुए यह भी नहीं. जानते कि कोई भी डाँट खाने वाला इसे स्वीकार नहीं करेगा।"

सब हँस पड़े !

मिस्टर सिंह ने शिकायत के रूप में कह दिया, "जनाब, मुस्लिम लीग के प्रधान ने एक औरत को विशेष मुलाकात इनायत कर मुझे शर्त में हरा दिया है। मैंने शर्त लगाई थी कि अन्य संवाददाताओं से उसे तरजीह नहीं दी जावेगी।"

एक और ने पूछ लिया, "डायरेक्ट ऐकशन का फैसला हो गया है ?"

मन्त्री ने मुस्कराते हुए कहा, "जो कुछ फैसला हुआ है या होगा सब आप लोगों के सामने अमली सूरत में आ जावेगा। खुदा हाफिज।"

इतना कह मन्त्री महोदय कोठी के भीतर चले गए। संवाददाता एक दूसरे का मुख देखते रह गए। किसी ने मिस्टर सिंह से कहा, "आओ चलें।"

"भाई ! मुझे मिस कर्टिस की प्रतीक्षा करनी है। उसके साथ 'डिनर' खाना है।"

मिस्टर सिंह अकेला कोठी के बाहर खड़ा रहा। मिस कर्टिस एक घण्टा-भर कायदे-आजम के साथ बातें करती रही। जब वह बाहर निकली तो अँधेरा हो चुका था। अन्य सब संवाददाता जा चुके थे। उसने मिस्टर सिंह को खड़े देख पूछा, "आप अभी हैं ?"

"हाँ आपको 'डिनर' पर ले जाना है। आज शर्त मैं हारा हूँ।"

मिस कर्टिस ने हँसते हुए कहा, "मुझे मालूम था कि मिस्टर जिन्ना अमेरिकन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रों में कुछ छपवाना चाहेंगे और इसलिए मुझसे भेंट करेंगे। मेरा अनुमान ठीक निकला।"

दोनों टैक्सी-स्टैंड की ओर चल पड़े। साथ चलते-चलते मिस्टर सिंह ने कहा, "मिस कर्टिस ! मैं आपको एक और 'स्कूप' देता हूँ, मिस्टर जिन्ना ने अमेरिकन्ज को यह सूचना दी है कि अंग्रेजी मजदूर सरकार और हिन्दू कांग्रेसी मिलकर मुसलमानों के विरुद्ध षड्यंत्र कर रहे हैं। मुस्लिम लीग ने इस षड्यंत्र का विरोध करने का निश्चय कर लिया है। वे इस अपवित्र मेल को तोड़ने का भरसक यत्न करेंगे। उसे अमेरिका को यह बताना है कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों के साथ दुनिया-भर के मुसलमानों को हमदर्दी है। यदि उनसे अच्छा व्यवहार नहीं हुआ तो मुस्लिम देशों का समूह अमेरिका तथा इंग्लैण्ड का विरोधी दल बन जावेगा।"

मिस कर्टिस खिलखिलाकर हँस पड़ी और चुप रही। मिस्टर सिंह ने कहना जारी रखा, "रात को 'मानचैस्टर-गार्जियन' के संवाददाता से वह मिल रहा है।"

मिस कर्टिस ने अचम्भा प्रगट करते हुए पूछा, "आपको किसने कहा है यह ?"

मिस्टर सिंह हँस पड़ा और अपनी बात कहता गया, "ब्रिटेन के समाचार-पत्रों से वह यह कहना चाहता है कि हिन्दुओं की संख्या हिन्दुस्तान में अधिक है जिससे वह धींगामस्ती कर मुसलमानों को गुलाम बनाना चाहते हैं। जब एक बार देश का विभाजन मान लिया गया तो फिर उनको इकट्ठे बाँधकर रखना हिन्दुओं की जबरदस्ती है।"

इस समय वे टैक्सी-स्टैंड पर पहुँच गए। वहाँ से वे टैक्सी में बैठ 'ताज' की ओर चल पड़े। मार्ग में मिस कर्टिस ने पूछा, "मिस्टर सिंह ! तुम हिन्दू हो ?"

"मैं संवाददाता हूँ।"

मिस कर्टिस ने मुस्कराकर कहा, "मेरे पूछने का अभिप्राय यह है कि क्या आप पाकिस्तान बनना पसन्द करते हैं ?"

"नहीं।"

"क्यों ?"

"यह प्रश्न एब्राहम लिन्कन से पूछा जाना चाहिए था।"

"हमें 'यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका' को एक रखने के लिए भयंकर युद्ध करना पड़ा था, परन्तु मैं देखती हूँ कि यहाँ के नेता युद्ध से घबराते हैं। मेरा मतलब यह है कि कांग्रेसी नेता महाडरपोक हैं।"

"डरपोक नहीं कहा जा सकता। वे अपने निश्चय पर दृढ़ हैं। केवल युद्ध को ठीक तरीका नहीं समझते।"

"तो क्या उन्होंने युद्ध से कोई अच्छा तरीका मालूम कर लिया है ?"

"हाँ ! महात्मा गांधी का अहिंसात्मक सत्याग्रह। इस ढंग से हमने ब्रिटिश जैसी शक्तिशाली जाति को हिला दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिस कर्टिस खिलखिलाकर हँस पड़ी। "देखो मिस्टर सिंह," उसने कहा, "महात्मा गांधी का तरीका न केवल असफल रहा है प्रत्युत हानिकर भी सिद्ध हुआ है। उन्होंने दक्षिणी अफ्रीका में सत्याग्रह किया था। उसका परिणाम यह हुआ है कि वहाँ के अफसर हिन्दुस्तानियों के अधिक विरोधी हो गए हैं और हिन्दुस्तानी, अफ्रीका के असली रहने वालों से दूर हो गए हैं। मैं यह भविष्यवाणी करती हूँ कि दक्षिणी अफ्रीका की समस्या बिना युद्ध के नहीं सुलझेगी। जो कौम उसके लिए तैयारी नहीं करती वह पिस जाएगी और मर जाएगी।

"फिर देखो महात्मा जी ने खिलाफत के लिए सत्याग्रह किया था। उसका परिणाम क्या हुआ है। खिलाफत का नामोनिशान नहीं रहा। यदि यह मानें कि महात्मा जी ने खिलाफत का प्रश्न मुसलमानों को खुश करने के लिए किया था, तो वह भी सफल नहीं हुआ। वे खुश नहीं हुए, प्रत्युत यह बात संशयरहित है कि पिछले तीस वर्षों में हिन्दुस्तान के मुसलमान हिन्दुओं से दूर हुए हैं।

"तवारीख गवाह है कि जितना रक्तपात अहिंसा ने कराया है उतना लड़ाई ने नहीं। आपको तो भारत का इतिहास विदित होना चाहिए। बौद्धों की अहिंसा ने मौर्य साम्राज्य को नष्ट कर विदेशी आक्रमण सफल बनाए। बाद में भी मुसलमानों का सफल आक्रमण इसी कारण हुआ।

"यह बात भी गलत है कि 'क्विट इण्डिया' आन्दोलन के प्रभाव से हिन्दुस्तान को कुछ मिला है या मिलने वाला है। इस आन्दोलन का यदि कुछ प्रभाव अंग्रेजों पर या हम लोगों पर हुआ है, तो हमारा हिन्दुओं पर भरोसा कम करने वाला हुआ है। अंग्रेज अब बिना पाकिस्तान बनाए और हिन्दुस्तान को, इस प्रकार बिना कमजोर किए यहाँ स्वराज्य नहीं देंगे।

"अंग्रेज कौम विकास कर रही है। उनकी राजनीतिक संस्थाओं में भी विकास हो रहा है। इस विकास को दोनों महायुद्धों ने सहायता दी है। फिर बाबू सुभाष चन्द्र बोस ने भी अंग्रेजी कौम के दिमाग में विकास की गति को तीव्र किया है।

"अंग्रेजों के मानसिक विकास के तेज होने का सबसे बड़ा कारण है रूस में सोविएट सरकार का बनना और उसकी उन्नति करना। प्रजातन्त्रवादियों को भावी युद्ध में हिन्दुस्तानी फौजी शक्ति की आवश्यकता हिन्दुस्तान को स्वराज्य दिलाने का कारण बन गई है।"

"पर हम लोग समझते हैं," मिस्टर सिंह ने कहा, "कि महात्मा जी के आन्दोलन ने संसार पर यह सिद्ध कर दिया है कि हम ईमानदार लोग हैं। हम किसी से लड़ना नहीं चाहते और किसी को हमसे डरना नहीं है। इन्हीं कारणों से अंग्रेज हमको स्वराज्य देने पर विवश हो गए हैं।"

"यदि मैं एक बात कहूँ तो नाराज तो न होंगे?"

"अजी नहीं! आपकी बातों में मजा आता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब सुनो। महात्माजी को जब क्रिप्स योजना दी जा चुकी थी तब भी उन्होंने सैबोटेज करने वाला आन्दोलन चलाने में संकोच नहीं किया। इससे हम महात्मा जी को किंचित् भर भी विश्वास के योग्य नहीं मानते। हम मिस्टर जिन्ना को अधिक विश्वासयोग्य समझते हैं। अब भी यदि कैबिनेट मिशन के साथ कोई समझौता हुआ है तो वह मौलाना आजाद और खान अब्दुल गफार खाँ के प्रयत्नों से हुआ है। महात्मा गांधी तो मानते ही नहीं थे।"

"मेरा विचार है कि आप लोग हमको समझ ही नहीं सकते।" मिस्टर सिंह ने निरुत्तर हो कहा।

"हाँ। आप, अर्थात् मिस्टर सिंह को समझना कठिन है। परन्तु महात्मा गांधी को हम भली-भाँति समझते हैं। वे न तो इतिहास जानते हैं न ही मनोविज्ञान को। उनका राजनीति का ज्ञान सर्वथा प्रारम्भिक है।"

"आप ऐसा कहकर उन सब लोगों को मूर्ख बना रही हैं जो महात्माजी को भगवान का अवतार समझते हैं।"

"मैंने उनके भगवान का अवतार होने में सन्देह नहीं किया, परन्तु भगवान कभी-कभी दुष्टों को दण्ड देने के लिए भी तो अवतार लेते हैं। महात्मा गांधी हिन्दुतानियों को, विशेष रूप से हिन्दुओं को, उनके पापों का फल देने में लगे हुए हैं। वे उन लोगों को दुनिया के पर्दे से मिटा देना चाहते हैं।"

इस समय वे होटल 'ताज' के सामने आ पहुँचे थे। मिस्टर सिंह ने कहा, "लो हम आ गए। आओ। इस धिक्-राजनीति को छोड़ आपके प्रसन्नता से रौशन मुख को देखने का आनन्द पाऊँ।"

मिस कर्टिस ने मुस्कराते हुए और तिरछी दृष्टि से देखते हुए कहा, "मैं आपको इतना 'गैलेण्ट' नहीं समझती थी।"

दोनों होटल में घुस गए।

: ६ :

सदाशिव को जब मालूम हुआ कि लक्ष्मी को राने से पृथक् कर आर्य कन्या पाठशाला के बोर्डिंग हौस में रख दिया गया है तो उसके मन में बहुत प्रसन्नता हुई। इसके पश्चात् जब उसने देखा कि किसी प्रकार का हिन्दू-मुस्लिम फसाद नहीं हुआ तो वह अपनी आत्मा की दुर्बलता पर लज्जित हुआ।

उसके मन में लक्ष्मी के लिए अनुराग था, परन्तु झगड़े से डरकर ही वह अपने मन के भावों को दबाए हुए था। जब उसने देखा कि लक्ष्मी के आर्य कन्या पाठशाला में ले जाए जाने पर भी किसी प्रकार का झगड़ा नहीं हुआ, तो उसके मन में पुनः उससे सम्बन्ध उत्पन्न करने की इच्छा होने लगी। इस इच्छा की पूर्ति के लिए, एक दिन वह कन्या पाठशाला की मुख्याधिष्ठात्री के पास जा पहुँचा। वह उसे नहीं जानती थी। इस कारण उसने सदाशिव को राधा देवी की ओर भेज दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधा देवी उस कन्या पाठशाला की मैनेजर थीं।

सदाशिव जब राधा देवी से मिलने गया तो वह खुशीराम तथा अपने बच्चों के साथ सायंकाल का अल्पाहार कर रही थीं। नौकर ने सदाशिव का कार्ड राधा देवी के सामने रखा तो उसकी हँसी निकल गई। खुशीराम ने अचम्भे में उनकी ओर देखा तो उसने बताया कि, "श्रीमान् सदाशिव आये हैं।"

"क्या काम हो सकता है उसका तुम्हारे साथ?"

"लक्ष्मी के सम्बन्ध की बात ही होगी। उसका मुझसे और क्या प्रयोजन हो सकता है?"

"अब लक्ष्मी से उसका क्या सम्बन्ध है? विवाह तो उससे हो नहीं सकता।"

"मैं समझती हूँ कि बुला लूँ।"

उसने नौकर को कहा, "उनको ले आओ।"

सदाशिव आया तो उसको चाय का निमन्त्रण दे दिया गया। एक-आध बार न करने पर उसने चाय स्वीकार कर ली। इस समय उसने खुशीराम को पहचान लिया। खुशीराम ने सदाशिव को नमस्ते कहकर पूछा, "आपने मुझको पहचाना है या नहीं?"

"आप मुझसे मन्दिर में मिलने आए थे न?"

"आपकी स्मरणशक्ति बहुत अच्छी है। उस समय आपने मेरा कहना नहीं माना था।"

"मैं समझता हूँ कि उस समय मेरे न करने से कुछ हानि नहीं हुई। मैं कांग्रेस असेम्बली पार्टी का सदस्य होने से, यदि इसमें हस्तक्षेप करता तो बहुत हल्ला-गुल्ला हो जाता। आपका काम भी दुस्तर हो जाता।"

"हानि तो हुई है क़िन्तु आपको। आप उस लड़की की नजरों में गिर गए हैं। वह आपसे घृणा करने लगी है। हमारी दृष्टि में तो कांग्रेस और भी पतित हो गई है।"

"इसमें कांग्रेस का क्या सम्बन्ध है? जो कुछ मैंने किया था और जो कुछ मैं अब कर रहा हूँ वह सब अपने आप कर रहा हूँ।"

राधा मुस्कुराई और कहने लगी, "अभी तो आप कह रहे थे कि कांग्रेस असेम्बली पार्टी का सदस्य होने से आपका इस बात में हस्तक्षेप न करना ठीक रहा।"

इससे सदाशिव कुछ लज्जित हुआ परन्तु शीघ्र ही अपने को सम्हाल कहने लगा, "वह बात दूसरी है। उसका कांग्रेस के सिद्धान्तों से कोई सम्बन्ध नहीं। वह तो मैंने एक नीति की बात कही है।"

खुशीराम ने कहा, "यही तो हम सोच रहे हैं कि कांग्रेस की नीति और उसके नेताओं की नीति में कुछ अन्तर है, यह नहीं? आपने उस लड़की को, जिसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी स्त्री बनाना चाहते थे, इसलिए छोड़ दिया कि ऐसा करने से हिन्दू-मुस्लिम फसाद होने की सम्भावना थी। यह व्यवहार आप जैसे कांग्रेसी नेता से कांग्रेस के मन्तव्यों के कारण कहें अथवा आपकी मानसिक दुर्बलता के, आप ही बता सकते हैं।"

"मैं अब सोचता हूँ कि वह व्यवहार मेरे मन की दुर्बलता के कारण ही कहना चाहिए।"

"तो ठीक है। इस पर तो मेरा यह विश्वास ठीक ही निकला है कि लक्ष्मी पर हमने दुगुनी भलाई की है। एक तो उसको मुसलमान बन जाने से बचाया है और दूसरे उसको एक दुर्बलात्मा की बीवी बनने से।"

"पर मैं तो उसको मिलने की स्वीकृति माँगने आया हूँ।"

"किसलिए, क्या काम है?" राधा देवी ने पूछा।

"आप जानती हैं कि मेरा उससे सम्बन्ध रहा है।"

"मैं समझती हूँ कि वह सम्बन्ध टूट चुका है। आपने अपने विचार से तो उसको एक ऐसे आदमी के हाथ सौंप दिया था जिसके पास जाने से वह घृणा करती थी। अब आपका उससे मिलने का क्या अधिकार हो सकता है?"

"मैं अपने उस समय के व्यवहार से लज्जित हूँ। उसके लिए आपसे और उससे क्षमा चाहता हूँ। इसीलिए मैं उससे मिलना चाहता हूँ। मैं यत्न करना चाहता हूँ कि उससे अपना पुराना सम्पर्क उत्पन्न करूँ।" सदाशिव ने आँखें नीचे किए हुए कहा।

"यदि अब भी उससे विवाह करने पर हिन्दू-मुस्लिम झगड़ा होने की सम्भावना हो गई तो क्या करियेगा?"

"यह मैं इस समय क्या बता सकता हूँ? इस समय तो किसी झगड़े की सम्भावना प्रतीत नहीं होती।"

खुशीराम ने बीच में टोककर कहा, "देखिये पंडित सदाशिव! आपको भली-भाँति समझ लेना चाहिए कि इस लड़की पर एक मुसलमान की नजर है। यदि आप उससे इस लड़की की रक्षा कर सकते हैं, या कम-से-कम उसकी रक्षा के लिए जी-जान की बाजी लगा सकते हैं, तब तो उसके पीछे-पीछे भागने की जरूरत है। नहीं तो विवाह का कहीं और प्रबन्ध कर लीजिए।"

"जब मेरा उससे विवाह हो जावेगा तब मैं इस विषय पर सोच लूँगा।"

"क्या सोच लीजिएगा? आप तो उस दिन कहते थे कि हिन्दू-मुस्लिम फसाद हो जाने पर स्वराज्य मिलने से रह जावेगा। मेरा प्रश्न तो यह है कि क्या अब भी आप अपनी बीवी को प्रत्याशित स्वराज्य पर न्योछावर कर देंगे?"

"स्वराज्य बीवी से कहीं अधिक प्रिय है।"

"मैं समझता हूँ कि आपका विवाह इस लड़की से होना उचित नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इससे ही क्यों ?"

"तुम उसके अधिकारी नहीं हो।"

"अधिकार पाने के लिए क्या करना चाहिए ?"

"उसके प्रति अपना कर्तव्य-पालन करना होगा।"

"कर्तव्य कर्तव्य में विरोध हो जावे तो किसका पालन करना होगा ?"

"कर्तव्य कर्तव्य में विरोध नहीं होता। सत्य एक है। मिथ्या और सत्य का विरोध तो होता है, सत्य सत्य में विरोध नहीं हो सकता। बुद्धिभ्रम हो जाने से मिथ्या वस्तु सत्य दिखाई देने लगती है। इसी से विरोधाभास होता है।"

"मुझे उसके पाने का यत्न तो करने दीजिए।"

"वह आप जैसे विचार के आदमी से विवाह पसन्द नहीं करेगी।"

"आप अपने-आप ही उसकी बात न कह दीजिए। उसे स्वयं कहने दीजिए। मैं समझता हूँ कि मुझको उससे मिलने की स्वीकृति दे दीजिए। मैं विद्यालय की मुख्याधिष्ठात्री जी से मिलने गया था। उसने लक्ष्मी से मिलने की स्वीकृति के लिए आपके पास भेजा है।"

"यह तो ठीक है कि उससे मिलने के लिए मैं स्वीकृति दे सकती हूँ, परन्तु मैं सोचती हूँ कि क्यों दूँ।"

"देखिए राधा देवी जी, मैं चाहता कि मुझको उससे मेल-जोल उत्पन्न करने का अवसर दीजिए। अभी उसके बालिग होने में तीन वर्ष हैं, तब तक स्वराज्य मिलने का फैसला भी हो जावेगा। यदि उसकी इच्छा हुई तो मैं उससे मिलता रहा करूँगा और समय आने पर विवाह कर लूँगा।"

"यद्यपि मुझको आपका कहना ठीक प्रतीत नहीं होता, इस पर भी मैं आपको जवाब देना लक्ष्मी का ही काम समझ, आपको उससे मिलने की चिट्ठी दे देती हूँ। हाँ, अगर वह पसन्द नहीं करेगी तो आपको मिलने की स्वीकृति वापस ले ली जावेगी।"

"मुझको मंजूर है।"

: १० :

जब मन्नू को यह पता लग गया कि बम्बई में डायरैक्ट ऐकशन नहीं चलेगा, तो वह बहुत निराश हुआ। इस समय एक घटना घटी और वह लक्ष्मी को पा गया।

मन्नू जमादार के कारखाने के लोग छुरे और बन्दूक चलाने का अभ्यास करने दरगाह शाह मुराद में जाया करते थे। मन्नू भी उनके साथ जाया करता था। शाह मुराद का वली, मन्नू को उन सब लोगों का अफसर जान उससे भारी मेल-जोल रखने लगा था। उसे अपने रहने के मकान पर ले जाया करता और उसको खिलाया-पिलाया करता था। धीरे-धीरे दोनों में भारी हेल-मेल उत्पन्न हो गया था।

एक दिन दरगाह के वली, शाह इब्राहीम ने उसको एक ओर ले जाकर कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जमादार, एक खुफिया काम है। कर सकते हो?"

"हाँ हजरत, जान तक हाजिर है। बताइए क्या काम है?"

"मील एरिया में, सत्यनारायण के मन्दिर में एक पंडित सदाशिव रहते हैं। मैं चाहता हूँ कि उसको बाँधकर आज रात को यहाँ ले आवो।"

"मैं उसको जानता हूँ। वह तो बम्बई कौंसिल का मेम्बर है।"

"मैं सब कुछ जानता हूँ। उसकी सख्त जरूरत है। बताओ उसे ला सकोगे?"

"क्यों नहीं।"

बात तय हो गई। यह वही रात थी कि जिस शाम को सदाशिव लक्ष्मी से मिलने की स्वीकृति राधा से लेकर आया था। अगले दिन उसको लक्ष्मी से मिलने जाना था और स्वीकृति की चिट्ठी उसकी जेब में थी। लक्ष्मी से मिलकर अपनी सफाई की योजना बनाता हुआ वह खाट पर लेटा ही था कि किसी ने उसके कमरे का दरवाजा धीरे से खटखटाया। उसका पिता दूसरे कमरे में सो रहा था। सदाशिव ने दरवाजा खोला तो दो आदमियों ने उसके हाथ पकड़ लिये और एक ने उसके मुख पर हाथ रख उसे बोलने से रोक दिया। चौथे ने अपनी जेब से रूमाल निकाल उसके मुख में ठूँस दिया और फिर एक रस्सी से उसके हाथ-पाँव बाँध दिए।

इसके पश्चात् उस आदमी ने सदाशिव के जेब और सन्दूक की तलाशी ली। उन लोगों का इससे नकदी ढूँढ़ने का प्रयोजन था, परन्तु मिलीं चिट्ठियाँ और कागज। एक चिट्ठी बहुत बढ़िया लिफाफे में थी और मन्नू के साथी ने उसे खोल डाला और पढ़ा। लिखा था, "सदाशिवजी को लक्ष्मी से मिलने दिया जाए। मिलने के पश्चात् लक्ष्मी को मेरे पास भेज देना···" मन्नू ने चिट्ठी सुनी, तो कुछ सोच, प्रसन्न हो, चिट्ठी अपनी जेब में रख ली। उसने अपने साथियों से कहा, "बड़े काम की चीज मिली है।"

सदाशिव को दरगाह में पहुँचा, मन्नू दरगाह के वली से मिलकर उस चिट्ठी का प्रयोग करने की योजना बनाने लगा।

अगले दिन आर्यसमाज कन्या पाठशाला के फाटक पर कुछ लोग जो पोशाक से हिन्दू मालूम होते थे, एक मोटर टैक्सी में और मोटर साइकलों पर पहुँचे। उनमें से एक भीतर गया और राधादेवी की चिट्ठी मुख्याधिष्ठात्री के पास ले गया। उसने स्कूल की एक नौकरानी के साथ लक्ष्मी को प्रतीक्षा करने के कमरे में भेज दिया। लक्ष्मी सदाशिव से मिलना नहीं चाहती थी, परन्तु राधादेवी की चिट्ठी देख बाहर कमरे में आ गई। वहाँ एक अपरिचित आदमी को बैठे देख विस्मय में खड़ी रह गई। उस आदमी ने कहा, "सदाशिवजी ने मोटर भेजी है। वे चाहते हैं कि पन्द्रह मिनट के लिए तुम उनसे मिल आओ।"

"मैं उनसे मिलना नहीं चाहती।" लक्ष्मी का उत्तर था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी लक्ष्मी के मुख से बात पूरी निकलने भी नहीं पाई थी कि पाँच-छः आदमी नंगे छुरे लिये हुए भीतर घुस आए और चपरासी और लक्ष्मी के साथ आई नौकरानी को भयभीत कर लक्ष्मी को उठा, मोटर में लाद, भाग गए।

यह सब इतनी जल्दी हुआ कि किसी को शोर मचाने का समय ही नहीं मिला। जब तक स्कूल में शोर मचता, मोटर और मोटर साइकलों में सवार लोग मीलों दूर निकल गए थे।

पुलिस और राधादेवी को सूचना भेज दी गई। सूचना पाते ही खुशीराम, राधादेवी और पुलिस सार्जेण्ट वहाँ आ उपस्थित हुए। जब पूर्ण घटना सुनी गई तो सदाशिव को अपराधी समझ लेना स्वाभाविक ही था। सदाशिव के घर पर धावा बोला गया। उसे घर से पहली रात को ही चला गया सुन सबकी यह धारणा पक्की हो गई कि वही लक्ष्मी को ले भागा है। सदाशिव का पिता ही केवल ऐसा आदमी था जो अपने पुत्र को ऐसा घृणित काम करने वाला नहीं मानता था। उसने बल-पूर्वक कहा कि उसका पुत्र ऐसा नहीं है। परन्तु पूर्ण घटना-चक्र सदाशिव के विरुद्ध था और उसके पिता के कहने पर किसी को विश्वास नहीं आया।

पुलिस ने सदाशिव के विरुद्ध रिपोर्ट लिख ली। रात को सदाशिव का पिता, एकनाथ, खुशीराम के घर आया और अपना विचार बताने लगा। उसने कहा, "बाबूजी, वह लड़का ऐसा नहीं जैसा आप समझ रहे हैं। मैं उसे जानता हूँ। उसमें इस प्रकार की नीचता करने का साहस नहीं हो सकता।"

एकाएक राधा को एक बात सूझी। उसने कहा, "मन्नू का पता करना चाहिए। हो सकता है कि सदाशिव ने मन्नू को लक्ष्मी को भगा ले जाने की योजना में सहायता दी हो और हमारी चिट्ठी उसे दे देने पर कुछ दिन के लिए बम्बई से गायब हो गया हो।"

"यह बात तो लक्ष्मी को स्वयं ले जाने से भी अधिक घृणित है।"

"काम की अच्छाई-बुराई का विचार बाद में करेंगे। पहले मन्नू की तलाश होनी चाहिए।"

खुशीराम ने अपनी मोटर निकलवायी और पुलिस-स्टेशन जा पहुँचा। वहाँ सुपरिण्टेण्डेण्ट से मिल अपना सन्देह वर्णन कर दिया। पुलिस अफसर यह विचार सुन हँस पड़ा और सन्देह में सिर हिलाने लगा।

खुशीराम ने अपने विचार की पुष्टि में बताया, "हम सदाशिव से एक-दो बार पहले भी मिले हैं और हमारा अनुमान है कि इतने साहस का काम वह नहीं कर सकता। साथ ही मन्नू गुण्डा है। उससे सब कुछ सम्भव है।"

पुलिस अफसर ने गम्भीर हो पूछा, "यह विचार परिवर्तन एक हिन्दू के स्थान एक मुसलमान को फँसाने के लिए तो उत्पन्न नहीं हुआ? देखिए खुशीराम! आपके खिलाफ हमारे रिकार्ड में बहुत बातें हैं। एक तो यह कि आप लाहौर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मुसलमान लड़की को भगाकर यहाँ लाए हुए हैं। दूसरा आप यहाँ हिन्दू-मुसलमान झगड़ा उत्पन्न करने का यत्न करते रहते हैं। तीसरे आपने जो यतीमखाना खोल रखा है वह मुसलमान बच्चों को हिन्दू बनाने के लिए है। ऐसी अवस्था में आपका किसी मुसलमान के विरुद्ध कुछ भी कहना माननीय नहीं हो सकता।"

खुशीराम यह सुन अवाक् रह गया। अपने को सँभाल उसने कहा, "मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि ये सब रिपोर्ट निराधार हैं।"

"आपका रिकार्ड ठीक करना मेरा काम नहीं है। यह तो खुफिया पुलिस का काम है। फिर भी मैं पूछता हूँ कि क्या यह ठीक नहीं कि आपकी बीवी एक मुसलमान की लड़की है?"

"ठीक है। और मेरा विवाह आज से पन्द्रह वर्ष पूर्व मुसलमानी तरीके से हुआ था। मेरी बीवी का नाम रहीमन था। मेरा उससे प्रेम हो गया तो उसके संरक्षकों ने हठ करके मुझे मुसलमान हो जाने पर विवश कर दिया। इस प्रकार मुसलमान बना लिये जाने पर मेरे विचार तो बदले नहीं प्रत्युत रहीमन के विचारों में परिवर्तन हो गया। धीरे-धीरे उसके विचार हिन्दुओं के-से होते गए और उसने स्वयं अपना नाम रहीमन से बदलकर राधा रख लिया। अब तो वह हिन्दू-संगठन कार्य में मेरी सहायता करती है। यह वही है जो दिन के समय मेरे साथ आई थी।

"लाहौर में जब मुसलमानों को पता लगा कि न तो मैं मुसलमान हुआ और न ही रहीमन मुसलमान रही तो वे मेरी जान लेने पर तैयार हो गए। इससे मैंने लाहौर छोड़ बम्बई नौकरी कर ली। अब बतलाइए मैंने कौन-सा पाप किया है?"

"तो आपने हिन्दू तरीके से विवाह नहीं किया?"

"जी नहीं।"

"तो आपके बच्चे क्या होंगे? हिन्दू या मुसलमान?"

"जो उनकी इच्छा होगी हो जाएँगे। वे अभी बालिग नहीं हैं।"

"परन्तु यहाँ आकर आप मुसलमान बच्चों को हिन्दू जो बना रहे हैं।"

"यह बात भी मिथ्या है। यतीमखाना निरीक्षण के लिए सदैव खुला है। आप या कोई भी पुलिस अफसर जाकर देख सकता है।"

"इस पर भी मैं मन्नू के विषय में जाँच नहीं कर सकता। मैं आपकी सूचना खुफिया पुलिस में भेज दूँगा, परन्तु वे इसमें जाँच-पड़ताल करेंगे या नहीं, मैं नहीं जानता।"

: ११ :

सदाशिव के पिता एकनाथ को लड़के के लापता हो जाने का भारी शोक था। वह स्वयं भी पुलिस, इलाका कांग्रेस कमेटी के मन्त्री और फिर प्रान्त के प्रधान-मन्त्री के पास गया और सब स्थानों से उसे लौटना पड़ा। वह कहता, "श्रीमान जी! मेरा लड़का ऐसा नहीं है। उसने किसी लड़की का हरण नहीं किया। उस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झूठा लांछन लगाया जा रहा है।"

इसके उत्तर में सब लोग उसे यह कहते, "पंडितजी! आप ठीक कहते हैं, परन्तु हम क्या कर सकते हैं? प्रमाण उसके विरुद्ध जा रहे हैं।"

केवल खुशीराम और राधा ही, पंडित एकनाथ की बात पर विश्वास करते थे। परन्तु जब तक कोई सुराग न मिले तब तक क्या कर सकते थे? यही कारण था कि सदाशिव का पिता उनसे प्रायः मिलने आ जाया करता था।

एक दिन अंग्रेजी में एक टाईप की हुई चिट्ठी पंडित एकनाथ को मिली और वह उसे पढ़वाने के लिए खुशीराम के पास ले आया। खुशीराम ने वह चिट्ठी पढ़कर सुनाई। लिखा था, "यह सूचना पुजारी एकनाथ के लिए है। उसे यह बताया जाता है कि उसका लड़का सदाशिव सही-सलामत है। उसके लिए कुछ दिन तक छुपकर रहना अच्छा समझा गया है। आप इसकी चिन्ता न करें। सब काम समय पर ठीक हो जाएगा।"

इस समय तक बम्बई-भर में सदाशिव के एक लड़की को लेकर भाग जाने की बात फैल चुकी थी। उसके बम्बई की धारा-सभा के सदस्य होने से उसकी बदनामी और भी अधिक हुई थी। खुशीराम इस चिट्ठी से सन्तुष्ट नहीं हुआ। जहाँ इससे उस पर लगे आरोप की सफाई किंचित्-मात्र भी नहीं हो रही थी वहाँ इससे उसके मार दिए जाने की सम्भावना अधिक प्रतीत होने लगी थी। यदि वह जीवित होता तो वह स्वयं चिट्ठी लिखता। फिर भी खुशीराम ने एकनाथ को सांत्वना दी। "आप चिन्ता नहीं करें। हमें आशा करनी चाहिए कि शीघ्र ही उसके अपने हाथ की लिखी चिट्ठी भी आ जाएगी।"

एकनाथ के चले जाने के बाद खुशीराम ने इस मामले में स्वयं ही कुछ करने का निश्चय कर लिया। उसने महावीर-दल के दलपति से इस विषय में बात की और इसका परिणाम यह हुआ कि दो स्वयंसेवक मन्नू का पता करने पर लगा दिए गए। वे नित्य रात को अपनी खोज का परिणाम खुशीराम को बताने आने लगे। पहले ही दिन उसे यह बताया गया कि मन्नू जमादार ने मील से नौकरी छोड़ दी है। अगले दिन पता मिला कि उसने मकान बदल लिया है। इनसे यह बात तो पक्की हो गई कि लक्ष्मी के लापता होने में उसका हाथ हो सकता है। यह पता किया गया कि मन्नू किस तारीख से मील से अनुपस्थित है। उसके मील से गैर-हाजिर होने की तारीख और लक्ष्मी के अपहरण की तारीख का एक ही होना एक भारी प्रमाण था, जिसके पुलिस को बताने से पुलिस भी मन्नू की तलाश में लग गई।

इस समय एकनाथ को सदाशिव के अपने हाथ का लिखा एक पत्र मिला। इस पत्र ने जहाँ खुशीराम के भय का निवारण किया, वहाँ पुलिस और महावीर-दल के स्वयं-सेवकों की यह धारणा बन गई कि मन्नू के लोगों ने ही सदाशिव को कैद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रखा है। इससे मन्नू की तलाश जोरों से होने लगी।

मन्नू के असली निवास-स्थान का पता किया गया। वह यू० पी० के जिला बुलन्दशहर का रहने वाला था। खोज उसके घर पर भेजी गई। वहाँ से पता चला कि जब से उसकी बीवी का देहान्त हुआ है तब से वह घर नहीं आया। समय बीतने के साथ पुलिस की ओर से खोज का काम ढीला पड़ गया, परन्तु महावीर-संघ की ओर से खोज जारी रही।

इसके उपरान्त एक पत्र रियासत हैदराबाद के भटिया नाम के एक गाँव से आया। यह भी सदाशिव के अपने हाथ का लिखा हुआ था। इस पत्र ने एक नई परिस्थिति उत्पन्न कर दी। स्वयं-सेवकों की खोज भटिया में जा पहुँची। इस जाँच के परिणाम के आने से पूर्व ही सदाशिव बम्बई में आ प्रकट हुआ। लक्ष्मी उसके साथ नहीं थी।

: १२ :

बम्बई के मतुंगा क्षेत्र में एक बहुत बड़ा अहाता है जिसके चारों ओर बीस फीट ऊँची दीवार से हदबन्दी बनी हुई है। इस अहाते में जाने को केवल एक दरवाजा है और यहाँ पर दो वृद्ध चौकीदार हाथ में तसबीह लिये दिन-रात पहरा देते हैं।

दरवाजे का बड़ा फाटक तो सप्ताह में केवल एक दिन, अर्थात् जुम्मे के दिन खुलता है। उस दिन वहाँ सहस्रों की संख्या में लोग नमाज पढ़ने आते हैं। सप्ताह के शेष छः दिन फाटक तो बन्द रहता है पर उसकी खिड़की प्रातः छः बजे से लेकर रात के दस बजे तक खुली रहती है। वर्ष में एक दिन और भी फाटक खुलता है। रमजान के महीने की प्रथम जुमेरात और जुम्मे को, चौबीस घंटे फाटक खुला रहता है। इस दिन इस अहाते में शाह मुराद के मकबरे पर उर्स होता है। दूर-दूर से शायर, कव्वाल, रागी और नाचने वाली रकासा आती हैं। इस दिन शाह मुराद के मकबरे की जियारत होती है।

अहाते में एक बहुत खुला मैदान है। मैदान के एक ओर शाह मुराद का मकबरा है। एक विशाल गुम्बद के नीचे कब्र बनी है; जिस पर हरे रंग का रेशमी कपड़ा बिछा रहता है।

इस मकबरे में गुम्बद के नीचे कब्र के चारों ओर गाने-बजाने वाले बैठ जाते हैं और अपने-अपने दिल के भावों को शायरी अथवा कव्वाली और गीतों में सुना अपने मन को ठण्डा करते हैं।

बाहर के लोग भी सुनने आते हैं, मगर वे प्रायः रात होने से पूर्व ही चले जाते हैं। जो शायर, गाने और नाचने वाले आते हैं उन्हें प्रातःकाल सूर्य निकलने से पूर्व खाना दिया जाता है। इन लोगों को अगले दिन, अर्थात् जुम्मे के दिन रोजा (व्रत) रखना होता है। सूर्यास्त तक कुछ भी खाना नहीं होता। इस कारण अच्छा पौष्टिक खाना बनवाया और खिलाया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरगाह के एक वली हैं। ये प्रायः पूर्व वली के जानशीन (उत्तराधिकारी) उस के मरने पर बनाए जाते हैं। वर्तमान काल के वली पीर इब्राहीम दूध समान श्वेत सिर के बालों और दाढ़ी वाले वृद्ध हैं। वे काला चोगा और उसके नीचे काले रंग की तहमत पहना करते हैं। रमजान में उर्स के दिन शायरों, कव्वालों और नाचने-गानेवालियों की मजलिस में सदैव शामिल होते हैं।

उस वर्ष विशेष समारोह था। जुमेरात की शाम को दरवाजा खुला तो गाने-बजाने वाले आने आरम्भ हो गए। रात के दस बजते-बजते लगभग तीन सौ गाने-बजाने वाले अपनी सारंगी, ढमकोरी लिए एकत्रित हो गए।

रात के बारह बजे तक इक्के-दुक्के गाने वाले गाते-बजाते रहे। पश्चात् मकबरे के बिलकुल सामने जो लोग नींद अनुभव कर रहे थे, मैदान के दूसरे कोने में जाकर सो गए। पीर साहब भी उठे और मैदान के उत्तरी कोने में एक मकान में, जो उन की आरामगाह (निवास-स्थान) कही जाती थी, चले गए। तब तक दर्शक भी लौट गए थे।

भोजन बनाने वाले रात-भर खाना बनाते रहे। ठीक चार बजे मुल्ला ने अजान दी अर्थात् मोमिनों को खुदा की इबादत के लिए आह्वान किया। सब लोग उठे और मैदान के बीचोंबीच, स्वच्छ जल के एक तालाब के किनारे वुजू करने (हाथ-मुँह धोने) एकत्रित हो गए।

इस प्रकार शौचादि से निवृत्त हो सब लोग मकबरे में एकत्रित हुए। वहाँ नमाज पढ़ी गई। नमाज पढ़ने के पश्चात् सदैव की भाँति वली इब्राहीम साहब का वाज हुआ। उन्होंने कहा, "हाजरीन ! इन्सानी फितरत का यह तकाजा है (मनुष्य प्रकृति की यह माँग है) कि वह किसी की सरपरस्ती में काम करे। खुदा ने इसलिए वक्त-वक्त पर, पैगम्बर भेज गुमराहों को राह पर लाने का बन्दोबस्त किया। इस सिलसिले में आखिरी पैगम्बर आलि हजरत, वली-उल-इसलाम आए और हम उन्हीं के जाहो-जल्लाल से पुरे पैगाम को फैलाने की कोशिश में हैं।

"हजरत मुराद, जिनकी पाक दरगाह में हम हर साल इकट्ठे होते हैं, उनकी जिन्दगी इसी काम में गुजरी, और यही वजह है, कि हम उनकी याद हर साल मनाते हैं। आज जमाना तेजी से बदल रहा है और हमें अपना काम तेजी से करना है। आज दुनिया में जमहूरियत का जमाना है और हिन्दुस्तान में भी इसकी कायमी हो रही है। जमहूरियत में लोगों की गिनती का सवाल है। जिस कौम की गिनती ज्यादा होगी उसी की हकूमत कायम हो जावेगी। हमने हिन्दुस्तान में सात सौ साल तक हकूमत की, मगर अफसोस है कि हम यहाँ पच्चीस फीसदी से ज्यादा लोगों को मुसलमान नहीं बना सके। हमें जल्दी से जल्दी अपनी तादाद पचास फी सदी से ज्यादा करनी है।

"इस काम में आप लोग बहुत कुछ कर सकते हैं। आपमें से जो आदमी हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनको अपने ताल्लुकात गैर-मुस्लिम औरतों से पैदा करने चाहिए और औरतों को गैर-मुस्लिम मरदों से। इलम मासूकी इसमें आपकी बहुत ज्यादा मदद कर सकता है।

"पेशावर औरतों से मेरा यह कहना है कि उनके पेशे का गुनाह काबिले-मुआफी हो जाएगा, अगर वे इसे खुदा के नाम पर खुदा की मिल्लत बढ़ाने में सर्फ करेंगी। गुनाह और सवाव में तमीज (पाप-पुण्य में भेद) मखसद की विना पर होती है। इससे अगर वे अपने पेशे में यह कोशिश करती रहेंगी कि उन्हें गैर-मुसलमानों को मुसलमान बनाना है तो खुदा अपनी रहमत से उनके सब गुनाहों को बख्श देगा।

"हिन्दुस्तान में हिन्दू निहायत ही नामुराद चीज बना है। जहाँ दूसरे मुमालिक में इसलाम का नूर चन्द ही सालों में फैल गया वहाँ इस बदनसीब मुल्क में एक हजार साल में भी सिरफ पच्चीस फीसदी इसलाम फैल पाया है। हमने तलवार का जोर दिखाया, तो बच्चे, जवान, बूढ़े, मरद, औरत सब मरने को तैयार हो गए पर मुसलमान नहीं बने। हमने औरतों का लालच दिया तो इनके साधु-सन्त-महात्मा लोगों को ब्रह्मचर्य की तालीम देने लगे। हमने मरदों को मारकर औरतों को बेवा किया तो वे सती होने लगीं। हमने इनकी छोटी जात के लोगों को भड़काना शुरू किया तो उन्होंने अछूतोद्धार शुरू कर दिया। गर्जे कि हमारी सब कोशिशें बेकार गई हैं। इससे हमें दुगुने जोश से काम करना है। मैं आपको अपने पचास साल का तजरुबा बताता हूँ। हमारी सब कोशिशों से ज्यादा पुर असर तरीका औरतों के प्रेम का तरीका रहा है। इससे मेरा आपसे यह कहना है कि अमीर, वारसूख और ऊँचे दर्जे के लोगों में घुस जाओ और उनके जवान लड़कों को अपने इशक में मुवतला करो। उन्हें मुसलमान बनाकर सवाब हासिल करो।

"मेरी खुदा से दुआ है कि आप लोग इस गुमराह कौम के जवान औरतों और मरदों में पहुँच उनके दिलों से तारीकी दूर कर उनको नजात की राह पर ला सको।"

इसके बाद खाना खाया गया और रोजा आरम्भ हुआ। बाद दोपहर शहरी लोग आने शुरू हो गए। इस समय फिर गजलें, कव्वालियाँ, नाच और गाने आरम्भ हो गए। शाम को रोजा तोड़ने के वक्त जकात बाँटी गई। और उर्स रात के बारह बजे खतम हुआ। गाने-बजाने वाले लोग भी विदा हो गए।

: १३ :

इस उर्स के दो दिन बाद की बात है। कुछ लोग एक खद्दरधारी युवक को, हाथ-मुँह पर पट्टी बाँधे, मोटर पर लादे हुए दरगाह के दरवाजे पर लाये। फाटक खटखटाया गया। बूढ़े चौकीदार ने खिड़की खोली तो उसमें से उसे दरगाह के भीतर ले गए। यह सदाशिव था। सदाशिव को पीर साहब की आरामगाह में ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाया गया। वहाँ उसे एक हट्टे-कट्टे पंजाबी मुसलमान दारोगा के हवाले कर दिया गया। दारोगा सदाशिव को एक कमरे में ले गया। वहाँ उसके मुख से पट्टी खोल उसने कहा, "अभी यहाँ आराम करिए। सुबह मालिक आपसे बात करेंगे।"

सदाशिव बहुत दुःख अनुभव कर रहा था। उसने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर पूछा, "तुम कौन हो ?"

"मैं इस आरामगाह का दारोगा हूँ।"

"मैं इस आरामगाह में रहना नहीं चाहता।"

"सब काम इन्सान की अपनी मरजी के मुताबिक नहीं होते।"

"पर मैं पूछता हूँ, कि मुझे यहाँ क्यों लाया गया है ?"

"मैं आपको यहाँ नहीं लाया। इसलिए बता नहीं सकता कि आप यहाँ क्यों लाए गए हैं ?"

"तो कौन मुझे यहाँ लाया है ? किस के हुक्म से तुम मेरी खातिर कर रहे हो ?"

"अब रात बहुत हो चुकी है। यह देखिए आपके लिए पलंग लगा है। कल सुबह यहाँ के मालिक आपसे मिलेंगे। यह सब वही बता सकेंगे।"

सदाशिव बहुत छटपटाया, परन्तु परिणाम कुछ नहीं निकला। उसने पलंग की ओर देखा। दूध समान श्वेत चादर और ऊपर ओढ़ने की रेशमी दुहर तथा रेशमी फूलदार तकिए लगे थे। पलंग के सिरहाने के समीप एक तिपाई रखी थी। उस पर एक पीतल के लोटे में पानी था। लोटा ऊपर ये ढँपा हुआ था। दारोगा ने कहा, "जरूरत हो तो यह पानी पी सकते हैं।" इतना कह दारोगा चला गया।

कोमल बिस्तर पर सोने का अवसर सदाशिव को जीवन में पहली बार मिला था। साथ ही आधी रात तक पकड़-धकड़ में व्यतीत हो गई थी। इस भाग-दौड़ की थकावट से जब वह बिस्तर पर लेटा तो गहरी नींद सो गया। बहुत दिन चढ़ने पर उसको जगाया गया। जगाने वाली एक औरत थी। सदाशिव को किसी स्त्री के कोमल स्वर, प्रातः उठते ही सुनने का, मृदु अनुभव, जीवन में पहली ही बार मिला था। उसकी माँ का देहान्त तो उसके होश सँभालने के पहले ही हो चुका था। उसके पिता का स्वर बहुत ही कर्कश था। आज एक स्त्री को अपने सिरहाने खड़े सिर में हाथ फेरते हुए यह कहते सुन, "उठो बेटा ! दिन बहुत निकल आया है" उसका पूर्ण शरीर पुलकित हो उठा।

सदाशिव ने आँख खोलकर देखा, तीस-पैंतीस वर्ष की एक स्त्री साफ रेशमी कपड़े पहने झुक उसके मुख पर देख रही थी और कह रही थी, "उठकर तैयार हो जाइए। मालिक आ रहे हैं।"

कुछ काल तक तो उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह स्वप्न देख रहा है या वास्तव में ऐसी मधुर अवस्था में वह है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब उसे सब स्मरण हो आया तो एक क्षण के लिए उसके माथे पर त्यौरी चढ़ गई। फिर तुरन्त ही उसे बिस्तर की कोमलता, उस स्त्री का कोमल स्पर्श, मृदु मुस्कान और स्नेह-भरी दृष्टि का ज्ञान हुआ। वह इनसे सुख अनुभव करने लगा। उसने पूछा, "क्या समय होगा ?"

"साढ़े नौ। अब उठिए। हजरत आ रहे हैं। वे आपसे कुछ बातचीत करना चाहते हैं।"

"कौन हजरत ?"

"पीर इब्राहीम साहब वली दरगाह शाह मुराद। आप उनकी आरामगाह में हैं। उनकी आप पर खास रहमत (दयादृष्टि) है।"

"और आप कौन हैं ?"

"मैं उनकी खादिमा (दासी) हूँ।"

"आप नौकरानी मालूम नहीं होतीं।" यह कहते हुए सदाशिव उठकर खाट पर बैठ गया।

वह स्त्री खाट के समीप खड़ी-खड़ी ही कहती गई, "आपका ख्याल दुरुस्त है, मगर हम सब लोग हजरत के मुरीद हैं। हमारा एतकाद शाह मुराद पर मुस्तकिल (पक्का) है। इससे हम इस दरगाह और इसके वली हजरत की खिदमत के लिए चौबीस घंटे मुस्तैद रहते हैं। देखिए, इस खूँटी पर आपके पहनने के कपड़े टँगे हैं। यह साथ में गुसलखाना है। गुसल कर, साफ कपड़े पहन तैयार हो जाइये। आधे घंटे में हजरत तशरीफ लावेंगे।"

इतना कह वह औरत सलाम कर चली गई। सदाशिव इस सबका कारण जानने का यत्न करता हुआ उठा और स्नानादि के लिए साथ के कमरे में चला गया।

स्नानादि से छुट्टी पा, कपड़े पहन, कमरे में रखी कुर्सी पर बैठा ही था कि वली अपने साधारण पहरावे में, हाथ में याकूत के पत्थर की तसबीह (माला) लिये और उसे फेरता हुआ आ खड़ा हुआ। सदाशिव एक वयोवृद्ध, परन्तु अति सुन्दर, सौम्य और सभ्य मूर्ति को अपने सम्मुख खड़ा देख, उसका आदर करने के लिए अनायास ही खड़ा हो गया। वली मुस्कराया और अति प्रेम से उसकी ओर देखने लगा। सदाशिव इन बातों से इतना प्रभावित हुआ कि मुख से कुछ कह नहीं सका। वली एक कुर्सी पर बैठ गया और सदाशिव को हाथ के संकेत से बैठने को कह पूछने लगा, "बताओ सदाशिव ! रात को कुछ तकलीफ तो नहीं हुई ?"

अब सदाशिव को वली के सम्मोहिनी प्रभाव से चेतना हुई और उसने कहा, "जी, कष्ट तो कुछ नहीं हुआ, परन्तु मुझे क्यों लाया गया है और मुझे घर क्यों नहीं जाने दिया जाता ?"

"तुम्हारी भलाई के लिए। अल्लाह परवरदिगार के हुक्म से ही मैंने तुम्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ लाकर रखा है। उसकी ही रहमत से मुझे यह हिदायत (आज्ञा) हुई है कि मैं तुम्हारे मुस्तकबिल को रोशन कर दूँ। उसके नूर से तुम्हारी जिन्दगी को मुनव्वर कर दूँ। ऐसा मालूम होता है कि तुम्हारे नेक कामों की गूँज ने बहिश्त में परवरदिगार के अर्ष (सिंहासन) को जुम्बिश दी है। इससे उनके फरिश्ते ने मुझे तुम्हारी मदद के लिए कहा है।"

"पर हजरत ! मेरे पिता तो रो-रोकर पागल हो रहे होंगे।"

"उनको खबर भेज दी गई है। वह खुश हैं। खुदा ने उनके रूह पर तसकीन (शान्ति) बख्शी है।"

"पर मुझे कैसे पता चले ?"

"वक्त पर सब पता चल जावेगा। देखो सदाशिव ! मुझे अपना दोस्त और हमदर्द समझो। जो कुछ भी तुम्हें तकलीफ हो मुझसे कहो। उस रहीम अपने मालिक की मेहरबानी से मैं तुम्हारे सब शकूक रफा कर दूँगा।"

"एक गुजारिश और है। मुझे आर्य कन्या पाठशाला में एक लड़की से मिलने जाना है। उसे मिलकर मैं लौट आऊँगा।"

"वह लड़की तुम्हें नहीं चाहती। उसको मिलकर दिल को दुखी करने की जरूरत नहीं। खुदा का हुक्म है कि मैं तुम्हारे लिए ऐसा बन्दोवस्त करूँ कि तुम उसके खास वन्दों में एक हो जाओ। अब तुम अपना दिल बहलाओ। अभी तुम्हारे पास सूत कातने को चर्खा और पढ़ने को किताबें आ जावेंगी। मेरी आरामगाह के पीछे एक बहुत बड़ा मैदान है। उसमें रंग-रंग के फूल लगे हैं। तुम वहाँ टहलने को जा सकते हो। शाम के वक्त तुम्हारे घूमने को मोटर मिलेगी।"

इतना कह वली वहाँ से उठा और हाथ उसके सिर से छः इंच ऊपर रख, दुआ दे, चला गया।

सदाशिव विस्मय में डूबा हुआ वहीं बैठा रह गया। वह अपने मन में इन सबका अर्थ लगा नहीं सका था। उस जैसे मामूली हैसियत के आदमी को इतना बढ़ा-चढ़ाकर रखने का अभिप्राय, उसकी समझ में नहीं आया।

यदि उसे पकड़कर समुद्र में फेंक दिया होता तो वह समझता कि किसी ने द्वेष-भाव से उसके साथ यह सब कुछ किया है, परन्तु उसकी खातिर-तवाजा (सेवा-सुश्रूषा) इतनी हुई थी कि इसे वह किसी निकृष्ट उद्देश्य से होती समझ नहीं सका। आखिर कोई उसकी सेवा-सुश्रूषा क्यों करेगा ? वह कुछ भी जान नहीं सका।

वह अभी इन विचारों में लीन बैठा था कि वही औरत जो उसे सोये से जगाने आई थी, आ गई। वह उसे इस प्रकार बैठे देख पूछने लगी, "आप तो ब्राह्मण के हाथ का बना खाते होंगे ?"

"जेल में तो मैं सबके साथ मिलकर खाता रहा हूँ। जेल में हमारे मुसलमान साथी खाना बनाते थे और हम सब मिलकर खाते थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह बात हजरत को मालूम थी मगर उन्होंने फरमाया है कि यह जेल नहीं है। यहाँ आप अपनी मर्जी से जो और जैसा खाना चाहें, खा सकते हैं।"

"मुझे मुसलमानों के साथ खाने में कोई परहेज नहीं है।"

"ला हौल विला कूवत इल्ला व इल्लाह। भला खुदा के सिवा और कौन अच्छा है। इस दुनिया में हम सब उसके बन्दे हैं। तो आइये।"

उस कमरे के पीछे एक साफ-सुथरे स्थान पर चाँदी के थाल और कटोरियों में भोजन परस एक लकड़ी के पटरे पर रखा था। चौकी के सामने एक और चौकी सदाशिव के बैठने के लिए लगी थी। पटरे के दूसरी ओर एक आसन बिछा था। वह औरत सदाशिव को वहाँ ले आई और नल में हाथ धुला, चौकी पर बैठा, स्वयं आसन पर बैठते हुए कहने लगी, "अगर आपको परहेज नहीं तो क्या मैं, यहाँ बैठ सकती हूँ?"

"हाँ। बिना तकल्लुफ के।"

सदाशिव ने खाना आरम्भ कर दिया। भोजन बहुत ही स्वादिष्ट था। जाफ-रानी चावल का पुलाओ, जिसमें बादाम, पिस्ता और भाँति-भाँति के मेवे पड़े थे; कई प्रकार के व्यंजन थे, सब्जियाँ थीं और कई तरह के चटनी, अचार इत्यादि थे। जब सदाशिव खा रहा था, वह औरत कह रही थी, "आपकी फराख दिली से तो हमारा काम हल्का हो गया। आपके लिए शहर से ब्राह्मण रसोइया मँगवाया गया है, मगर अब तो इस खादिमा और इसकी लड़की को खिदमत करने का मौका मिलेगा।"

"अच्छा तो आपकी लड़की भी यहाँ हैं?"

"सब हजरत की मेहरबानी है।"

सदाशिव स्वादिष्ट भोजन का स्वाद ले रहा था। उसने उस औरत की ओर देखकर पूछा, "अभी तक मेरी समझ में यह नहीं आया कि मेरी इतनी सेवा-सुश्रूषा क्यों की जा रही है।"

"हजरत जिस पर मेहरबान होते हैं, उसके साथ ऐसा ही होता है। वे कहा करते हैं, कि रात को अबादत करते-करते खुदा उनको बताया करता है कि वे किसको क्या दें।"

"वे खुद भी यही कहते थे।"

"तो आपने कोई भारी सवाब (पुण्य) का काम किया है जिससे खुदा की यह हिदायत उनको हुई है।"

"अपनी जानकारी में तो मैंने कोई ऐसी बात नहीं की।"

"खुदा आपकी बाबत आपसे भी ज्यादा जानता है। आप जिसे मामूली बात समझते हैं वह उसकी नजर में बहुत बड़ी बात भी हो सकती है।"

इस युक्ति का कोई जवाब नहीं था। इस पर वह अपने जीवन के कामों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवलोकन करने लगा। वह इस प्रकार छोटी-छोटी घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर देखने लगा। कभी सोचता कि छोटे-छोटे बच्चों को निःशुल्क पढ़ाना शायद ऐसा पुण्य काम है। कभी हिन्दू-मुसलमान एकता के उत्पन्न करने में अपनी मंगेतर को भी दे देना, वह ऐसा पुण्य का काम समझता था।

भोजन समाप्त हुआ। उसने हाथ धोये। इस समय उस औरत ने आवाज दी, "खनीजा ! पान लाना।"

आवाज सुन एक लड़की गंगा-यमुनी तश्तरी में पान के पत्ते, चूना, कत्था लगे हुए, साथ सुपारी, सौंफ, इलायची रखे हुए, लेकर आ गई।

सदाशिव लड़की को देख चकित रह गया। वह अति सुन्दर थी। कोमल, गौर-वर्णीय और पन्द्रह-सोलह वर्ष की दिखाई देती थी। सदाशिव कभी पान नहीं खाता था, परन्तु इस लड़की के हाथ से पान खाने को सौभाग्य मान, पान उठा और उसमें सुपारी, इलायची रख, लपेट, खाने को तैयार हो गया। सदाशिव ने पूछा, "तो यह आपकी लड़की है ?"

लड़की लज्जा से भूमि की ओर देख रही थी। उस औरत से उत्तर दिया, "खुदा का फजल है।"

पान चबाते हुए सदाशिव ने कहा, "मैं नहीं जानता कि किस पुण्य के प्रताप से मुझे यह सब-कुछ प्राप्त हो रहा है।"

: १४ :

सदाशिव को वली का मेहमान बने एक सप्ताह से ऊपर हो गया था। खनीजा और उसकी माँ दोनों उसकी सेवा में थीं। लड़की उसके साथ आरामगाह के पिछवाड़े के बाग में टहलती और मोटर में उसके साथ बाहर घूमने भी जाती थी। वह उसे खाना खिलाती, पान लगा देती और फिर घंटों ही बैठ उससे बातें करती। माँ का काम था सदाशिव के कपड़े तैयार करना, उसका बिस्तर लगाना और उसके खाने का प्रबन्ध करना।

एक-दो दिन तक तो सदाशिव को लक्ष्मी और अपने पिता का ध्यान आता रहा, पश्चात् खनीजा के प्रेम के नशे में वह सब-कुछ भूल गया। उसने अब वली से, जिससे वह नित्य मिलता था, उनके विषय में पूछना भी छोड़ दिया। उसे अब बाहर जाने की लालसा भी नहीं रही।

एक सप्ताह सुख-स्वप्न की भाँति व्यतीत हो गया। सदा की भाँति मध्याह्न के भोजन के उपरान्त खनीजा और वह, दोनों वली के सामने उपस्थित हुए। उसने इनसे मिलने का यह समय नियत कर रखा था। दोनों को अपने सम्मुख बैठा उसने पूछा, "सदाशिव ! बताओ, कुछ कष्ट तो नहीं ?"

"हुजूर, बहुत आनन्द में हूँ।"

"तुम्हारे पिता का समाचार मिला है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कैसे हैं वे ?"

"ठीक हैं। लोग उनके पास पहुँचकर कह रहे हैं कि तुम जीवित नहीं हो। इससे कुछ फिकरमन्द हैं। मैं समझता हूँ एक चिट्ठी लिख दो। इतने से काम चल जावेगा। लिखो कि तुम सब तरह से ठीक हो। अभी काम से फुरसत नहीं। जल्दी आ जाओगे।"

सदाशिव ने पिता को हिन्दी में पत्र लिख दिया। पत्र वली साहब ने लेकर अपने पास रख लिया और कहा, "इससे कैसी पट रही है? कुछ दिक तो नहीं करती ?"

"हजरत ! ये तो कहती हैं, कि मैं इनसे विवाह कर लूँ।"

"और तुम क्या कहते हो ?"

"मैं ! मैं तो इसका बेदाम का गुलाम हूँ। दिन-रात ये मेरे दिलो-दिमाग पर हकूमत करती हैं। दिन को तो ये हरदम मेरे साथ रहती हैं और रात को मेरे स्वप्नों में मौजूद होती हैं।"

"तो तुम दोनों की शादी कर दी जावे ?"

सदाशिव ने खनीजा की ओर घूमकर देखा। वह फर्श पर लकीरें खींच रही थी। सदाशिव ने घूमकर वली साहब की ओर देखा और कुछ सोचकर कहा, "यदि पिताजी को यहाँ बुलवा दिया जाता तो अच्छा होता।"

वली खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसने कहा, "वे तुम्हारे और खनीजा के विवाह को पसन्द नहीं करेंगे। वे हिन्दू पुजारी हैं।"

"तो मैं उनके बिना ही विवाह करूँगा।"

"हाँ। मैं भी यही ठीक समझता हूँ। मैं उस रहीम करीम, रब्बुल, आलमीन से इसकी बाबत हिदायत की इन्तजार में हूँ। आज रात उसके मिलने की उम्मीद है। इसके मुतल्लिक मैं आपको कल बताऊँगा। सबर और उम्मीद के साथ इस खुदाई फरमान की इन्तजार करो।"

अगले दिन वली साहब ने अपने नाम खुदा का पैगाम सुना दिया। "वहाँ से खबर आई है कि सदाशिव का खनीजा के साथ विवाह कर दिया जावे और इनके लिए बम्बई में एक आलीशान मकान और अच्छी आमदनी का जरिया बना दिया जावे।"

सदाशिव यह सुन चकाचौंध रह गया। वह इन सब आनन्द और सुख की बातों को अभी समझ ही रहा था कि वली ने और कहा, "तुम लोगों की शादी परसों जुम्मे की नमाज के बाद कर दी जावेगी और उसके बाद तुम लोगों के लिए एक महीना भर बम्बई से बाहर रहने का बन्दोबस्त कर दिया जावेगा। तब तक बम्बई में तुम्हारे काम का इन्तजाम भी हो जावेगा।"

इस शुभ घड़ी को अब इतनी नजदीक पा दोनों आनन्द से पुलकित हो उठे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और एक-दूसरे की ओर देखने में इतने लीन हो गए कि उन्हें वली के वहाँ से उठ-कर चले जाने की सुध नहीं रही। कितनी ही देर वे वहाँ बैठे रहे। फिर एका-एक दोनों चुम्बक और लोहे की भाँति आकर्षित हो एक-दूसरे से चिपट गए। मन भरकर आलिंगन कर खनीजा ने सदाशिव की बाँहों से अपने को छुड़ाते हुए कहा, "मैं बहुत खुश हूँ।"

"तभी छूटकर एक तरफ हो गई हो।"

"परसों तक इन्तजार करिए।"

"इन्तजार की घड़ियाँ बहुत लम्बी होती जाती हैं।"

"मगर कितनी मीठी हैं ये।"

"आज रात मैं सो नहीं सकूँगा।"

"मतलब यह कि इन पुर लुत्फ लहमों का मजा लेते रहेंगे।"

"कितना अच्छा मालूम हो रहा है।"

"खुदा की मेहर है। मैं तो यह कहती हूँ कि क्या शादी के पहले का यह वक्त ज्यादा पुर लुत्फ है या बाद का।"

सदाशिव ने उसे पुनः अपनी ओर खींच गले लगाना चाहा, परन्तु खनीजा चतुराई से दो कदम पीछे हटकर बोली, "अभी सब्र करिए।"

"बहुत मुश्किल हो रहा है।" इतना कहकर सदाशिव ने उसे पकड़ने को कदम बढ़ाया मगर वह भागकर कमरे से बाहर हो गई।

नियत दिन निकाह पढ़ा दिया गया और निकाह के बाद वली साहब ने सदाशिव को नोटों से भरा हुआ एक बटुआ और हवाई जहाज के दो टिकट दिए। फिर दोनों को आशीर्वाद देते हुए कहा, "मैंने तुम्हारे लिए हैदराबाद रियासत में भटिया गाँव में रहने का इन्तजाम कर दिया है। ये टिकट तुम्हें सिकन्दराबाद पहुँचा देंगे। वहाँ खनीजा की माँ गई हुई है। वे तुम्हें एयरोड्रोम पर लेने आएगी। एक महीना वहाँ ठहरने के बाद तुम बम्बई वापस आ जाना। तब तक तुम्हारा यहाँ सुख से रहने का बन्दोबस्त हो जावेगा।"

उसी सायं सदाशिव और खनीजा हैदराबाद पहुँच गए। एयरोड्रोम पर खनीजा की माँ और उसके साथ कुछ और लोग उनके स्वागत के लिए आए हुए थे। लोगों ने उनको फूलों की मालाएँ पहनाईं। एयरोड्रोम के बाहर सात सीट की विलीज नाईट मोटर गाड़ी खड़ी थी। खनीजा की माँ ने अपनी लड़की और दामाद का परिचय मोटर में ड्राइवर के स्थान पर बैठे आदमी से करा दिया और फिर मोटर में बैठे आदमी का परिचय कराया। "आप हैं भटिया के जमींदार के प्राइवेट सेक्रेटरी मिस्टर यार जंग एम० ए०।"

सदाशिव और खनीजा मोटर की पिछली सीट पर बैठ गए। खनीजा की माँ भी उनके पास बैठ गई। जमींदार के प्राइवेट सेक्रेटरी मोटर चलाकर भटिया ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गए। यह मोटर से हैदराबाद से तीन घंटे के फासले पर था। वहाँ उनकी बहुत आवभगत की गई।

खनीजा बहुत प्यारी लड़की थी और बहुत ही प्रिय बीवी सिद्ध हुई। दिन-रात प्रेम और भोग-विलास में व्यतीत होने लगे। खनीजा की माँ उनसे पृथक् रहती थी। वह उन्हें परस्पर मेल-मुलाकात का अधिक-से-अधिक समय देना चाहती थी। उसकी योजना सफल हो रही थी और वह इससे अति प्रसन्न थी।

भटिया के जमींदार दो सौ गाँवों के मालिक थे और उनके घर में रुपया पानी की तरह बरसता था। प्रतिदिन सायंकाल जमींदार अपनी बैठक में आता और अपनी प्रजा से भेंट करता और उसकी कठिनाइयों को सुनता। प्रति सायं जो भी वहाँ आ जाता उसके लिए खाने की मेज पर स्थान होता। उसकी अपनी प्रजा में से और बाहर से लोग निःसंकोच आते और जमींदार के साथ बैठ खाना खाते। कभी-कभी तो खाना खाने वाले सौ से भी ऊपर हो जाते, परन्तु कभी किसी को न नहीं की गई थी। सदाशिव नित्य जमींदार की बगल में बैठकर भोजन करता था। खनीजा उस समय औरतों में बैठकर खाती थी।

जमींदार वली इब्राहीम का एक मौतकिद मुरीद था। वह उसे औलिया समझता था। इससे उसकी आज्ञाओं को पा वह सदाशिव और खनीजा की सेवा-सुश्रूषा कर रहा था। इसके अतिरिक्त उसके घर में मेहमानों का बहुत आदर-सत्कार होता था।

सदाशिव को आसपास के सब खूबसूरत स्थान दिखाए गए। जंगल में शिकार खेलने ले जाया गया। वहाँ के खेल-तमाशे और देहाती नाच-रंग तो हर रोज रात को होते थे।

एक रात जब सदाशिव खनीजा को छाती से लगाए हुए उसकी सुन्दर आँखों को देख आनन्द-विभोर हो रहा था तो उसने पूछा, "तुम्हें मैं कैसा लगता हूँ प्रिये ?"

"आप मेरे जिस्म की रूह हैं। मेरे पीर, मुरशिद, खुदा, क्या कहूँ, कुछ समझ में नहीं आता, सब कुछ हैं।"

उसने खनीजा का मुख चूमकर कहा, "जानती हो, जब तुम यह सब कुछ कहती हो तो मेरे दिल की क्या हालत होती है ?"

"क्या होती है ?"

"तुम जैसी खूबसूरत नाजनीन को अपनी समझ, मेरा मन आनन्द से इतना भर जाता है कि इसमें मैं पागल हो जाता हूँ। मैं ऐसा अनुभव करने लगता हूँ कि मैं आसमान में उड़ रहा हूँ और मैं कोई बहिश्त में रहने वाला फरिश्ता हूँ। जब मुझे होश आती है तो मैं सोचने लगता हूँ कि क्यों मुझे यह सब कुछ नसीब हो रहा है। मैंने कौन-सा अच्छा काम किया है जो यह सब कुछ मुझे अनायास ही मिल रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हकीकत में यह मेरी खुशनसीबी है, जिससे हम दोनों की शादी हुई है। यह क्यों हुआ और कैसे हुआ एक अजीब कहानी है। जब मुझे बताया गया कि वली साहब ने मेरे लिए एक खाविन्द ढूँढ़ा है तो मैं समझी थी कि कोई मुल्ला-मौलाना कहीं से बुलाया गया है, मगर जब मैंने आपको देखा तो दंग रह गई।"

"यही तो हैरानी की बात है कि इतनी बड़ी दुनिया को छोड़कर मुझ गरीब को क्यों ढूँढ़ निकाला गया?"

"हजरत की मेहरबानी ही समझनी चाहिए। उन्होंने ही आपको चुना है।"

"मैं हैरान तो इस बात से हूँ कि तुम सी बहिश्त की हूर के लिए एक हिन्दू को क्यों चुना गया?"

"इसमें राज है, मेरी अम्मी।"

"अम्मी? भला यह क्योंकर?" सदाशिव ने खनीजा की आँखों में देखते हुए पूछा।

खनीजा ने तिरछी नजर देखते हुए कहा, "यह एक राज है।"

"मेरे से भी खुफिया?" सदाशिव ने उसे अपने और समीप खींचते हुए पूछा।

"आपमें और मेरे में कोई छुपी बात नहीं है, मगर यह तो मेरी बात नहीं है।"

"पर मेरी जान! जो कुछ तुम्हारे मन में है वह मुझे बताने में क्या हर्ज है? तुम और मैं तो अब एक जान दो कालिब हैं न?" इतना कह सदाशिव ने उससे गाढ़ आलिंगन किया और अति प्रेमभरी दृष्टि से उसकी ओर देखा।

खनीजा ने विवश हो कहा, "यदि बता दूँ तो किसी से कहियेगा तो नहीं?"

"मुझे तुम इतना बेवफा समझती हो क्या?"

"और मुझसे मुहब्बत कम तो नहीं कर दोगे?"

"मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ खनीजा! यह मुहब्बत छोटी-मोटी बातों के मातहत नहीं है। तुम मेरे लिए स्वर्गीय वस्तु हो। दुनियादारी की बातें हमारे सम्बन्ध को अब बिगाड़ नहीं सकतीं।"

खनीजा ने एक बार और बात को टालने का यत्न करते हुए फिर कहा, "अच्छा, कभी फिर बताऊँगी।"

"और जानती हो उतनी देर तक मेरे साथ क्या होगा?"

"क्या होगा?"

"मैं नरक की आग में जलता रहूँगा। सब समय मेरे मन में यह ख्याल आता रहेगा कि मेरी बीवी के मन में कोई बात है जो वह मुझसे छुपाकर रखे हुए है।"

खनीजा ने कुछ सोचकर कहा, "बात तो मामूली है मगर कुछ लोग इसे बहुत तूल देते हैं। लीजिए बताती हूँ। हकीकत में हमारी शादी में, मेरी अम्मी ही वजह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। उनकी बात हजरत टाल नहीं सकते और उन्हीं का यह राज है। मुझे जन्म देने वाली वह हैं। मेरे इस खूबसूरत जिस्म और दिलोदिमाग को तरबीयत देने वाली वह हैं और जो कुछ हजरत आपके लिए कर रहे हैं उसको करवाने वाली भी वही हैं।"

"सत्य ? तब तो मैं तुम्हारी माँ का बहुत आभारी हूँ।"

"और यह राज उन्हीं का है। वे बम्बई की एक मशहूर रक्कासा थीं। मैं अभी पाँच साल की बच्ची थी कि एक दिन मेरी माँ दरगाह में जियारत करने आई। उर्स का दिन था और सैकड़ों दूसरे गाने-बजाने वाली वहाँ आई हुई थीं। मुझे उस दिन की बात याद है। सारा नजारा मेरी आँखों के सामने अब भी साफ मौजूद है। हम कुछ देरी से पहुँचे थे। बहुत-से लोग वहाँ पहले ही से बैठे थे। जब हम पहुँचे तो मकबरे के अन्दर बैठे लोग हमारी इज्जत करने के लिए उठ खड़े हुए। इससे आप मेरी माँ की मशहूरी का अंदाज लगा सकते हैं। दरगाह के पीर वली, जो किसी के लिए खड़े नहीं होते और जिनकी इज्जत में सब खड़े होते हैं, वह भी हमारे आने पर खड़े हो माँ का इस्तकबाल करने लगे थे।

"उस रात मेरी माँ का गाना हुआ और नाच हुआ। सब वाह-वाह कर उठे और लोग मरहबा-मरहबा करने लगे। हजरत ने और गाने को कहा तो माँ ने गाया। हजरत ने नाचने को कहा तो माँ ने नाचा। इस तरह रात-भर मेरी माँ का नाच और गाना हुआ। अगले दिन नमाज और वाज के बाद हजरत ने मेरी माँ को अपनी आरामगाह में बुलाया। वहाँ उनकी आपस में कुछ बातें हुईं और हम हजरत की आरामगाह में रहने लगे। हजरत माँ की उँगलियों पर नाचते हैं। हजरत मुझे अपनी लड़की की तरह प्यार करते हैं और उन्होंने मेरी तालीम और तरबीयत का इन्तजाम ऐसे ही किया है जैसे मैं उनकी ही लड़की हूँ।

"जब मैं पन्द्रह साल की हुई तो मेरी माँ ने मेरी शादी का मसला छेड़ा। हजरत ने कई अपने मुरीदों के लड़के दिखाए, मगर मेरी माँ का कहना था कि वे मेरी शादी किसी हिन्दू से करेंगी। मैं और आलि हजरत इसे नहीं चाहते थे। इस पर मेरी माँ ने बताया कि मैं एक बहुत बड़े हिन्दू गायक की लड़की हूँ। जब वे गाने-बजाने का काम करती थीं तो उनकी मुलाकात श्री केवलेश्वर राजवाड़े, जो अपने जमाने के चोटी के पक्के गायक थे, उनसे हुई। एक उत्सव पर वे एक पद, 'रघुपति राघव राजा राम', गाने लगे तो इतने कमाल से गाया कि मेरी माँ उनके चरणों पर लोट-पोट हो गईं। वह उनसे संगीत सीखने लगीं और इससे दोनों में ताल्लुकात बन गए और मेरा जन्म हो गया।

"मेरी माँ की ख्वाहिश थी कि मेरी शादी किसी हिन्दू से हो। मेरी तालीम मुझे इसलाम छोड़ने को नहीं कहती थी। इससे आप जैसे वसीह खयाल-शरीफ को ढूँढ़ा गया है। आपके मुतल्लिक हजरत को कैसे पता मिला, मैं नहीं जानती। उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहना है कि खुदा ने उनको रोशनी बख्शी है।"

सदाशिव यह कहानी सुन चकित रह गया। वली सूरत शक्ल से सत्तर वर्ष की आयु का मालूम होता था। उसका मतलब यह निकला कि साठ वर्ष की उमर में खनीजा की माँ से उसने विवाह किया। इससे उसके मन में खनीजा के लिए मान कम नहीं हुआ। उसने केवलेश्वर का नाम सुन रखा था और उसकी लड़की को अपनी स्त्री जान उसे कुछ खुशी ही हुई थी। उसने खनीजा से पूर्ण मन से प्यार कर कहा, "मेरी रानी! मुझे यह इतिहास सुन बहुत खुशी हुई है। राजवाड़े एक बहुत प्रसिद्ध गायक हुए हैं। उनका खून मेरी सन्तान का खून होगा। मुझे इससे बहुत खुशी हुई है।"

: १५ :

बम्बई फोर्ट एरिया में 'वली भाई करीम भाई' नाम की एक बहुत बड़ी कम्पनी देश से बाहर माल भेजने का काम करती है। सदाशिव को इस कम्पनी में उप-मैनेजर का काम करने को दिया गया। जिस इमारत में इस कम्पनी का दफ्तर था उसी में एक फ्लैट में सदाशिव के रहने का प्रबन्ध कर दिया गया था।

एक-दो दिन में जब सब प्रबन्ध हो गया और दफ्तर में काम चालू हो गया तो सदाशिव को अपने पिता की याद आई। उसने खनीजा से पूछा, "हम अब अपने घर में रहने लगे हैं। मेरी इच्छा है कि अपने पिता को भी यहाँ बुला लूँ। तुम्हारी क्या राय है?"

"मुझे डर लगता है।"

"किस बात से?"

"सुना है कि वह पुराने ख्याल के आदमी हैं। मन्दिर के पुजारी हैं। उन्हें मुसलमान लड़की को अपने लड़के की बहू के रूप में देखकर खुशी नहीं हो सकती। उनकी नाराजगी का आपके ख्यालात पर क्या असर होगा, कह नहीं सकती।"

"मुझ पर किसी की खुशी और नाराजगी का कुछ भी असर नहीं हो सकता। तुम निडर रहो। मैं समझता हूँ कि यह भी निश्चय हो जाना चाहिए कि बाप का बेटे से प्रेम प्रबल है या प्राचीन रूढ़ियों से।"

"मैंने तो अब अपना सब कुछ आपको दे डाला है। मैं आपसे जुदा नहीं होना चाहती।"

"तुम डरो नहीं मेरी जान। मेरा तुमसे प्रेम बहुत ऊँचा है। यह कुछ ऐसी चीज है जिसका बीज भगवान की इच्छा से पैदा हुआ है। यह सांसारिक वस्तु नहीं है।"

उसी दिन सायंकाल दफ्तर के समय के पश्चात्, सदाशिव ने पिता को लेने कम्पनी की मोटर भेज दी। पण्डित एकनाथ जब आया तो सदाशिव अपनी बीवी के साथ चाय पीने को तैयार बैठा था। एकनाथ के कमरे में आने पर सदाशिव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठा और उसके चरण-स्पर्श करने को झुका। पिता ने पुत्र को उठा गले से लगा लिया। इस समय खनीजा ने भी चरण-स्पर्श किए। पिता ने पूछा, "यह लक्ष्मी है, बेटा !"

"नहीं पिताजी। यह आपकी पुत्र-वधू है।"

एकनाथ ने उसे आशीर्वाद दिया और कहा, "सौभाग्यवती हो बेटी।"

सदाशिव ने पिता को बैठाकर उनके लिए चाय बनाते हुए कहा, "पिताजी ! ऐसी अवस्था उत्पन्न हो गई थी कि विवाह के समय आपको बुला नहीं सका। इसके लिए क्षमा चाहता हूँ।"

"परन्तु बेटा ! खुशीराम इत्यादि को तो इसके ले जाने की सूचना कर देनी थी। स्कूल का मामला था। बहुत बदनामी हुई है।"

"स्कूल का मामला ? इसका स्कूल के साथ कोई ताल्लुक नहीं है। आप किस की बात करते हैं ?"

"यह लक्ष्मी है न ! राने की बहन ?"

"नहीं पिताजी। क्या वह स्कूल में नहीं है ?"

"नहीं ! तुम्हारे चले जाने के दूसरे दिन ही कुछ लोग स्कूल में पहुँचे और उस को उठाकर ले गए। उन्होंने वह चिट्ठी दिखाई थी जो राधा ने तुम्हें उससे मिलने के लिए दी थी।"

"तब तो गजब हो गया है। जरूर उन आदमियों की शरारत है जो मुझे पकड़ कर ले गए थे। मैं समझता हूँ कि मैं उनका पता कर सकता हूँ।

"यह तो पिताजी ! खनीजा बेगम हैं। मेरा इनसे विवाह हुए एक मास से ऊपर हो गया है। यह बहुत अच्छी हैं। अब आपके आशीर्वाद से हमारा जीवन सफल हो जावेगा।"

जब सदाशिव ने अपनी स्त्री का नाम बताया था तब एकनाथ चाय का प्याला उठाकर पी रहा था। नाम सुन उसने प्याला मेज पर रख दिया और बड़े ध्यान से सदाशिव और लड़की का मुख देखने लगा। सदाशिव अपनी स्त्री की प्रशंसा कर रहा था परन्तु एकनाथ अपने क्रोध को भीतर-ही-भीतर पी रहा था। वह सोच रहा था कि कौन-सी विवशता आन पड़ी थी जो इसने मुसलमान लड़की से विवाह कर लिया है। उसे लड़की का सौन्दर्य ही ऐसा प्रतीत हुआ था जिस कारण सदाशिव इस पातकी कार्य के लिए पथ-भ्रष्ट हुआ हो। उसके विचार में सौन्दर्य और जिसे वह धर्म समझता था, परस्पर कुछ तुलना नहीं रखते थे। धर्म के सम्मुख शारीरिक सौन्दर्य की कोई कीमत नहीं थी। परन्तु वह गम्भीर हो बैठा रहा और अपने मन के भावों को प्रकट नहीं होने दिया। सदाशिव ने समझा कि उसके काम को खराब नहीं माना गया। इससे वह अपनी बात कहता गया। "उस रात मुझे कुछ लोग पकड़कर ले गए और उन्होंने ऐसी जगह पर ले जाकर रखा जहाँ इनको और इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की माँ को मेरी सेवा करने का काम मिला। हम एक-दूसरे से मिले और परस्पर प्रेम करने लगे। परिणाम यह हुआ कि हमारा विवाह होना आवश्यक हो गया। विवाह हुआ और एक मास के लिए सैर करने बाहर चले गए। हमें वापस लौटे सिरफ दो दिन हुए हैं। यह नई जगह थी और जो नौकरी मुझे मिली है वह भी मेरे लिए सर्वथा नई है। इस कारण सब प्रबन्ध करने में दो दिन लग गए हैं।

"अब आपके लिए यह बगल का कमरा सजाया गया है। इसमें आपके आराम का पूरा प्रबन्ध कर दिया है। हमारी इच्छा है कि आप मन्दिर का काम किसी और को सौंपकर यहाँ आ जाइए। हमें अपनी इस अवस्था में सेवा-सुश्रूषा करने का अवसर दीजिए।"

एकनाथ के दिमाग में एक बवण्डर उठ रहा था। वह अपने क्रोध का प्रदर्शन इतने दिन के पश्चात्, पहली बार मिलने पर करना नहीं चाहता था। यदि वह कुछ न कहता तो सदाशिव अपनी कथा कहता जाता, परन्तु एकनाथ ने उसे और कहने से रोक कहा, "मैं यहाँ आकर नहीं रह सकता। मुझे मन्दिर का काम इतना प्रिय है कि उसे मरने से पहले छोड़ना नहीं चाहता।"

"पर पिताजी!" सदाशिव ने गम्भीर हो कहा, "आखिर उससे कितनी आय होती है जो मरण-पर्यन्त उसे करते रहना चाहते हैं?"

"तो क्या तुम मन्दिर को कोई साहूकार की दुकान समझते हो? यह आमदनी का काम नहीं है। देखो सदाशिव! यदि मुझे सुख और आनन्द भोग करना होता तो मैं मन्दिर के पुजारी का काम बहुत पहले छोड़ चुका होता। तुम्हारे पालन-पोषण में कष्ट उठाना पड़ा है, वह न होता।"

"आखिर सुख और आराम तो हर एक को चाहिए। जहाँ से वह प्राप्त हो वही तो करना चाहिए न?"

"कभी-कभी सुख और आराम को तिलांजलि देकर भी कुछ काम करने पड़ते हैं। देखो, तुम तब दो वर्ष के बच्चे थे जब तुम्हारी माँ का देहान्त हुआ था। यदि मैं उस वक्त अपने आराम और सुख का ध्यान करता तो दूसरा विवाह कर लेता और तुम्हारी जिन्दगी खराब कर देता। तुम्हारे प्रेमवश मैंने अपने सुख को नमस्कार कहा और तुम्हारे पालन-पोषण में लग गया। इसी से मैं कहता हूँ कि दुनिया में भोग-विलास ही केवल नहीं रह गए। इसके अतिरिक्त भी कुछ बातें हैं जिनका करना मनुष्य को प्रिय होता है।"

"तो आप मेरे आराम और सुख के लिए इस प्रयास को पसन्द नहीं करते?"

"मैंने यह नहीं कहा, मेरे कहने का केवल-मात्र यह अभिप्राय है कि मुझे मन्दिर का काम तुम्हारे इस महल में रहने से अधिक प्रिय है। यह सब तुमको तुम्हारी ससुराल से मिला है?"

"जी हाँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छी बात है, मुझे इससे दुःख नहीं होता, हाँ शोक बहुत हो रहा है। मैं नहीं जानता कि तुमने इस सबके लिए कितना दाम चुकाया है?"

"दाम-वाम कुछ नहीं दिया। ये सब तो इनके खानदान से सम्बन्ध बनने पर अपने-आप ही हो गया है।"

"बहुत अच्छी बात है। तो लो अब मैं चला।"

"पिताजी, चाय नहीं पीजिएगा?"

"नहीं। इस चाय का दाम मुझे क्या देना होगा, मैं अनुमान नहीं लगा सका। इससे न पीनी ही अच्छी है।"

यह कह एकनाथ उठ खड़ा हुआ और हाथ जोड़ नमस्कार कर कमरे के बाहर निकल आया।

सदाशिव उसके पीछे-पीछे बाहर निकल आया और पिता को मकान के बाहर तक छोड़ने आया। चलते-चलते कहने लगा, "फिर कब आइएगा?"

"जब जरूरत होगी, आ जाऊँगा। क्यों, इजाजत लेने की तो जरूरत नहीं पड़ेगी?"

"अच्छी बात, तो हम आपसे मिलने आवेंगे।"

"वहाँ मत आना।"

"क्यों?"

"वह मन्दिर है। उसके भगवान मालिक हैं। बिना उनकी इच्छा के तुम्हारा उनके घर जाना ठीक नहीं।"

यह कह एकनाथ, जो अब सड़क पर आ गया था, पैदल ही चल पड़ा।

यह देख सदाशिव ने कहा, "पिताजी! मोटर जो है?"

"नहीं, इसकी जरूरत नहीं।"

"तो घोड़ा-गाड़ी कर देता हूँ।"

"नहीं, मेरे पास इतना दाम नहीं है। अगले चौराहे पर बस मिल जाएगी।"

: १६ :

एकनाथ घर जाने के स्थान खुशीराम के मकान पर जा पहुँचा। खुशीराम अपनी स्त्री और बच्चों के साथ पिक्चर देखने जा रहा था। एकनाथ को आते देख सब रुक गए। उसने इनको इस प्रकार इकट्ठे जाते देख कहा, "मैं ठीक समय पर नहीं आया लगता?"

"हम सिनेमा शो देखने जा रहे थे। कोई आवश्यक काम है क्या?"

"केवल इतना कहने आया हूँ कि सदाशिव आ गया है। एक मुसलमान लड़की को विवाह लाया है।"

"मन्दिर में ले आया है?"

"नहीं! फोर्ट एरिया में 'वली भाई करीम भाई' की दुकान के ऊपर एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलीशान मकान में ठहरा है। कहता है कि ससुराल से मिला है।"

"तो आप उससे लड़ आए हैं?"

"लड तो नहीं आया। हाँ! उससे तिनका तोड़ आया हूँ।"

"यह तो अच्छा नहीं किया आपने।"

"तो क्या करता ?"

"अच्छी बात! मैं आपसे फिर मिलूंगा। परिस्थिति को तनिक सोचने की आवश्यकता है।"

जब एकनाथ चला गया तो खुशीराम ने राधा से कहा, "न जाने इन रूढ़िवादियों को कब अक्ल आवेगी। हिन्दुओं को आय करने की तरकीब नहीं आती। ये सदा खर्च करना ही जानते हैं।"

राधा लक्ष्मी की बाबत सोच रही थी। उसने पूछा, "पर लक्ष्मी का क्या हुआ है ?"

"हमारा अनुमान ठीक ही निकला है। निश्चय ही मन्नू ने उसका हरण किया है।"

"पर उसे ढूंढ़ें कहाँ?"

रात-भर राधा और खुशीराम सोचते रहे कि यह क्या हुआ? उन्हें केवल एक ही बात समझ में आ रही थी कि सदाशिव ने इस मुसलमान लड़की से लक्ष्मी का अदला-बदला कर लिया है। इसे वह भारी घृणित कार्य समझते थे। अतएव दोनों का यह निश्चय हुआ कि अगले दिन वे सदाशिव से मिलने जावें।

सदाशिव को अपने पिता के व्यवहार से बड़ा दुःख हुआ था। खनीजा अपने ससुर के विरोध को भली-भाँति समझती थी। जब सदाशिव पिता को बाहर छोड़कर भीतर लौटा, तो खनीजा ने कहा, "मैंने कहा न था ?"

"मैं उनसे यह उम्मीद नहीं रखता था।"

"अब क्या होगा ?"

"कुछ नहीं। मेरा तुम्हारे से सम्बन्ध अटूट है। जहाँ तक हमारा आपस का ताल्लुक है, कायम रहेगा। मैं समझता हूँ कि पिताजी शीघ्र ही मान जावेंगे।"

अगले दिन जब खुशीराम और राधा उससे मिलने गए तो खनीजा की माँ उन से मिलने आई हुई थी। सदाशिव उनको अपने विरोधी-पक्ष में समझता था। इससे उनका स्वागत कर सतर्क हो उनके आने का कारण जानने के लिए मुख देखने लगा। बात खुशीराम ने आरम्भ की, "कल आपके पिताजी हमसे मिले थे। उनसे पता चला है कि आपका विवाह हो गया है। सो हमने विचार किया कि बधाई दे आवें। बताइए, यह किस प्रकार हो गया? आपने यह सब चोरी-चोरी क्यों किया ?"

राधा बीच में ही बोल उठी, "और क्या बीवी को नहीं दिखाइएगा? क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपने उसे पर्दे में रखा हुआ है ?"

"नहीं। उनकी माँ भी आई हुई हैं। इस कारण उनसे बातें कर रही हैं।"

"तो उनके भी दर्शन करा दीजिए।"

"परन्तु बुलाने से पूर्व आपको यह बता देना चाहता हूँ कि वे मुसलमानिन हैं। कल पिताजी आए तो उसका अपमान हो गया। यह ठीक नहीं हुआ। मैं इसका दुहराया जाना नहीं चाहता।"

"सदाशिव जी ! वे पुराने विचारों के आदमी हैं। उनकी बात छोड़िए। हमसे आपको ऐसी बात की आशा नहीं करनी चाहिए। जब एक मुसलमानिन ने आपकी बीवी बनना स्वीकार किया है तो यह एक हर्ष की बात ही तो हो सकती है।"

राधा के मुख से यह बात सुन सदाशिव विस्मय में देखता रह गया। उसे इन के इतने उदार होने की आशा नहीं थी। फिर भी वह निःशंक नहीं हुआ। उसने कहा, "इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। फिर भी यदि आपको कोई बात पसन्द न हो तो सभ्य व्यवहार के नाते किसी दूसरे को दुखी करना उचित नहीं।"

सदाशिव के इस विनम्र निवेदन से खुशीराम बहुत लज्जित हुआ। उसने भी अपनी स्त्री की बात का समर्थन करते हुए कह दिया, "भाई साहब ! आप जानते नहीं कि यह कौन हैं। इसी से इस प्रकार का सन्देह कर रहे हैं। मैं आपको एक रहस्य की बात बताता हूँ। यह राधा देवी भी मुसलमान की लड़की हैं। इनका बचपन का नाम रहीमन था और अब ये राधा देवी हैं। इनसे आप यह आशा नहीं कर सकते कि ये किसी का इस कारण अपमान करेंगी या अपमान होता देखेंगी कि यह मुसलमान की सन्तान है।"

सदाशिव के लिए यह एक अनोखी बात थी। वह जानता था कि राधा देवी लक्ष्मी को मुसलमान होने में बाधा उत्पन्न कर रही थीं। इससे उसने विस्मय में पूछा, "सत्य ? यदि यह सत्य है तो बहुत विचित्र है।"

"मुझे तो इसमें कोई विचित्रता प्रतीत नहीं होती। हमारे में परस्पर कभी झगड़ा अथवा मनोमालिन्य नहीं हुआ। प्रेम और एक दूसरे पर भरोसा, संसार की सब समस्याओं को सुलझा देता है। यदि स्वीकृति दें तो मैं भीतर चली जाऊँ ?"

"नहीं, नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। मैं स्वयं उन दोनों को बाहर ले आता हूँ।"

इतना कह सदाशिव वहाँ से उठ भीतर चला गया। खुशीराम और राधा चुपचाप अपने-अपने मन के भावों पर विचार करते रहे। सदाशिव को बाहर आने में देर लगी। इससे खुशीराम ने समझ लिया कि सदाशिव की स्त्री ने सदाशिव के पिता के व्यवहार को बहुत अनुभव किया है और वह अपने पति के मित्रों के सम्मुख आना नहीं चाहती। उसने अपने मन में निश्चय कर लिया था कि कोई अनियमित बात नहीं करेगा। सभ्यता के अपने गुणों को छोड़कर भी उनका लक्ष्मी को ढूंढ़ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का काम परस्पर विश्वास से ही सम्पन्न हो सकता था।

कितनी ही देर के बाद सदाशिव, खनीजा और उसकी माँ तीनों बाहर आए। खुशीराम और राधा ने उठकर उनका स्वागत किया। सदाशिव की सास ने इनको आदर से बैठाया। राधा और खनीजा समीप-समीप बैठ गईं। खुशीराम के एक ओर खनीजा की माँ और दूसरी ओर सदाशिव बैठ गया। राधा ने बहुत प्रेम-भाव से खनीजा को अपना इतिहास सुनाया और उसके मन पर यह अंकित करने का यत्न किया कि उसके पति ने कोई बुरी बात नहीं की।

"पर इनके पिताजी क्यों नाराज होकर चले गए हैं ?"

"वे पुराने विचार के आदमी हैं और फिर बड़ी आयु के हैं। उनकी बातों पर नाराज होने की आवश्यकता नहीं।"

दूसरी ओर खुशीराम सदाशिव और खनीजा की माँ से बातचीत कर रहा था। वह कह रहा था, "सदाशिव, तुम बहुत भाग्यवान हो जो इतनी सुन्दर स्त्री मिली है। और फिर इनको क्या कहूँ। सुन्दर वस्तु के निर्माता की यदि प्रशंसा होनी चाहिए तो आपकी क्यों न की जाए ?"

"शुक्रिया," खनीजा की माँ ने कहा, "पर यह खुदा की कुदरत है। इसम इन्सान की करनी से कुछ नहीं होता। उस परवरदिगार की रहमत से ही हमें सब कुछ नसीब होता है। हमें उसी का शुक्र-गुजार होना चाहिए।"

"यह तो है ही। फिर भी खुदा तो सबके लिए रहीम और करीम है। फिर भी सब न तो खूबसूरत होते हैं न ही सभ्य, सुशील और समझदार। आखिर यह भेद-भाव तो हमारी करनी से ही उत्पन्न हो सकते हैं।"

"भला एक आदमी का खूबसूरत होना और दूसरे का बदसूरत होना किस तरह हमारे अपने बस की बात है ? एक ही माँ-बाप की दो सन्तान एक जैसी सूरत-शक्ल की नहीं होतीं।"

"आपकी यह दलील बड़ी जबरदस्त है। फिर भी वैज्ञानिकों ने इसे समझाने का यत्न किया है। उनका कहना है कि जिसमानी और दिमागी बनावट खानदान की कई पीढ़ियों के अमालों (कर्मों) का नतीजा होते हैं। इसीसे हम हिन्दू लोग वर्ण-व्यवस्था और परम्परा को मानते हैं। खैर, छोड़िए इस बात को। यद्यपि सदाशिव और हमारे विचार नहीं मिलते फिर भी हमें इनके इस विवाह से बहुत खुशी है। यह एक विस्मयजनक घटना हुई है कि एक धनी परिवार की लड़की और उस पर इतनी खूबसूरत होने पर भी एक गरीब ब्राह्मण के लड़के से खुशी-खुशी विवाह दी गई है।"

खनीजा की माँ मुस्कराई और पूछने लगी, "इसमें आपको हैरानी क्यों हुई ? मुहब्बत एक बहुत बड़ी ताकत है। इसको किसी भी ख्याल से पसपाह (परास्त) नहीं किया जा सकता। जब यह सिर पर सवार होती है तो बड़ों-बड़ों के हवास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फाख्ता कर देती है।"

"तो इसका मतलब यह हुआ कि सदाशिव आपकी लड़की से मुहब्बत करने लगा था। मुझे यह मालूम नहीं था कि पंडित जी महाराज इतने मनचले हो सकते हैं कि एक इतनी खूबसूरत लड़की से प्रेम करने का साहस कर सकते हैं। बहुत काल से दोनों का परिचय प्रतीत होता है। क्या दोनों एक ही स्कूल या कॉलेज में पढ़ते थे?"

"नहीं, यह बात नहीं ! मेरी लड़की तो किसी स्कूल या कॉलेज में नहीं पढ़ी। जो कुछ भी यह पढ़ी है सब घर पर ही पढ़ी है।"

"तो इसका मतलब यह हुआ कि आप लोगों ने उसे लड़की के सम्पर्क में लाकर प्रेम की भावना उत्पन्न कर यह सब कुछ कराया है।"

"तो आपको यह पसन्द नहीं है क्या ?"

"आपका उद्देश्य कुछ भी हो परन्तु फल अच्छा ही हुआ है। हमें इससे प्रसन्नता हुई है।"

"हम आपके निहायत मशकूर हैं।"

"हम तो आपकी फराख दिली (उदारता) से बहुत प्रसन्न हैं। आपने जब लड़की के लिए वर ढूँढ़ने का यत्न किया तो एक हिन्दू को पसन्द कर लिया। हमें इसमें अपने देश का उज्ज्वल भविष्य छुपा प्रतीत होता है।"

"काश कि यह बात आज से कुछ साल पहले हो सकती।" खनीजा की माँ ने एक लम्बी साँस खींचकर कहा।

"कई कारणों से ऐसा नहीं हो सका। इसमें मुसलमानों का अनाचार एक भारी कारण था। हमारे देश में किसी औरत पर इसलिए बलात्कार कभी नहीं किया गया था कि वह किसी भिन्न मतानुयायी की लड़की है। ऐसे उदाहरण तो मिलते हैं जब किसी कामांध मनुष्य ने किसी सुन्दरी पर बलात्कार किया हो, परन्तु भिन्न मत का होना बलात्कार का कारण नहीं हुआ। यह बात मुसलमानों ने यहाँ पर चलाई और इसका स्वाभाविक परिणाम यहाँ के लोगों में मुसलमानों के लिए घृणा का उत्पन्न होना हुआ।"

खनीजा की माँ इतिहास की इन बातों को नहीं जानती थी। इससे वह चुप रही, परन्तु सदाशिव चुप नहीं रह सका। उसने कह ही दिया, "इस परस्पर की घृणा में हिन्दुओं का भी तो भारी दोष है।"

"हाँ। एक बात में उनको भी दोषी कहा जा सकता है। यदि उस समय के हिन्दू संगठित होकर मुसलमानों के आक्रमण का विरोध करते तो न यहाँ मुसलमानों का राज्य होता न ही परस्पर घृणा का भाव उत्पन्न होता।"

"उस समय ब्राह्मण भी तो संसार के सब लोगों को नीच समझते थे।"

"फिर भी वे अपने से नीच लोगों की स्त्रियों पर बलात्कार करते हों, ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं सुना गया ।"

इस समय राधा ने अपने पति की ओर देखकर कहा, "देखिए, खनीजा वहन ने मेरा निमन्त्रण स्वीकार कर लिया है। अगले रविवार दोपहर के बारह बजे ये आवेंगी । खाना हमारे यहाँ होगा ।"

"बहुत धन्यवाद है इनका । सदाशिवजी आप भी अवश्य आइएगा ।"

"हाँ, अगर ये मुझे ले चलेंगी तो ।"

"तो आपके लिए मैं इनसे प्रार्थना कर दूँ ?"

चाय का समय हो गया था । सदाशिव ने पूछा, "चाय मँगवाऊँ ?"

"तो क्या इसके लिए हमें किसी और स्थान पर जाना होगा ?"

"नहीं, मैं अभी इन्तजाम किए देती हूँ ।" खनीजा ने कहा और उठकर रसोई घर में चली गई ।

राधा उठकर उसके साथ भीतर चली गई और चाय बनाने में उसकी सहायता करने लगी । राधा ने देखा कि खनीजा काम करने में बहुत चतुर है। इससे उसने पूछा, "मालूम होता है कि घर में आपको सब प्रकार का काम करने का ढंग सिखाया गया है ।"

"मैं और माँ अपना और अपने मेहमानों के खाने वगैरा का काम खुद करती थीं ।"

"आपके पिताजी क्या करते हैं ?" यह प्रश्न राधा ने तीसरी बार पूछा था और हर बार खनीजा ने बात बदल, टाल दिया था । इस बार वह विवश हो गई । उसने कह ही दिया, "वे नहीं रहे ।"

"ओह ! उनकी मृत्यु हो चुकी है ?"

"जी हाँ ।"

"आपकी माँ कहाँ रहती हैं ?"

"दरगाह में ।"

राधा ने प्याले और पिरचों को कपड़े से साफ करते हुए बे-ध्यान में पूछ लिया, "कौन-सी दरगाह ?"

"पीर शाह मुराद की दरगाह में ।"

राधा यह सुन विस्मय में लीन हो गई और बोल नहीं सकी । फिर भी अपने मन को अपने काबू में रखकर अपने काम में लगी रही । खनीजा को यह समझ ही नहीं आया कि उसने कोई रहस्य की बात बता दी है और उस रहस्य को सुनने वाली मन-ही-मन बहुत प्रसन्न हो रही है। राधा ने इस सूचना के पाने से हुए विस्मय को भीतर-ही-भीतर दबाकर, अपने को काबू में कर लिया और गरम पानी को चायदानी में डालते हुए कहने लगी, "वहाँ रहने के, शायद, अच्छे मकान मिलते हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सबको नहीं। माँ वहाँ के पीर की मोतकिद (भक्तिनी) हैं, इससे ये वहाँ रहती हैं और हज़रत पीर साहब ने उनके लिए एक वसीह मकान दे रखा है।"

चाय तैयार हो गई थी और खनीजा ने आलमारी से, साथ खाने के लिए, बिस्कुट और केक निकाल लिये थे। सब सामान ट्रे में रख लिया गया और खनीजा उठाकर बाहर ले आई। राधा भी उसके साथ बाहर चली आई।

चाय पीने के पश्चात्, खुशीराम और राधा ने विदा माँगी और अगले रविवार की फिर याद दिलाकर वहाँ से विदा हो गए।

घर पहुँच राधा ने दरगाह वाली बात बताई। खुशीराम ने बात सुनकर कहा, "तुमने तो बहुत मार्के की बात मालूम कर ली है। अब हमें लक्ष्मी के ढूँढ़ने का एक स्रोत और मिल गया है।"

"यह काम जान-जोखम का होगा।" राधा ने गम्भीर होते हुए कहा।

"खतरा तो सिर लेना ही होगा। इसके बिना काम नहीं चल सकता। मैं आज ही महावीर-दल के लोगों से कहूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

: १ :

चेतनानन्द ने अपने पिता का घर छोड़ा तो सराजदीन बैरिस्टर के घर डेरा डाल दिया। उसने बैरिस्टर साहब को यह नहीं बताया कि वह अपने पिता का घर सदैव के लिए छोड़ आया है। सराजदीन उसका पार्वती से विवाह न हो सकने की घटना को जानता था और उससे पूरी सहानुभूति रखता था। इससे जब उसने कहा, "दोस्त, अब तो घर में रहने को दिल नहीं करता" तो सराजदीन ने उसके गले में बाँह डालकर कहा, "इन औरतों के लिए अफसोस करना ठीक नहीं। आदमी को तो संसार में बहुत काम करना होता है। उसके लिए मुहब्बत घर पर आकर दिल बहलावे का एक बहाना मात्र होती है। अगर वह भी औरतों की भाँति इसके लिए काम-काज छोड़ बैठे तो तमाम दुनिया तबाह हो जावे। देखो मिस्टर आनन्द, हम, जो राजनीति के अन्दर दखल रखते हैं, इस किस्म की घरेलू बातों पर अपनी जिन्दगी बरबाद नहीं कर सकते।

"तुम कुछ दिन हमारे यहाँ रहो। तब तक असेम्बली की बैठक आरम्भ हो जावेगी और करने को इतना काम हो जावेगा कि इन फिजूल की बातों पर सोचने की फुरसत ही नहीं रह जावेगी।"

चेतनानन्द उसी के घर रह गया। इस समय एक घटना घटी। मुमताज की बहिन नसीम, कुछ दिन रहने के लिए बहिन के पास आ गई। नसीम अभी क्वाँरी थी। उसने उसी वर्ष बी० ए० पास किया था। वह लाहौर सैर करने आई थी और चेतनानन्द बेकार था। दोनों को परस्पर मिलने का बहुत अवसर मिलने लगा। नसीम को शालिमार बाग देखने जाना होता तो चेतनानन्द ले जाने के लिए तैयार हो जाता। यदि उसे जहाँगीर का मकबरा देखना होता तो चेतनानन्द को साथ जाने की फुरसत होती। कभी अजायबघर, कभी चिड़ियाघर, कभी लारेन्स गार्डन और कभी घुड़दौड़। अभिप्राय यह कि हर समय चेतनानन्द और नसीम इकट्ठे होते। प्रायः ऐसे समय, चेतनानन्द साथ जाने के लिए खाली होता और बैरिस्टर साहब और मुमताज को कुछ-न-कुछ काम हो जाता।

नसीम आठ-दस दिन तक लाहौर रही और इतने दिनों में उसका चेतनानन्द से बहुत घना परिचय हो गया। जाते समय नसीम ने चेतनानन्द से दिल्ली सैर करने जाने का वचन ले लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ दिनों में दिल्ली में 'आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी' का अधिवेशन होने वाला था, और चेतनानन्द ने उन दिनों दिल्ली जाने का निश्चय कर लिया। मुमताज और नसीम के मायके दिल्ली में थे। उनके पिता पुराने कांग्रेसी कार्यकर्ता थे। वे सन् १९२१ के आन्दोलन में जेल-यात्रा कर चुके थे। उनके लड़के नजीर अहमद विलायत से डाक्टरी पास करके आए थे और दिल्ली सिविल लाइन्ज में, चिकित्सा-कार्य करते थे। इस समय पिता का देहान्त हो चुका था। बड़ी बहिन मुमताज का विवाह लाहौर में हो चुका था और छोटी बहिन नसीम लाहौर से चेतनानन्द से अपना मन मेलकर आई थी।

नसीम दिल्ली में सार्वजनिक कामों में बहुत भाग लेने वाली लड़की थी। कांग्रेसी क्षेत्र में उसकी जान-पहचान बहुत ज्यादा थी और उससे विवाह के इच्छुक कई नवयुवक उसके आगे-पीछे चक्कर काटते रहते थे। इनमें सबसे मनचला एक कबीरुद्दीन नाम का, हकीम असगर हुसैन का लड़का, जिसने नसीम के कॉलिज से ही एम० ए० किया था, हर रोज उससे मिलने आता रहता था। जब नसीम लाहौर गई हुई थी तब भी वह उसकी टोह लेता रहता था। उसे नसीम के लाहौर से आने का पता मिला तो वह स्टेशन पर उसके स्वागत के लिए जा पहुँचा। नसीम उसे प्लेटफार्म पर खड़ा देख प्रसन्न नहीं हुई। उसने गाड़ी से उतरते ही कबीरुद्दीन को अपनी ओर आते हुए देख मुख मोड़ लिया। वह जब उसके पास पहुँचा तो नसीम ने ऐसे मुख मोड़े हुए कुली को आवाज दी जैसे उसने उसे देखा ही नहीं। कबीरुद्दीन ने आवाज दी, "हुजूर! बन्दा हाजिर है और साथ नौकर भी लाया है।"

"ओह! आप हैं! मैं आपके आने की उम्मीद नहीं करती थी।"

"क्यों?"

"आपको बताया किसने कि मैं आज आ रही हूँ?"

"आपकी खुशबू ने, जो पहले आ गई थी।"

"जरा तहजीब से बात करिए। यह प्लेटफार्म है, एक पब्लिक जगह है।"

"ओह! भूल हो गई सरकार!" उसने अपने नौकर की ओर देखकर कहा, "ओ दीन, यह मेमसाहब का असबाब उठाकर बाहर ले चलो।"

नौकर जब असबाब उठाने लगा तो नसीम ने कह दिया, "रहने दो, इसे कुली उठायेगा।"

कबीरुद्दीन चुप रहा। कुली ने असबाब उठाया तो नसीम उसे लेकर स्टेशन से बाहर निकल आई। कबीरुद्दीन और उसका नौकर उसके पीछे-पीछे बाहर चले आए। नसीम ने टैक्सी की और उस पर सवार हो अपने भाई के घर को चली गई। कबीरुद्दीन इतनी जल्दी हार मानने वाला नहीं था। वह अपनी मोटर में सवार होकर उसके पीछे नसीम के घर जा पहुँचा। नसीम बिना उसका ख्याल किए, उसे मकान के ड्राइंगरूम में छोड़ अपने कमरे में चली गई। गुसल वगैरा से छुट्टी पा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और नाश्ता कर बाहर आई तो कबीरुद्दीन को अभी भी वहाँ बैठे देख माथे पर त्यौरी चढ़ाकर पूछने लगी, "कबीर साहब, क्या बात है? आपको भाई साहब से काम है कुछ?"

"नहीं, मुझे आपसे काम है।"

"तो फरमाइए", नसीम ने उसके सामने सोफा पर बैठते हुए पूछा।

कबीरुद्दीन ने उसकी आँखों की ओर देखते हुए कहा, "जब आप लाहौर तशरीफ ले जा रही थीं तो क्या आपकी आँखों ने मुझे धोखा दिया था?"

"आपने उनमें क्या देखा था? जब तक मुझे यह न मालूम हो, तब तक कैसे मैं इस सवाल का जवाब दे सकती हूँ?"

"मैंने उनमें मुहब्वत की झलक देखी थी।"

"आपने ठीक देखा था, लेकिन वह मुहब्बत आपके लिए नहीं थी। यह आपको किसने बताया है कि वह झलक आपके लिए थी। देखो कबीर साहब, अब आपको यह समझ लेना चाहिए कि हम बच्चे नहीं रहे। मेरी सगाई हो गई है और तुमको अब अपना काम-धंधा देखना चाहिए।"

"आपकी सगाई हो गई है? किससे?

"आपसे नहीं। वे कौन हैं, यह आपके जानने की बात नहीं। अब आप जा सकते हैं।"

"इतनी जल्दी नहीं, बेगम साहिबा। आपने मेरे साथ क्या-क्या वायदे किए थे? उन सबका क्या हुआ? आखिर मैंने जो आप पर इतना कुछ खर्च किया है, उस सबका क्या होगा?"

"वह सब गया भाड़ में। तुम उसको किसलिए खर्च कर रहे थे? क्या वह मुझे शादी के लिए रिश्वत दी जा रही थी?"

कबीरुद्दीन इन बातों को सुन भौंचक खड़ा रह गया। उसे नसीम में इतनी जल्दी परिवर्तन होता देख बहुत विस्मय हुआ। वह समझ नहीं सका कि अब क्या करे। अतएव चुपचाप उठा और कोठी के बाहर निकल गया।

: २ :

चेतनानन्द जब दिल्ली आया तो नसीम के भाई के घर ठहरा। लाहौर की भाँति यहाँ भी नसीम चेतनानन्द के साथ-साथ घूमती रहती थी। यद्यपि यह घोषित नहीं हुआ था, तो भी दोनों का विवाह हो जाना अब स्वाभाविक ही प्रतीत होने लगा था। नजीर अहमद को भी यह बात स्पष्ट हो चुकी थी कि इनका विवाह होगा।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक हुई और उसके अगले दिन आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी की बैठक थी। कैबिनेट मिशन की बातों को मान लिया गया। इनमें सबसे अधिक खटकने वाली बात थी भारत को तीन स्वतन्त्र भागों में बाँटना। इस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के सदस्यों में गरमागरम वाद-विवाद चल रहा था। कुछ सदस्यों का विचार था कि इस योजना से तो वास्तव में देश का विभाजन हो ही गया है। दूसरे लोगों का विचार था कि इस योजना से देश में पाकिस्तान, अर्थात् मुसलमानी हुकूमत स्थापित होने से बच गई है। इस दूसरे विचार के लोग इस बात के लिए बहुत चिन्तित थे कि मुस्लिम लीग ने अभी तक कैबिनेट मिशन की योजना को क्यों स्वीकार नहीं किया ?

चेतनानन्द नसीम के साथ दर्शनीय स्थानों को देखने जाने में इतना व्यस्त था कि उसका ध्यान देश की उक्त विषम समस्याओं की ओर जा ही नहीं रहा था। सायंकाल वे दोनों 'हौज खास' पर पिकनिक कर आए, तो नजीर अहमद, नसीम के भाई ने, चेतनानन्द को मुबारकबाद दी। चेतनानन्द ने विस्मय में उसका मुख देखते हुए पूछा, "क्या हुआ है दादा ?"

"वर्किंग कमेटी ने कैबिनेट मिशन की योजना को स्वीकार कर लिया है।"

"सत्य ही यह मुबारकबादी की बात है।" चेतनानन्द ने प्रसन्न हो कहा।

"मगर", नसीम ने कहा, "मुस्लिम लीग तो इसको नहीं मान रही।"

"यही तो खुशी की बात है।" चेतनानन्द का कहना था। "अब तो अंग्रेजों पर यह बात वाजा हो जाएगी कि मुस्लिम लीग के लोग ही हैं, जो समझौता करने पर तैयार नहीं हैं।"

'ऊँह !' टैक्सी के ड्राइवर के मुख से निकल गया। इस टैक्सी में नसीम और चेतनानन्द दिन-भर घूमते रहे थे।

नजीर और चेतनानन्द ने घूमकर उस ड्राइवर की ओर देखा। वह सावधान होकर खड़ा हो गया। नजीर को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कोई फौजी सिपाही अपने अफसर के सामने 'अटैन्शन' की हालत में खड़ा हो जाता है। ड्राइवर सिक्ख था। नजीर ने उसकी ओर देखकर पूछा, "तुम फौज में रहे हो ?"

"जी ! मैं आजाद हिन्द फौज का सिपाही हूँ।" ड्राइवर का उत्तर था।

"तभी इस किस्म की गुस्ताखी कर रहे हो।"

"बहुत भूल हुई है साहब। मुआफी चाहता हूँ। मगर बात आपने ऐसी कही है जिसका असर मेरे मन पर बहुत जबरदस्त हुआ था और वह असर भीतर रुक नहीं सका।"

"क्या असर हुआ है तुम्हारे मन पर ?" नसीम ने पूछा।

"छोड़ो इसको। इसका भाड़ा दो और विदा करो।" नजीर ने नाक चढ़ाकर कहा।

"नहीं भैया। इस जमहूरियत के जमाने में सबकी बात सुननी चाहिए। हाँ तो सरदार साहब ! क्या असर हुआ है आपके मन पर।"

ड्राइवर उसी भाँति अटैन्शन की हालत में खड़ा-खड़ा बोला, "सरकार !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेसी लोगों के मन में अंग्रेजों को प्रसन्न करने की बात मैंने पहली बार सुनी है और फिर वह भी देश के टुकड़े कुबूल करते हुए। हमने अंग्रेजों से लड़कर स्वराज्य लेने का जो खतरा अपने सर पर लिया था, उसके बाद महात्मा गांधी के शिष्यों को अंग्रेजों को खुश करने की बात कहते सुन दिल की पीड़ा छुपी नहीं रह सकी।"

बात सत्य थी और सब उसके मन के भावों से इतने प्रभावित हुए कि उसकी बात के उत्तर में कुछ भी कह नहीं सके। नसीम ने टैक्सी का भाड़ा दिया। टैक्सी वाले ने रकम जेब में डाल सलाम की और गाड़ी पर सवार हो चला गया। ये लोग भी भीतर आ गए। ड्राइंग-रूम में बैठे तो बात नसीम ने आरम्भ कर दी। "बात तो वह ठीक कहता था। हम लोगों को इस बात की ओर कभी ध्यान भी नहीं करना चाहिए कि अंग्रेजों के ऊपर किसी बात का क्या असर होता है। हमें तो हमेशा यह देखना चाहिए कि किस बात से मुल्क को फायदा होगा और किससे नुकसान।"

"आज इसी बात में फायदा है कि अंग्रेजों की नजर में हम नेक और ईमानदार साबित हों।"

नसीम की समझ में यह फिलोसोफी नहीं आई। इस कारण वह सोच में पड़ गई। उसे परेशान देख चेतनानन्द ने बात को टालते हुए कहा, "छोड़ो जी इस बात को। देखो दादा! हम आज 'हौज खास' गए थे। वहाँ पिकनिक का बहुत लुत्फ आया है। तुम यहाँ घर बैठे क्या मक्खियाँ मारते रहते हो। कल हम मथुरा जा रहे हैं। क्या ही अच्छा हो अगर तुम भी साथ चलो।"

"और कल आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी की बैठक जो होने वाली है। क्या उसमें नहीं जा रहे?"

चेतनानन्द इस सूचना से ऐसा दुःख अनुभव करने लगा जैसे कोई बच्चा किसी खिलौने के छिन जाने से बेबस अनुभव करता है। वह परेशानी में नसीम का मुख देखने लगा। नसीम ने समझा कि वह उससे वचन-भंग होने से घबड़ा रहा है। वास्तव में चेतनानन्द नसीम की संगति के आनन्द से वंचित हो जाने से दुःख अनुभव कर रहा था। नसीम ने अपने विचारानुसार उसे वचन से मुक्त करने के लिए कह दिया, "आनन्दजी! हम मथुरा का प्रोग्राम फिर किसी दिन के लिए मुल्तवी कर सकते हैं। कांग्रेस कमेटी की बैठक में तो जाना ही होगा। मेरे पास विजिटर्स-टिकट है और मैं गैलरी पर से आपको बैठक में भाग लेते देखना चाहती हूँ।"

विवश चेतनानन्द को अपने आनन्द का त्याग करना पड़ा।

: ३ :

अगले दिन नसीम को, विजिटर्स गैलरी में बैठे हुए चेतनानन्द को कैबिनेट मिशन योजना के स्वीकार करने का विरोध करते देख, बहुत अचम्भा हुआ। विरोध करने वाले बहुत कम थे, इस कारण चेतनानन्द को बोलने का अवसर मिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। जब उसकी बारी आई और वह बोलने लगा तो इतना युक्तियुक्त बोला कि सब गम्भीर होकर सोचने लगे। कांग्रेस के नेता लोग, जो वर्किंग कमेटी में कैबिनेट योजना मान चुके थे, घबरा उठे। चेतनानन्द कह रहा था, "इस योजना को मानना तो देश-विभाजन को मान लेना है। मैं पूछता हूँ कि जब हम उत्तरी भारत और पूर्वी भारत को, सब आन्तरिक मामलों में स्वतन्त्र कर रहे हैं और वहाँ मुसलमानों का बाहुल्य है, तो कैसे कहते हैं कि आपने दो पाकिस्तान नहीं बना दिए। हमने देश-विभाजन स्वीकार न करने का वचन दिया हुआ है। चुनावों के समय हमने अपने हल्कों के लोगों को यह आश्वासन दिया था कि हम पाकिस्तान बनने नहीं देंगे। तो अब यह हम क्या कर रहे हैं? यह ईमानदारी नहीं, यह राजनीति नहीं। यह देश-हित भी नहीं। यह कायरता है। यह मूर्खता है। यह गद्दारी है।"

जब चेतनानन्द बैठा तो सबने तालियाँ बजाईं और वाह-वाह की। पंजाब और बंगाल के सदस्यों ने उसके पास आकर उसे बधाई दी और उसकी पीठ को ठोंका। नेता लोग इस प्रदर्शन से घबरा उठे और जब एक आंध्र देश का सदस्य योजना के पक्ष में लम्बी-चौड़ी नीरस और युक्तिरहित बातें कहने लगा तो महात्मा गांधी को 'एस० ओ० एस०' भेजा गया। महात्मा जी का मौनव्रत था। उन्हें अपना मौनव्रत दो घंटा पूर्व ही तोड़ना पड़ा और वे भागे हुए सभा-मंडप में आ पहुँचे। आंध्र देश के सदस्य का वक्तव्य समाप्त होते ही महात्मा जी ने अपने कोमल, मधुर और जादू-भरे शब्दों में सदस्यों को समझाया। उन्होंने कहा, "मैं कहता हूँ कि इंग्लैण्ड की वर्तमान मजदूर सरकार ईमानदार लोगों की बनी है। हमें उनका एतबार करना चाहिए। भाई क्रिप्स और पैथिक लारेन्स ने मुझे विश्वास दिलाया है कि इस योजना से देश को लाभ होगा। आप लोगों को अपने नेताओं पर विश्वास रखना चाहिए। मेरी आपको यह सम्मति है कि आप इस योजना को स्वीकार करके देश, अंग्रेज और संसार को यह सिद्ध कर दो कि हम ईमानदारी से देश के काम को करना चाहते हैं।"

जब गांधीजी का कहना समाप्त हुआ तो मंडप में ऐसी शान्ति विराजमान थी जैसी किसी ईसाई की मृत शव के साथ जाने वालों में होती है। जब प्रधान ने उठकर कहा, "मैं समझता हूँ कि महात्माजी के हुक्म के पश्चात् अब और कुछ कहने-सुनने को नहीं रह गया। मैं अब राय लेता हूँ।" इस समय भी लोग विस्मय में डूबे हुए एक-दूसरे का मुख देख रहे थे।

प्रधान ने कहा, "वे लोग हाथ उठाएँ जा प्रस्ताव का विरोध करते हैं।"

ग्यारह हाथ उठे। इनमें चेतनानन्द का हाथ नहीं था। नसीम यह व्यवहार देख चकित रह गई। प्रस्ताव पास हो गया। कांग्रेस ने कैबिनेट योजना स्वीकार कर ली।

जब चेतनानन्द मंडप के बाहर आया तो नसीम ने अपनी हैरानी मिटाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए पूछा, "यह आपने क्या किया है ? लेक्चर तो दिया कैबिनेट योजना के खिलाफ और वोट दिया हक में ?"

चेतनानन्द हँस पड़ा। उसने प्रेमभरी दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए कहा, "प्रिये ! लेक्चर दिया था तुमको सुनाने के लिए और वोट दिया है नेताओं की बात पास कराने के लिए। मैं समझता हूँ कि नीति नेताओं की ही चलनी चाहिए। हमें अपनी राय उनको बता देनी चाहिए।"

नसीम को इस युक्ति से संतोष नहीं हुआ। उसने यह स्पष्ट प्रश्न पूछा, "क्या आप सत्य ही इस बात पर विश्वास रखते हैं कि यह योजना देश के हित में है ?"

"मैंने योजना पर कभी विचार ही नहीं किया। यह काम नेताओं का है।"

"तो आप नेता नहीं हैं क्या ?"

"नहीं ! हमारे नेता महात्मा गांधी हैं।"

"तो आपको कांग्रेस की ओर से कौंसिल का सदस्य क्यों बनाया गया है ? सारे देश में एक महात्मा गांधी को ही सब कुछ बना दिया होता। आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी का सदस्य भी आपको बनाने की आवश्यकता नहीं थी।"

"तुम नाराज हो गई हो, मेरी जान ?"

"नाराज नहीं तो हैरान जरूर हुई हूँ।"

उसी रात, जब चेतनानन्द किसी मित्र के यहाँ गया हुआ था, नसीम ने अपने भाई नजीर अहमद से, आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी में चेतनानन्द के व्यवहार का वर्णन किया और उस पर उसके कहने को भी बताया। नजीर अहमद उसकी बात सुन हँस पड़ा। नसीम इस हँसी का अर्थ नहीं समझ सकी। नजीर अहमद ने अपना अभिप्राय समझाने के लिए कहा, "देखो नसीम, हमारे और कांग्रेस के नुक्ता-निगाह में भारी फरक आ गया है। हम जो नेशनलिस्ट मुसलमान कहाते थे वे झूठे और बेदलील बात करने वाले हो गए हैं। हम कहते थे कि हिन्दू और मुसलमान दोनों एक ही मुल्क में रहने से एक ही कौम के बन्दे हैं। हम मुस्लिम लीग वालों को गलत और गद्दार कहते थे। मगर अब तो कांग्रेस ने असूलन यह बात मान ली है कि मुसलमानों को मुल्क का एक अलहदा हिस्सा चाहिए। पिछले एक-दो हफ्ते से मैं यह महसूस कर रहा हूँ कि हम अभी तक अपनी कौम से गद्दारी कर रहे थे। कांग्रेस हिन्दू जमायत है और उसने ही हमें कह दिया है कि मुसलमानों को अलहदा मानने में वे विवश हो गए हैं। अगर पाकिस्तान बना तो हमारे लिए न तो हिन्दुस्तान में जगह रह जावेगी और न ही पाकिस्तान में। एक हमें मुसलमान मानने से हमें गैर समझेंगे और दूसरे हमें अपनी कौम का साथ न देने की वजह से गद्दार कहेंगे।"

"यह तो निहायत ही शर्मनाक बात हो गई है। मगर आप ही कल शाम को कैबिनेट मिशन की योजना मानने पर चेतनानन्द जी को मुबारिकबाद दे रहे थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं उससे मजाक कर रहा था। मेरा ख्याल था कि एक पंजाबी होने से उसे यह योजना पसन्द नहीं होगी और मेरे मुबारिकबाद देने पर उसे क्रोध चढ़ आवेगा।"

"तो अब क्या करना चाहिए ?"

"मैं तो यह ख्याल करता हूँ कि हमें अपना डेरा यहाँ से कूच करना चाहिए। कलकत्ता या लाहौर में जाकर रिहायश रखने का इरादा है।"

"मेरे लिए तो बहुत मुशकिल हो जावेगी।"

"मैं समझता हूँ। मेरी कोशिश तो यह है कि चेतनानन्द को होने वाले पाकिस्तान में किसी काम पर लगवा दूँ, पर यह तो तुम्हारी शादी के बाद ही हो सकेगा।"

"पर मैं तो यह सोचती हूँ कि अगर हिन्दू और मुसलमानों को अलग-अलग ही रहना है तो फिर हमारी शादी का हशर ही क्या होगा ?"

"देखो नसीम ! अगर तो तुम्हें उससे कोई खास उनस हो गई है, तब तो शादी कर लो और मैं कोशिश करूँगा कि आने वाली आँधी में तुम लोगों को कहीं पनाह मिल सके। ऐसा मालूम होता है कि कांग्रेस के इस योजना को मान लेने से मुस्लिम लीग नहीं मानेगी। दोनों में झगड़ा बढ़ेगा और मुस्लिम लीग का 'डायरैक्ट ऐकशन' चलेगा। यह 'सिविल-वार' का बिगुल होगा। अगर यह शुरू हो गई तो एक वक्त ऐसा भी आ सकता है कि हिन्दुस्तान की फौजें दो हिस्सों में तकसीम हो जावें। दोनों हिस्सों के नेता अंग्रेज अफसर होंगे और तमाम मुल्क में खून की नदियाँ बह जावेंगी।"

"हमारी शादी अब हुए बिना नहीं रह सकती। मेरे लिए मुशकिल नहीं, मैं तो मुल्क के किसी भी हिस्से में रह सकती हूँ। मगर सवाल उनका है। वह हिन्दुस्तान में रहना पसन्द करेंगे।"

"यही तो मुशकिल है। जहाँ तक मेरा कयास है, दिल्ली तो महफूज जगह नहीं है। यहाँ हिन्दू-मुसलमानों की आबादी बराबर-बराबर है और जब एक बार झगड़ा शुरू हुआ तो कौन कह सकता है कि आखीर कहाँ होगी।"

: ४ :

चेतनानन्द और नसीम का विवाह दिल्ली में नहीं हो सका। विवाह के लिए नसीम को लाहौर जाना पड़ा। यह आयोजन बैरिस्टर सराजदीन साहब के बँगले पर हुआ। निमन्त्रण उन्हीं की तरफ से भेजे गए। लाला जीवनलाल ने निमन्त्रण-पत्र पढ़ा तो खिलखिलाकर हँस पड़ा। चेतनानन्द की माँ ने लालाजी को हँसते देख पूछा, "क्या बात हो गई है जो इतने खुश प्रतीत होते हो ?"

"तुम्हारे बेटे ने आखिर अपने लिए बीवी ढूँढ़ ही ली है, पर मैं समझता हूँ कि यह भी निभ नहीं सकेगी। आज जमाना तो हिन्दू-मुसलमानों में लड़ाई का आ रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, परस्पर विवाह-शादियों का नहीं। भगवान भला करे।"

"तुमने अपने बच्चों की कभी भलाई भी सोची है? सदा बुरा ही सोचते रहते हो।" चेतनानन्द की माँ ने कहा। वह इस विवाह के विषय में पूर्ण जानकारी रखती थी। चेतनानन्द ने इसमें खर्चा करने के लिए अपनी माँ से ही धन लिया था।

"अगर मैं अपने तजरुबे से किसी बात का अनुमान लगाऊँ तो कोई पाप करता हूँ?"

"कभी अच्छे अनुमान भी तो लगाने चाहिएँ।"

"काम अच्छे किए जावें तो अनुमान अपने-आप ही अच्छे लग जाते हैं।"

"छोड़िए इस बात को। मैं जानना चाहती हूँ कि आप शादी पर जावेंगे या नहीं?"

"नहीं! मेरे उसके इस विवाह पर न जाने का कारण भी वही है जो उसके पार्वती के साथ विवाह के समय था। उसने हमारी परिवार-प्रथा का उल्लंघन किया है। मुझे यह पसन्द नहीं।"

"पर आप एक बाहरी आदमी के रूप में तो जा सकते हैं?"

"जब बाप ही नहीं रहा तो बाहरी आदमी बनकर क्या करूँगा?"

बात यहीं समाप्त नहीं हुई। विवाह के एक दिन पूर्व बैरिस्टर सराजदीन जीवनलाल से मिलने आया। उसे देखते ही जीवनलाल पहचान गया। उसने समाचार-पत्र में पढ़ लिया था कि चेतनानन्द की शादी बैरिस्टर सराजदीन की साली से हो रही है। इससे एक मुसलमान को बैठक में प्रवेश करते देख सब समझ गया। उसने उठकर स्वागत करते हुए कहा, "शायद आप चेतनानन्द के विवाह का निमंत्रण देने आए हैं?"

"जी हाँ, और एक और काम भी है।"

"मैं उसका भी अन्दाज लगा रहा हूँ। मेरा विचार है कि आप उसकी आर्थिक अवस्था जानने आए हैं। क्या मेरा अनुमान ठीक है?"

"आप बुजुर्ग हैं और फिर एक तजरुबेकार व्यापारी भी। आपका अन्दाज ठीक ही है। मैं जानना चाहता हूँ कि आप अपनी जायदाद को किस बिना पर अपनी औलाद को देना चाहते हैं?"

"मैं समझता हूँ कि आपको व्यर्थ ही तकलीफ हुई। मैंने अपनी वसीयत लिख रखी है और चेतनानन्द उसके विषय में जानता है।"

"यह तो उसने बताया था। मगर मैं ख्याल करता हूँ कि दिन-ब-दिन हालात बदलते जाते हैं और शायद यह आपके फायदे की बात होगी कि आपकी जायदाद में उसका, जिसकी शादी एक मुसलमान लड़की से हो रही है, हिस्सा भी हो।"

"मैं आपकी बात का मतलब नहीं समझा। क्या आप यह बताना चाहते हैं कि मुसलमानी-राज्य आने वाला है, इससे मुसलमान से रिश्ता रखने में लाभ होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं आपको यह बता देना चाहता हूँ कि हम लोग उन हिन्दुओं की सन्तान हैं, जिन्होंने सात सौ वर्ष मुसलमानी राज्य की घोर यन्त्रणा सहने पर भी उनसे सम्बन्ध बनाना उचित नहीं समझा था। यह जायदाद तो एक मिट्टी का ढेला है, मैं तो अपनी जान तक की भी परवाह नहीं करता।"

"अच्छी बात है। खैर कल तशरीफ तो लाइएगा?"

"नहीं! मेरे जाने से उसे किसी प्रकार का लाभ नहीं होगा। मुझे उसकी शादी देखकर किसी प्रकार की प्रसन्नता नहीं हो सकती।"

इतना कह जीवनलाल ने उठकर बैरिस्टर साहब को विदा करने के लिए हाथ जोड़कर नमस्कार कर दी। विवश सराजदीन उठा और सलाम कर चला गया।

सराजदीन ने घर जाकर अपनी बीवी मुमताज से जीवनलाल की बात बताकर कहा, "यदि मेरे वश की बात होती तो मैं यह विवाह रोक देता। मगर मजबूर हूँ। नसीम तो उस पर लट्टू हो रही है।"

"मेरा तो ख्याल है कि वे मियाँ-बीवी पहले ही बन चुके हैं। अब तो सिरफ लोगों की आँखों में धूल झोंकने की बात रह गई है।"

"मैंने जब नजीर भाई को लिखा था तब मेरा ख्याल था कि चेतनानन्द साहबे जायदाद है। अगर मुझे मालूम होता कि यह दिवालिया है तो मैं कभी भी नसीम की इससे मुलाकात न होने देता। हकीकत में मैं ही इस गड़बड़ का जिम्मेदार हूँ। मैंने इसका एक इलाज सोचा है। मैं चाहता हूँ कि शादी होने के बाद इनको कलकत्ता भेज दूँ। वहाँ के वजीरे-आजम मेरे दिली दोस्त हैं। वे उसे किसी काम पर लगा देंगे।"

"मगर चेतनानन्द मानेगा? वह कौंसिल का मेम्बर है। भला उसे छोड़कर क्या वह नौकरी करेगा?"

"नहीं मानेगा तो गुजर कैसे करेगा? फिर नसीम को ऐसा बतीरा बनाना चाहिए कि वह इस बात पर तैयार हो जावे।"

विवाह खत्म हुआ तो बैरिस्टर साहब ने उन्हें 'हनी-मून' के लिए कलकत्ते जाने को तैयार कर दिया। नसीम को सब बात समझा दी गई और अच्छी नौकरी मिलने पर कलकत्ता में ही रह जाने की राय दे दी गई।

विवाह वाली शाम को ही नसीम और चेतनानन्द कलकत्ता वाली गाड़ी से रवाना हो गए। तीसरे दिन प्रातःकाल वे सब प्रकार से प्रसन्न कलकत्ता पहुँच गए। वहाँ एक होटल में ठहर, बंगाल के प्रीमियर से मुलाकात करने पहुँचे। प्रीमियर के नाम चेतनानन्द के पास एक चिट्ठी थी। वह चिट्ठी प्रीमियर ने पढ़ी तो कहा "कहाँ ठहरे हो? मैं आप लोगों की सुबह से इन्तजार कर रहा हूँ।"

"हम होटल में ठहरे हैं। मैंने समझा कि पहले आपसे मिल लूँ फिर आप जैसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरमाएँगे वैसा हम करेंगे।"

"बहुत ही शरारती मालूम होते हो। जब तुम लोगों का तार आ चुका था तो तुम क्या समझ यहाँ नहीं आए? तुम्हारे लिए रहने की जगह तैयार है। अच्छा अब यहीं ठहरो। मैं मोटर भेज तुम्हारा असबाब मँगवा देता हूँ।"

चेतनानन्द और नसीम प्रीमियर साहब के मेहमान हो गए।

: ५ :

चेतनानन्द का विचार दो सप्ताह तक ही कलकत्ता में रहने का था, परन्तु अभी तक सप्ताह भी नहीं हुआ था कि चेतनानन्द को प्रान्तीय पबलिसिटी आफिसर की नौकरी कर लेने के लिए कहा गया। चेतनानन्द इसकी चर्चा सुन चकित रह गया। उसने नसीम से कहा, "मैं हैरान हूँ कि प्रीमियर साहब क्यों इतने दयालु हो रहे हैं। मैं कांग्रेस पार्टी का सदस्य हूँ, वे मुस्लिम लीग पार्टी के नेता हैं। भला हम दोनों का मेल क्या है? पबलिसिटी आफिसर का स्थान एक निहायत ही जरूरी काम की जगह है। इस जगह को विरोधी पार्टी के एक सदस्य को दे देना विस्मय करने की बात ही तो है। मेरी समझ में यह नीति नहीं आई।"

नसीम ने खुशी से फूलते हुए पति के गले में बाँह डालकर कहा, "तो आपको चिट्ठी मिल गई है क्या? मैं बहुत खुश हूँ।"

"तो तुमने वजीर साहब से कहा है?"

"नहीं। उन्होंने मुझसे कहा था कि लाहौर से जीजाजी की चिट्ठी आई है और वे उस पर गौर कर रहे हैं! मैं समझती थी कि कोई अच्छी नौकरी मिलनी मुशकिल है। इससे मैंने आपसे जिकर नहीं किया। मालूम होता है कि वजीर साहब से जीजाजी का बहुत रसूख है।"

"पर मैं तो नौकरी करने का विचार नहीं करता।"

"तो गुजर कैसे होगी? आखिर अपनी माँ से रुपया कब तक मँगवाते रहिएगा? और फिर यह कोई नौकरी तो है नहीं। इसे तो 'प्राईज-पोस्ट' कहते हैं।"

चेतनानन्द इस विचार को सुन कुछ सोच में पड़ गया। निर्वाह की बात तो उसके मन में कभी उठी ही नहीं थी। आज इस बात के उल्लेख किए जाने पर वह सोचने लगा था कि माँ से माँगने की सीमा है। यह विचार कर उसने कहा, "मैं जरा सोचकर उत्तर दूँगा।"

"कब तक चार्ज लेने की बात है?"

"अगले सप्ताह सोमवार तक।"

"तब तो बहुत सोचने का समय नहीं। आज जुम्मा है। जवाब कल तक चला जाना चाहिए, ताकि आपको चार्ज देने का हुक्म जारी हो सके।"

"मैं कल प्रातः ही प्रीमियर साहब को मिलकर इन्कार व रजामन्दी बता दूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इन्कार का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। इससे अच्छा मौका और नहीं मिलेगा। देखिए न, दो हजार से ऊपर तनख्वाह है और फिर रसूख और वाकफी-यत कितनी बढ़ जाएगी। मैं तो समझती हूँ कि यह खुदादाद मौका है। इसे छोड़ना नहीं चाहिए। कौंसिल की मेम्बरी इसके सामने कुछ हकीकत नहीं रखती।"

नसीम की युक्तियों ने चेतनानन्द को परास्त कर दिया था। और अगले दिन वह प्रीमियर साहब के कमरे में जाकर इस विषय पर बातचीत करने लगा। "आपने बहुत कृपा की है। मुझे भय है कि मैं इस काम को कर भी सकूँगा या नहीं ?"

"काम करने से काम होता है। तुम घबराओ नहीं, सब काम ठीक होगा। जरा ध्यान देकर काम करने से कामयाबी मिल जावेगी।"

"पर मेरा निवेदन यह है कि अगर कोई मुझसे अच्छा आदमी आपको मिल जावे तो आप उसको रख सकते हैं।"

"नजीर अहमद के बहनोई और सराजदीन के साढ़ू से अच्छा आदमी मुझे नहीं मिलेगा।"

इस युक्ति ने चेतनानन्द का मुख बन्द कर दिया और सोमवार दस बजे सर-कारी पबलिसिटी ऑफिस में जाकर उसने डायरेक्टर की पदवी का चार्ज ले लिया। चार्ज देने वाले थे मिस्टर सुनन्द कुमार दास। उससे पहले इस स्थान पर एक अंग्रेज काम करते थे। उसके रिटायर होने पर मिस्टर दास अस्थायी रूप में काम करने लगे थे। यद्यपि वे सब प्रकार से योग्य थे परन्तु उसे इस स्थान पर पक्का नहीं किया जा रहा था। एकाएक मिस्टर चेतनानन्द की नियुक्ति होती देख वह घबरा उठा। यदि किसी मुसलमान को उस स्थान पर नियुक्त कर दिया जाता तब तो उसे कुछ कहने-सुनने का अवसर प्राप्त हो जाता। परन्तु एक हिन्दू के स्थान पर एक हिन्दू की ही नियुक्ति होने से यह लांछन लग नहीं सकता था।

मिस्टर दास ने चार्ज देने के पूर्व अपने अधीन काम करने वालों को फिरपी में चाय दे डाली। उसके अधीन काम करने वाले दोनों, हिन्दू और मुसलमान, सब प्रकार से प्रसन्न थे। इससे जब उसके जाने का समाचार मिला तो किसी को खुशी नहीं हुई। इस पार्टी में मिस्टर दास ने सब काम करने वालों से पृथक्-पृथक् मिल-कर विदा माँगी और उनसे, जो भी उन लोगों को उसके काल में कष्ट हुआ था, उसके लिए क्षमा माँगी।

मिस्टर दास की एक पी० ए० थी। उसका नाम अनिमा बैनर्जी था। लड़की क्वाँरी थी और मिस्टर दास उससे बहुत स्नेह करते थे। उससे मिले तो कहने लगे, "मैं नहीं जानता कि आने वाले डायरैक्टर कैसे आदमी हैं। इतना मालूम हुआ है कि वे पंजाबी हैं। इससे मैं समझता हूँ कि तुम्हें बहुत कष्ट होगा। यदि तुम कहो तो मैं तुम्हारे लिए 'स्टेट्स्मैन डेली' में नौकरी का प्रबन्ध कर सकता हूँ। वहाँ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान सम्पादक से मेरा घना परिचय है। वह तुम्हें अवश्य रख लेगा।"

अनिमा बैनर्जी इस प्रस्ताव से बहुत हैरान हुई। वह यह तो समझती थी कि मिस्टर दास उसके हित से ही यह बात कर रहा है, परन्तु उसे यह जान लज्जा अनुभव हुई थी कि उसमें दुर्बलता का होना मान लिया गया था। इस विचार से उसका मुख लाल हो गया। उसने आँखें नीचे किए हुए कहा, "आप चिन्ता न करें। मैं अपनी फिकर स्वयं कर सकती हूँ। अभी कुछ काल के लिए मैं यह नौकरी नहीं छोड़ सकती।"

मिस अनिमा मिस्टर दास के एक परिचित की लड़की थी। इससे उसके लिए फिकर करनी उसके लिए स्वाभाविक ही थी। परन्तु जब उसने कहा कि वह अभी वहाँ से नौकरी छोड़ नहीं सकती तो उसने अपना कर्तव्य पालन कर दिया मान उसका ध्यान छोड़ दिया।

सोमवार के दिन चेतनानन्द ने अपनी पदवी का चार्ज ले लिया।

: ६ :

पबलिसिटी विभाग में काम इतना कठिन नहीं था जितना कि चेतनानन्द समझता था। साथ ही अनुभवी कार्य-कर्त्ता कार्यालय में थे, जो सब काम कर देते थे। चेतनानन्द को केवल हस्ताक्षर करने होते थे। मिस बैनर्जी एक और भारी सहायक थीं। भिन्न-भिन्न विभागों के समाचार होते थे। समाचार-पत्र, रॉयटर, ऐसोसिएटेड प्रेस और अन्य समाचार एजेन्सियों से समाचार आते थे। सब काम के समाचार एकत्रित कर लिये जाते थे और अपनी-अपनी फाइलों में लगा दिए जाते थे। सब फाइलों की संख्या और विषय मिस बैनर्जी के पास लिखे रहते थे और वह उसे जब भी कोई सूचना आवश्यक होती तो बता देती थी। इस विभाग के अधीन सरकारी कामों का प्रचार भी होता रहता था। भिन्न-भिन्न सरकारी कामों के विषय में रिपोर्टें आती रहती थीं और उनको ढंग से लिखकर जनता के सामने उपस्थित किया जाता था।

यह सब काम प्रायः मिस बैनर्जी कर देती थीं या अन्य कर्मचारियों से करवा देती थीं। दो-तीन दिन के भीतर ही चेतनानन्द समझ गया था कि उसे अपनी अज्ञानता का दूसरों को भास नहीं होने देना चाहिए। साथ ही उसे अच्छा काम करने वालों को सदैव प्रोत्साहन देते रहना चाहिए। अतएव जहाँ उसने भिन्न-भिन्न फाइलों को मँगवाकर उन्हें स्वयं समझने का यत्न करना आरम्भ कर दिया, वहाँ अपने अधीन काम करने वालों की योग्यता परखनी भी शुरू कर दी। उसका सबसे प्रथम वास्ता मिन बैनर्जी से पड़ जाना स्वाभाविक था।

मिस बैनर्जी एक साधारण रूप-रेखा की लड़की थी, परन्तु अपने काम में बहुत चतुर थी। साथ ही कार्यालय के काम को भली-भाँति समझ चुकी थी। इसके अतिरिक्त उसमें एक विशेष स्फूर्ति और सतर्कता विद्यमान थी। एक-दो दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अनुभव से ही चेतनानन्द समझ गया था कि वह कोई विशेष योग्यता की लड़की है। पहले ही दिन उसने उसके गुणों का भास पा लिया था। जब चाय का समय हुआ तो चेतनानन्द ने चपरासी से कहा, "दो आदमियों के लिए चाय ले आओ।" जब चपरासी कार्यालय के बाहर वाले होटल से चाय का प्रबन्ध कर लाया तो चेतनानन्द ने मिस बैनर्जी से कहा, "मैं समझता हूँ कि आप मेरे साथ चाय पीने में आपत्ति नहीं करेंगी। मैं आपसे बहुत कुछ पूछना चाहता हूँ।"

"आप पीजिए और मैं आपसे बात करने के लिए उपस्थित हूँ।"

"आइए। संकोच करने की कोई बात नहीं।"

इतना कह चेतनानन्द बगल के कमरे में, जहाँ चाय रखी थी, उठकर चला गया। मिस बैनर्जी उसके पीछे-पीछे वहाँ पहुँच गई और सामने की कुर्सी पर जा बैठी। जब चेतनानन्द उसके लिए चाय बनाने लगा तो उसने फिर न की परन्तु उसने कहा, "फिर वही बात! देखिए मिस बैनर्जी! जब हम दफ्तर की कुर्सी पर बैठे हों तो बड़े-छोटे हो सकते हैं, परन्तु उससे बाहर हम साधारण मनुष्य-मात्र ही तो हैं। यह लीजिए, पीजिए।"

इतना कह और उसके लिए चाय का प्याला बनाकर उसे दे अपने लिए चाय बनाने लगा। मिस बैनर्जी ने इसमें उनका हाथ बटाना आरम्भ कर दिया। पश्चात् दोनों चाय पीने लगे। चाय पीते हुए चेतनानन्द ने पूछा, "मिस्टर दास आपके रिश्ते में कुछ लगते हैं क्या?"

"नहीं। क्या बात है? आपसे किसी ने कुछ कहा है क्या?"

"उन्होंने मुझसे स्वयं कहा है। वे आपके विषय में बहुत चिन्तित प्रतीत होते थे।"

"यह उनकी बहुत कृपा है। वास्तव में बात यह है कि मेरे पिता उनके सह-पाठी थे। दोनों में कॉलेज के दिनों में घनी मित्रता थी। भाग्य के चक्कर से वे बड़े आफिसर बन गए और मेरे पिता अपना निर्वाह कर सकने में भी अयोग्य हैं।"

"उनकी शिक्षा कहाँ तक हुई थी?"

"वे इण्टरमीडिएट में अव्वल रहे थे, परन्तु थर्ड ईयर में ही किस्मत ने ऐसा पछाड़ा कि अभी तक होश नहीं आई। अब तो वे मेरे ही आश्रय में हैं।"

"क्या बीमार हो गए थे?"

"यह बात नहीं। मगर आप सुनकर क्या करेंगे। कोई अच्छी बात तो है नहीं।"

"तो क्या कोई प्रेम-फाँस गले पड़ गया था? यदि कोई ऐसी बात है तो मुझे बहुत अफसोस है।"

"आपने गलत समझा है। वे बहुत ही नेक विचारों के आदमी हैं। अब आपने पूछा है तो सुन लीजिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना कह उसने एक-दो घूँट में चाय समाप्त कर कहना आरम्भ कर दिया। "मेरे पिताजी का नाम शिशिर कुमार बैनर्जी है। जब वे थर्ड ईयर के विद्यार्थी थे तो गदर पार्टी के लोग, जो 'कामगाटा मारु' जहाज से कैनेडा से वापस आए थे, डमडम के स्टेशन पर फौज से घेर लिए गए। जब वे फौज के घेरे से निकलने लगे तो सिपाहियों ने गोली चला दी। इस पर भी कई लोग फौज के घेरे से निकल भाग खड़े हुए। उनमें से एक जो भागा तो भीड़ में लुकता-छिपता कलकत्ता कॉलेज स्क्वेयर में जा पहुँचा। वहाँ एक पुलिस अफसर ने उसे पहचानकर पकड़ना चाहा। वह फिर भागा और पिताजी के कॉलेज में जा, अपने विचार से, विना पुलिस से देखे जाने के, वह पिताजी के होस्टल में उनके कमरे में जा छिपा। पिताजी मेज पर सिर टेके सोच रहे थे कि एक पंजावी जवान को घबराए हुए कमरे में प्रवेश करते देख सब समझ गए। कामागाटा मारु जहाज के यात्रियों से जो व्यवहार सरकार ने किया था, वह कलकत्ता में विख्यात हो चुका था। इस विषय में विद्यार्थियों में भारी रोष फैल रहा था। उस पंजावी के कमरे में घुसने से पहले मेरे पिता और बाबू सुनन्द कुमार दास में गोली चलने के विषय में गरमागरम बहस हो चुकी थी। मिस्टर दास उस गोली चलने को खराब बात नहीं समझता था और पिताजी इस घटना पर सरकार पर उबल रहे थे। दोनों मित्र अभी जुदा ही हुए थे कि वह पंजावी कमरे में घुस आया। पिताजी अभी उसके लम्बे-चौड़े डील-डौल को देख ही रहे थे कि उसने कहा 'बाबू ! मुझे कहीं छुपा लो। पुलिस मेरे पीछे-पीछे आ रही है।'

"पिताजी ने उठ कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया। फिर कमरे का लैम्प बुझा दिया। अँधेरे में उस पंजावी से बोले, 'तुमने यहाँ आकर बहुत गलती की है। इस कॉलेज में प्रायः अमीरों के लड़के पढ़ते हैं और आज अमीर हिन्दुस्तान में देश-द्रोही ही हैं।"

" 'तो आप मुझे पुलिस के हवाले कर देंगे क्या ?'

" 'मैं उनमें नहीं हूँ। परन्तु तुम यहाँ पकड़े गए तो मेरा पकड़ा जाना भी तो हो जावेगा।'

" 'मुझे वहुत अफसोस है। आप ऐसा करिए कि कमरे को वाहर से ताला लगा कहीं चले जाइए। एक-आध घंटे के बाद आइयेगा। तब तक पुलिस ढूँढ़कर चली जावेगी। पश्चात् मैं अपने जाने का प्रवन्ध कर लूँगा।' पिताजी को यह बात ठीक प्रतीत हुई। उन्होंने तुरन्त कमरे से वाहर निकल, ताला लगा, वहाँ से बाहर चला जाना ही उचित समझा। सत्य ही पुलिस होस्टल के अधिकारियों से होस्टल की तलाशी लेने की स्वीकृति माँग रही थी। पिताजी ने वहाँ से चला जाना ही उचित समझा।

"जल्दी-जल्दी होस्टल की तलाशी ली गई, परन्तु किसी कमरे में भागे हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को न पा पुलिस वहाँ से विदा हो गई। पिताजी के कमरे को बाहर से ताला लगा देख संदेह नहीं हुआ। पिताजी रात-भर नहीं लौट सके। वे अपने एक रिश्तेदार के घर जाकर सो रहे थे। प्रातःकाल वे लौटे तो उस पंजाबी को अपनी चारपाई पर लेटे पाया। उन्होंने उसे उठाया तो उसने एक नई समस्या उपस्थित कर दी। उसने कहा, 'मेरे पास तीन रिवाल्वर हैं। मैं उनको आपको दे देना चाहता हूँ। आप उनको सुरक्षित रखिएगा। कभी अवसर मिला तो आकर ले जाऊँगा।' पिताजी ने उसकी बात मान ली। उसे अपना हजामत बनाने का सामान दिया। उसने दाढ़ी-मूँछ काट डाली। पिताजी के बंगाली ढंग के कपड़े पहन लिये और कमरे के बाहर निकल गया।

"इस समय एक दुर्घटना हो गई। मिस्टर दास ने उस आदमी को पिताजी के कमरे से निकलते देख लिया। यद्यपि वह बंगाली ढंग की पोशाक पहने था, तो भी मिस्टर दास को संदेह हो गया। उसने पिताजी से आकर पूछा, 'यह कौन था?'

" 'कौन? यहाँ कोई नहीं था।' पिताजी ने उत्तर दिया।

"इस पर मिस्टर दास, चुपचाप कमरे से निकल होस्टल सुप्रिण्टेण्डैण्ट के कमरे में जा पहुँचा और उसे अपना संदेह बता दिया। इस पर होस्टल सुप्रिण्टैण्डैण्ट ने पुलिस को सूचना भेज दी। पिताजी को मिस्टर दास से यह आशा नहीं थी। इससे वे निर्भय बैठे हजामत बना रहे थे कि होस्टल सुप्रिण्टैण्डैण्ट पुलिस को साथ लिये कमरे मे आ धमके। पहले तो पिताजी से प्रश्नोत्तर किए गए। इसमें तो पिताजी ने कुछ नहीं बताया, परन्तु जब तलाशी ली गई, तो तीन रिवाल्वर और पचास राउंड कारतूस चारपाई पर सिरहाने के नीचे रखे निकल आए। पिताजी को हथकड़ी लग गई और फिर मुकद्दमा होने पर पाँच वर्ष का कारावास हो गया।

"यहाँ पर जीवन की गाड़ी का काँटा बदला। पाँच वर्ष बाद पिताजी जब छूटकर आए तो महात्मा गांधी अपना आन्दोलन चला रहे थे। वे उसमें सम्मिलित हो गए। एक गैर-कानूनी जलूस में भाग लेने पर एक वर्ष की कैद हो गई। जब छूटे तो महात्मा जी अपना आन्दोलन बन्द कर चुके थे और स्वयं छः वर्ष की कैद का दण्ड पा चुके थे। देश में निराशा फैल रही थी और क्रान्तिकारी दल बन रहे थे। पिताजी एक दल में शामिल हो गए। महात्मा गांधी ने इन दलों का विरोध किया, इससे इन दलों को लोगों से आर्थिक सहायता मिलनी बन्द हो गई। इन्होंने धनी लोगों के घर डाके डालने आरम्भ कर दिए। इससे सरकार की ओर से पकड़-धकड़ आरम्भ हो गई। पिताजी के भी वारण्ट निकल गए। वे भूम्यान्तर्गत हो गए। इस अवस्था में वे मेरी माँ से दिल्ली में मिले, मेरी नानी के घर छुपे हुए थे कि मेरी माँ उनसे प्रेम करने लगी। उसी अवस्था में उनका विवाह हो गया और अगले वर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा जन्म हो गया। यह सन् छब्बीस की बात है।

"सन् ३५ में मेरे पिताजी के वारण्ट वापस ले लिये गए। इस समय उनकी आयु चालीस वर्ष की हो चुकी थी। उन्होंने कलकत्ता में एक बीमा कम्पनी में नौकरी कर ली और मुझे तथा मेरी माँ को यहाँ बुला लिया। तब से मैं यहाँ हूँ। मैंने बी० ए० पास कर स्टेनोटाइपिस्ट का काम सीख लिया है। दुर्भाग्य ने अभी भी हमारा पीछा नहीं छोड़ा। दो वर्ष हुए माताजी का देहान्त हो गया और पिताजी दमे के रोगी हो गए। मिस्टर दास ने कृपा कर मुझे यह नौकरी दे दी और हमारा गुजर हो रहा है।"

चेतनानन्द एक क्रान्तिकारी की कहानी सुन चकित रह गया। चाय समाप्त हुए बहुत काल हो चुका था। दोनों चुप और गम्भीर विचार में पड़े हुए कमरे से बाहर निकल आए।

: ७ :

सप्ताह के अन्त में साप्ताहिक रिपोर्ट बनती थी। चेतनानन्द के आने के पूर्व यह रिपोर्ट मिस्टर दास स्वयं बनाया करता था। अब चेतनानन्द के समय यह भी मिस बैनर्जी ने बना डाली। चेतनानन्द ने कहा भी कि वह बना लेगा, परन्तु मिस बैनर्जी को काम करने का शौक था और उसने चार घण्टे-भर फाइलों को देख रिपोर्ट टाइप कर डाली। चाय के समय चेतनानन्द ने रिपोर्ट पढ़ी तो उसे पता चल गया कि मिस बैनर्जी बहुत बढ़िया अंग्रेजी लिखती हैं।

"आपने थोड़े में बहुत बढ़िया लिख दिया है।"

"देखें, आपके अफसर लोग पसन्द करते हैं या नहीं ?"

इस रिपोर्ट में एक विशेष बात को प्रधानता दी गई थी। वह थी प्रान्तीय सरकार की मुस्लिम-पोषक नीति। इस सप्ताह में प्रान्त-भर के समाचार-पत्रों ने इस विषय पर बहुत कुछ लिखा था। साथ ही स्थान-स्थान पर सभाएँ हुई थीं और सरकार की नीति के विरोध में जलूस निकाले गए थे। इन सबका उल्लेख इस रिपोर्ट में था। इससे चेतनानन्द ने कहा, "वैसे तो रिपोर्ट ठीक ही है, परन्तु आपने हिन्दुओं द्वारा चलाई हुई ऐजिटेशन को बहुत प्रधानता दे दी है।"

"इससे तो वर्तमान सरकार को मेरा धन्यवाद करना चाहिए। मैं उसके विरोध में होने वाली चर्चा का पता दे रही हूँ। इससे सरकार इस चर्चा को बन्द करने का उपाय कर सकती है।"

"मुझे सन्देह है कि सरकार इसको इस दृष्टिकोण से देखेगी।"

"ऐसी सरकार पर दया ही करनी चाहिए। यदि इसको अपनी और मुसलमानों की प्रशंसा ही सुननी है तो आप समझ लीजिए और रिपोर्ट लिख दीजिए। वास्तव में यह आप ही का काम है।"

"तो आप नाराज हो गई हैं। मेरा यह अभिप्राय नहीं था। मैं तो इसे पसन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता हूँ।"

"श्रीमान् ! मेरी नाराजगी और खुशी का प्रश्न नहीं है। आप जो कुछ लिखाना चाहते है, लिखा सकते हैं। आप लिखाइए और आधा घण्टा में रिपोर्ट तैयार हो जावेगी।"

"मैं इसे ऐसे ही भेज रहा हूँ। आपका कहना ठीक ही है। सरकार को वास्तविक परिस्थिति का ज्ञान होना ही चाहिए।"

"धन्यवाद।"

"मैं एक बात पूछ सकता हूँ क्या?"

"आपकी इच्छा है। उत्तर देना मेरी इच्छा पर निर्भर है।"

"यह तो है ही। आप मुस्लिम लीग के कैबिनेट मिशन की योजना अस्वीकार करने में उनकी भलाई समझती हैं?"

"श्रीमान् ! हम सरकारी नौकर हैं। हमें तो मशीन की भाँति काम करना चाहिए। हम घटनाओं का विवरण एकत्रित करने के लिए नियुक्त किए गए हैं। घटनाओं पर टीका-टिप्पणी करने के लिए नहीं।"

"मैं यह बात मिस्टर आनन्द के पी० ए० से नहीं पूछ रहा। मैं एक क्रान्तिकारी की लड़की से प्रश्न कर रहा हूँ।"

"पिताजी तो महात्मा जी की नीति के मानने वाले नहीं। उनका विचार है कि मुसलमानों से पर्याप्त बातचीत हो चुकी है। उन्होंने कभी कोई बात नहीं मानी। सर सैयद के समय से लेकर आज तक जितने भी समझौते टूटे हैं सब मुसलमानों की ओर से टूटे हैं। इससे उनके मानने न मानने का प्रश्न महात्मा जी के लिए ही महत्त्व रखता है।"

"परन्तु प्रश्न तो वैसे का वैसा ही रहा है। क्या इसमें मुसलमानों की भलाई है?"

"पिताजी का विचार है कि इसमें मुस्लिम लीग को लाभ है। मुस्लिम लीग को किसी को प्रसन्न नहीं करना अपितु उन्हें हिन्दुओं को डराना है। हिन्दुओं को भयभीत करने के लिए इस योजना को मानने की आवश्यकता नहीं। भयभीत करने के लिए अन्य उपाय सोचे जा रहे हैं।"

"वे कौन से उपाय हैं, जो वे सोच रहे हैं?"

"पहले तो मुसलमानों का हिन्दुओं के स्वराज्य-सम्बन्धी आन्दोलनों से पृथक् रहना मात्र हिन्दुओं को भयभीत कर देता था। हिन्दुओं के मस्तिष्क में यह बात अंग्रेज अफसरों और नीतिज्ञों ने बैठा दी थी कि बिना मुसलमानों से समझौता किए हिन्दुस्तान में स्वराज्य नहीं हो सकता। इस बात को महात्मा गांधी ने ऐसा हृदयंगम कर लिया कि वे मुसलमानों से मित्रता करने के लिए हिन्दुओं के साथ अन्याय करने को भी तैयार हो जाते थे। अब मुस्लिम लीग वाले डायरैक्ट ऐक्शन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धमकी दे रहे हैं।"

"तो आप और आपके पिता भी तो डाइरैक्ट ऐकशन में विश्वास रखते हैं।"

"विश्वास का अर्थ मैं नहीं समझी। डाइरैक्ट ऐकशन होगा ऐसा मुझे विश्वास है। इसके सफल होने के विषय में मेरा और पिताजी का मतभेद है।"

"इसका मतलब यह है कि आप और आपके पिताजी परस्पर इस विषय पर बातचीत करते रहते हैं।"

"निःसन्देह। उन्होंने अपने जीवन का सर्वोत्तम भाग राजनीति का मनन करने में ही गुजारा है। इससे, इस विषय में उनके अनुभवों को जानना मेरे लिए ठीक ही है।"

"डायरैक्ट ऐकशन के सफल होने में आपके पिताजी के क्या विचार हैं?"

"उनका विचार है कि हिन्दू भयभीत हों चाहे न हों, महात्मा गांधी अवश्य डर जाएँगे और वे मुसलमानों को पाकिस्तान दे देंगे। हिन्दुओं ने उन्हें अपना नेता माना हुआ है। इससे उनका पाकिस्तान मान लेना हिन्दुओं द्वारा माना जाना समझ लिया जाएगा।"

"और आप क्या कहती हैं?"

"मेरा विचार यह है कि ऐसा नहीं होगा। हिन्दू इस प्रकार डराने-धमकाने से डरेंगे नहीं। इसके विपरीत यदि मुसलमानों ने खून-खराबा किया, तो हिन्दू एक होकर उस ऐकशन का विरोध करेंगे। इसमें यदि महात्माजी ने हस्तक्षेप किया तो कोई मनचला उनकी भी हत्या कर देगा।"

"देखो मिस बैनर्जी! मेरी बीवी मुसलमानिन है। उसका ख्याल है कि अंग्रेज अफसर हिन्दुस्तानी फौजों को परस्पर भिड़ा देंगे। यहाँ सिविल-वार हो जाएगी और खून की नदियाँ बह जाएँगी।"

"यह हो सकता है।" मिस बैनर्जी का कहना था, "फिर भी मेरा अनुमान है कि ऐसा होने नहीं दिया जाएगा।"

"क्यों? ऐसा क्यों नहीं हो सकेगा? अंग्रेज अफसर हिन्दू-मुसलमानों को खूब लड़ाएँगे। जब दोनों लड़ते-लड़ते थक जाएँगे, तब हम दोनों को अयोग्य कहकर पुनः अपना राज्य सुदृढ़ कर लेंगे।"

"ऐसा नहीं हो सकेगा। यदि अंग्रेज अफसरों ने यहाँ सिविल-वार करवाई और उसका संचालन इस प्रकार करवाया तो इस देश में अंग्रेजों की सबसे ज्यादा हानि होगी। पूर्व इसके कि यह झगड़ा बहुत दूर तक चले, हिन्दू और मुसलमान फौजी अपने-अपने अंग्रेज अफसरों को मारकर स्वयं अफसर बन जाएँगे। तब मुसलमान परास्त हो जाएँगे क्योंकि हिन्दू फौजियों की संख्या अधिक है, हिन्दुओं में लड़ाके और समझदार अफसर अधिक हैं; हवाई जहाज का महकमा प्रायः हिन्दुओं के अधीन है; हिन्दू रियासतें अधिक हैं; हिन्दुओं की जनसंख्या अधिक है। यह ठीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि पश्चिमी पंजाब, काश्मीर और पश्चिमोत्तर सीमा प्रदेश में प्रायः हिन्दू मारे जाएँगे, परन्तु शेष पूर्ण देश में मुसलमानों और अंग्रेजों का नाम लेने वाला कोई नहीं रह जाएगा।"

यह भीषण चित्र खिंचता देख चेतनानन्द काँप उठा। जब वह इस प्रकार की बातें अपनी स्त्री नसीम से अथवा किसी और से सुनता था तो वह कह दिया करता था, "इसी से तो हम कहते हैं कि महात्माजी की नीति ही सत्य है। उसी से सुख और शान्ति स्थापित हो सकती है।"

मिस बैनर्जी के मन पर इसका प्रभाव उलटा पड़ा था। उस सायं वह घर गई तो अपने पिता से बोली, "बाबा! चेतनानन्द की नियुक्ति का एक और रहस्य पता चला है। उसकी बीवी मुसलमान है। शायद प्रीमियर साहब की कोई रिश्ते-दारिन हो।"

"बात कैसे हुई थी?"

"साप्ताहिक रिपोर्ट पर बात होते-होते कैबिनेट योजना पर चल पड़ी। फिर उसके मुस्लिम लीग द्वारा न माने जाने पर बात आरम्भ हो गई। इस पर उसने बताया कि उसकी बीवी मुसलमानिन है और वह समझती है कि देश में 'सिविल-वार' हो जाएगी।"

"बहुत समझदार है उसकी बीवी।"

"और वह समझती है कि सिविल-वार का नतीजा अंग्रेजों के राज्य का सुदृढ़ होना होगा। पर बाबा! मैं समझती हूँ कि उसकी बीवी उसे डराती रहती है, जिस से वह हिन्दुओं की सहायता न कर सके।"

"एक बात तो इससे स्पष्ट हो गई है कि प्रीमियर साहब के घर में डायरैक्ट ऐक्शन के विषय में बातें होती रहती हैं।'

"क्या होगा इससे?"

"मैं समझता हूँ कि इसका प्रहार बंगाल से आरम्भ होने वाला है। यदि हमारी योजना के अनुकूल हिन्दुओं का आचरण न बन सका तो, विनाश अवश्यं-भावी है। केवल यही नहीं कि हम नहीं रहेंगे, प्रत्युत बंगाल भी नहीं रहेगा।"

उस रात शिशिर कुमार बैनर्जी के साथी आए तो उसने अनिमा की बात बता दी। इस पर सब अपना-अपना विचार बताने लगे। इस मण्डली में अनिमा भी आ बैठी। अब वे सब लोग उससे अनेक अन्य बातें पूछने लगे। उनके पूछने पर अनिमा ने बताया कि चेतनानन्द लाहौर का रहने वाला है। इस पर उसकी बीवी के विषय में पूछा गया। अनिमा ने बताया कि वह उसके विषय में कुछ नहीं जानती। एक युवक ने कहा, "अनिमा बहिन! क्या तुम उसके घर तक पहुँचने का यत्न नहीं कर सकतीं?"

"क्या लाभ होगा इससे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह कहना तो कठिन है। फिर भी मैं कहता हूँ कि प्रत्येक प्रकार की जानकारी रखने में कोई हानि नहीं।"

"अच्छा दादा ! यत्न करूँगी।"

इसके पश्चात् वे लोग अपने-अपने कार्य की रिपोर्ट देने लगे। अनिमा के पिता ने पूछना आरम्भ कर दिया, "रामानन्द ! क्या हुआ तुम्हारे ऑफिस के बाबुओं का ?"

यह उस युवक का नाम था, जो अनिमा से कह रहा था कि चेतनानन्द की स्त्री से भेंट करे। पूछे जाने पर उसने कहा, "बाबा ! मुझे तो उन लोगों से कुछ भी आशा नहीं। दो सौ क्लर्कों में से केवल एक ने मेरे कहने पर गम्भीरता से विचार किया। शेष सब हँसने लगे। एक ने तो यहाँ तक कह दिया कि मेरा दिमाग खराब हो रहा है। उनमें कुछ कांग्रेस विचार के थे। वास्तव में उन्होंने यह कह सबको मेरे विरुद्ध कर दिया कि मैं हिन्दू सभाईट हूँ। इससे सब 'जय हिन्द' कहकर चले गए।"

एक और ने बताया, "मैंने अपने लॉज में यह बात सुनाई तो बार्डर बोल उठे, 'भाई ! हम तो कलकत्ता के बाहर के आदमी हैं। यदि जरा-सा भी झगड़ा हुआ तो हम कलकत्ता छोड़कर चले जाएँगे।' मैंने जब कहा कि उनको बाहर जाने का मौका ही नहीं मिलेगा, तो इस पर वे कहने लगे कि वे कर ही क्या सकते हैं। मैंने उन्हें बताया कि वे अपने लॉज की रक्षा तो कर सकते हैं, तो वे कहने लगे कि उनके पास हथियार कहाँ हैं। मैंने लॉज की रक्षा के लिए एक पिस्तौल और एक-दो बम्ब देने का वचन दिया तो वे लोग मुझे 'क्रान्तिकारी पार्टी' का सदस्य मानने लगे।"

इसी प्रकार सब लोगों ने अपने-अपने क्षेत्र की बात बताई। रिपोर्टें आशाजनक नहीं थीं।

शिशिर कुमार की योजना यह थी कि आफिसों के बाबुओं को, कारखानों के मजदूरों को, मुहल्लों के लोगों को और विद्यार्थियों को समझा दिया जाए कि हिन्दू-मुस्लिम झगड़ा होने वाला है और उन्हें इसके लिए तैयार हो जाना चाहिए। यदि वे हथियार माँगें तो उनसे रुपया लेकर उनके लिए पिस्तौल, रिवॉल्वर, बम्ब इत्यादि का प्रबन्ध कर दिया जाए। पहले तो लोग यह बात मानते ही नहीं थे कि झगड़े की सम्भावना है, फिर जब रिवॉल्वर अथवा बम्ब रखने की बात करते थे, तो लोग उनको खुफिया पुलिस का अथवा देश में हिन्दू-मुस्लिम फसाद करने वाला हिन्दू सभाईट कहकर दुत्कार देते थे। हिन्दू-मुस्लिम झगड़े से आँखें मूँदने का स्वभाव कांग्रेस के प्रचार से बना था। सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज में हिन्दू-मुसलमान दोनों के होने से लोगों के मन में यह बात आती ही नहीं थी कि कलकत्ते में, जो सुभाष बाबू का निवास-स्थान है, कभी हिन्दू-मुसलमान फसाद हो सकता है।

इन रिपोर्टों से सब निराश हुए थे। इस पर भी अनिमा का कहना था कि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति रविवार घर-घर और मोहल्ले-मोहल्ले में जाएगी और लोगों को तैयार होने के लिए कहेगी। अनिमा का उत्साह देखकर सब पुनः उत्साह से भर गए।

: ८ :

चेतनानन्द को अनिमा बैनर्जी की बातें विस्मयजनक, परन्तु युक्तियुक्त प्रतीत हुई थीं। वह उसकी बातों से इतना प्रभावित हुआ था कि इच्छा न रखते हुए भी, उसके मुख से उसकी बात नसीम के सम्मुख निकल गई। नसीम ने पूछा, "एक क्रान्तिकारी की लड़की सरकारी आफिस में नौकर कैसे हो गई ?"

"उसके पिता मिस्टर दास के सहपाठी थे।"

"मुझे तो यह सब जालसाजी मालूम होती है। बंगाल में बहुत ऐसे लोग हैं, जो झूठ-मूठ में माथे पर लाल रंग लगाकर शहीद बनना चाहते हैं।"

"मैं समझता हूँ कि उससे परिचय बढ़ाकर और बातें मालूम करनी चाहिए।"

"उसको एक दिन यहाँ ले आइए।"

एक-दो दिन बाद की बात है। प्रीमियर साहब की एक 'कॉन्फिडेन्शल' चिट्ठी आई। चेतनानन्द ने चिट्ठी पढ़ी और फिर मिस बैनर्जी को बुलाकर उसे दिखा दी। मिस बैनर्जी, लिफाफे पर मोटे अक्षरों और लाल स्याही में 'कॉन्फिडेन्शल' छपा देख, काँप उठी थी। वह समझ रही थी कि पिछले रविवार लोगों को तैयार करने के लिए जाने के कारण ही उसके लिए कोई आर्डर आया है। जब चेतनानन्द ने वह चिट्ठी उसके ही हाथ में दे दी तो उसे लेते हुए उसका हाथ काँप उठा। उसने चिट्ठी पढ़ी। उसमें लिखा था—'प्रिय चेतनानन्द, तुम्हारी रिपोर्ट पढ़कर मुझे यह विश्वास हो गया है कि एक पंजाबी किसी बंगाली से अधिक सही दिमाग रखता है। यह रिपोर्ट बहुत ही उत्तम ढंग से लिखी हुई है। जो बातें मैं जानना चाहता था, ठीक वे ही उसमें भली-भाँति लिखी गई थीं। मैं तुम्हारे काम से बहुत खुश हूँ...।"

अनिमा जहाँ यह चिट्ठी पढ़कर निश्चिन्त हुई, वहाँ प्रसन्न भी। उसने मिस्टर चेतनानन्द की ओर मुस्कराकर देखते हुए कहा, "मैं आपको बधाई देती हूँ।"

"बधाई की पात्र तो आप हैं न ?"

"यह तो सदैव होता है। काम चाहे कोई करे, नाम अफसरों का होता है और मैं समझती हूँ कि होना भी चाहिए।"

"कुछ भी कहिए, समझने वाले समझ जाते हैं। मैं इस बात को मानता हूँ कि आप अपने काम में सब प्रकार से योग्य हैं। जहाँ तक मेरा बस चलेगा, मैं आपकी उन्नति के लिए यत्नशील रहूँगा।"

"आपके आश्वासन के लिए मैं आपका धन्यवाद करती हूँ।"

"छोड़ो इस बात को। मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ। यह आपके निजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन के सम्वन्ध में है। यदि नाराज न हो तो पूछूँ ?"

"एक अधीन व्यक्ति अपने अधिकारी से रुष्ट होगा भी तो क्या कर लेगा ? फिर भी मैं आपसे पहले ही कह चुकी हूँ कि पूछना आपकी इच्छा के अधीन है परन्तु उत्तर देना मेरे वश की बात है।"

"तो ठीक है, आपकी सगाई अभी हुई है या नहीं ?"

अनिमा गम्भीर विचार में पड़ गई। वह सोचने लगी थी कि उसका इस बात को पूछने का क्या प्रयोजन है। उसने चेतनानन्द के मुख पर देखा, परन्तु कुछ समझ न सकी। फिर भी उत्तर देने में किसी प्रकार की हानि न देख बोली, "यद्यपि मुझको आपके इस प्रश्न के पूछने में आपका प्रयोजन समझ नहीं आया, तो भी इसका उत्तर देने में कोई हानि न मान, बताती हूँ कि मेरी सगाई हो चुकी है।"

"विवाह कब होगा ?"

"शायद इस जन्म में नहीं हो सकेगा।"

"क्यों ? कोई आर्थिक बाधा है क्या ?"

"जी ! मेरी सास मेरे पिता से दस सहस्र रुपये की आशा रखती हैं।"

"और वह लड़का, जिससे आपकी सगाई हुई है; क्या चाहता है ?"

"कुछ नहीं। वह तो कहता है कि मुझसे ही विवाह करेगा ओर वह भी बिना दहेज लिये।"

"तो करता क्यों नहीं ? कितना काल हुआ है सगाई हुए ?"

"सगाई हुए ग्यारह वर्ष हो चुके हैं। उनकी माँ से जवाब मिले तीन वर्ष हो चुके हैं और हमें परस्पर वचनबद्ध हुए भी लगभग तीन वर्ष हो चुके हैं।"

"यह वचनबद्ध के क्या अर्थ हैं, मिस बैनर्जी ?"

"जब हम दोनों ने आजन्म अविवाहित रहने का वचन लिया था।"

"क्यों ? क्या उनकी माँ ने आप लोगों से अधिक जीने का पट्टा लिखाया हुआ है ?"

"यह बात नहीं श्रीमान् ! मैं अभी बीस वर्ष की हूँ। मेरे भावी पति भी इक्कीस वर्ष के होंगे और उनकी माताजी पचास से ऊपर हैं। परन्तु अपने बड़ों की मृत्यु का चित्त में विचार तक लाना हम पाप समझते हैं। कौन जाने किस समय किसकी मृत्यु हो जाये। इस पर आशा बाँध बैठना महामूर्खता होगी। इस कारण हम सदा मन में यही सोचते, समझते और आशा करते हैं कि अगले जन्म में तो हमारा मिलन होगा ही।"

"बहुत विचित्र होती हैं आपकी बातें, मिस बैनर्जी ! यह सब-कुछ किसने आपको सिखाया है ? और फिर कौन है वह, जो केवल एक विचार के लिए पूर्ण जीवन की आहुति देने पर तैयार हो गया है ?"

"मेरे विचार मेरे माता-पिता की देन हैं। वे हिन्दू हैं और पुनर्जन्म पर अगाध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास रखते हैं। एक बात शायद आपको पता नहीं कि मेरी माँ पंजाब की रहने वाली थीं और हिन्दू विचारधारा पर उनका दृढ़ विश्वास था।"

"हाँ, एक बात याद आई है। मेरी बीवी का विचार है कि न तो आपके विचार क्रान्तिकारियों के-से हैं और न ही आपके पिताजी के। अब आपको इस प्रकार की हिन्दू फिलौसोफी की, जिनके पक्ष में न तो कोई युक्ति है और न कोई प्रमाण, बातें करते देख, उसका कहना ठीक ही प्रतीत होने लगा है।

अनिमा हँस पड़ी। चेतनानन्द विस्मय में उसका मुख देखता रहा। उसने अपने विचारों का संग्रह कर कहना आरम्भ किया, "आपका ऐसा कहना आपके ज्ञान के अनुसार ठीक ही है। परन्तु यदि आप इसको धृष्टता न मानें तो मैं कहती हूँ कि आपका ज्ञान बहुत सीमित है। भारतवर्ष में अधिकांश क्रान्तिकारी हिन्दू विचार-धारा के मानने वाले हुए हैं। श्री सावरकर, लाला हरदयाल, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, मदन लाल ढींगरा, खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चन्द्र चक्रवर्ती, कन्हैया लाल दत्त, सत्येन्द्र बोस और बीसियों अन्य क्रान्तिकारी हिन्दू-धर्म पर अगाध विश्वास रखने वाले हुए हैं। ये लोग गीता की शिक्षा पर विश्वास रखते हुए हँसते-हँसते फाँसी के तख्ते पर चढ़ जाने वाले थे।"

चेतनानन्द इस लम्बी सूची को सुन चकित रह गया और विस्मय में अनिमा का मुख देखता रह गया।

अनिमा और अधिक कहना नहीं चाहती थी। इस कारण अपना टाइप-राइटर निकाल दफ्तर के काम में लग गई। चेतनानन्द भी अपनी मेज पर रखी फाइलों का निरीक्षण करने लगा। उस दिन सायं चाय के समय चेतनानन्द ने अनिमा को अगले दिन अपने घर चाय का निमन्त्रण देते हुए कहा, "मैं चाहता हूँ कि आपको मैं अपनी बीवी बेगम नसीम से मिला दूँ।"

: ६ :

चेतनानन्द अभी तक प्रीमियर साहब की कोठी में ही रहता था। उसके लिए भवानीपुर में एक कोठी का प्रबन्ध तो कर दिया गया था, परन्तु उस कोठी की कुछ मरम्मत होनी शेष थी। इससे चेतनानन्द ने अभी वहाँ जाना ठीक नहीं समझा था। अनिमा के मन में गुदगुदी-सी हो रही थी। वह सोचती थी कि एक क्रान्तिकारी की लड़की और हिन्दुओं की ओर से मुसलमानों से झगड़े की तैयारी में लगी हुई, प्रान्त के प्रीमियर के घर चाय पर जा रही है। वह इसके परिणाम का मन में अनुमान लगाती थी। अनिमा के लिए यह एक नया अनुभव था।

दरवाजे पर, उसके वहाँ पहुँचने की सूचना थी। ज्यों ही उसने अपना नाम बताया, दरबान उसे साथ लेकर चेतनानन्द के निवास स्थान पर जा पहुँचा। कमरे के बाहर पहुँच उसने 'मिस अनिमा बैनर्जी' के नाम की घोषणा कर दी। घोषणा होते ही चेतनानन्द कमरे से बाहर आया और अनिमा को हाथ जोड़ नमस्कार कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्कार से भीतर ले गया। वहाँ ले जाकर उसने अपनी बीवी का परिचय कराया, "यह हैं मेरी धर्मपत्नी, श्रीमती नसीम।"

दोनों बहुत प्रेम से मिलीं और फिर एक ही सोफे पर बैठ गईं। बैरा ने उनके सामने चाय लगानी आरम्भ कर दी। नसीम, अनिमा की बहुत उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थी। चेतनानन्द ने उसकी अपनी बीवी के सामने बहुत प्रशंसा कर रखी थी। अनिमा का पहला प्रभाव जो नसीम पर पड़ा, कुछ अच्छा नहीं था। वह आशा कर रही थी कि वह लड़की बहुत सुन्दर होगी और चेतनानन्द उसके सौन्दर्य से प्रभावित होकर, उसके अन्य गुणों का अकारण बखान कर रहा है। वह इस अद्भुत लड़की को स्वयं देखना चाहती थी।

अनिमा को देखकर जहाँ नसीम को निराशा हुई, वहाँ उसके गुणों को जानने की उत्कण्ठा जाग उठी। उसने बात आरम्भ करते हुए कहा, "ये साहब आपकी बहुत तारीफ करते रहते थे। इससे मेरे मन में आपसे मिलने की जबरदस्त ख्वाहिश पैदा हो गई। आपने आकर मुझे निहायत मशकूर किया है।"

"मैं समझती हूँ कि मुझे देखकर आप जरूर निराश हुई होंगी।"

"क्यों? आप ऐसा क्यों समझती हैं? मैंने तो ऐसा महसूस नहीं किया।"

"तब तो आप अवश्य एक विशेष औरत हैं। मेरी सूरत और रूप-रेखा ऐसी है कि प्रायः फैशनेवल स्त्रियाँ इसे पसन्द नहीं करतीं। मुझे बनाव-शृंगार का ढंग नहीं आता।"

"ऐसा नहीं। मैंने आपकी सूरत-शक्ल देखने के लिए इस मुलाकात की ख्वाहिश नहीं की थी। मैंने सुना है कि आपकी माँ पंजाबिन लड़की थीं। उन्होंने आपके पिताजी को पसन्द किया, यह सचमुच ही हैरानी की बात है। एक 'मारो-काटो' पन्थ के आदमी को वरना एक औरत को शोभा नहीं देता। औरत तो शान्ति और रहम की मूर्ति होनी चाहिए।"

अनिमा हँस पड़ी। उसने कहा, "यह 'मारो-काटो' पन्थ तो महात्माजी के शब्द हैं। उन्होंने इनका प्रयोग, जब श्री सावरकर विलायत में भारत की आजादी का आन्दोलन चला रहे थे, वहीं किया था। इससे वे सावरकर और अन्य क्रान्तिकारियों के काम की निन्दा करना चाहते थे।"

"महात्माजी हमारे गुरु हैं।"

"ऐसा प्रतीत होता है कि माताजी महात्माजी के विचारों की अनुयायी नही थीं। इसीसे उन्होंने पिताजी को, जो 'मारो-काटो' पन्थ के थे, अपना स्वामी मान लिया था।"

"शायद ये किसी भी पन्थ की मानने वाली नहीं थीं। उनका पन्थ प्रेम ही रहा प्रतीत होता है।"

"जब से मैंने होश सम्भाली थी, मैंने उन्हें दुर्गा की पूजा करते देखा था। वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा करती थीं कि छत्रपति शिवाजी और कलगीधारी गुरु गोविन्दसिंह जी की इष्ट देवी श्री दुर्गा भवानी ही थीं।"

"आप किस देवता की पुजारिन हैं ?"

"मैं काली की उपासिका हूँ। देखिए नसीम बहिन ! मैं आपको हिन्दू-धर्म के एक भेद की बात बताती हूँ। जब हम किसी काम को नेक और मनुष्य के हित में समझते हैं, तो उसे भगवान् का नाम लेकर कर देते हैं। हमारे देवी-देवता जहाँ दया के आगार हैं, वहां दुष्टों के दमन के लिए अति कठोर और क्रूर-हृदय वाले भी बन जाते हैं। काली माई को खप्पर में दैत्यों का खून भरकर पीने में किंचित् भी दुःख अथवा खेद नहीं होता।"

"दैत्य किसको कहते हैं ?"

"जो मनुष्य का-सा व्यवहार न करे।"

"इसको कौन जाँचेगा कि यह व्यवहार मनुष्य का-सा है और वह व्यवहार मनुष्यता के खिलाफ है।"

"मनुष्य की अन्तरात्मा ही इसका निर्णय कर देती है। फिर भी मनुष्य को कभी अपनी बुद्धि पर सन्देह हो जाता है तो वह भगवान् का नाम लेकर अपने कार्य को सम्पन्न कर देता है। इस प्रकार अन्तरात्मा की प्रेरणा पर और परमात्मा का नाम लेकर की गई महाहत्या से भी पाप नहीं लगता।"

बातों-ही-बातों में चाय समाप्त हो गई और इतनी देरी हो गई कि बत्तियाँ जलानी पड़ गईं। अनिमा ने लैम्प जलते देख कहा, "मैंने आपका बहुत समय ले लिया है।"

"नहीं, हमें कुछ काम नहीं है। आप अभी और बैठिए। ये तो प्रीमियर साहब के पास जा रहे हैं। हम अभी और बातें करेंगी। मैं आपको अपनी मोटर में छोड़ आऊँगी।"

जब चेतनानन्द चला गया तो नसीम और अनिमा उठकर साथ के कमरे में चली गईं। वहाँ नसीम उसे अपने बचपन की फोटो दिखाने लगी। नसीम का एक चित्र उसकी पाँच वर्ष आयु के काल का था। अनिमा उसे देख, नसीम के साथ मिलाने लगी। दोनों का मिलान कर कहने लगी, "कितना अन्तर पड़ गया है तब की नसीम में और आज की नसीम में। इस तस्वीर में नसीम शरारत से भरी हुई दिखाई देती है और इस समय आपके मुख पर सन्तोष और शान्ति की छाप दिखाई देती है।"

नसीम यह व्याख्या सुनकर हँस पड़ी। उसने पूछा "क्या देखा है आपने इस तस्वीर में ?"

"तनिक तस्वीर में अपनी आँखें देखिए। ऐसा मालूम होता है कि किसी को चुटकी काटकर खड़ी हैं और उसको वेदना में रोते देख मजा ले रही हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सुन नसीम गम्भीर विचार में डूब गई। कुछ देर तक अपने मन में सोच कर बोली, "बहुत ही गजब की कही है आपने। इस तस्वीर की तवारीख मैं बताती हूँ। नजीर भैया विलायत जा रहे थे। मुमताज बहिन अब्बाजान के साथ उनको बम्बई जहाज पर चढ़ाने जा रही थीं। मेरे लिए घर पर अम्मी के पास रहने का फैसला हुआ था। मैंने सत्याग्रह कर दिया। तीन दिन तक खाना-पीना छोड़ दिया। आखिर पिताजी मान गए और मुमताज की जगह मुझको ले जाने के लिए राजी हो गए। इससे मुमताज रूठ गई और मैं खुश हो गई। भैया जाने से पहले तस्वीर लेने लगे तो मुमताज ने तस्वीर उतरवाने से इन्कार कर दिया। मुझे उसके रोने को देखकर मजा आ रहा था। उस उक्त भैया ने जो तस्वीर ली यह तस्वीर वही है।

"पर अनिमा देवी जी! आपने कमाल कर दिया है। कितना ठीक अन्दाज लगाया है आपने।"

"मैंने सामुद्रिक विद्या का अध्ययन किया हुआ है। इससे मैं दूसरों के मुख को देखकर उसके अन्तरात्मा की बातें जान सकती हूँ।"

"वे बता रहे थे कि आपकी सगाई तो हो चुकी है, मगर शादी होने की उम्मीद नहीं।"

अनिमा ने केवल सिर हिलाकर उसके कहने का समर्थन कर दिया। नसीम ने फिर पूछा, "मुझको यह जानकर बहुत हैरानी हुई थी कि आप दोनों ने शादी न करने का वचन ले लिया है।"

अनिमा ने अब भी केवल सिर हिलाकर बात को स्वीकार कर लिया। नसीम ने आगे पूछा, "मगर इतनी सख्त कसम खाने की क्या जरूरत थी? अगर आपके माता-पिता नहीं मानते तो क्या आप उनसे बिना पूछे विवाह नहीं कर सकते?"

"मेरे पिताजी ने न नहीं की। उनकी माता हैं, जिन्होंने मुझको पसन्द नहीं किया। मैंने तो उनको किसी दूसरी से विवाह कर लेने के लिए कहा है, परन्तु वह कहते हैं कि उनका मुझसे प्रेम ऐसा है कि वह किसी दूसरी से विवाह कर ही नहीं सकते।"

"तो दोनों के जीवन बरबाद हो जाएँगे।" नसीम ने सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा।

"मुझको तो इसमें किसी प्रकार की भी बरबादी प्रतीत नहीं होती। हमारा जीवन अति मधुर बना हुआ है। बात यह है कि हम पुनर्जन्म और पुनर्मिलन में विश्वास रखते हैं। हम समझते हैं कि हमारा प्रेम इतना दृढ़ है कि वह जीवन-भर की प्रतीक्षा के बोझ को सहन कर सकता है।"

"बहुत विश्वास है आपको उन पर?"

"हाँ। हम मिलते रहते हैं और मैं समझती हूँ कि दिन-प्रतिदिन हमारा प्रेम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृढ़ ही होता जाता है।"

"कहाँ मिल गए हैं आपको ऐसे आदमी ?"

"यह लम्बा किस्सा है। आपका समय व्यर्थ जावेगा।"

"नहीं, नहीं, सुनाओ।" नसीम ने अनिमा के गले में बाँह डालकर कहा, "मुझको ऐसे आदमी की कहानी सुनने की बहुत इच्छा हो रही है।"

अनिमा ने कुछ काल तक आँखें मूँदकर सोचा और फिर कहना आरम्भ किया, "मैं छठी श्रेणी में पढ़ती थी और वे श्रेणी के मॉनिटर थे। सब पर उनका दबदबा था। केवल मैं ही थी जो उनको बिल्कुल नहीं मानती थी। वे श्रेणी के लड़के-लड़कियों से अपना काम कराया करते थे, परन्तु मैंने उनका कभी कोई काम नहीं किया था। एक दिन मैं अपनी डेस्क पर बैठी थी और वे बोर्ड के पास खड़े एक लड़के से बात कर रहे थे। एकाएक उन्होंने मेरी ओर देख कहा, 'अनिमा, मेरी डेस्क में से अंग्रेजी की किताब दे जाओ।'

"मैंने उत्तर दिया, 'अपने आप पकड़ लो। मैं पढ़ रही हूँ।'

"इतना कह मैं कापी पर कुछ लिखती रही। वास्तव में मैं तिरछी दृष्टि से उसको देख रही थी। मेरा उत्तर कमरे में दूसरे लड़कों ने भी सुना और वे क्रोध में लाल-पीले हो मुझ पर रोब जमाने के लिए धीरे-धीरे नाप-नापकर कदम रखते हुए मेरे पास आ खड़े हुए। मैंने उनकी ओर ध्यान नहीं किया। उन्होंने मुझको डाँट-कर कहा, 'अनिमा!' मैं उठकर उसकी ओर देखने लगी। वे मेरी आँखों में देखने लगे थे।

"उन्होंने कहा, 'अनिमा, मेरी किताब पकड़ाओ।' मैंने अपने पूरे बल से उसके मुँह पर एक चाँटा दे मारा। वह इस बात की आशा नहीं करता था। उसने जवाब में मुझको एक मुक्का मारना चाहा, परन्तु मैं पहले ही तैयार खड़ी थी। उसके मुक्के के लगने से पूर्व ही मैं उस पर पिल पड़ी। हम दोनों गुत्थमगुत्था हो गए। फिर क्या हुआ, मैं नहीं जानती। मुझको तब होश आई जब वे मेरे नीचे थे और मैं उनको धड़ाधड़ मुक्कों से पीट रही थी। उनके दो दाँत टूट चुके थे और मुख से लहू बह रहा था। श्रेणी के विद्यार्थी प्रसन्नता में तालियाँ बजा रहे थे। मैं पीटती हुई कह रही थी, 'गिरीश! मिल गई पुस्तक।' एक लात मारकर मैं उठ पड़ी।

"जब मैं एक ओर हटकर खड़ी हो गई, तो मैंने देखा कि वह उसी तरह भूमि पर पड़ा है। मैंने समझा कि वह अचेत हो गया है। इस विचार के आते ही मैं उसे उठाने के लिए आगे बढ़ी तो वह बोला, 'हट जाओ अनिमा। मुझे न छूना।' मैं पीछे हट गई। उसके मुख से रक्त बहते देख मैं डर गई थी। मेरे पीछे हट जाने पर वह धीरे-धीरे उठा और अपने कुर्ते की बाँह से अपने मुख से निकल रहे खून को पोंछते हुए, अपनी पुस्तकों को लेकर अपने घर को चला गया।

"अगले दिन वह स्कूल नहीं आया। मास्टर ने सारी कहानी सुन ली थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जब हम श्रेणी में बैठ गए और मास्टर वहाँ आया तो मैंने समझा कि वह मुझे पीटेगा। हुआ इससे उलटा। उसने आते ही विद्यार्थियों को कहा, 'आज श्रेणी का नया मॉनिटर चुना जावेगा।'

"लड़कों ने प्रसन्नता में तालियाँ बजा दीं। मास्टर साहब ने उनको चुप कराकर कहा, 'मॉनिटर के लिए नाम प्रस्तावित करो।'

"लड़कों ने मेरा नाम प्रस्तावित कर दिया। मैंने जब देखा कि और किसी का नाम उपस्थित नहीं हो रहा तो मैंने उठकर कहा, 'श्रीमान्! मैं अपना नाम वापस लेती हूँ।'

"मास्टर ने विस्मय में मेरी ओर देखना आरम्भ कर दिया। मैंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, 'मैं समझती हूँ कि गिरीश बाबू को ही मॉनिटर के पद पर रहना चाहिए। उसको पद से हटाने का कोई कारण नहीं है।'

" 'उसने तुम्हारे साथ झगड़ा जो किया था।' एक लड़के ने कहा।

" 'उस झगड़े का फल मैंने उसको दे दिया था।'

" 'पर मैं उसको इस पद से हटाता हूँ।' मास्टर ने कुछ रुष्ट होकर कहा।

" 'जब आप किसी को पद से हटाने की शक्ति रखते हैं तो हमसे राय क्यों लेते हैं, स्वयं ही नियुक्त भी कर दीजिए।'

"मास्टर भी इस उत्तर से स्तब्ध रह गए। फिर कुछ सोचकर बोले, 'ठीक है। मैं ही नियुक्त करता हूँ। मैं अनिमा देवी को छठी श्रेणी का मॉनिटर नियत करता हूँ।'

" 'और मैं इस नियुक्ति को अस्वीकार करती हूँ।'

" 'क्यों?'

" 'मैं गिरीश बाबू के हटा दिए जाने को अनुचित समझती हूँ।'

" 'अनिमा! यह क्या कर रही हो?' मास्टर ने कहा, 'तुम मेरी आज्ञा की अवहेलना करने लगी हो।'

" 'मैं जानती हूँ कि आपकी आज्ञा अनुचित है। मेरी माँ ने मुझे बताया है कि किसी की भी आज्ञा अनुचित होने पर अमान्य होती है। मेरा विचार है कि गिरीश बाबू हमारे मॉनिटर ठीक ही हैं।'

" 'उसने तुम्हारे साथ झगड़ा कर नियम-भंग किया है।' मास्टर साहब ने कहा।

" 'इसका दंड मैंने उसे दे दिया है। मैं समझती हूँ कि यदि तो मेरा उसे पीटना आप ठीक समझते हैं, तब तो उसे अपने अपराध का दंड मिल चुका है। परन्तु यदि आप उसे स्वयं दंड देना चाहते हैं तो मुझे उसको पीटने के लिए दंड मिलना चाहिए। यह मुझे पसन्द नहीं। इस कारण मैं उसको और अधिक दंड दिया जाना पसन्द नहीं करती।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मास्टर और सब विद्यार्थी मुझे इस प्रकार उसका पक्ष लेते देख हैरान थे। मेरे मॉनिटर बनने से इनकार करने की बात मुख्याध्यापिका तक पहुँची। उसने मुझे बुलाया और मैंने वही युक्ति उसके सम्मुख दे दी जो अपनी श्रेणी में दी थी। मुख्याध्यापिका स्त्री थी और वह मेरी युक्ति को जल्दी समझ गई। उसने मेरी पीठ पर हाथ फेरते हुए पूछा, 'बेटी, यह सब तुम्हें किसने बताया है ?'

" 'इसमें सिखाने-पढ़ाने की कोई बात ही नहीं।' मैंने उत्तर दिया। 'आप बताइए एक अपराध का दो बार दंड कैसे दिया जा सकता है ?'

"मेरी बात मान ली गई। गिरीश बाबू कई दिन तक स्कूल नहीं आया और मेरे मन में उसके लिए चिन्ता और सहानुभूति उत्पन्न होने लगी। एक दिन मैं उसके घर का पता कर उसकी खबर लेने जा पहुँची। तब तक श्रेणी में एक लड़की मेरी सहेली बन चुकी थी। वह भी मेरे साथ थी। जब हमने उसके घर का दरवाजा खटखटाया तो एक स्त्री बाहर आई। हमने अपने आने का उद्देश्य वर्णन किया तो वह औरत विस्मय में हमारा मुख देखने लगी। मैंने कहा, 'मैंने उसे पीटा था और मैं उससे क्षमा माँगने आई हूँ।'

"वह औरत अभी भी हमारा मुख देखती रही और कुछ बोली नहीं। मैंने विनीत भाव में कहा, 'आप गिरीश जी की माँ हैं क्या ? आप बोलती क्यों नहीं ?'

"इस पर उस स्त्री ने मुख खोला। वह बोली, 'मैं उसकी माँ नहीं हूँ। उसकी रिश्ते में मौसी हूँ। मैं यह सोच रही हूँ कि तुम लोगों को उससे मिलने दूँ या कि नहीं।'

" 'क्यों, मिलने क्यों नहीं देना चाहतीं ?' मेरा प्रश्न था।

" 'उसे उसी दिन से ज्वर आ रहा है और डाक्टर कहते हैं कि उससे बहुत बात करने से उसको सरसाम हो जावेगा।'

" 'हम बहुत बात नहीं करेंगे। केवल मैं क्षमा माँगूंगी।'

" 'अच्छी बात है, आओ।' यह कह उसने हमारे भीतर जाने को रास्ता छोड़ दिया।

"जब हम गिरीश की चारपाई के पास पहुँचे, तब वह अर्धचेतन अवस्था में पड़ा था। उसकी मौसी ने हमारे लिए दो कुर्सियाँ लाकर रख दीं। हम दोनों बैठ गई। कुछ काल तक हम उसकी ओर चुपचाप देखती रहीं। पश्चात् मैंने कहा, 'गिरीश जी !' इस पर उसने आँखें खोलीं। पहले तो उसकी आँखों में हमें पहचानने के लक्षण प्रतीत नहीं हुए। वह हमारी ओर बितर-बितर देखता रहा। पश्चात् उसके माथे पर त्यौरी चढ़ने से मैं समझ गई कि वह मुझको पहचान गया है। मैंने बहुत ही विनीत भाव में कहा, 'गिरीश जी, मुझको क्षमा कर दो। मेरा आशय यह नहीं था।'

"न जाने उसके मन में क्या आया। उसके माथे से त्यौरी उतर गई। उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख पर मुस्कराहट दौड़ गई। यह मुस्कराहट एक क्षण के लिए ही रही और पुनः वह अर्धचेतनावस्था में हो गया। अब उसकी मौसी ने हमें संकेत से उठ चले जाने को कह दिया।

"मैंने घर जा अपनी माता को सब बात बताई तो उन्होंने मुझसे प्यार कर कहा कि मैंने ठीक ही किया है। मुझको फिर भी जाना चाहिए। दो दिन बाद मैं फिर गई। इस बार मैं अकेली थी। गिरीश की मौसी ने इस बार मुस्कराकर मेरा स्वागत किया और मेरे कुछ कहने से पूर्व ही मुझे उसके पास ले गई। इस समय उसका ज्वर उतर चुका था और वह मुझको देखते ही पहचान गया। एक सप्ताह से ऊपर के ज्वर से वह बहुत दुर्बल हो चुका था। उसकी गालें पिचक गई थीं। मैंने पहले दिन की तरह फिर उसे कहा, "गिरीश जी, मुझको क्षमा कर दो। मेरा यह आशय नहीं था।'

"इस बार भी वह बोल नहीं सका। इस पर भी उसके मुख पर सन्तोष की झलक स्पष्ट दिखाई देती थी। मैं कुछ काल तक बैठी रही और फिर उसकी मौसी की ओर देखकर बोली, 'मेरी माँ जी ने जब इस घटना की बात सुनी तो उनको बहुत दुःख हुआ।'

"उसकी मौसी ने मेरे सिर पर हाथ फेरकर प्यार किया और कहा कि मैं बहुत अच्छी लड़की हूँ। इसके पश्चात् गिरीश के ठीक होने तक मैं कई बार वहाँ गई। गिरीश को स्कूल जाने योग्य होने के लिए एक मास लग गया और तब तक उसके मन से मेरे प्रति द्वेष पूर्णतया मिट चुका था।

"जब वह स्कूल में उपस्थित हुआ तो विद्यार्थियों ने उसे मेरे मॉनिटर बनने से इनकार कर देने की बात बताई और मेरी युक्ति भी बताई। इसका उसके मन पर भारी प्रभाव पड़ा। एक दिन स्कूल से लौटते हुए उसने मुझसे कहा, 'अनिमा! मेरी बीमारी में तुम मुझसे क्षमा माँगने आई थीं न? वास्तव में क्षमा मुझको माँगनी चाहिए थी। मेरी मौसी कहती थी कि तुम बहुत अच्छी लड़की हो और वे तुमको कल मेरे जन्म-दिन के उत्सव पर बुलाती हैं। आओगी न!'

"इस प्रकार मैं उनके घर में आने-जाने लगी। प्रति दुर्गा-पूजा और सरस्वती पूजा के अवसरों पर मैं उनके घर और वे मेरे घर आने-जाने लगे। यह बात हमारी दसवीं श्रेणी तक चलती रही। इन दिनों उसकी माँ, जो उसके पिता के साथ इंग्लैण्ड गई हुई थी, आ गई। उसे, जब मेरा और मेरे माता-पिता का परिचय मिला तो उसको मुझसे मिलने से मना कर दिया गया।

" 'कुछ दिन बाद सरस्वती-पूजा होने वाली थी। सदा की भाँति मैंने उसे निमंत्रण दिया तो उसने अपनी माँ का कहना सुना दिया। मैंने पूछा, 'आपकी माता जी मुझसे क्यों नाराज हैं?"

" 'अनिमा! यदि मैं सत्य कहूँ तो नाराज तो न हो जाओगी?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे मन में एक बात सूझी। मैंने उसे कहा, 'मैं समझती हूँ कि मुझको मालूम हो गया है।'

"'तुम सब बातें पहले जान जाती हो। परन्तु मैं कहता हूँ कि यह बात तुम कभी नहीं जान सकती।'

"'अच्छा सुनो।' मैंने कहा। उसे विश्वास था कि उसकी बात मैं नहीं जानती। मेरे मन में एक बात वार-बार आ रही थी। मैंने वही कह दी। 'मेरे पिता क्रान्तिकारी हैं, इसलिए। तुम्हारी माँ सरकारी अफसर की स्त्री हैं, है न ?'

"मेरी बात सुनकर वह चकित रह गया। ठीक यही बात थी। अब मैंने एक बात और कही, 'मैं एक बात और बताना चाहती हूँ। तुम हमारे घर में आना चाहते हो।'

"'मैं हार मानता हूँ।' उसने कहा, 'तुमने ठीक बात जान ली है। मैं सरस्वती-पूजा के दिन अवश्य आऊँगा। पर यह बात तुम अपने माता-पिता को नहीं कहना। मुझे डर है कि वे मेरे माता-पिता और मुझसे घृणा करने लगेंगे।'

"उस वर्ष से लेकर मैंने उनके घर जाना छोड़ दिया, परन्तु गिरीश जी हमारे घर आते हैं। दो वर्ष हुए मेरी माँ बहुत बीमार हो गईं। गिरीश जी ने उनसे मेरे साथ विवाह करने की स्वीकृति माँगी। मेरी माँ ने कहा कि वे पहले अपनी माँ से पूछ लें। गिरीश जी अपनी माँ से पूछने गए परन्तु निराश लौटे। मैंने उनका मुख देखते ही कह दिया, 'बस रहने दीजिए, मैं सब समझ गई हूँ। बताऊँ ?'

"'भला बताओ। तुम सदैव ज्योतिषी बन जाती हो।'

"'तो सुनो।' मैंने उसकी आँखों में देखते हुए कह दिया, 'आपकी माँ ने कहा है कि आपको दहेज में दस सहस्र रुपया मिलना चाहिए। बताइए ठीक है न ? एक बात और। आपने अपनी माँ से कह दिया है कि आप यदि विवाह करेंगे तो मुझसे ही करेंगे। इस पर आपकी माँ ने कहा है कि यदि आपने ऐसा किया तो वे विष खाकर मर जावेंगी।'

"बात शतशः ठीक थी और गिरीश जी मेरी इस भेद की बात को बताने पर बहुत चकित हुए। उन्होंने मुझसे पूछा कि मुझे यह बात कैसे पता चल जाती है ? मैंने कह दिया कि 'मेरी आत्मा में स्वयं उत्पन्न होती है।' मेरी माँ ने बताया कि ऐसा कई बार उसके और मेरे पिताजी के भीतर भी हो चुका है। उनका कहना था कि जब दो प्राणी बहुत प्रेम करते हैं तो दोनों के मन में एक प्रकार का सम्बन्ध बन जाता है और इससे एक दूसरे के मन की बात का पता चल जाता है।

"इस पर गिरीशजी ने कहा, 'तो यह सिद्ध हो गया कि अनिमा का मुझसे बहुत प्रेम है।'

"'इस बात का कोई अनुमान नहीं लगा सकता,' मेरी माताजी ने कहा, 'अन्तरात्मा की बातें तो भगवान ही जानता है। हाँ, कभी प्रेमी परस्पर भी इसका नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सकते हैं। वे इसे न समझते हुए भी जानते हैं। देखो बेटा गिरीश ! तुमने कभी देवता की सिद्धि की बात सुनी है? सिद्धि के केवल यह अर्थ हैं कि सिद्ध व्यक्ति अपने इष्टदेव से इतना एकीकरण कर लेता है कि दोनों में ज्ञान और शक्ति का अन्तर कम हो जाता है। जितनी-जितनी सिद्धि अधिक होती जाती है उतना-उतना ही देवता और भक्त में भेद-भाव मिटता जाता है। देवता का ज्ञान और उसकी शक्ति तो कम हो नहीं सकती। हाँ ! भक्त के ज्ञान में वृद्धि हो जाती है। यही बात परस्पर प्रेमियों की है।'

" 'बहुत विचित्र बात है।' गिरीशजी का कहना था।

"इस बात के पश्चात् तो हम दोनों में प्रेम और अधिक ही होता जा रहा है। इस घटना के दो मास पश्चात् माताजी का देहान्त हो गया। हम दोनों प्रेमी हैं। वे कॉलिज में पढ़ाते हैं और मैं नौकरी करने लगी हूँ। हमने यह निश्चय कर लिया हुआ है कि हम अविवाहित रहेंगे और यदि विवाह करेंगे तो आपस में ही करेंगे।

"एक बार मैंने उनसे कहा था कि वे विवाह करने के लिए स्वतन्त्र हैं। प्रेम और विवाह दो भिन्न बातें हैं। वे इस बात को मानते हुए भी अभी तक विवाह के लिए राजी नहीं हुए। जब भी मुझे उनसे अथवा उनको मुझसे मिलने की आवश्यकता होती है तो हम एक-दूसरे का चिन्तन करते हैं और हमारी भेंट हो जाती है।"

नसीम अनिमा की आत्म-कथा चुपचाप सुन रही थी। उसे वह एक साधारण प्रेम-कथा ही प्रतीत हुई थी। उसे दोनों का अविवाहित जीवन व्यतीत करना कोई विचित्र बात प्रतीत नहीं हुई थी। अभी उनकी आयु बहुत छोटी थी और कोई नहीं कह सकता था कि दोनों अपने वचन निभा सकेंगे अथवा नहीं। परन्तु जब उसने यह टैलिपैथी की बात दुहराई तो उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह उसे मूर्ख बना रही है अथवा वह स्वयं एक महान भ्रम में विचर रही है। इसलिए उसने बात वहीं रोक कर कहा, "अनिमा बहिन ! या तो तुम खुद भूल रही हो या तुम मुझको बेवकूफ बना रही हो। हम इन बातों में यकीन नहीं रखते। कुछ बातें होती हैं जो अन्दाज से बताई जा सकती हैं। तुम बहुत समझदार मालूम होती हो। इससे शायद तुम्हारे अन्दाज ज्यादा ठीक होते हैं। मगर तुम्हारे सन्देश इस प्रकार एक-दूसरे तक पहुँच जाते हैं, मैं मान नहीं सकती।"

अनिमा हँस पड़ी। उसने कहा, "मैंने आपको यह बात किसी उद्देश्य से नहीं बताई। आप इस सबको एक उपन्यास का पृष्ठ भी समझ सकती हैं।"

"मगर मेरे इस बात-चीत का मतलब तो आपके विषय में सचाई जानने का है। आपसे असलीयत जानने के लिए ही तो यह कह रही हूँ।"

'मैं इसका प्रमाण दे सकती हूँ, परन्तु मैं सोचती हूँ कि इससे लाभ क्या होगा। आप तो इस प्रकार की शक्ति न हासिल करना चाहेंगी और शायद न हासिल कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकेंगी।"

"अगर टेलिपैथी जैसी कोई वस्तु वास्तव में है तो उसको प्राप्त करने को कौन न पसन्द करेगा ? पहले इसके होने का यकीन तो होना चाहिए न।"

"यही तो कठिन प्रतीत होता है। आप बात को प्रत्यक्ष देखकर भी नहीं मानिएगा। ये दिल के मसले ऐसे ही हैं। देखिए ! मैं आपको एक प्रमाण अभी दे सकती हूँ। जब मैं आपको अपनी आत्म-कथा वर्णन कर रही थी तो मेरी इच्छा गिरीशजी से मिलने को हो रही थी। बातों से व्यक्तियों का स्मरण स्वाभाविक ही है। मेरा विचार है कि वे मुझसे मिलने को चल पड़े हैं। इस समय पिताजी से मिल कर मेरे यहाँ होने का समाचार पा चुके हैं। मेरी इच्छा है कि वे मेरी वहाँ पर ही प्रतीक्षा करें परन्तु यदि आप चाहें तो मैं उनको यहाँ बुला सकती हूँ।"

"हाँ, जरूर बुलाइए। इससे दो बातें होंगी। एक तो आपकी इस शक्ति का हमें विश्वास हो जावेगा और दूसरे आपके गिरीश साहब के दर्शन हो जावेंगे।"

"इसके लिए एक शर्त है। आपके सामने यदि आवें तो मेरे उनसे प्रेम होने की किसी प्रकार की भी बात नहीं होनी चाहिए।"

"मंजूर है। पर क्या जाने आप पहले घर से ही यह स्कीम बनाकर चले हों ?"

अनिमा हँस पड़ी। इसके पश्चात् उसने कहा, "यदि आप चाहें तो मैं उनको यहाँ आने का कष्ट न दूँ ?"

"अब आ ही जाने दीजिए। देखें वे क्या कहते हैं।"

"तो एक बात कर दीजिए। बाहर दरवाजे पर कहला भेजिए कि गिरीश बाबू आ रहे हैं। वे आवें तो उन्हें भीतर ले आवें।"

यह इत्तला फाटक पर कर दी गई। नसीम ने चपरासी को भेज चेतनानन्द को भी बुलवा लिया। चेतनानन्द ने आकर पूछा तो नसीम ने बताया, "एक गिरीश बाबू आ रहे हैं। मैंने समझा कि आपसे भी मुलाकात करा दें तो ठीक होगा।"

"वे कौन हैं ?"

"मुझसे जिनका प्रेम है।" अनिमा ने कहा, "परन्तु नसीम बहिन से यह बात निश्चय हो चुकी है कि उनसे इस विषय में कोई बात नहीं होगी।"

"अगर उनको आना था तो मुझे पहले ही कह दिया होता। मैं उन्हें भी चाय पर निमन्त्रण दे देता।"

"आप जरा बैठ जाइए। सब बात बाद में बताऊँगी।" नसीम ने मुस्कराते हुए कहा।

चेतनानन्द विस्मय में डूबा बैठ गया। तीनों अपने-अपने विचारों में लीन थे। इससे कोई बातचीत नहीं हो रही थी। इस चुप्पी को नसीम ने तोड़ा। उसने कहा, "अनिमा बहिन ! अब तो खाने का समय हो गया है। क्या मैं उनके लिए भी खाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार करने को कह दूँ ।"

"मैं यदि उनको खाने के विषय में कहूँ तो वे मान जाएँगे, परन्तु इस विषय में मेरी प्रेरणा कुछ शोभा नहीं देती।"

"कहूँगी तो मैं ही। परन्तु मुझे डर है कि पहले ही हमने आपका इतना समय ले लिया है।"

"मेरा विचार है कि यह बात किसी और समय के लिए स्थगित रखिए।"

चेतनानन्द इस सबका अभिप्राय अभी भी नहीं समझा था। इस कारण उसने फिर पूछा, "कुछ मुझे भी बतलाइएगा ?"

अनिमा हँस पड़ी। इस पर चेतनानन्द ने उससे विनीत निवेदन कर दिया. "मिस बैनर्जी ! आप ही कुछ बता दीजिए।"

"सब मजा जाता रहेगा।" अनिमा ने व्यंग्य के भाव में कहा।

"और इस समय जो बेमजा हो रहा है।"

इस समय दरबान ने बाहर से आवाज़ दी, "मिस्टर चक्रवर्ती आए हैं।"

"लो आ गए।" अनिमा ने उठते हुए कहा।

मिस्टर गिरीश चक्रवर्ती कमरे में दाखिल हुए तो अनिमा ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया और चेतनानन्द तथा नसीम से परिचय कराया। पश्चात् बैठाते हुए कहा, "मुझे मालूम हुआ है कि आप मुझसे मिलने आ रहे हैं। इससे मैंने यही उचित समझा कि आपसे इनका परिचय करा दूँ।"

"आपके विषय में सुन तो पहले ही चुका हूँ। आज दर्शन हो गए तो बहुत खुशी हुई।"

"आपने बहुत कृपा की जो यहाँ आने की तकलीफ की। मगर पबलिसिटी आफिसर साहब का कहना है कि यदि आपके आने का समाचार पहले मालूम होता तो वे आपको चाय के समय पर ही बुलाते।"

"मेरे यहाँ आने का तो मुझे भी मालूम नहीं था। मैं कॉलेज होस्टल से निकला तो मेरा विचार अनिमा देवी से भेंट करने का हो गया। इनके घर पहुँचा तो पता लगा कि यहाँ हैं। मैंने मन में सोचा कि यहाँ से यह निकलने वाली ही होंगी तो इनको लेकर कहीं खाना खाएँगे और फिर इनको घर पहुँचाकर वापस चला जाऊँगा। यहाँ फाटक पर पहुँचा और इनके विषय में पूछा तो दरबान ने कहा कि मेरी प्रतीक्षा हो रही है। मैं समझ गया कि ये यहाँ भी अपनी टेलिपैथी का खेल खेल रही हैं।"

"तो आपके यहाँ आने का पहले निश्चय नहीं था ?"

अनिमा देवी और गिरीश दोनों हँस पड़े। गिरीश ने कहा, "इनके घर से निकलने के पूर्व तो मुझे भी पता नहीं था कि मैं यहाँ आऊँगा। मेरा यहाँ आने का विचार तो बाद में ही बना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतनानन्द और नसीम हैरानी में उनका मुख देखते रह गए। गिरीश ने कहा, "आपको विश्वास नहीं आवेगा। आपके मन का विकास तो अभी इस बात के समझने के योग्य भी नहीं हुआ। देखिए, मैं आपको आपकी अयोग्यता के विषय में ही बताता हूँ। एक छोटे बच्चे से यदि यह कहें कि हमारे पास एक यन्त्र है जो क्रिकेट के बाल को इतना बड़ा कर दिखा सकता है कि वह पृथ्वी जितना बड़ा दिखाई देने लगता है तो वह मानेगा? आज से पचास वर्ष पूर्व यदि कोई कहता कि एक ऐसा यन्त्र है जो लन्दन में नाचने-गाने वाले का नाच-गाना कलकत्ता में सुना सकता है, तो कोई मानता? परन्तु आज ये दोनों बातें होती देखी जाती हैं और समझी जाती हैं। एक वैज्ञानिक न केवल इनका होना मानता है, प्रत्युत ऐसा होने की विधि को भी जानता है। इसी प्रकार आप इस बात को तब तक नहीं मानेंगे जब तक स्वयं न कर सकेंगे। कठिनाई इसमें यह है कि इस काम के लिए अपने मन की ट्रेनिंग की आवश्यकता है। यदि मन भी एक ग्रामोफोन अथवा रेडियो की भाँति बाजार में मोल मिल सकता तो खरीदकर इस बात की परीक्षा कर सकते। इसके लिए तो अपने मन को ही सिद्ध करना पड़ता है, जो आपके वश की बात नहीं है।"

"मन को ट्रेण्ड करने के लिए क्या करने की आवश्यकता है?"

"योग और ध्यान की।"

"तो आपके कहने का यह अर्थ है कि आप दोनों ने योगाभ्यास सीखा है?"

"योगाभ्यास का अर्थ है, अपने मन की पूर्ण-शक्ति को केन्द्रित कर किसी एक पर लगा देना। अनिमा ने अपने मन को मेरे पर इतना केन्द्रित किया है कि ये न केवल मेरी प्रत्येक बात को जान जाती हैं, प्रत्युत मेरे कामों का संचालन भी करती हैं।"

"यह आपने कैसे किया है, अनिमा देवी?"

"मैं इसका नाम प्रेम कहती हूँ। योग के शाब्दिक अर्थ भी मेल के ही हैं। यदि किसी से प्रेम अति प्रबल हो जाए तो उससे योग हो जाता है। इस प्रकार उसमें और अपने में कोई भेद-भाव नहीं रह जाता। इसके एक अंश को टेलिपैथी कहते हैं।"

गिरीश ने इस समय उठकर कहा, "अब हमें आज्ञा दीजिए। फिर कभी हाजिर हो जाऊँगा।"

अनिमा भी उठ पड़ी। नसीम और चेतनानन्द ने उठकर दोनों को विदा देते हुए कहा, "हम आपके बहुत मशकूर हैं। यह शाम हमारे दिमाग से मिट नहीं सकेगी। इन दो घंटों की गुफ्तगूह ने हमारे दिमाग में हलचल मचा दी है।"

: १० :

प्रीमियर साहब के बँगले से निकल गिरीश ने कहा, "अनिमा, यह समय इस प्रकार के खेल खेलने का नहीं। पानी नाक तक आ गया है। अब तो कोई शीघ्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपाय होना चाहिए।"

"मैं पिछले तीन दिन से इतनी निराशाजनक बातें सुन रही हूँ कि मन बहलाने को यहाँ आ बैठी हूँ। जिससे भी कहती हूँ कि कलकत्ता में हिन्दू-मुस्लिम झगड़े की सम्भावना है, वही मुझको मूर्ख और गद्दार कह घर से बाहर निकाल देता है।"

"पर हमने तो काम करने का व्रत ले रखा है, परिणाम देखने का नहीं। परिणाम तो हम भगवान के हाथ में दे चुके हैं। लो सुनो, मैंने कल अपने घर में नगर के कुछ विशेष व्यक्तियों को निमन्त्रण दिया है। कोई बीस-पच्चीस लोग आवेंगे। भोजन होगा और फिर हम अपनी बात कहेंगे। तुम भी आना।"

उन्होंने रायल रेस्टोराँ में रात का खाना खाया और अगले दिन सायंकाल भोजन के समय गिरीश के घर मिलने की बात कर पृथक्-पृथक् हो गए।

गिरीश एम० ए० करने के बाद नेशनल कॉलेज ऑफ कॉमर्स में प्रोफेसर का काम करने लगा था। उसका पिता दिल्ली की केन्द्रीय सरकार की ओर से लन्दन में 'इंडिया हाउस' के म्यूजियम का अध्यक्ष था। पहले तो उसकी माँ भी उसके साथ वहाँ गई हुई थी। उन दिनों गिरीश अपनी मौसी के घर रहता था। उसकी माँ स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण वहाँ से कलकत्ता लौट आई थी। इस समय गिरीश अपनी माँ के पास रहने लगा था। इन्हीं दिनों में अनिमा का उनके घर जाना मना हुआ था। जब गिरीश ने अनिमा से विवाह का प्रस्ताव किया था, तब जर्मनी से युद्ध हो रहा था और उसकी माँ क्रान्तिकारी की लड़की से अपने लड़के का विवाह कराना नहीं चाहती थी, परन्तु गिरीश ने हठ किया कि वह विवाह उससे ही करेगा। इस पर उसकी माँ ने विष खाकर मर जाने की धमकी दी थी। गिरीश ने विवाह न करने का वचन तो दे दिया परन्तु अपने रहने का निवास-स्थान पृथक् कर लिया। वह अपने कॉलेज के होस्टल के पिछवाड़े में एक मकान में रहने लगा था।

इन दिनों उसके पिता छुट्टी लेकर हिन्दुस्तान आए हुए थे, परन्तु उनके चक्कर दिल्ली और कलकत्ता में लगते रहते थे। गिरीश उनसे मिलता रहता था और प्रायः उनके पास जाकर रहता भी था। इस पर भी उसने अपना होस्टलवाला मकान छोड़ा नहीं था। उसने यह पार्टी अपने होस्टल के पिछवाड़े वाले मकान में दी थी। इस पार्टी में कांग्रेस के विख्यात नेता तथा कार्यकर्ता, हिन्दू सभा के कार्यकर्ता और पंजाबियों तथा मारवाड़ी समाज के मुख्य व्यक्ति बुलाए गए थे।

अनिमा अपने आफिस से सीधी गिरीश के घर पहुँच गई। लोगों के आने में अभी समय था। गिरीश ने सब तैयारी करवा रखी थीं और वह अब उत्सुकता से मेहमानों के पहुँचने की प्रतीक्षा कर रहा था। अनिमा को आया देख उसका मुख खिल उठा। उसने उसका स्वागत कर कहा, "अच्छा हुआ कि तुम पहले ही आ गई हो। जब तक दूसरे आएँगे हम अपना प्रोग्राम बना लेते हैं। मैंने अपने निमन्त्रण में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखा है कि समय की एक अत्यावश्यक बात पर विचार-विनिमय करने के लिए यह समारोह किया जा रहा है। मैं समझता था कि मेरे कहने पर तो कोई नहीं आएगा, इसलिए मैंने अपने निमन्त्रण में सेठ केका जी भाई का नाम लिख दिया है। मैंने लिखा है कि सेठजी हमारे विचार-विनिमय के समय सभापति होंगे। कांग्रेसी लोग, हिन्दू-सभाईट और अन्य सार्वजनिक कार्यकर्ता, सब के सब सेठ साहब के दान-दक्षिणा का स्वाद ले चुके हैं। इससे मैं आशा करता हूँ कि सब आमन्त्रित-गण अवश्य पधारेंगे।"

"परन्तु, क्या आपने सेठ साहब की इस विषय में स्वीकृति ले ली है?" अनिमा का प्रश्न था।

"हाँ, परन्तु उनको यह मालूम नहीं कि वह आवश्यक विषय हिन्दू-मुस्लिम झगड़े की बात है। उनका ख्याल है कि हम बंगाल सरकार के पास हिन्दू लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिए डेपुटेशन लेकर जा रहे हैं। इसलिए मैं चाहता हूँ कि कोई आदमी बातों का बहाव डेपुटेशन के स्थान झगड़े की स्थिति में रक्षा की ओर ले जाए।"

"यह तो आपने ठीक नहीं किया।"

"मैं यह जानता हूँ। फिर भी नगर के मुख्य-मुख्य लोगों से मिलकर अपने विचार प्रकट करने के लोभ को मैं रोक नहीं सका।"

Gurukula Kangri University Haridwar 167984

"अच्छी बात, मैं इसका प्रबन्ध कर दूँगी। आप अपने तरीके पर बात आरम्भ करिएगा।"

इस समय इक्के-दुक्के लोग आने आरम्भ हो गए। अनिमा एक ओर हटकर बैठ गई। गिरीश आने वालों का स्वागत करने लगा। समय होने से पूर्व ही प्रायः सब लोग आ गए थे। इस समय भोजन का प्रबन्ध हो गया। एक-दो के अतिरिक्त शेष सबने भोजन किया। भोजन के पश्चात् सेठ केकाजी भाई ने सबको बैठाया और अपनी बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, "हमें प्रोफेसर गिरीशजी का धन्यवाद करना चाहिए कि उन्होंने इतना स्वादिष्ट भोजन खिलाया है। इससे भी अधिक धन्यवाद के पात्र ये इसलिए हैं कि इन्होंने हमें आज यहाँ मिलकर अपने नगर की अवस्था पर विचार करने का अवसर उत्पन्न कर दिया है। यह तो आप जानते ही हैं कि कलकत्ता का व्यापार हम हिन्दुओं के हाथ में है, परन्तु अब सरकारी कंट्रोलों से मुसलमानों के हाथ में दिया जा रहा है। यदि तो उनके कार्य-कुशल होने से व्यापार उनके हाथ में जाता तब तो हमें इसमें रोष न होता, परन्तु हो यह रहा है कि झूठ-मूठ की कम्पनियाँ बनवाकर काम उनको दे दिया जाता है और वे कम्पनियाँ या तो पुनः हिन्दुओं से काम करवाती हैं या अंट-संट काम कर सरकार के हवाले कर देती हैं। इस प्रकार प्रान्त को भारी हानि हो रही है। यह हानि भी तो हम, कर देने वाले लोगों, को ही देनी पड़ रही है। इससे हम दुहरी लूट के शिकार हो रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इतनी भूमिका के पश्चात् मैं अब आप लोगों को इस विषय में अपने-अपने विचार प्रकट करने को कहता हूँ।" इतना कह सेठ केकाजी भाई अपने आसन पर बैठ गए।

सेठजी के वक्तव्य के पश्चात् बंगाली समाज के एक प्रमुख व्यक्ति ने अपना वक्तव्य दिया। उसने भी यह कहा कि कलकत्ता में बंगाल से बाहर के लोगों को बुला-बुलाकर बसाया जा रहा है। हमें इस विषय में भी अपना मत प्रकट करना चाहिए।

इसके पश्चात् कलकत्ता कांग्रेस कमेटी का मन्त्री, एक दुबला-पतला आदमी, मोटी खद्दर की पोशाक पहने, खड़ा हुआ और कहने लगा, "मुझको भारी दुःख है कि नगर के ऐसे प्रसिद्ध व्यक्ति भी इस प्रकार की साम्प्रदायिक बातें करने लगे हैं। हिन्दू और मुसलमान भाई-भाई हैं। एक के पास दो पैसे अधिक चले गए या कम चले गए तो क्या? इन छोटी-छोटी बातों से देश के वातावरण को विगाड़ने से क्या लाभ है? यदि आज सुहरावर्दी प्रीमियर हैं या कोई और, तो इससे क्या होता है? यह तो राजनीति है। इससे मेरी प्रार्थना यह है कि यह समय इस किस्म की बातों का नहीं। मैं प्रोफेसर साहब से यह निवेदन करूँगा कि उनका यह सब आयोजन अत्यन्त हानिकारक है। इससे देश में कटुता बढ़ने की सम्भावना है।"

इसके उपरान्त अनिमा स्वयं खड़ी हो गई। उसने कहना आरम्भ कर दिया। "देश में कटुता बढ़ाना घोर पाप है, परन्तु कौन बढ़ाता है और उस कटुता बढ़ाने वाले को मना न करना सर्वथा उचित नहीं है। मैं छोटी-मोटी बातों के विषय में कुछ कहना नहीं चाहती। यह नौकरियाँ और व्यापार सम्बन्धी रियायतें, बहुत आवश्यक होते हुए भी सिद्धान्तात्मक बातों के सामने कुछ भी अस्तित्व नहीं रखतीं। मैं यह कहना चाहती हूँ कि वर्तमान सरकार, यहाँ पर ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर रही है जिससे कलकत्ते की गलियाँ खून से रँगी जाने वाली हैं। इस नीति का विरोध न करना और इस परिस्थिति के बनने को न रोकना देश को हानि पहुँचाना है।

"मैं आपको उस परिस्थिति को उत्पन्न करने वाली बातें पहले बताना चाहती हूँ। अभी-अभी बंगाल के प्रीमियर साहब ने पत्र-प्रतिनिधियों के सम्मुख यह वक्तव्य दिया है कि यदि अंग्रेजी सरकार ने कांग्रेसियों को केन्द्रीय सरकार की प्रबन्धक कौंसिल में आने दिया तो वह बंगाल को हिन्दुस्तान से पृथक् देश घोषित कर देगा। यह एक उसूल की बात है, एक देश के एक प्रान्त का प्रीमियर अपने प्रान्त को देश से पृथक् घोषित करने की बात कर ही क़ैसे सकता है? यह बात है जो प्रान्त और देश में कटुता उत्पन्न करने वाली है। इसका किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। प्रीमियर साहब ने अभी तक इस वक्तव्य पर पश्चात्ताप प्रकट नहीं किया। मेरे से पूर्व बोलने वाले ने यह कहा है कि हमें कोई ऐसी बात नहीं करनी चाहिए जिससे हिन्दू-मुसलमानों में व्यर्थ का झगड़ा बढ़े। मैं उनसे इस बात में पूर्णतः सहमत हूँ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसीलिए कहती हूँ कि इस प्रीमियर को एक क्षण के लिए भी इस अधिकार-पूर्ण स्थान पर नहीं रहने देना चाहिए। इसको इस पद से न निकालने का यत्न करना देश में अशान्ति फैलाने में सहायता देनी है।

"इससे भी अधिक एक घोर आपत्तिजनक बात मैं आपके सम्मुख रखना चाहती हूँ। मुस्लिम लीग ने हिन्दुस्तान में डायरैक्ट ऐकशन चलाने की धमकी दे रखी है। मुस्लिम लीग के प्रधान मिस्टर जिन्ना अभी दिल्ली में थे। वहाँ एक पत्र-प्रतिनिधि ने उनसे पूछा था कि क्या उनका डायरैक्ट ऐकशन अहिंसात्मक होगा? इसका उत्तर उसने केवल यह दिया है कि कांग्रेस की भाँति मुस्लिम लीग ने अहिंसात्मक रहने की झूठी कसम नहीं खा रखी है। और कलकत्ता में यह अफवाह फैल रही है कि मुस्लिम लीग का डायरैक्ट ऐकशन कलकत्ता में शुरू होने वाला है।

"ऐसी परिस्थति में हमारा कुछ कर्तव्य है या नहीं? मैं यदि यह कहूँ कि हम लोगों को न तो मुसलमानों पर भरोसा करना चाहिए, न ही सरकार पर भरोसा रखना चाहिए, तो क्या मैं कोई गलत बात कहती हूँ? मुस्लिम लीग का डायरैक्ट ऐकशन अहिंसात्मक नहीं होगा। सरकार इसमें हिन्दुओं की सहायता नहीं करेगी। तो क्या इस अवसर पर हिन्दुओं की स्त्री-जाति के एक प्रतिनिधि के रूप में आपसे अपनी बहिनों की रक्षा की माँग नहीं कर सकती? क्या आप पसन्द करेंगे कि आपकी बहू-बेटियाँ आपकी आँखों के सामने उठा ली जाएँ और पतित की जाएँ..."

"चुप रहो। यह बकवास बन्द करो। तुम कौन हो जो इस प्रकार की झगड़े की बातें करती हो?" उसी खद्दरधारी ने, जो अनिमा से पहले बोल चुका था, उठकर क्रोध में कहा।

अनिमा ने गम्भीर होकर कहा, "आप बैठ जाइए। मुझे अपनी बात कह लेने दीजिए।"

"मैं नहीं बोलने दूँगा। यह देशद्रोह की बात मैं यहाँ नहीं चलने दूँगा। मैं..."

अनिमा ने उसकी बात टोककर कहा, "आप बैठ जाइए। मेरे बाद आप जो इच्छा हो, कह सकेंगे। मैं कह रही थी कि डायरैक्ट ऐकशन के कलकत्ते में शुरू होने की सम्भावना है..."

वही खद्दरधारी फिर खड़ा होकर कहने लगा, "यह सब झूठ है। इसमें कोई सचाई नहीं, मैं प्रधान जी से कहता हूँ कि इस लड़की का बोलना बन्द कर दिया जावे।"

अनिमा बैठी नहीं थी। जब वह खद्दरधारी कह चुका तो अनिमा ने फिर कहना शुरू कर दिया, "डायरैक्ट ऐकशन कलकत्ता में होगा, मुझको पक्का पता है। मेरे पास इस बात के प्रमाण हैं। यह बात तो समाचार-पत्रों में भी प्रकाशित हो चुकी है कि छुरियों और भालों की पेटियाँ पंजाब से आईं और कलकत्ता स्टेशन पर पकड़ी गई हैं। कुछ दिन से इस नगर में पठानों और मुसलमान पंजाबियों की भीड़-भाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखाई देने लगी है···"

इस वाद-विवाद को बढ़ते देख प्रधान केकाजी भाई अपने स्थान से उठकर अनिमा से बोले, "आप अपना वक्तव्य शीघ्र समाप्त कर दीजिए। यह बताइए कि इस सबका आप उपाय क्या बताती हैं? हमने तो इन विषयों पर सोचने के लिए अपने राजनीतिक नेताओं को नियत कर रखा है। क्या उन पर आपका विश्वास नहीं रहा? उन्होंने कौन-सी ऐसी बात की है जिससे वे अविश्वास के पात्र बन गए हैं? इन बातों पर प्रकाश डालिए।"

"मैं यही तो कहना चाहती थी। अपने भाई से मेरा निवेदन है कि मुझको अपनी बात कह लेने दें और पश्चात् उसका खण्डन कर सकते हैं। मैं यह कह रही थी कि बंगाल के प्रीमियर ने बंगाल को हिन्दुस्तान से पृथक् कर देने की धमकी दे कर और मिस्टर जिन्ना ने अपने आन्दोलन को अहिंसात्मक रखने का आश्वासन न देकर एक अति भयानक परिस्थिति उत्पन्न कर दी है। उस परिस्थिति को रोकने की शक्ति सरकार में है। उससे उतरकर कांग्रेस में है और यदि ये दोनों, असफल रहें तो अपने को बचाने की शक्ति हिन्दू लोगों में है। सरकार पर मेरा विश्वास नहीं है। सरकार पर अविश्वास करना मैंने पूज्य गांधी जैसे नेताओं से ही सीखा है। वह ही कहते रहे हैं कि विदेशी सरकार, ईमानदार होती हुई थी, हमारी रक्षा नहीं कर सकती। इस समय तो ऐसा समझ में आ रहा है कि भारत में अंग्रेजी सरकार यहाँ 'सिविल-वार' करा देने में अपना भला समझती है।

"रही कांग्रेस वालों की बात। वह अपने सत्याग्रह और अहिंसात्मक उपायों से हिन्दू-मुस्लिम झगड़े में कुछ कर सकेंगे, समझ में नहीं आता। यह मेरे भाई का काम है कि वह समझावे कि हिन्दू-मुस्लिम फसाद हो जाने पर किस प्रकार उसको रोक सकेंगे। मैं तो समझती हूँ कि कांग्रेस झगड़े को रोकने के लिए जो भी यत्न करेगी वह जनता के सहयोग के बिना नहीं कर सकती। चाहे तो उसका उपाय अहिंसात्मक हो चाहे हिंसात्मक, वह सर्वसाधारण के सहयोग के बिना कैसे कर सकेंगे? १९४२ का आन्दोलन तो वह शान्तिमय रख नहीं सके और यदि इस विपत्ति का मुकाबला करना है तो वह मुकाबला भी अहिंसात्मक नहीं रह सकेगा।

"मुझे तो कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि कांग्रेस इस विषय में कुछ नहीं करेगी। जो कुछ भी करना है वह कांग्रेस से बाहर के लोगों को करना है···"

इस समय सेठ साहब ने अनिमा को बैठ जाने को कह दिया, "अब तुम बैठ जाओ। तुम्हारा समय हो चुका है।"

अनिमा बैठ गई। वही कांग्रेसी पुनः कुछ कहना चाहता था, परन्तु सेठ साहब ने उसके स्थान एक और को कहने के लिए खड़ा कर दिया। वह बंगला साहित्य-सभा का प्रधान था। इसने अपना दृष्टिकोण इस प्रकार वर्णन किया, "मैं समझता हूँ कि सारा झगड़ा पाकिस्तान न बनने देने के कारण है। कांग्रेस की यह भारी भूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि इसके बनने में व्यर्थ का अड़ंगा लगा रही है। बंगाल की आत्मा तो बंगाल के एक पृथक् देश बन जाने से प्रसन्न ही होगी। यदि बंगाल के प्रीमियर ने बंगाल को भारत से पृथक् कर देने के लिए कहा है तो कोई अनुचित बात नहीं कही। साहित्य एक जाति की माँ है और बँगला साहित्य सर्वांगपूर्ण है। एक बंगाली मुसलमान एक बंगाली हिन्दू के अधिक समीप है। एक बंगाली हिन्दू का भारत के अन्य लोगों से बहुत मामूली सम्बन्ध है।"

इसके पश्चात् एक मारवाड़ी उठकर कहने लगा, "मुझे यह देख अति विस्मय हुआ कि संसार की वास्तविक बात व्यापार, जिससे देश में धन-दौलत की वृद्धि होती है, की ओर से हमारा ध्यान हटाकर राजनीति के कीचड़ में ले जाकर फँसा दिया गया है। राजा चाहे कोई हो, मतलब की बात व्यापार और दस्तकारी हैं। ये जिस कौम के हाथ में होंगी, वही असली राजा होगी। इससे मैं कहता हूँ कि हमें राजनीति के पचड़े में न पड़कर व्यापार की ओर ध्यान देना चाहिए।"

इस प्रकार सभा में संवाद का विषय बदल गया। व्यापार और बचत के विषयों पर बातचीत होने लगी। विवाह-शादियों में कम खर्चा करने से लेकर मिनिस्टरों के वेतन में कमी तक की बातों पर संवाद हुआ।

अन्त में प्रोफेसर गिरीश सबका धन्यवाद करने के लिए खड़ा हुआ। उसने कहा, "यद्यपि आज के समारोह को बुलाते समय मुझे बातचीत के इस स्तर पर चले जाने की सम्भावना नहीं थी, फिर भी मैं समझता हूँ कि आज का आयोजन असफल नहीं हुआ। कई बातें हमने सुनी हैं। अपने खर्चे कम होने के उपायों और साधनों पर विचार से लेकर बंगाल के एक पृथक् देश बनने के विषय तक विचार हुआ है। मैं तो इस विषय में अपनी ओर से कुछ नहीं कहना चाहता। फिर भी अनिमा देवी ने जो परिस्थिति हमारे सम्मुख रखी है, वह प्रत्येक विचारशील व्यक्ति के लिए समझने की वस्तु है। उसकी बात को इस कारण त्याज्य नहीं कहा सकता कि उससे मुसलमान नाराज हो जावेंगे अथवा किसी के सिद्धान्त, जिन पर अभी परीक्षा की जा रही है, अमान्य हो जावेंगे। उसने विचार के लिए एक बात रखी है। यदि आप उसमें कुछ भी सचाई समझते हैं तो उसके परिणामों से बचने के लिए यत्न करना चाहिए।

"अन्त में मैं सेठजी का और आप सबका धन्यवाद करता हूँ, जो आपने इतना समय देकर हमें लाभ पहुँचाया है और इस सेवक के गृह में भोजन पाकर इसे पवित्र किया है।"

समारोह समाप्त हुआ, परन्तु नगर के नेताओं की इस मनोवृत्ति को देखकर दोनों को निराशा हुई। गिरीश ने कहा, "अनिमा ! हमको तो कार्य करना है, फल की चिन्ता नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ११ :

इस दावत के दो दिन बाद की बात है। चेतनानन्द के पास एक पत्र, जिस पर लाल मोटे अक्षरों में 'कान्फिडैन्शल' लिखा था, पहुँचा। अनिमा ने, प्रथा के अनुसार वह पत्र बिना खोले चेतनानन्द को दे दिया। चेतनानन्द ने पत्र खोल पढ़ा और फिर उसे अपनी जेब में रख लिया। अनिमा ने समझा कि शायद पत्र उसके अपने विषय में है। उसने यह भी अनुभव किया कि उस पत्र के पढ़ने के पश्चात् चेतनानन्द का मुख गम्भीर हो गया है। दिन-भर वह चेतनानन्द की अवस्था उसके मुख के उतार-चढ़ाव से जानने का यत्न करती रही। सायं चाय के समय उसने असल बात जानने का यत्न किया। उसने पूछा, "आज आप कुछ चिन्तित प्रतीत हो रहे हैं। क्या मैं कारण जान सकती हूँ?"

चेतनानन्द इस प्रश्न से और घबराया। वह अपने चाय के प्याले में देखता हुआ सोचने लगा। अनिमा ने समझा कि शायद उसकी सर्विस के विषय में कोई बात हो गई है। इससे उसने अपनी उत्सुकता के लिए क्षमा माँगते हुए कहा, "क्षमा कीजिए। मेरे मन में आपकी चिन्ता के विषय में जानने की उत्सुकता किसी बुरे भाव से नहीं थी। यदि कोई ऐसी बात है जिसको आप बताना नहीं चाहते, तो इसके पूछने के लिए क्षमा चाहती हूँ।"

चेतनानन्द ने अनिमा की आँखों में देखते हुए, कुछ आगे झुककर धीरे से कहा "अनिमा देवी! यदि मैं कोई भेद की बात कहूँ तो उसे किसी से कहोगी तो नहीं?"

"आफिस के विषय में हमने शपथ ली हुई है, और मैंने आज तक उसका उल्लंघन नहीं किया। इसी प्रकार मैं वचन देती हूँ कि यदि कोई बात आपके विषय में भी होगी तो किसी से नहीं कहूँगी।"

"मुझे आज कुछ ऐसा करने को कहा गया है, जिसके करने को मेरी आत्मा नहीं मानती। मेरे लिए दो मार्ग खुले हैं। एक तो इस पद को त्याग दूँ और दूसरा अपनी आत्मा का हनन कर सरकार के कहने के अनुसार कार्य करूँ।"

अनिमा इस परिस्थिति को सुनकर चुप रह गई। वह न तो बात बताने के लिए चेतनानन्द को उत्साहित करना चाहती थी और न ही अपनी बात जानने की उत्सुकता को रोक सकती थी। इन दो प्रकार की इच्छाओं के कारण, उसने चुप रहना ही ठीक समझा। बात चेतनानन्द ने बताई, "देखो अनिमा देवी! मुझे कहा गया है कि अब समय आ गया है कि हिन्दुओं की साजिशों का भण्डा फोड़ दिया जावे। इसलिए पंजाब से जो हथियार कलकत्ता के स्टेशन पर पकड़े गए हैं, वह हिन्दुओं द्वारा भेजे हुए और हिन्दुओं के लिए आए घोषित किए जावें। मैं यह बात भली-भाँति जानता हूँ कि वे हथियार गुजरांवाला, पंजाब की एक मुसलमान फर्म के द्वारा भेजे गए थे और यहाँ के एक मुसलमान के पास आए थे। मैं सुबह से यही सोच रहा हूँ कि क्या करूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनिमा इस बात को सुन दुःख और विस्मय में डूब गई। दोनों ने चाय समाप्त की और उठ पड़े। उठते समय चेतनानन्द ने पूछा, "अनिमा देवी! आपने बताया नहीं कि मुझे क्या करना चाहिए?"

"मेरे बताने से क्या होगा? मुझको यह आशा ही नहीं करनी चाहिए कि मेरी सम्मति मानी जावेगी।"

"क्यों नहीं मानी जावेगी। जब मैं पूछता हूँ तो कम-से-कम उस पर विचार तो करूँगा ही।"

"शायद यह बात विचार करने योग्य भी नहीं होगी। मेरी आयु, मेरा अनुभव, मेरे विचार और मेरे वातावरण ऐसे हैं जिनके कारण मेरी बात को न तो आप कोई महत्त्व दे सकते हैं और न ही वह आपकी रुचि के अनुकूल होगी।"

"यह आपने कैसे जान लिया है?"

"आपसे नित्य के सम्पर्क और वार्तालाप से।"

"आप मेरे विषय में बहुत खराब राय रखती हैं।"

"मैं आपको अपने से बहुत ऊँची पदवी पर समझती हूँ।"

"क्या ऊँची पदवी पर होने से ठीक विचार रखने वाला सिद्ध हो जाता है?"

"नीची और ऊँची पदवी पर होने से विचार-भेद होना प्रायः सम्भव है।"

चेतनानन्द का अनुभव था कि युक्ति में अनिमा से जीतना प्रायः असम्भव होता है। इससे उसने युक्ति करना बन्द कर अपने मन की भावना बता दी। "इस बहस को छोड़िए, अनिमा देवी! मैं आपसे इस विषय में राय चाहता हूँ।"

"आपने दो में से एक बात करने को पूछा है। आप समझते हैं कि या तो आप को नौकरी छोड़ देनी चाहिए या आपको झूठ बोलना पड़ेगा। मैं समझती हूँ कि दोनों बातें गलत हैं। आपको अपने स्थान पर डटे रहना चाहिए और झूठी रिपोर्टें भी नहीं भेजनी चाहिए। जब आपसे कोई पूछे तो कह दीजिए कि मेरे पास जैसे समाचार आते हैं, मैं तो वही लिख देता हूँ। परिणाम यह होगा कि आपको या तो डिस-मिस कर दिया जाएगा, या आपको यहाँ से बदलकर किसी और स्थान पर रख दिया जावेगा।"

"पद-त्याग करने से डिसमिस होना ठीक रहेगा?"

"निश्चय। पद-त्याग में विवशता की झलक प्रतीत होती है और डिसमिस होने में अपने पर अन्याय किए जाने की झलक प्रतीत होती है। सत्य को प्रकाशित करते हुए डिसमिस होने में बहादुरी और आन रखने की भावना का पता चलता है।"

उस दिन तो बात वहीं समाप्त हो गई, परन्तु उसके दो दिन पश्चात् अनिमा को नौकरी से जवाब मिल गया। आज्ञा चेतनानन्द के द्वारा ही मिली। चेतनानन्द इस आज्ञा को पढ़ चकित रह गया। उसने वह चिट्ठी ही, जिस पर आज्ञा लिखी आई थी, अनिमा को दिखा दी। अनिमा ने चिट्ठी पढ़ी। लिखा था, "अनिमा देवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैनर्जी को एक मास के नोटिस के स्थान पर उस काल का वेतन देकर तुरन्त छुट्टी कर दी जावे और उसके स्थान पर मिस असखरी रिजवी, बी०ए० को नियुक्त कर दिया जावे।"

"चलो छुट्टी हुई।" अनिमा ने मुस्कराते हुए कहा।

"यह क्यों हुआ है, मैं नहीं जानता?"

"मैं जानती हूँ। मगर उसके बताने की आवश्यकता नहीं। आप कृपया मेरे वेतन के लिए आज्ञा कर दें।"

"मुझे बहुत अफसोस है, अनिमा देवी। अब आपको गुजर करने में दिक्कत होगी।"

"देखिए, कोई-न-कोई साधन मिल ही जावेगा।"

चेतनानन्द ने 'पे-बिल' बना, वेतन दिलवा दिया और सायंकाल चाय के समय उसे चाय का निमन्त्रण देते हुए कहा, "अनिमा देवी! आज मैं चाय आफिस के बाहर पीना चाहता हूँ और मैं निवेदन करता हूँ कि आप मेरे साथ चाय पीने की कृपा करेंगी।"

"मुझको कोई आपत्ति नहीं। आप अपने विषय में विचार कर लें। आज मैं सरकार की दृष्टि में निन्दनीय हो गई हूँ। मुझसे सम्पर्क रखने वाले भी निन्दनीय हो सकते हैं। मेरे लिए तो अब आफिस में उस काल के लिए भी, जिसके लिए मुझको वेतन मिल चुका है, ठहरना उचित नहीं माना गया।"

"मुझको इसकी चिन्ता नहीं। मैंने तो आपकी राय पर कार्य करना आरम्भ कर दिया है। मैं जो ठीक समझता हूँ, करता जाऊँगा और सरकार को यदि मेरा रखना मंजूर नहीं, तो मुझको निकाल देगी।"

: १२ :

अनिमा चेतनानन्द के साथ चाय पीने चल पड़ी। मार्ग में ही चेतनानन्द ने अपने मन की बात आरम्भ कर दी। "अब आपसे पुनः मिलने का अवसर मिला करेगा या नहीं?"

"मैं विचार करती हूँ कि मेरा आपसे मिलना आपके लिए ठीक नहीं रहेगा। मैं आपको एक रहस्य की बात बताती हूँ। कुछ दिन हुए गिरीश जी ने नगर के मुख्य-मुख्य लोगों को एक भोज दिया था। भोज के पश्चात् नगर की वर्तमान परिस्थिति पर विचार-विनिमय हुआ तो मैंने भी उस समय अपने विचार प्रकट किए थे। वे विचार किसी ने 'इण्टेलिजेन्स' विभाग के पास पहुँचा दिए प्रतीत होते हैं और मेरा डिसमिसल उसका ही परिणाम हो सकता है। शायद अब शीघ्र ही मैं गिरफ्तार कर ली जाऊँगी। आपका मेरे साथ दिखाई देना आपके लिए शुभ नहीं हो सकता।"

"इस पर भी मेरी इच्छा आपसे मिलते रहने की होती ह। आओ, हम एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय कर लें। प्रतिदिन सायं पाँच बजे मैं आपकी, न्यू रायल कैफे में प्रतीक्षा किया करूँगा।"

"आपका व्यवहार इस काल में मेरे साथ बहुत सहानुभूतिपूर्ण रहा है और मैं आपका कहना टाल नहीं सकती, परन्तु आपको इसमें क्या लाभ होगा, मैं समझ नहीं सकी। इसका परिणाम अच्छा प्रतीत नहीं होता। साथ ही यह भी बात है कि मैं अब बेकार हूँ। मुझको काम ढूँढ़ना है और इस भाग-दौड़ में समय मिलेगा, कह नहीं सकती। यदि कहीं मेरे पीछे पुलिस लग गई तो आपके विरुद्ध भी एक 'फाईल' बन जावेगी।"

"मुझे अब इस बात की चिन्ता नहीं रही। आपने कहा था न, कि नौकरी छोड़ने से डिसमिस हो जाना ज्यादा अच्छा है और अपने आत्मा का हनन करना ठीक नहीं! इसी प्रकार मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि जब मेरी अंतरात्मा आपसे मिलकर आपसे बातचीत करने को चाहती है तो मुझे पुलिस से डरने की आवश्यकता नहीं।"

अनिमा, चेतनानन्द के इस कथन से जहाँ विस्मित हुई वहाँ चिन्तित भी। वह सोचती थी कि उससे मिलना और उससे बातचीत करना कैसे इतना आनन्दमय हो गया कि इसके लिए दो सहस्र रुपये मासिक वेतन की नौकरी भी तुच्छ हो गई। उसने चेतनानन्द की स्त्री नसीम को देखा था और उसे अपने से कहीं अधिक सुन्दर पाया था। फिर वह बातें भी बहुत मीठी करती थी। इससे चेतनानन्द को अपने प्रेम में फँसे समझ लेना सुगम नहीं था। वह उसके, अपने साथ इन अनुराग के उठने के रहस्य को जानने के लिए स्वयं उत्सुक हो उठी। अतएव उसने मुस्करा कर कहा, "मैं तो आपको यही सम्मति देती हूँ कि आप, व्यर्थ-सी बात के लिए अपनी, बहिन नसीम की और अपनी होने वाली संतान की भलाई की हत्या न कर दें। मैं क्रान्तिकारी की लड़की और हिन्दुत्व में विश्वास रखने वाली हूँ। आप एक सरकारी अफसर, एक मुसलमान स्त्री के पति और महात्मा गांधी के भक्त हैं। भला आपका और मेरा क्या सम्बन्ध हो सकता है? इस पर भी यदि आप कभी चाहेंगे तो मुझे आपसे मिलने में आपत्ति नहीं होगी।"

इस समय वे 'कैफे' में जा पहुँचे थे। वहाँ एक कोने में बैठ चाय का आर्डर कर, चेतनानन्द ने अनिमा से कहा, "मैं स्वयं इस बात का कारण नहीं समझ सका। मैं आपकी बातें सुनने के लिए सदैव उत्सुक रहता हूँ। कभी रात के समय नींद खुल जाती है तो आपकी बातों पर विचार करने लगता हूँ। इससे मन में एक विशेष प्रकार की उत्सुकता और कौतूहल उत्पन्न होने लगता है। मेरे मन में आपसे मिलकर मन में उठ रहे भिन्न-भिन्न प्रश्नों को पूछने की इच्छा जाग पड़ती है। यह क्यों, मैं नहीं कह सकता। मेरी स्त्री ने एक दिन कहा था कि मैं आपसे प्रेम करने लगा हूँ। इसी कारण वे आपसे मिलीं। मिलने के पश्चात् उन्हें विश्वास हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है कि उसके सम्मुख मैं आपसे प्रेम नहीं कर सकता। वह आपसे बहुत सुन्दर है।''

अनिमा मुस्कराते हुए गम्भीरतापूर्वक चेतनानन्द की बातें सुन रही थी। चेतनानन्द ने भी गम्भीरतापूर्वक अपना कहना जारी रखा। उसने कहा, "मैं स्वयं भी इस बात का अनुभव करता हूँ कि मेरा आपसे प्रेम नहीं है। प्रेम उन अर्थों में जिनमें लोग इसे मानते हैं। मैं जब नसीम से अपने विवाह के पूर्व मिला करता था तो अपने मन की उतावली को अनुभव किया करता था। मुझे भलीभाँति याद है कि किस प्रकार की बेताबी वह हुआ करती थी। अब आपके चिन्तन से मेरे मन में बेताबी नहीं होती। न ही मन व्याकुल होता है। आपके विषय में विचार करने से एक अति शान्त, सुखप्रद तथा मधुर संतोष होता है!''

"बहुत विचित्र है।''

"हाँ, मैं ऐसा ही अनुभव करता हूँ। कारण न जानते हुए भी कार्य करने पर विवश रहता हूँ।''

"अच्छी बात है। हम इस कारण को ढूँढ़ने का यत्न करेंगे। यह तो आप जानते हैं कि गिरीश जी से मेरा क्या सम्बन्ध है। शेष एक ही बात रह गई है। मेरा कोई भाई नहीं। शायद भगवान ने उस रिक्त स्थान को भरने के लिए आपको प्रेरणा दी है। इस समस्या का सुझाव तो भविष्य के गर्भ में ही है। मुझे तो यह भय लग रहा है कि हमारा मेल-जोल अधिक काल तक नहीं चल सकेगा। मुझे शीघ्र ही भूम्यान्तर्गत हो जाना पड़ेगा।''

"क्यों? मैं तो इसमें कोई कारण नहीं समझता।''

"मेरे जैसे लोगों के भाग्य में ऐसा ही लिखा है। हम लोग अन्याय और अत्याचार सहन नहीं कर सकते। जब हम उसका विरोध करते हैं तो यह बात अन्याय करने वालों को पसन्द नहीं होती। परिणाम यह होता है कि हम लोगों का अन्यान्य करने वालों से संघर्ष हो जाता है। अन्यायी प्रायः प्रबल होता है और हमारे लिए उसका मुकाबिला अधिक-से-अधिक काल तक करने के लिए भूम्यान्तर्गत हो जाना आवश्यक हो जाता है।''

"परन्तु अब तो ब्रिटिश-राज्य नहीं रहा। वह गया और उसके साथ अन्याय और अत्याचार भी गए समझने चाहिएँ।''

"मैं ऐसा नहीं समझती। न तो अभी अंग्रेज गया है और न ही अन्यान्य और अत्याचार की समाप्ति हुई है। इसके लिए प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं। जो आँखों वाले हैं, वे सब कुछ समझ और देख रहे हैं।''

"यह अभी परिवर्तन-काल है। धीरे-धीरे सब बातें अपने-आप सुलझ जावेंगी।''

इस समय बैरा चाय लेकर आ गया। उसने चाय और खाने का सामान मेज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर लगा दिया। उसके सामने दोनों चुप रहे। जब बैरा चला गया, चेतनानन्द ने बात आरम्भ करते हुए कहा, "कुछ भी हो अनिमा देवी ! जो भी सम्बन्ध मेरा आपसे है, उसे मैं स्थायी रखना चाहता हूँ और उसमें कोई भी परिस्थिति बाधा न डाल सके, ऐसा चाहता हूँ।"

आपके लिए यह घाटे का सौदा होगा। खैर छोड़िये इस बात को। मैं एक बात आपसे पूछना चाहती थी, जो एक अधीनस्थ कर्मचारी होने से मैं अपने आफिसर से नहीं पूछ सकी। अब मैं स्वतन्त्र हूँ और हम अब बराबरी के स्तर पर हैं। यदि आप बुरा न मानें तो मैं पूछूँ ?"

"हाँ, पूछ सकती हैं। मैं नहीं जानता कि मेरे मन में कोई ऐसी बात है, जिसके बताने में आपत्ति हो।"

"आप कांग्रेसी विचार के आदमी थे। पंजाब की धारा-सभा में उसकी ओर से सदस्य निर्वाचित हुए थे। फिर भी आपने कांग्रेस-विरोधी मुस्लिम लीग के मन्त्रिमंडल के अधीन नौकरी स्वीकार कर ली। या तो आप कांग्रेस में किसी आदर्श से प्रेरित होकर सम्मिलित नहीं हुए थे, या आप पर कोई ऐसी कठिनाई आ पड़ी थी कि आप सिद्धान्त पर दृढ़ नहीं रह सके। आपके अन्य गुणों को देखते हुए, मैं इस विषमता को समझ नहीं सकी।"

इस प्रश्न ने चेतनानन्द को अपने पर विचार करने पर बाध्य कर दिया। वह गम्भीर विचार में खो गया और चुपचाप सुरकी लगा-लगातार चाय पीने लगा। अनिमा अपने लिए चाय बना रही थी और अपने प्याले में ढल रही चाय को देख रही थी। जब प्याले में चाय, दूध और चीनी डाल चम्मच से घोलने लगी तो उसे ज्ञान हुआ कि चेतनानन्द ने उसके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। उसने आँखें उठाकर देखा तो चेतनानन्द के मुख पर चिन्ता और अनिश्चितपन की झलक पाई। उसने उसे उत्तर देने की कठिनाई से छुड़ाने के लिए कह दिया, "यदि कोई ऐसी बात है जो आप नहीं बताना चाहते तो न सही। यह कोई ऐसी बात नहीं, जिसका जानना मेरे लिए अनिवार्य हो।"

"नहीं ! यह बात नहीं।" चेतनानन्द ने सचेत हो कहा, "मैं बताने से झिझक नहीं रहा। मैं तो अपने मन की बात को जानने का यत्न कर रहा हूँ। अपने व्यवहार का जो कारण मैंने मान रखा था, वह वर्तमान अवस्था में मिथ्या और सारहीन प्रतीत हो रहा है। कुछ दिनों से मेरे मस्तिष्क में भाँति-भाँति के विचार और फिर उनमें संघर्ष चल रहा है। मैंने झूठे समाचार देने से इन्कार कर दिया है और अपनी नौकरी के चले जाने की भी परवाह नहीं की। मैंने आपके साथ सम्बन्ध बनाने की इच्छा प्रकट की है और आपके साथ बन्दी हो जाने से भी भय नहीं किया। इस परिस्थिति में, जब यह सोचता हूँ कि बड़े वेतन के लिए मैंने धारा-सभा की सदस्यता छोड़ी, कांग्रेस छोड़ी और फिर एक विरोधी पार्टी की नीति चलाने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधन बना, तो अपने किए पर पुनरावलोकन करने के लिए विवश हो गया हूँ। आपके प्रश्न ने इसमें प्रोत्साहन दिया है।''

अनिमा ने मुस्कराते हुए कहा, ''मुझको बहुत खेद है कि मैंने व्यर्थ में आपको परेशान किया है।''

''परेशानी कोई नहीं। केवल अपने मन की अवस्था के विश्लेषण में कठिनाई अनुभव कर रहा हूँ। देखो, अनिमा देवी, मैं आपको अपना संक्षिप्त इतिहास बताता हूँ। मैं एक लड़की से प्यार करता था और उससे विवाह निश्चय कर जब उसके और अपने माता-पिता से कहने गया तो दोनों के माता-पिता ने हमारे कार्य को पसन्द नहीं किया। लड़की के माता-पिता के नापसन्द करने का प्रभाव यह हुआ कि वह निश्चित तिथि को समय पर उपस्थित ही नहीं हुई। विवाह का प्रबन्ध और दावत पर किया खर्चा सब व्यर्थ गया। इसके अतिरिक्त सैकड़ों मित्रों के सामने लज्जित होना पड़ा। मेरे इस प्रकार के व्यवहार से मेरे पिता ने मुझको अपने उत्तराधिकार से वंचित कर दिया।

''ऐसी अवस्था में मेरा मन अत्यन्त क्षुब्ध हो उठा। इस समय मुझको नसीम मिली। वह मुझसे प्रेम करने लगी। आपने उसे देखा है और यह तो समझ ही गई होंगी कि वह बहुत सुन्दर है। मैं उसके प्रेम को ठुकरा नहीं सका। विवाह के पश्चात् निर्वाह का प्रश्न उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था। पंजाब की धारा-सभा से क्या आय हो सकती थी? इस कारण मैंने नसीम के जीजा मिस्टर पराचा का प्रस्ताव, कि यहाँ नौकरी कर लूँ, स्वीकार कर लिया। नौकरी करते अभी दो मास से कुछ ही ऊपर हुआ है कि इसकी कठिनाइयों का अनुभव होने लगा है। अब मैं अपनी आत्मा की पुकार को पुनः सुनने लगा हूँ और मेरे मन में नौकरी की महिमा कम होने लगी है। इस सबका परिणाम क्या होगा? कह नहीं सकता।''

अनिमा यह कथा सुन चुप रही। चेतनानन्द चाय पीने लगा। जब चाय समाप्त हो गई तब भी दोनों चुपचाप अपने-अपने विचारों में डूबे हुए थे। अनिमा को पहले चेतना हुई और उसने उठते हुए कहा, ''अब देर हो गई है। मैं समझती हूँ कि हमें चलना चाहिए।''

''मैं कल आपकी यहाँ प्रतीक्षा करूँगा।'' चेतनानन्द ने अपने मन में उठ रहे निराशा के विचारों को छोड़कर कहा।

: १३ :

चेतनानन्द 'कैफे' से बाहर निकला तो उसका चित्त घर जाने को नहीं हुआ। वह ट्राम में बैठ 'लेक' के किनारे घूमने चला गया। 'लेक' के किनारे रखी एक बेंच पर बैठ अपने मन में उठ रहे विचारों का विश्लेषण करने लगा। वह सोच रहा था कि अनिमा गिरीश से प्रेम करती है। उनके शीघ्र ही विवाह होने की किंचित् भी आशा नहीं। इस पर भी वह निराश नहीं और धैर्य से समय के अनुकूल होने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीक्षा कर रही है। इसके विपरीत उसका अपना व्यवहार है। पार्वती के विवाह के अवसर पर उपस्थित न होने पर वह उससे ऐसा रूठा कि उससे मिलकर उसके विचारों को जानने का भी यत्न नहीं किया। यह कैसा प्रेम रहा? नसीम बहुत सुन्दर है, परन्तु पार्वती जैसी सभ्यता, गम्भीरता और दूरदर्शिता उसमें नहीं है। यह तो चंचल, चपल, फुहर और भावुकतापूर्ण है। इसके विचार करने और फिर कार्य करने में अन्तर नहीं होता। कई बार जब कुछ कह लेती तो पीछे उसकी गलती को अनुभव कर क्षमा माँगने लगती। इस छोटे-से विवाहित काल में भी कई बार झगड़ा हो चुका था। एक समय तो वह यह समझने लगी थी कि वह अनिमा से प्रेम करने लगा है, परन्तु अनिमा को देख उसे अपने विचारों की भूल पर पश्चात्ताप होने लगा। कभी चेतनानन्द को घर आने में देरी हो जाती तो वह यह सन्देह कर कि किसी स्त्री की संगति में रहा होगा, उससे लड़ जाती, परन्तु बाद में ठीक कारण का विश्वास हो जाने पर क्षमा माँग लेती। चेतनानन्द इस प्रकार के विचारों में लीन बैठा-बैठा अपने आपको भूल गया। सूर्यास्त हुआ तो उसे ज्ञान हुआ कि उसे घर चलना चाहिए।

घर पहुँचा तो नसीम प्रीमियर साहब के घर गई हुई थी। आजकल चेतनानन्द ने अपना निवास-स्थान भवानीपुर में बना लिया था। नसीम को वहाँ न देख, वह अपने ड्राइंगरूम में चला गया और एक आरामकुर्सी पर बैठ, फिर अपने विचारों में लीन हो गया। उसे नौकर से पूछने पर मालूम हुआ था कि नसीम घर से दोपहर के दो बजे गई थी। परन्तु उसको इस बात की चिन्ता नहीं लगी। वह आज एक नई दुनिया में विचर रहा था।

चेतनानन्द पार्वती का मुकाबला अनिमा देवी से कर रहा था। दोनों में बहुत बातों में समानता थी। दोनों न तो बहुत बोलती थीं और न ही बनाव-शृंगार करती थीं। पार्वती अनिमा से अधिक सुन्दर थी और अनिमा पार्वती से अधिक समझदार। बंगाली लड़कियों की चपलता उसने अपने पिता से पाई थी और अपनी माँ से पंजाबियों की कार्यशीलता की मालिक बन गई थी। दोनों बातें करतीं-करतीं अतीत में खो जाती थीं। एक राजनीति से सर्वथा अछूती थी, दूसरी राजनीति में ही रमती थी। उसके श्वास-श्वास में से देश, जाति और राष्ट्र की गंध आती थी।

नसीम दोनों से अधिक सुन्दर थी परन्तु वह भावनाओं की पुंज थी। पल में गुलाब के फूल की भाँति खिल उठती थी और पल में ही चण्डी की भाँति अपने और चेतनानन्द के बाल नोंचने पर तैयार हो जाती थी। एक रात सोने से पूर्व चेतनानन्द उसे अनिमा की बात बताने लगा, "अनिमा अपने प्रेमी से प्रायः मिलती है और परस्पर प्रेम-प्रलाप न कर देश, जाति, आत्मा-परमात्मा और योग-मुक्ति की बातें करते हैं। इस प्रकार अपने व्रत पर, कि माँ की अनुमति के बिना विवाह नहीं करेंगे, आरूढ़ रह सकते हैं और इधर तुम और मैं हैं…"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना कहना था कि नसीम पर क्रोध सवार हो गया। वह क्रोध में कहने लगी, "तो जाओ न, उसी से विवाह कर लो। जब वह इतनी अच्छी है तो उसी के पास जा रहो···"

चेतनानन्द को पता लग गया कि सिर पर चण्डी सवार हो गई है। वह बिना किसी प्रकार का उत्तर दिए वहाँ से उठा और कपड़े उतार, अपने पलंग पर जाकर सो गया।

आधी रात गुजर जाने पर, जब वह गहरी नींद सो रहा था, नसीम चुपचाप उसके बिस्तर में घुसकर लेट गई और चेतनानन्द को यह जान बहुत अचम्भा हुआ कि उस रात वह बहुत ही प्रेममयी थी।

टेलीफोन की घण्टी बजी तो चेतनानन्द को समय का ज्ञान हुआ। भोजन करने का समय हो गया था। चेतनानन्द ने टेलीफोन उठा सुना तो उसमें नसीम बोल रही थी। उसने प्रीमियर के घर से टेलीफोन किया था। "मैं आज देरी से आऊँगी। आप भोजन कर लीजिए।"

"क्या बात है आज वहाँ?" चेतनानन्द ने पूछा।

"आज बेगम सुहरावर्दी कलकत्ता की चुनींदा-चुनींदा मुस्लिम खातून को दावत दिए हुए हैं।"

चेतनानन्द ने टेलीफोन बन्द कर दिया और बैरा को खाना लगाने को कह दिया।

खाना खाने के पश्चात् वह सिनेमा देखने चला गया। जब वह घर आया तो बारह बज चुके थे और नसीम अपने बिस्तर पर लेटी खुर्राटे भर रही थी। चेतनानन्द ने कपड़े उतारे और एक किताब ले, बिस्तर पर लेट पढ़ने लगा। कुछ देर में उसे उबासियाँ आने लगीं। उसने किताब को सिरहाने के नीचे रख चादर ओढ़ सोने की तैयारी कर दी।

वह 'बैड-स्विच' दबा, बिजली बुझाने ही लगा था कि नसीम की नींद खुल गई और वह अपने पलंग पर लेटी-लेटी पूछने लगी, "कहाँ चले गए थे आप?"

"आज चित्त कुछ उदास था और घर में अकेले बैठे-बैठे और भी उदासी होने लगी तो पिक्चर देखने चला गया था।"

"उदासी क्यों होने लगी थी?"

"आज अनिमा देवी डिसमिस कर दी गई हैं। और उसकी आर्थिक अवस्था का ध्यान कर चित्त में कुछ अफसोस हुआ था।"

"हाँ, प्रीमियर साहब बताते थे, वह उसको निकालने के लिए बिलकुल तैयार नहीं थे। परन्तु बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान ने उनसे आग्रह किया है कि कलकत्ता में शान्ति रखने के लिए इसको वन्दी बना जेल में डाल देना बहुत जरूरी है। यह घर-घर घूमकर लोगों को कहती-फिरती है कि कलकत्ता में फसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने वाला है। विवश, उसके वारण्ट निकालने की आज्ञा देनी पड़ी और उससे भी पहले उसको सरकारी नौकरी से डिसमिस करना आवश्यक हो गया। मुझको भी यह सुन बहुत अफसोस हुआ था, परन्तु पूर्ण नगर की रक्षा एक व्यक्ति की नौकरी से अधिक आवश्यक है।"

चेतनानन्द इससे और भी अधिक चिन्ता में पड़ गया। उसके मुख पर गंभीरता देख, नसीम ने पूछा, "आपको चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। आपने तो कुछ किया नहीं जिससे उसको हानि पहुँची है। जब उसके काम ही ऐसे हैं तो हम उसे कैसे बचा सकते हैं?"

"पर यह कैसे पता चल गया कि वह अशान्ति फैला रही है? उसकी प्रकृति इतनी सौम्य और सभ्य है कि उससे यह आशा करनी कि वह कोई बलवा कराने की कोशिश कर रही है, ठीक प्रतीत नहीं होता।"

"यह जानना मेरा और आपका काम नहीं। यह पुलिस का काम है।"

"पर तुम तो कह रही थीं कि प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान के कहने से उसे पकड़ने की आज्ञा दी गई है। तो क्या कांग्रेस का प्रधान पुलिस का अफसर हो गया?"

"क्या पुलिस से अधिक उसका विश्वास नहीं करना चाहिए?"

"वह एक राजनीतिक दल का आदमी है। उसकी बात पक्षपात से रहित होनी कठिन है।"

"यह बात मेरी समझ में नहीं आई।"

"इसमें समझने की कोई बात है भी नहीं। पुलिस के अफसर किसी राजनीतिक दल से सम्बन्ध न रखने से अधिक निष्पक्ष होते हैं। कांग्रेस के प्रधान का अपने विरोधी दल के आदमी को देश में अशान्ति फैलाने वाला मान लेना स्वाभाविक ही है।"

"परन्तु कांग्रेस तो एक राष्ट्रीय दल है न! इसका लक्ष्य देश को स्वतन्त्र करना है। अतएव इसका विरोधी होना देशद्रोह ही है।"

"मैं भी आज से एक मास पूर्व यही समझता था। परन्तु यह जान कि हिन्दू महासभा के सदस्य, देश को स्वतन्त्र करने का आदर्श रखते हुए भी, कांग्रेस में नहीं लिये जाते, मेरे विचार बदल गए हैं। हिन्दू महासभा और कांग्रेस में अन्तर उद्देश्य नहीं, प्रत्युत उपायों में है। जब से कांग्रेस ने अपने आधारभूत सिद्धान्तों में उपाय को सम्मिलित किया है तब से यह एक राजनीतिक दल-मात्र रह गई है। एक और बात में अन्तर है। यह है कौम, अर्थात् इस देश की जाति के लक्षण करने में। कांग्रेस, हिन्दुस्तानी उसको समझती है जो भी इस देश में रहता हो और हिन्दू महासभा हिन्दुस्तानी उसको समझती है जो इस देश में रहने के साथ-साथ इस देश के आचार, व्यवहार, रीति-रिवाज, पुण्य स्थान और पुण्य पर्वों को आदर से देखता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो। इससे भी देश को स्वतन्त्र करने की बात साँझी ही रहती है। इस पर भी हिन्दू सभाईटों के लिए कांग्रेस में स्थान न होने से कांग्रेस एक दल-मात्र रह गई है।"

"यह सब आपको अनिमा ने बताया मालूम होता है। उसके दिमाग में हिन्दू-मुसलमान का झगड़ा समाया हुआ है। इसी से तो उसे नौकरी के काबिल नहीं समझा गया।"

"तो इसका मतलब यह हुआ कि इस विषय में कांग्रेस और मुसलमान एकमत हैं।"

"यह मैं नहीं जानती। हाँ ! यह बात मैं समझती हूँ कि मुस्लिम लीग देश के एक हिस्से में मुसलमानों का राज्य चाहती है और कांग्रेस ने उसे, सिद्धान्त-रूप में, मान लिया है।"

"यही कारण है कि कांग्रेस मुस्लिम लीगी सरकार की सहायता कर रही है। और इस सहायता करने में हिन्दू सभाईटों को पकड़वा रही है।"

"मुझे कभी-कभी ऐसा मालूम होने लगता है कि आप अनिमा से मुहब्बत करने लगे हैं, तभी आप उसकी बेदलील बातों को मानने लग जाते हैं।"

"तो मुहब्बत करने से महबूबा की बेदलील बातों को माना जाता है ?"

"यही मालूम होता है।"

इससे चेतनानन्द गम्भीर विचार में डूब गया। उसने करवट बदलते हुए कहा, "अब सो जाओ। मुझको नींद आ रही है।"

इतना कह उसने स्विच दबा बिजली बुझा दी। वास्तव में उसे अपने सरकारी नौकरी स्वीकार करने का रहस्य प्रतीत हो गया। वह इस पर विचार करता था कि उसने सरकारी नौकरी नसीम के कहने पर स्वीकार की थी तो क्या यह उसकी मुहब्बत में आकर बेदलील बात कर ली थी। परन्तु वह अनिमा से उस प्रकार की मुहब्बत नहीं करता था जैसी नसीम से करता था। तो यदि नसीम की अयुक्ति-संगत बात मान रहा है तो अनिमा की क्यों मान रहा है ? वह सोचता था कि क्या नसीम से उसकी मुहब्बत नहीं या क्या अनिमा से नहीं ? अनिमा से तो उससे वैसा प्रेम है नहीं, तो यह सिद्ध हुआ कि अनिमा की बात अयुक्तिसंगत नहीं है या इसका यह परिणाम हुआ कि नसीम से जैसा सम्बन्ध उसका है, वह प्रेम का न होकर केवल वासना का है, और वासना की मादकता ही अयुक्तिसंगत बात करवाती है। इसी प्रकार की बातें बहुत काल तक वह सोचता रहा। फिर एका-एक उसे विचार आया कि अनिमा के वारण्ट निकल चुके हैं और शायद वह अब तक पकड़ी गई होगी। वह स्वयं भी इसकी आशा करती थी। उसे विश्वास हो गया कि वह पकड़ी गई है। इससे उसे अनिमा के पिता के विषय में विचार आने लगे।

दो का घण्टा बज जाने के बाद उसे नींद आई और परिणाम यह हुआ कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले दिन वह आठ बजे उठ सका। कठिनाई से स्नान इत्यादि से छुट्टी पा, दफ्तर के समय पर तैयार हो पाया। दफ्तर में नई सेक्रेटरी मिस रिजवी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह अभी कॉलेज से पास कर निकली ही थी कि उसकी नौकरी लग गई थी। इसकी टाइप करने की गति भी अनिमा से कम थी और काम तो वह बिलकुल नहीं जानती थी। हाँ, एक बात में वह बहुत चतुर थी। वह फर्स्ट क्लास 'फ्लर्ट' थी। बात-बात पर नखरे करती और हाव-भाव बनाती थी। मुख पर पाउडर, होंठों पर लिपस्टिक, गालों पर रूज और अपनी साड़ी पर एक विचित्र प्रकार की खुशबू लगाए हुए थी। चेतनानन्द को उसे बहुत कुछ समझाना पड़ा और फिर वे बातें जो वह स्वयं नहीं समझता था किसी से समझवानी पड़ीं। इस पर भी वह गलतियों पर गलतियाँ करती जाती थी। इसी उधेड़-बुन में दिन व्यतीत हो गया। 'आफ्टरनून टी' के समय मिस रिजवी उठी और चेतनानन्द से बोली—

"अगर आप क्षमा करें तो क्या मैं आपको चाय का निमन्त्रण दे सकती हूँ?"

चेतनानन्द इस निमन्त्रण को सुन भौंचक्का हो उसका मुख देखता रह गया। उसने कहा, "धन्यवाद। मिस रिजवी, क्षमा करें, मैं एक आवश्यक काम में लगा हूँ। फिर किसी दिन आपके निमन्त्रण से लाभ उठाऊँगा।"

मिस रिजवी निराश हो चली गई और चेतनानन्द अचम्भे में उसको जाते देखता रहा। दफ्तर का समय हो जाने के पश्चात् उसे अनिमा का विचार आया। उसने दफ्तर के रजिस्टर से उसके घर का पता मालूम कर लिया और रायल कैफे में जा उसकी प्रतीक्षा करने लगा। वह चाय मँगवा पीने लगा। अनिमा अभी तक नहीं आई थी। चाय समाप्त हो गई। वह अभी भी नहीं आई। उसे विश्वास होता जाता था कि वह पकड़ ली गई है। जब वह बैरा को दाम दे रहा था, एक स्त्री पंजाबी ढंग के कपड़े पहने उसके सम्मुख आ, बैठ गई। चेतनानन्द ने दाम देते-देते हाथ खींच लिया। और बैरा को और चाय लाने को कह दिया। जब बैरा चला गया तो उसने उसकी पोशाक की ओर संकेत कर पूछा, "यह क्या?"

अनिमा ने पंजाबी में उत्तर दिया, "मैं कैंहदी साँ न, मेरे वरन्ट निकलगै ने। मेरा नाँ हुन बलवन्त कौर ए। तुहानूं हुन अपना ध्यान करना चाहिये। किदरे ए न हो जावे कि मेरे नाल तुहानूँ वी कष्ट होवे।'

"मैंनू एस गल दा पता सबेरे ई लग गया सी, पर मैं समझदा साँ कि तुसी अज पकड़े नहीं गए होवोगे।"

"अजे औ साडे घर नहीं पहुँचे पर मैं ओन्हा नूँ मैंनू पकड़ लेना दा अवसर ही नहीं देना चाहन्दी। मैं छुप गई हाँ।"

"तुहाडी शकैत खुफिया पुलिस ने नहीं कीती। मैंपूं पक्की थाँ तो पता लगिया है कि तुहाडी रपोट बंगाल सूबा कांग्रेस कमेटी दे परधान ने मुख्य मन्त्री दे पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुद कीती ए।"

"मैंनूं एही आशा सी। मैं इक प्राइवेट जलसे दे विच किआ सी कि कलकत्ता दे विच मुसलिम लीग दा सिद्धा ऐक्शन होण वाला ऐ। ए गल कांग्रेस दे परधान नूँ पसन्द नहीं आई ते ओसने मेरी शकायत कर दित्ती ए। पर मैं ताँ परवाह नहीं करदी। हुन मैं तुहानूं इक गल होर दसनी आँ। सोलहा अगस्त नूं मुसलिम लीग ने अपना सिद्धा ऐकशन आरम्भ करना है। एस वासते कलकत्ते दे विच भारी तियारी हो रही ऐ। नतीजा बहुत बुरा होवेगा।"

"पर साडे दफतर विच एस गल दी कोई खबर नहीं।"

"तुहानूं ता सोला अगस्त नूं पता चलेगा। साडे पास इक आदमी है, जेड़ा हर रोज मस्जिद विच नमाज पढ़न जान्दा ए। ओ है ताँ हिन्दू पर बन के मुसलमान फिरदा ए, ओ मसीत विच होनवालियाँ सारियाँ गल्लाँ दस देन्दा ऐ। ओस दा कैहना है कि कलकत्ते दे विच दो हजार मुसलमान लड़न-मरन वासते तियार हैन।"

"ए ताँ बड़ी भयंकर गल्ल ए। ते तुसी की कर रए हो?"

"साडी सुनदा कौन ए। असी लोगाँ नूँ समझाने हाँ ते कांग्रेसी कह देन्दे ने कि साडा दिमाग खराब हो गया ए। लोग ओन्हाँ दी गल्ल नूँ मन लैन्देन। ओन्हाँ दी गल्ल मननी असान है न। साडी गल्ल मनन दे वासते ताँ जान हथेली ते रख मैदान दे विच औना पेन्दा ए।"

"ए ताँ कबूतर वाकन अखाँ मीचन जई गल्ला होई न?"

'एस बिच सन्देह ई नहीं! देखो की होन्दा ए।"

चाय समाप्त होने पर दोनों उठ खड़े हुए। चेतनानन्द ने पूछा, "कल कहाँ मिलेंगे?"

"फिरपो में।"

: १४ :

अनिमा को नौकरी से छुट्टी हो जाने पर नगर में घूम-घूमकर काम करने का अवसर अधिक मिलने लगा। अनिमा ने अपने पिता के घर रहना और आना-जाना बन्द कर दिया। खुफिया पुलिस ने भी उसके घर के आस-पास चक्कर लगाने आरम्भ कर दिए। अब रात को उसके मित्र भी नहीं आते थे। अनिमा के पिता को कष्ट तो होता था परन्तु वह इससे अधिक कष्ट सहन करने का अभ्यस्त हो गया था। जो अण्डमान तक की जेल में रह आया हो, उसके लिए कलकत्ता जैसे नगर में अकेले रहना कुछ भी कठिन नहीं था।

अनिमा अपनी पार्टी के एक कार्यकर्ता, श्री सुधीर कुमार के घर रहती थी। सुधीर कुमार बीमा कम्पनी के एजेण्ट के रूप में काम करता था। वहाँ अनिमा को एक पृथक् कमरा मिला हुआ था। सुधीर कुमार अपनी स्त्री के साथ दूसरे कमरे में रहता था। एक तीसरा कमरा आफिस के लिए था। सुधीर कुमार ने भी अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम-धन्धा छोड़ अनिमा के साथ काम करना आरम्भ कर दिया था।

ये लोग मुहल्ले-मुहल्ले में जाते थे और लोगों को कहते थे, "मुसलमान शरारत करने पर तुले हुए हैं और गवर्नर इनकी कानून के विरुद्ध बातों को रोक नहीं सका। ऐसी अवस्था में हिन्दुओं को इस मुसीबत का मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। यदि ऐसा नहीं हो सका, तो उनकी जान, उनका माल, उनकी बहू-बेटियाँ और उनका सर्वस्व विनाश को प्राप्त हो जावेगा।"

प्रायः लोग कहते थे कि महात्मा गांधी और देश के अन्य नेताओं ने अंग्रेजों की नीयत साफ होने की गारण्टी दी है। ऐसी अवस्था में एक अंग्रेज अफसर गवर्नर और वह भी लेबर पार्टी का सदस्य होकर, हिन्दुओं की रक्षा क्यों नहीं करेगा? यदि हिन्दू अपनी ओर से शान्ति भंग नहीं करेंगे तो भारतवर्ष की पुलिस और फौज, जो अंग्रेज अफसरों और गवर्नर के अधीन है, उनकी रक्षा करेगी।

परन्तु सब लोग ऐसे नहीं थे। कभी कोई अनिमा देवी और सुधीर कुमार का विश्वास करते तो ये उन्हें मुहल्ले की रक्षा की तरकीब बता देते। बताते, "मुहल्ले के नवयुवक एक स्थान पर एकत्रित होकर लाठी, बरछा, छुरी चलाना और दूसरे के आक्रमण से बचना सीखें। मुहल्ले में आग बुझाने के साधन एकत्रित किए जावें और लोगों को सचेत करने के लिए एक घड़ियाल का प्रबन्ध किया जावे।"

यह सब बातें कही जातीं तो फिर लोग इसमें मीन-मेख निकालते। फिर भी अनिमा और सुधीर कुमार यह समझते थे कि वे अपना कर्तव्य-पालन कर रहे हैं। और कुछ दिनों में इसका प्रभाव भी होने लगा। कुश्ती करने और लाठी इत्यादि चलाना सीखने के लिए कई नये अखाड़े खुल गए थे। इससे तो कांग्रेस के लोग घबराने लगे थे। कांग्रेस ने अनिमा और उसके साथियों का विरोध करने के लिए शान्ति-सभाएँ खोलनी आरम्भ कर दीं। अब जहाँ कहीं अनिमा और सुधीर जाते तो शान्ति-सभा के लोग भी वहाँ जा पहुँचते और परस्पर वाद-विवाद आरम्भ हो जाता। अनिमा कहती, "अपने मुहल्ले की नाकाबन्दी की योजना बना रखिए," तो कांग्रेस के लोग कहते, "अपने मुहल्ले के मुसलमानों से मेल-मिलाप रखोगे तो भय करने की आवश्यकता नहीं।" इस पर अनिमा का उत्तर होता, "भय मुहल्ले के मुसलमानों से नहीं है, प्रत्युत बाहर से आक्रमण करने वालों से है।" शान्ति-सभा वाले कहते, "यह काम पुलिस करेगी।"

प्रायः लोग कांग्रेस वालों की बात ठीक समझते थे। उनकी बात मानने से कुछ करना नहीं पड़ता था। अनिमा का कहना था कि वे कुछ करें, और इसमें धन और समय लगता था।

मुस्लिम लीग ने डायरेक्ट ऐक्शन आरम्भ करने की तिथि घोषित कर दी। यह १६ अगस्त निश्चित हुई थी और इसको पूर्ण हिन्दुस्तान में मनाया जाना था। अनिमा और उसके साथियों का विचार था कि देश के अन्य स्थानों से कलकत्ता में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भय अधिक था। उनके पास तो इस बात की सूचना थी कि कलकत्ता में झगड़ा करने का पूरा यत्न किया जाने वाला है।

अनिमा के न पकड़े जाने से पुलिस को बहुत डाँट-डपट हो रही थी। उसके घूम-घूमकर लोगों को संगठित करने के प्रयत्नों की नित्य नई खबरें आ रही थीं। इससे पुलिस और भी हैरान हो रही थी। एक दिन सायंकाल जब वह काम करती हुई थक चुकी थी और सुधीर के साथ घर जा रही थी, तो एक पुलिस सार्जेण्ट और दो कान्स्टेबल उसके सामने आ खड़े हुए। उसके साथ एक खद्दरधारी नवयुवक भी था। वे उस मुहल्ले में से आ रहे थे जहाँ से अनिमा अभी बातचीत करके आ रही थी। खद्दरधारी नवयुवक वही था जो अनिमा के साथ सबसे अधिक वाद-विवाद करता रहा था।

स्वाभाविक रूप में अनिमा ने समझा कि उस खद्दरधारी ने विश्वासघात किया है। एक कान्स्टेबल सार्जेण्ट को बताने लगा "मैं समझता हूँ कि यही है।"

सार्जेण्ट ने अनिमा से पूछा, "क्या नाम है तुम्हारा ?"

"बलवन्त कौर।"

सार्जेण्ट पंजाबी था। उसने अनिमा को सिर से पैर तक देखा और फिर पंजाबी भाषा में पूछा, "कित्थे रहन्दे औ, भैनजी ?"

"नम्बर तीन, अलीगंज विच, भ्रा जी।"

सार्जेण्ट ठेठ पंजाबी सुन चुप रहा। कुछ काल तक अनिमा की ओर देखकर विश्वास कर साथी खद्दरपोश की ओर देख पूछने लगा, "क्यों जी ! आप तो कहते थे कि आप अनिमा देवी को पहचानते हैं। अब बोलते क्यों नहीं ?"

"अनिमा देवी होतीं तो कहता न ?" उस खद्दरपोश ने उत्तर दिया।

"तो यहाँ क्यों खड़े हो गए हो ?"

"मैंने आपको खड़ा होने को नहीं कहा।"

इससे सार्जेण्ट ने भूमि पर पाँव पटक कहा, "तो जल्दी करो। यहाँ वक्त क्यों जाया कर रहे हो ?"

पुलिस पार्टी आगे निकल गई तो अनिमा ने अचम्भा प्रकट कर सुधीर से कहा, "यह खद्दरधारी तो हमारा विरोधी था, फिर न जाने क्यों, मुझको बचाने के लिए इसने झूठ बोल दिया है।"

सुधीर ने कन्धों को झटका देकर कहा, "कोई नेक, ईमानदार आदमी मालूम होता है। मालूम होता है पुलिस वाले इसे जबरदस्ती साथ ले आये हैं।"

एक और दिन अनिमा चौरंगी में खड़ी ट्राम की प्रतीक्षा कर रही थी कि सामने से चेतनानन्द आता दिखाई दिया। उसने भी इसे देख लिया। वह भागकर आगे बढ़ बोला, "ओ ! अनिमा देवी !"

अनिमा देवी का रंग फक हो गया। समीप ही एक पुलिस आफिसर खड़ा था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अनिमा का नाम सुन वह ध्यान से उसकी ओर देखने लगा। एक क्षण में अनिमा ने अपने को सम्हालकर कहा, "चेतनानन्द बाबू ! तुसी भी खूब भुल जांदे ओ। अनिमा ताँ मेरी सहेली सी जेड़ी मिर्जापुर चली गईए। मेरा नाम ते बलवन्त कौर ऐ।"

"ओ ठीक।" चेतनानन्द ने अपने सिर को खुजलाते हुए कहा, "हुन मेंन्नू याद आ गया ए। पता नहीं मेरा दिमाग क्यों एन्ना कमजोर हो गया ए। हाँ, बलवन्त कौर जी, आजकल मिलदे वी नईं तुसी ?"

"मैं कल ई ताँ लाहौर आई हाँ।"

"भइया जी ठीक न ?"

इस पर पुलिस अफसर को सन्तोष नहीं हुआ। उसने समीप आकर चेतनानन्द से पूछ ही लिया, "क्षमा करें ! आप अनिमा देवी को जानते हैं।"

"जी हाँ।" चेतनानन्द ने सचेत होकर कहा।

"वह कहाँ रहती हैं ?" पुलिस अफसर का अगला प्रश्न था।

"यह तो मैं नहीं जानता। बात यह है कि वह इनकी सहेली और सहपाठिन थी। इन दोनों के नामों में मुझे प्रायः भ्रम हो जाता है। इनको अनिमा और उसको बलवन्त कौर समझ लिया करता हूँ।"

"परन्तु अनिमा तो एक बंगाली लड़की का नाम है ?"

"जी हाँ, मैं जानता हूँ। इस पर भी मुझे भ्रम हो ही जाता है।"

पुलिस अफसर चुप तो कर गया परन्तु उसका सन्देह बना ही रहा। वह इन दोनों की ओर घूर-घूरकर देखता रहा। टालीगंज की ट्राम आई तो दोनों उसमें सवार हो गए। अनिमा ने धीमे स्वर में कहा, "आपने तो मुझे फँसा ही दिया था।"

"क्षमा करना अनिमा देवी ! आज कई दिन के पश्चात् अकस्मात् आपको देख कर भूल ही गया था। खैर, छोड़िए इस बात को। उस दिन आपने 'फिरपो' में आने को कहा था। पूरा एक घण्टा-भर प्रतीक्षा करने के पश्चात् निराश हो चला गया। आज तक कभी तो 'रायल कैफे' में और कभी 'फिरपो' में चाय के लिए जाता हूँ और हर बार यह आशा कर जाता हूँ कि आपसे भेंट होगी, परन्तु प्रत्येक बार निराश लौटता हूँ। इससे आज आपके दर्शन कर अपने आपको भूल गया था।"

"आप अब किधर जा रहे हैं ?"

"मैं जा तो घर रहा था, परन्तु अब आप जिधर कहें।"

"तो चलिए, लेक के किनारे पर चलकर बैठेंगे। मुझे दो घण्टे का अवकाश है। समय अच्छा कट जावेगा।"

"कहीं काम मिल गया है क्या ?"

"हाँ। चलिए वहीं चलकर बातें होंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके उपरान्त दोनों ट्राम में नहीं बोले। टालीगंज से उतर, वहाँ से पैदल ही लेक के किनारे पर जा पहुँचे। वहाँ एकान्त ढूँढ़कर बैठ गए। अनिमा ने अपना वचन पूरा न करने का कारण बताने के लिए बात आरम्भ कर दी।

"नौकरी अभी तक नहीं मिली, परन्तु काम इतना मिल गया है कि अवकाश बिलकुल नहीं मिलता।"

"क्या काम मिल गया है?"

"आपको तो पहले बता चुकी हूँ हमारी एक मण्डली है, जिसमें कुछ तो मेरे मित्र हैं और कुछ पिताजी के साथी हैं। हम कलकत्ता के हिन्दुओं में ऐसी जागृति उत्पन्न करने का यत्न कर रहे हैं, जिससे आने वाली मुसीबत से वे बच जावें।"

"कैसी मुसीबत?"

"हमारे मन में यह बात बैठ गई है कि मुस्लिम लीग कलकत्ता में झगड़ा कराएगी और उस झगड़े को असफल करने का एक ही उपाय समझ में आ रहा है। वह यह कि उस झगड़े में डटकर मुसलमानों का मुकाबला किया जावे।"

"इससे यह ठीक नहीं क्या कि गवर्नर से कहकर फौज का प्रबन्ध करा दिया जावे?"

"यह ठीक तो है परन्तु सम्भव नहीं।"

"क्यों सम्भव नहीं?"

"इसलिए कि अंग्रेजों की स्वार्थसिद्धि इस झगड़े में मुसलमानों के सफल होने में है।"

"यह कैसे? मैं समझ नहीं सका।"

"बात स्पष्ट है। अंग्रेज भारतवर्ष छोड़ने पर विवश हो गए हैं। वे यहाँ हिन्दुओं का अकंटक राज्य स्थापित नहीं होने देना चाहते। उनको हिन्दुओं पर विश्वास नहीं है। उनकी यह इच्छा है कि एक प्रबल मुस्लिम राज्य यहाँ स्थापित हो जावे, जो हिन्दुओं के स्वतंत्र राज्य को तंग करता रहे। हिन्दू इस बात को नहीं चाहते। यह डायरैक्ट ऐक्शन की धमकी हिन्दू-कांग्रेस को इस बात पर तैयार कर चुकी है कि देश के तीन विभाग हों, परन्तु इतने में काम नहीं चलता। अंग्रेजों को तो हिन्दुओं पर एक मुसलमानी स्वतन्त्र राज्य का अंकुश निर्माण करना है। इसके लिए देश के एक-दो नगरों में खून की नदियाँ बहाने की आवश्यकता समझी जा रही है। इससे कांग्रेसी नेता भयभीत हो, मुसलमानों की पूर्ण माँग स्वीकार कर लेंगे। हिन्दू नेताओं की घबराहट का इलाज यह है कि मुसलमानों को अपने डायरैक्ट ऐक्शन में सफल न होने दिया जावे।"

"अनिमा देवी! आप ऐसे बात करती हैं जैसे आप महात्मा गांधी से भी अधिक जानती हैं। वे नित्य ब्रिटिश अफसरों से मिलते रहते हैं और उनके मन के भावों को भली-भाँति जानते हैं। उन्होंने कहा है कि उनको अंग्रेजी अफसरों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीयत पर सन्देह नहीं है।"

"यदि उनकी नीयत अच्छी है तो फिर राज्य पलटने की आवश्यकता ही क्या है? उनको धीरे-धीरे राज्य में परिवर्तन करने दिया जावे।" अनिमा ने मुस्कराते हुए पूछा।

चेतनानन्द इस बात का उत्तर नहीं दे सका। वह सोचने लगा कि यदि अनिमा की बात सत्य हो गई तो कलकत्ता में बलवा हो जाना और रक्तपात हो जाना कोई कठिन बात नहीं है। चेतनानन्द को चुप देख अनिमा ने अपना कहना जारी रखा। उसने कहा, "आप छोड़िए इस बात को। बताइए, नसीम बहिन कैसी है?"

"अच्छी तरह है। आजकल कुछ स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। और सब ठीक है।"

"मैं उनसे मिलने आती, पर मैं तो फरार हूँ न?"

"नहीं, वहाँ मत आना। नसीम आपकी कारगुजारी से सहमत नहीं।"

"मैं तो समझती थी कि वे कांग्रेसी विचार की हैं।"

"तो इसमें क्या होता है?"

"जिस कानून से मुझको पकड़ने के वारण्ट हैं, वह एक नाजायज कानून है। मुझे बिना मुकद्दमा किए पकड़कर कैद करने की आज्ञा है।"

"वह कहती थी कि जब कांग्रेस के प्रधान ने आपके विरुद्ध रिपोर्ट की है तो मुकद्दमे की जरूरत नहीं है!"

"आप भी यही समझते हैं क्या?"

"वैसे तो मैं ऐसे कानून को नाजायज समझता हूँ, परन्तु मैं देख रहा हूँ कि उन सूबों की सरकारों ने भी, जहाँ कांग्रेस का बहुमत है, 'पब्लिक सिक्यूरिटी ऐक्ट' पास किए हैं और उनके अनुसार ही तो बिना मुकद्दमे के पकड़ा जा रहा है। इससे मुझे अपनी सूझ-बूझ पर संदेह हो रहा है।"

"यह तो स्वराज्य स्थापित होने के पूर्व ही अन्याय का राज्य चल पड़ा है। कांग्रेस इस समय लोगों की मनोनीत संस्था है और इसके विरुद्ध कोई षड्यंत्र करेगा, ऐसा समझ में नहीं आता। फिर भी यदि कांग्रेस को किसी पर सन्देह है तो पहले ही 'क्रिमनल प्रोसीजर कोड' की धारा १०७ और १०८ है जिनमें संदिग्ध लोगों को पकड़ने और पकड़कर एक वर्ष तक कैद में रखने का अधिकार मैजिस्ट्रेट को है। इन धाराओं के अनुकूल अभियुक्त को अपनी सफाई देने का अधिकार है। पब्लिक सिक्यूरिटि ऐक्ट बनाने का केवल-मात्र एक ही प्रयोजन हो सकता है कि अभियुक्त को अपनी सफाई भी देने के अधिकार से वंचित रखा जावे। यह तो घोर अन्याय है। इसी के विरुद्ध ही तो छब्बीस वर्ष तक कांग्रेस आन्दोलन करती रही है।"

"आपका कहना तो सत्य प्रतीत होता है, परन्तु यह बातें तो उनको ही बतानी चाहिए जो इस समय बताने की परिस्थिति में हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वे क्या बताएँगे ? मैं बताती हूँ। कांग्रेस देश की हत्या करने जा रही है। यह, जब से महात्मा गांधी के नेतृत्व में आई है, देश के हितों को मुसलमानों पर न्यौछावर करती रही है। हाँ ! तब प्रत्येक बात का उत्तरदायित्व ब्रिटिश अफसरों पर होता था। इस कारण महात्मा जी की भूल का परिणाम भी उनके सिर लाद दिया जाता था। अब जो कुछ ये करेंगे उसका उत्तरदायित्व कांग्रेस पर होगा। ये देशद्रोह करने जा रहे हैं और उन लोगों को, जो इनके इस काम का विरोध करेंगे, मुख बन्द करने के लिए यह कानून बना दिए हैं।"

चेतनानन्द इस सूझ पर हँस पड़ा। उसने केवल यह कहा, "मैं समझता हूँ कि हम अभी इतने महान् पुरुषों पर आक्षेप करने योग्य नहीं हुए, हमारी आयु अभी बहुत छोटी है। आओ, राजनीति की बातें छोड़कर किसी और विषय की बात करें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

: १ :

डायरैक्ट ऐक्शन को आरम्भ करने का दिन १६ अगस्त, १९४६ नियत किया गया और पूर्ण भारत में से केवल कलकत्ता के अन्दर इस दिन सरकारी रूप में छुट्टी दी गई। सब सरकारी दफ्तर, कार्पोरेशन के दफ्तर और कारखाने बन्द करवा दिए गए। हिन्दू इससे चिन्तित हुए अवश्य, परन्तु वे इतना कुछ होने की आशा नहीं करते थे जो हुआ और अधिकांश हिन्दू अपने-अपने काम पर ऐसे गए जैसे साधारण दिनों में जाते थे। मुसलमानों ने इस दिन हड़ताल घोषित कर रखी थी। हैरिसन रोड पर जब हिन्दुओं की दूकानें खुलने लगीं तो मुसलमान युवकों को यह बात पसन्द नहीं आई। उन्होंने दूकानें बन्द करने को कहा और कुछ हिन्दुओं ने व्यर्थ का झगड़ा मोल न लेने के लिए दूकानें बन्द कर दीं। कुछ-एक को आत्म-सम्मान अधिक प्रिय प्रतीत हुआ। उन्होंने अपनी दूकानें बन्द करने से इन्कार कर दिया। तब मुसलमानों की एक भीड़ ने इन दूकानदारों पर ईंटें चलानी आरम्भ कर दीं। दूकानदार जान बचाकर दूकानें खुली छोड़कर भाग गए और दूकानें लुट गईं।

इस प्रकार की घटनाएँ प्रत्येक मुहल्ले और बाजार में होती रहीं। दस बजे एकाएक मुहल्लों पर आक्रमण आरम्भ कर दिए गए। हिन्दुओं के मकानों में घुस-घुसकर लूटमार और स्त्रियों को अपमानित किया जाने लगा। अनिमा और सुधीर कुमार ने आज प्रचार-कार्य पर जाना उचित नहीं समझा था। सुधीर कुमार की स्त्री ने उन्हें इस दिन जाने नहीं दिया। इन लोगों के साथी तो घूम-घूमकर समाचार एकत्रित कर रहे थे और उस दिन के एकत्रित होने के लिए केन्द्र स्थान सुधीर कुमार का घर ही बना रखा था। इस प्रकार पल-पल पर लोग बाहर जा रहे थे और नगर के समाचार ला रहे थे। लगभग दस बजे यह समाचार आया कि हैरिसन रोड पर लूटमार मच रही है। फिर समाचार आया कि अलीगंज में हिन्दू मुहल्लों को आग लगा दी गई है। कुछ काल पश्चात् एक ने बताया कि धर्मतल्ला में मुसलमानों का एक झुण्ड खड़ा है और राहगीर हिन्दुओं को मार-काट रहा है। लगभग तीन बजे समाचार मिला कि सरकस रोड पर हिन्दुओं का कत्ले-आम हो रहा है।

इस प्रकार के समाचार आ रहे थे। घर के सब लोग दाँत पीस-पीसकर रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते थे। तीन बजे के लगभग सुधीर कुमार का छोटा भाई जो कॉलेज होस्टल में रहता था, आया। सुधीर की स्त्री उसे देख चिन्तित हो पूछने लगी, "निवारण! क्या बात है? यहाँ किसलिए आए हो?"

"भाभी! किसी ने यह विख्यात कर दिया था कि ग्रेस्ट्रीट में आग लग रही है। मुझे आपकी चिन्ता लग गई थी। इससे चला आया हूँ।"

"इतनी दूर तुम कैसे आ सके हो? हमने तो सुना है कि चित्तरंजन एवेन्यू के बाहर कत्ले-आम हो रहा है।"

"हाँ, परन्तु भाभी! यह देखो।" इतना कह उसने अपनी जेब से रूमी टोपी निकाल सिर पर टेढ़ी कर रख और कोट के नीचे से बिस्तर की चैखानी छपी चादर निकाल अपनी धोती के ऊपर तहमत की भाँति पहन एक हट्टे-कट्टे मुसलमान की सूरत बनाकर दिखा दी। "जब मेरे सामने एक हिन्दू परिवार को गुण्डे घसीटकर मकान से बाहर लाए और उनकी हत्या करने लगे तो मैंने अल्लाहू-अकबर का नारा लगा दिया। इससे सब गुण्डे उस परिवार पर कुत्तों और चीलों की भाँति झपट पड़े। इस प्रकार रास्ता साफ देख मैं वहाँ से खिसक आया। सड़कें मृत शवों से पटी पड़ी हैं और मैंने यहाँ तक आते-आते बीसियों मकानों को जलते देखा है।"

अनिमा ने इन समाचारों को सुन बेचैन होकर कहा, "मैं समझती हूँ कि कुछ करना चाहिए, इस प्रकार अपमानित होने से तो लड़ते-लड़ते मर जाना अच्छा है।"

इस समय सुधीर के मकान के ऊपर की मंजिल पर रहने वाले किराएदार का लड़का श्यामाचरण हाँफता हुआ बाहर से आया और बोला, "गली के बाहर लगभग दो सौ मुसलमानों की भीड़ खड़ी है। सब लाठियों-बरछों और तलवारों से सुसज्जित हैं। राह चलते लोगों को नंगा कर देखते हैं कि मुसलमान है या कोई और। हिन्दू होने पर तुरन्त मार डालते हैं।"

अनिमा की आँखें क्रोध से लाल हो रही थीं। रक्त का प्रवाह उसके सिर को चढ़ गया था। उसने तमतमाते माथे पर त्योरी चढ़ाकर पूछा, "कितने घर हैं इस मुहल्ले में?"

"पाँच सौ से अधिक हैं।"

"तो क्या पाँच सौ आदमी यहाँ एकत्रित नहीं हो सकते? देखो श्यामजी और निवारणचन्द्र, मैं लोगों को इकट्ठा करने जा रही हूँ। बताओ, तुम मुहल्ले की रक्षा के लिए अपने को पेश करते हो या नहीं?"

श्यामाचरण की माँ और पिता ऊपर की मंजिल से नीचे उतर आये थे और अनिमा का प्रस्ताव सुन रहे थे। यह सुन श्यामाचरण की माँ ने कहा, "यह क्या लड़ेगा? धोती की चोन निकालनी तो आती नहीं इसे?"

श्यामाचरण ने एक क्षण तक अनिमा का मुख देखा और फिर अपनी माँ की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर देखकर कहा, "पर माँ ! चूहों की भाँति बिल के अन्दर घुसकर मरना भी तो मैं नहीं जानता।"

इतना कह उसने निवारण की बाँह में बाँह डाली और घसीटता हुआ मकान के बाहर ले गया। श्यामा के पिता ने अपने लड़के को पीछे से आवाज दी, "श्याम ! श्याम !! ओ श्याम !!' परन्तु वे दोनों घर से बाहर निकल चुके थे। श्याम की माँ की आँखों में आँसू दिखाई देने लगे थे। उसने चीख मार और माथे को पीटते हुए पुकारा, "कहाँ गया मेरा श्याम ?"

अनिमा ने कुछ डाँटकर कहा, "चुप रहो बहिन। बच्चों को हतोत्साह न करो। सुधीर बाबू, अपना पिस्तौल भर लो।" इतना कह अनिमा ने अपने सोने के कमरे में जाकर अपने बिस्तर पर सिरहाने के नीचे से एक छुरे को निकालकर अपने आँचल के नीचे छुपा लिया। इस प्रकार अपनी रक्षा के लिए तैयार हो सुधीर कुमार से बोली, "आइए मेरे साथ।"

ये दोनों भी घर से बाहर निकल गए। सुधीर बाबू की स्त्री अवाक् मुख खड़ी इनको देखती रह गई। श्याम बाबू की माँ तो वहीं भूमि पर बैठ गई और सिर को घुटनों में दे रोने लगी। श्याम बाबू का पिता अपने लड़के के पीछे-पीछे मकान के बाहर चला गया।

अनिमा मकान के नीचे उतरी तो श्याम और निवारण के प्रयत्नों का फल निकलने लगा था। लोग लाठियाँ और छुरियें ले-लेकर अपने-अपने मकानों से बाहर आ रहे थे। पचास के लगभग युवक एकत्रित हो चुके थे। अनिमा ने उनको देख हाथ के संकेत से अपनी ओर बुलाकर कहा, "वीरो ! देख रहे हो न, कि क्या हो रहा है ? तुम चाहते हो कि तुम्हारे मकानों को आग लगा दी जावे, तुम्हारा माल-असबाब लूट लिया जावे, और तुम्हारी माँ-बहिनों का अपमान किया जावे ?"

उनमें से एक ने अपने हाथ की लाठी को ऊँचा उठाकर जोर से कहा, "नारा बजरंगी।" सबके मन जोश से उबल रहे थे। बजरंगी की ललकार सुन सब बोल उठे, "हर-हर महादेव।"

इस पर अनिमा ने अपने आँचल से छुरी निकाल ली और छुरी वाला हाथ उठाकर बोली, "जिनको मरने से भय नहीं लगता, मेरे पीछे आ जाओ।"

इतना कह उसने बजरंगबली का नारा लगाया और गली के बाहर की ओर चल पड़ी। युवक 'हर-हर महादेव' का नारा लगाते हुए भागकर अनिमा के चारों ओर हो गए और सब गली के बाहर को बढ़े। एक स्त्री को इस प्रकार मौत के मुख में भागकर जाते देख युवकों के जोश का वारापार नहीं रहा। वे गली के बाहर मार-काट करते हुए मुसलमानों पर बिजली की भाँति टूट पड़े। मुसलमानों ने समझा था कि हिन्दू कायरों की भाँति अपने-अपने मकानों में छुपे रहेंगे और वे राहगीरों को समाप्त कर एक-एक मकान से इनको निकालकर मौत के घाट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतार देंगे ! उनको स्वप्न में भी यह आशा नहीं थी कि एक औरत युवकों को साथ ले उन पर टूट पड़ेगी।

एक क्षण तक तो वे समझ ही नहीं सके कि यह क्या आफत है। इतने में अनिमा के साथियों ने तीन-चार मुसलमानों को लाठियों से घायल कर धराशायी कर दिया था। कुछ मुसलमान एक हिन्दू को नंगा कर रहे थे और वह हिन्दू नीम के पत्ते की भाँति काँप रहा था। मुसलमान अपने साथियों को मरता देख लड़ने को बढ़े, परन्तु अनिमा की पुकार, "शाबाश बहादुरो" ने उनके हृदय कम्पायमान कर दिए और वे भाग खड़े हुए। मुसलमानों की संख्या दो सौ के लगभग थी और अनिमा के साथियों की पचास से कुछ ऊपर। ये लोग अनिमा को निर्भयतापूर्वक लड़ाई में कूदते देख विपुल उत्साह से भर, यमदूतों की भाँति, मुसलमानों पर पिल पड़े थे। मुसलमान अभी तक बिना विरोध के हिन्दुओं की मार-काट कर रहे थे। अब मुकाबिले के लिए उत्साह और निश्चय से भरे हुए हिन्दू युवकों को देख घबरा गए और भाग खड़े हुए।

मुसलमानों को भागते देख अनिमा ने अपने साथियों को उनके पीछे जाने से रोक दिया और कहा कि 'हमारा काम उनको मारना नहीं प्रत्युत अपने मोहल्ले की रक्षा करना है।' इस समय घायलों की देख-भाल की गई। अनिमा के साथियों में से केवल तीन को साधारण घाव लगे थे। दूसरी ओर मुसलमानों में से तीन को तो भारी चोटें आई थीं। वे भागने वालों के साथ जा नहीं सके थे और वहाँ अचेत पड़े थे। उस स्थान पर राह जाते बारह के लगभग हिन्दू मारे जा चुके थे और दो को वे अधमरा छोड़ गए थे। एक के आधे कपड़े उतारे जा चुके थे। अनिमा ने अपने साथियों को कहा कि घायलों को भीतर ले चलें और मृत शवों को वहीं छोड़ दें। श्यामबिहारी के पिता जोगेश बाबू भी मोहल्ले के कुछ प्रौढ़ों को लेकर आ गए। वे लोग भी मोहल्ले के युवकों को लड़ते देख जोश में आ गए थे।

घायलों के भीतर आ जाने पर अनिमा देवी ने गली के बाहर पहरा बैठा दिया। उसने उनके हाथ में एक घड़ियाल देकर कह दिया कि यदि पुलिस आवे तो घड़ियाल को तीन बार बजावें और यदि मुसलमान आवें तो घड़ियाल को कई बार बजावें। पुलिस वालों के आने की सूचना पर सब लोग अपने-अपने घरों में छुप जावें और मुसलमानों के आने की सूचना पर सब लोग गली के फाटक पर एकत्रित हो जावें और मुसलमान आक्रमणकारियों को भीतर न घुसने दें।

पुलिस वाले तो दिन में एक बार भी नहीं आये परन्तु मुसलमान दिन में तीन बार आये और मार-मारकर भगा दिए गए।

: २ :

रात को कलकत्ता की स्थिति अति विकट हो गई। अनिमा और उसके साथियों ने घर की छत पर चढ़कर देखा कि कलकत्ता में सैकड़ों स्थानों पर धू-धू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती हुई आग जल रही है। 'अल्ला-हू-अकबर' के कानों को फाड़ देने वाले नारों का गर्जन चारों ओर से सुनाई दे रहा था।

ये लोग चारों ओर जलती हुई अग्नि के प्रकाश में एक-दूसरे का मुख देख रहे थे। निवारणचन्द्र कॉलेज होस्टल में वापस नहीं जा सका था। समीप से ही "अल्ला-हू-अक्बर" की घोर गर्जना हुई। अनिमा इन नारों को सुन-सुन व्याकुल हो रही थी। अब उससे चुप नहीं रहा गया। वह कह उठी, "कौन इस भीड़ के समक्ष अनाथ हिन्दुओं की रक्षा करेगा ?"

सुधीर कुमार का कहना था, "अनिमा बहिन ! कुछ करना चाहिए, यदि यह आज नहीं किया गया तो ब्रिटिश-साम्राज्य का दूसरे नम्बर का नगर एक-दो दिन में कोयलों का ढेर हो जावेगा। मजेदार बात तो यह है कि, कांग्रेसी जो मुसलमानों पर अगाध श्रद्धा और विश्वास रखते थे और जिनको अंग्रेजों से सुरक्षा की पूर्ण आशा थी, अब अपने घरों में छुपे बैठे हैं।"

अनिमा अनेक अग्नि-काण्डों से हुए रक्त वर्ण आकाश की ओर देखकर, एक लम्बी साँस ले बोली, "हमें अपना कर्तव्य करना है। वे क्या कहते थे और क्या कर रहे हैं, इससे हमें कोई प्रयोजन नहीं। मैं समझती हूँ कि अपनी ही परछाईं से डरे हुए सिंह को एक बार सचेत करने की आवश्यकता है। यदि हम सफल हुए तो कलकत्ता कल तक बच जाएगा। भैया निवारण, कॉलेज होस्टल में जा, विद्यार्थियों को एकत्रित कर, कुछ तो करना चाहिए।"

"मैं भी यही सोच रहा हूँ। भेष बदलकर ही जा सकूँगा।"

"पर कैसे होगा ?" श्यामाचरण ने पूछा।

"हम मोहल्ले-मोहल्ले में जाएँगे और लोगों को ऐसे ही तैयार करेंगे जैसे इस गली में किया है।" अनिमा का उत्तर था।

"पर बहिन अनिमा ! तुम्हारे जाने की क्या आवश्यकता है ? हम लड़के भी तो यह काम कर सकते हैं।"

"नहीं, भैया निवारण ! मुझसे यह ताण्डव और अधिक नहीं देखा जा सकता। मैं तो भेष बदलने में भी बहुत विश्वास नहीं रखती। चलो, सुधीर भैया ! मेरा मन कहता है कि कल का कलकत्ता आज से भिन्न होगा।"

सुधीर ने अपने पिस्तौल को खोलकर गोलियों को देखा। सब ठीक थीं। फिर इसे बन्द कर जेब में रख लिया। कुछ और कारतूस जेब में रख लिये और अनिमा के साथ जाने को तैयार हो गया। अनिमा ने भी अपनी कटार अपने आँचल के नीचे छुपा ली और सुधीर के साथ घर से बाहर निकल गई। घर से निकलते ही अनिमा ने निश्चय कर लिया था कि उसे अपना काम कहाँ से आरम्भ करना है।

निवारण और श्यामाचरण कॉलेज होस्टल की ओर चले गए। ये दोनों मुसलमानों के भेष में जा रहे थे। मार्ग-भर में वे जलते हुए मकानों को देखते जाते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं-कहीं लूट-मार मच रही थी और एक स्थान पर तो उन्होंने औरतों को उठा कर ले जाते हुए लोगों को देखा। ऐसे अवसर पर उनके लिए यह अति कठिन हो गया था कि वे अपने हिन्दू होने को छुपा सकते। दाँत पीसते हुए एक ओर अँधेरे में खड़े हो, अपने मन के भावों को कठिनाई से प्रकट होने से रोक सके।

जब ये कॉलेज होस्टल में पहुँचे तो निवारण की आँखें आँसुओं से तरबतर हो रही थीं। पहले तो होस्टल का दरवाजा ही बहुत कठिनाई से खुला। फिर जब भीतर पहुँचे तो जो कुछ देख चुके थे, वह बताने में अपने को अशक्त पाने लगे। होस्टल के विद्यार्थियों में बहुत जोश फैला हुआ था, परन्तु कोई नहीं जानता था कि उस समय क्या किया जावे। श्यामाचरण ने अपनी गली के बाहर की घटनाओं का वर्णन किया और बताया कि किस भाँति आधे से कम हिन्दुओं ने अपने से दुगुने मुसलमानों को भगा दिया। उसने मुसलमानों की कायरता का वर्णन करते हुए कहा, "थोड़े-से साहस से पाँसा पलटा जा सकता है।"

उस होस्टल में डेढ़ सौ के लगभग लड़के थे। सब-के-सब तैयार हो गए। पचास-पचास के तीन दल बनाये गए और यह निश्चय किया गया कि होस्टल की इमारत के आस-पास तीन हल्कों में चक्कर काटकर एक घण्टे में पुन: वहीं लौट आया जावे। अपने-अपने दल के लड़कों की गिनती कर पुन: दूसरे हल्कों में दौरा किया जावे। इस योजना को सबने पसन्द किया और तीनों दल तीन ओर को चल पड़े।

नियत समय में दो दल तो लौट आये परन्तु तीसरा दल नहीं लौटा। इससे यह अनुमान लगाया गया कि उससे झगड़ा अधिक हो गया है। अतएव वे दोनों दल भी उसकी ओर ही चल पड़े। सत्य ही उस दल की एक मुसलमान दल से मुठभेड़ हो गई थी। मुसलमान भागे तो उन्होंने उनका पीछा किया और अपने निश्चित हल्के से दूर निकल गए। मार्ग में तीन बार मुसलमानों से मुठभेड़ हुई और तीनों बार मुसलमान मारे गए और भाग गए। इससे उस दल के लोग इतने उत्साहित हुए कि वापस आना ही भूल गए। जब तीनों दल मिले तो वहीं बाजार में ही गणना कर देखा गया कि कोई भी लड़का अनुपस्थित नहीं था। लड़ाई करने वाले दल में पाँच-छः लड़कों को हल्की चोटें आई थीं। सब वहाँ से नये हल्के बना आगे चल पड़े।

इस प्रकार हल्के के बाद हल्के मुसलमानों से खाली होने लगे। दूसरी ओर अनिमा भवानीपुर में जा पहुँची। वहाँ सिक्खों की एक छोटी-सी बस्ती थी। अनिमा कई बार उन लोगों में जाकर अपनी और अन्य हिन्दुओं की रक्षा करने के लिए कह चुकी थी। उसे वे लोग सबसे अधिक उत्साही मालूम हुए थे। इससे उसने उनसे ही काम आरम्भ करने का निश्चय किया। वहाँ पहुँच उसने एक मकान का दरवाजा खटखटाया। एक वृद्ध ने खिड़की में से झाँककर देखा और पूछा, "कौन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनिमा का उत्तर था, "एक हिन्दू औरत।"

"क्या चाहती हो ?"

"थोड़े से बहादुर वीरों की सहायता।"

वह वृद्ध खिड़की में से पीछे हट गया। ऐसा प्रतीत होता था कि वह मकान में के दूसरे लोगों से राय कर रहा है। लगभग पाँच मिनट के पश्चात् दरवाजा खुला। दरवाजा खोलने वाला वही वृद्ध था। उसने सुधीर की ओर देखकर पूछा, "यह कौन है ?"

"मेरा भाई है।"

"और भी कोई साथ है ?"

"नहीं। हम यहाँ ठहरने के लिए नहीं आए। मैं तो यह कहने आई हूँ कि इस प्रकार मकानों के भीतर बैठे-बैठे जल मरने से बाहर निकल इकट्ठे हो, मोहल्ले और नगर की रक्षा करते-करते मरना ठीक नहीं है क्या ? वीर पुरुषों को डर के मारे घरों में बैठ रहना अब शोभा नहीं देता।"

"क्या करें हम नहीं जानते।"

"कितने सबल पुरुष हैं यहाँ ?"

"एक सौ के लगभग। मगर हमारे मोहल्ले में तो कोई आक्रमण करता ही नहीं।"

"तो क्या दूसरे मोहल्लों में, जो माँ-बहिनों की इज्जत बिगाड़ी जा रही है, वह आपकी नहीं है ?"

"इसी से तो पूछता हूँ, कि क्या करें ?"

इस समय कुछ और लोग ऊपर से नीचे उतर आए थे। एक ने सन्देह-भरी आवाज में पूछा, "पर तुम कौन हो ?"

"मेरा नाम अनिमा है। मैं कई बार पहले भी आपको चेतावनी देने आई थी।" कुछ लोगों ने पहचान लिया और अचम्भे में बोल उठे, "ओह ! अनिमा बहिन, और ये सुधीर बाबू हैं ?"

एक और बोल उठा, "बहिन, भीतर आ जाओ।"

"नहीं। इसके लिए न समय है और न आवश्यकता।"

इस पर उस वृद्ध ने कहा, "आपके कहने के अनुसार हमने मोहल्ले की रक्षा का प्रबन्ध तो किया है। अब हम सोच रहे हैं कि मोहल्ले के बाहर भी हम अपना प्रबन्ध करें अथवा न करें।"

इस समय पड़ोस के मकानों के भी कुछ लोग आकर खड़े हो गए। उनमें से एक युवक बोल उठा, "रक्षा का सबसे बढ़िया प्रबन्ध विरोधियों पर आक्रमण नहीं है क्या ?"

"बिलकुल ठीक।" सुधीर का उत्तर था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु" अनिमा का कहना था, "आक्रमण करने में स्त्रियों और बच्चों पर हाथ उठाना तो हमारा धर्म नहीं है न ।"

"वाहे गुरु इससे बचाए ।" वृद्ध का कहना था ।

"परन्तु वे जो ऐसा करते हैं ।" उसी युवक ने पूछा ।

अनिमा ने यह कहने वाले की ओर घूमकर कहा, "वीर ! हम उनसे अच्छे आदमी हैं ।"

इसने सबका मुख बन्द कर दिया । अनिमा ने कुछ सोचकर कहा, "जीवन में कभी ऐसी घड़ियाँ आती हैं जब जीना बहुत ही तुच्छ वस्तु बन जाता है । सिद्धान्तों के प्रबल संघर्ष में व्यक्तियों के जीवन घास-फूस से अधिक मूल्यवान नहीं होते । मैं अति निर्बल स्त्री हूँ । मैं अपना जीवन तो बलिदान कर सकती हूँ पर किसी दूसरे की किसी प्रकार से सहायता नहीं कर सकती । मैं पूछती हूँ कि क्या इस जीवन का मूल्य इतना अधिक है कि सब प्रिय वस्तुओं को, धर्म, कर्म और सम्बन्धी, इस पर न्योछावर किए जा सकते हैं । आप मकान की छत पर चढ़कर देखें और सुनें, कितने ही बच्चों, स्त्रियों और निस्सहाय लोगों की चीत्कार सुनाई देगी । ये सब कहीं घोर पशुपन होने का सूचक है । यदि जाति में सबल बहादुर और समझदार लोग जीवन के लोभ में ये सब उपद्रव होते देखते रहें तो संसार जीने के योग्य नहीं रह जाएगा ।

"अबलाएँ चीख-चीखकर सबलों से अपनी रक्षा की पुकार कर रही हैं । अच्छा, तो लो, अब मैं चली । जो आपको अपना कर्तव्य समझ आवे, करो ।"

अनिमा इतना कह चल पड़ी । इस समय एक वृद्ध ने आगे आकर कहा, "बेटी अनिमा ! सब कलकत्ता ऐसे ही घूमना चाहती हो । यह नगर बहुत लम्बा-चौड़ा है । ठहरो, मैं अपनी टैक्सी ले आता हूँ ।"

इससे अनिमा का काम कुछ सुगम हो गया । सबसे अधिक सफलता अनिमा को कॉलेजों के होस्टेलों में मिली । उसके केवल इतना कहने पर कि हिन्दू स्त्रियों और बच्चों पर बलात्कार और अत्याचार हो रहा है, विद्यार्थी लाठियाँ-छुरियाँ और हॉकियाँ लेकर निकल आए ।

अनिमा दोपहर के समय घर पहुँची । जब से उनकी गली के बाहर मुसलमानों का आक्रमण हुआ था, वह आराम से नहीं बैठी थी । चौबीस घंटे से ऊपर हो चुके थे और वह भाग-दौड़ कर रही थी, जिससे थककर चूर हो गई थी । घर पहुँची तो उसके पिता घायल हो वहाँ पहुँच चुके थे । उनकी मरहम-पट्टी हो चुकी थी । अनिमा को बताया गया कि मुसलमानों के एक दल ने उनके पड़ोस में आक्रमण कर दिया तो उसके पिता अकेले ही बन्दूक ले अपने मकान की छत पर चढ़ गए और आक्रमणकारियों को एक घंटा तक रोके रहे । जब सब कारतूस समाप्त हो गए तो मकान की छतों पर से कूदते-फाँदते वहाँ से निकल भागने के यत्न में एक मकान को लूट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे मुसलमानों में जा फँसे। वहाँ पर बन्दूक के कुन्दे से लड़ते हुए निकलने में यह चोट खा गए हैं। इसी समय निवारण कुमार अपने साथियों सहित वहाँ जा पहुँचा और उनको छुड़ा लाया है।

अनिमा इतनी थकी हुई थी कि बातें करते-करते ही सो गई। सायंकाल उठी और स्नानादि कर भोजन करने जा बैठी। इस समय श्याम बाबू दिन-भर की मेहनत से थका हुआ घर पहुँच गया। उसने यह समाचार अनिमा को सुनाया कि कलकत्ते की अवस्था में परिवर्तन हो गया है। जहाँ कल केवल अल्ला-हू-अकबर के नारे सुनाई देते थे वहाँ आज हर-हर महादेव, कालीमाई की जै और सत् श्री अकाल की गर्जना सुनाई देती है। धधकती हुई हवेलियाँ शान्त हो रही हैं। अनेक स्थानों पर हिन्दू-मुसलमानों का डटकर मुकाबिला हुआ था। दो-दो सौ के दल एकत्रित होकर लड़े थे और बिना अपवाद के सब स्थानों पर मुसलमानों ने भागकर जान बचाई थी।

हावड़ा के पुल पर से सैकड़ों के शव गंगा को अर्पण किए गए थे। सहस्रों शव सड़कों और नालियों में लुढ़क रहे थे। बाजार वीरान थे। जहाँ मुसलमानों के झुंड हाथों में कुल्हाडियाँ, बरछे, लाठियाँ और छुरियाँ लिये घूम-घूमकर ऊधम मचा रहे थे, वहाँ अब अनिमा और उसके साथियों के प्रयत्नों से दुम दबाकर भागते दिखाई देने लगे थे।

जहाँ तक सुधीर के मोहल्ले का सम्बन्ध था, रात से कोई झगड़ा नहीं हुआ था। मोहल्ले के सब रहने वाले अनिमा की प्रोत्साहन-शक्ति और साहस से चकित रह गए थे और मुक्तकंठ से उसकी प्रशंसा कर रहे थे।

अगले दिन कलकत्ता से मुसलमान पैदल, बैल-गाड़ियों, छकड़ों, मोटरों और बाइसिकलों पर भागने आरम्भ हो गए। दोपहर तक तो भागने वालों की संख्या इतनी अधिक हो गई थी कि कलकत्ता से, लोगों की नदियाँ-सी, बाहर को बहती दिखाई देने लगीं।

: ३ :

सोलह अगस्त को प्रातःकाल नसीम और चेतनानन्द ब्रेक-फास्ट पर बैठे हुए समाचार-पत्र पढ़ रहे थे। चेतनानन्द ने कहा, "सरकार को आज पब्लिक छुट्टी नहीं करनी चाहिए थी।"

"क्यों?"

"इसलिए कि यह आन्दोलन एक ग़ैर-सरकारी अंजुमन की ओर से सरकार के खिलाफ है।"

"नहीं। आप इस मूवमैंट का मतलब नहीं समझे। यह मूवमैंट नहीं है। एक्शन है। यह सरकार के खिलाफ नहीं है। यह हिन्दुओं के खिलाफ है। फिर बंगाल की सरकार मुसलमानों की है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सरकार तो किसी एक खास फिरके की नहीं हो सकती।"

"हाँ ! पर मुसलमान कोई फिरका नहीं है।"

चेतनानन्द हैरानी में नसीम का मुख देखने लगा। नसीम स्टेट्समैन पढ़ती हुई बातें कर रही थी, इससे चेतनानन्द ने समझा कि उसने बेध्यान में यह बात कह दी है। उसने बात के स्पष्टीकरण के लिए पूछा, "प्रिये ! क्या तुम भी यही मानती हो कि मुसलमान एक फिरका नहीं है?"

"हाँ। मुसलमान एक कौम है।"

"भला यह कैसे और कब से?"

"जब से कांग्रेस ने 'ग्रुपिंग' सिस्टम माना है। एक फिरके के लिए पृथक् राज्य नहीं चाहिए।"

"तो कांग्रेस ने भूल की है? यही बात तो अनिमा देवी कहती थीं।"

"देखिए जी। मैं आपको अपने मन की बात बता देना चाहती हूँ। मैं और हमारा परिवार नेशनलिस्ट मुस्लिम थे। हम मुस्लिम लीग का विरोध करते थे। परन्तु कांग्रेस ने ही मुल्क की तक्सीम मजहबी बिना पर मानकर हमारी पोजीशन को खराब कर दिया है। इसी से मैं कहती हूँ कि मुसलमानों के एक कौम होने के नतायज को तो मान लें, मगर इस बात को न मानें, यह तो कांग्रेस के नेता ही कर सकते हैं।"

"तो इसका मतलब यह हुआ कि हिन्दू महासभा और मुस्लिम लीग दोनों एक ही विचार को मानने वाले हैं। तो फिर यह जहाद हिन्दुओं के खिलाफ क्यों है?"

"इसलिए कि अठानवें प्रतिशत हिन्दुओं ने अपने मत कांग्रेस को दिए हैं, जो मुसलमानों को एक पृथक् कौम मानती तो है और उसे एक पृथक् मुल्क देने को भी तैयार है मगर फिर भी अपने आपको दोनों कौमों की मुतहिदा नुमाइन्दा मानना चाहती है।"

चेतनानन्द इस उत्तर से गम्भीर विचार में पड़ गया। वह अपने सामने रखे 'पौरिज' को धीरे-धीरे खाने लगा। नसीम अपना खाना समाप्त कर चुकी थी, इससे पुनः समाचार-पत्र पढ़ने लगी।

चेतनानन्द ने खाना समाप्त किया और उठकर, हाथ धो, कुल्ला कर मकान की खिड़की में जा खड़ा हुआ और बाहर की ओर झाँकने लगा। इस समय भी वह उसी विडम्बना में फँसा हुआ था। वह मन में सोचता था कि उसके पिता ने भी यही बात कही थी, अनिमा भी यही कहती थी और अब नसीम भी कह रही है कि कांग्रेस हिन्दू-मुसलमान दोनों का प्रतिनिधित्व नहीं करती। तो कांग्रेस ऐसा क्यों कहती है? क्या महात्मा गांधी असत्य कहते हैं अथवा क्या वे बात को समझ नहीं सके?

इन्हीं विचारों में वह देख नहीं रहा था कि मकान के नीचे सड़क पर क्या हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा हूं। लोग जोक-दर-जोक पैदल एक ओर जा रहे थे। छुट्टी के कारण टैक्सी-ट्राम सब बन्द थीं। चेतनानन्द का ध्यान इनकी ओर नहीं था। एकाएक मुस्लिम नेशनल गार्ड का एक जत्था, जिसमें लगभग दो सौ युवक, फौजी वर्दी पहिने कवायद् करते आ रहे थे, उस मकान के नीचे से जाते-जाते अल्ला-हू-अकबर का नारा लगाने लगे। इससे चेतनानन्द का ध्यान टूटा। वह देखने लगा कि मकान के बाहर क्या हो रहा है। उसे अनिमा का कहना स्मरण हो आया कि इस दिन मुसलमान झगड़ा करने की तैयारी कर रहे हैं। अभी तक तो उसे इस बात के कुछ भी लक्षण नहीं दिखाई दिए थे।

वह नसीम के ऐसा कहने को कि उस दिन का प्रदर्शन हिन्दुओं के विरुद्ध है, इस बात का सूचक समझ रहा था कि हिन्दुओं पर प्रभाव जमाने का प्रयत्न प्रत्येक प्रकार से किया जावेगा और प्रत्येक प्रकार में लड़ाई-झगड़ा भी सम्मिलित है। इससे वह कामना कर रहा था कि लड़ाई-झगड़ा न हो तो अनिमा का अनुमान गलत सिद्ध हो जावे।

अब जलसे पर जाने वाले साधारण लोग भी नारे लगाने लगे थे। इन नारों को सुनते-सुनते उसका जी ऊब गया था। वह खिड़की से पीछे हट पुनः नसीम के समीप आ बैठा। वह समाचार-पत्र समाप्त कर चुकी थी और कुछ चिन्ता में बैठी चेतनानन्द की ओर देख रही थी। जब वह उसके समीप आकर बैठा तो उसने पूछा, "क्या विचार कर रहे थे आप?"

"मैं यही सोच रहा हूँ कि आज के प्रदर्शन का क्या परिणाम होगा। अनिमा कहती थी कि कलकत्ता में मुसलमान झगड़ा करने की तैयारी कर रहे हैं। तैयारी है अथवा नहीं, यदि कहीं झगड़ा हो गया, तो तैयारी की गई ही मानी जावेगी।"

"तो फिर क्या होगा? किसी मकसद से की गई तैयारी गुनाह नहीं हो सकती।"

"यह तो ठीक है। मगर देखो न, कांग्रेस हिन्दुओं को तैयारी से रोकती रही है, यहाँ तक कि केवल इतना कहने वाले को, कि अपना बचाव का प्रबन्ध कर लो, कांग्रेस के प्रधान ने कैद करवाने का यत्न किया। अब यदि फसाद हो गया और हिन्दुओं को हानि हुई तो हिन्दू इसके विषय में क्या सोचेंगे?"

"सोचेंगे क्या? कांग्रेसी नेताओं को कौम के गद्दार कहेंगे। जिन्होंने उनको अपना प्रतिनिधि चुना है, वे उनकी रक्षा में ही बाधा डाल रहे हैं। मैं आपको एक और नुक्ता-निगाह से देखने के लिए कहती हूँ। पठानों के खान भाइयों ने कांग्रेस का साथ यह समझकर दिया था कि हिन्दू और मुसलमान एक कौम है। जब मजहबी बिना पर मुल्क की तक्सीम मंजूर कर ली है तो क्या खान भाइयों के और आम-तौर पर पठानों के साथ दगा नहीं हुआ? मैं तो कहती हूँ कि आम हिन्दुओं ने कांग्रेस को वोट दिया है और अब भी कांग्रेस की हिमायत कर रहे हैं तो कांग्रेस के लीडरों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की, बेवकूफी कहिए या गद्दारी कहिए, उसका नतीजा उनको नहीं भोगना चाहिए क्या ?"

इसका चेतनानन्द के पास कोई उत्तर नहीं था, वह अपने मन में सोच रहा था कि कुछ-न-कुछ खराबी कहीं है । यह तो वह सोच ही नहीं सकता था कि महात्मा गांधी भूल कर रहे हैं ।

चेतनानन्द को चुप देख नसीम ने कहना जारी रखा, "महात्मा गांधीजी ने हमेशा उन मुसलमानों की मिन्नत व समाजत की है जिन्होंने हिन्दुस्तान में हिन्दू और मुसलमानों को दो कौम होने का दावा किया है । यह ठीक है कि हम नेशनलिस्ट मुसलमान कांग्रेस का साथ देते रहे हैं मगर इसमें भी कोई शक नहीं कि कांग्रेस गैर-नेशनलिस्ट मुसलमानों के नुक्ता-निगाह को समझने की कोशिश करती रही है और आखिर में उन्हीं की बात को मानकर तो हिन्दुस्तान के तीन हिस्से मंजूर कर बैठी है ।"

चेतनानन्द का मस्तिष्क घबड़ा उठा और वह सोच रहा था कि व्यर्थ में अपने पिता के साथ झगड़ा किया । उसने नसीम की बातों का कुछ उत्तर नहीं दिया । इतने में कुछ लोग भागते और शोर मचाते हुए मकान के नीचे से गुजरने लगे । चेतनानन्द पुनः खिड़की में जाकर देखने लगा । लोग वापस भागते हुए लौट रहे थे । कोई-कोई तो यह कह रहा था, "हिन्दू-मुस्लिम फसाद हो गया है ।"

कुछ ही मिनटों में सड़कें खाली हो गईं और लोग केवल बड़े-बड़े जत्थों में लाठियों, छुरियों और बरछों से सुसज्जित, आने-जाने लगे । इस समय नसीम भी खिड़की में बाहर का तमाशा देखने आ खड़ी हुई थी । भवानीपुर में हिन्दू आबादी बहुत ज्यादा थी और फिर उस स्थान पर, जहाँ चेतनानन्द का मकान था, प्रायः अफसर रहते थे, इससे मुसलमानों के जत्थे वहाँ से गुजर जाते रहे परन्तु वहाँ के किसी आदमी अथवा किसी परिवार पर हाथ नहीं उठाया ।

नसीम और चेतनानन्द जब देखते-देखते थक गए तो खिड़की से पीछे हट, बैठने के कमरे में आ गए । दोनों अपने-अपने विचारों में लीन थे और एक-दूसरे से बातें नहीं कर रहे थे । चेतनानन्द को आज आफिस नहीं जाना था और नसीम के लिए भी कहीं बाहर जाना सुरक्षित नहीं था । इससे दोनों बैठे तो थे परन्तु अनुभव कर रहे थे कि उस दिन की घटनाओं के विषय में आपस में मत नहीं मिलता । दोनों डर रहे थे कि उस दिन के विषय पर बात होने पर कहीं झगड़ा बढ़ न जाए ।

इसी प्रकार के विचारों में बैठे-बैठे दोपहर के खाने का समय हो गया । नौकर ने 'लंच' के समय की सूचना दी । दोनों उठकर खाने की मेज पर बैठे । खाना आया और वे खाने लगे । खाना अभी समाप्त नहीं हुआ था कि मकान के नीचे भारी हल्ला होने लगा । चेतनानन्द ने नौकर को आवाज दी, "नाजिर, जरा देखना क्या हो रहा है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाजिर खाने के कमरे में आकर बोला, "हजूर ! वो सामने के मकान पर लोगों ने धावा बोल दिया है।"

"सामने, किसके ?"

"जी फणी बाबू, जिसकी बहुत-सी लड़कियाँ हैं और……"

"और क्या ?" चेतनानन्द ने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर पूछा।

नाजिर चुप रहा। वह समझ नहीं सका कि साहब इस सूचना से खुश हो रहे हैं अथवा नाराज, चेतनानन्द खाना छोड़ उठ खड़ा हुआ और अपने सोने के कमरे में जा अपना पिस्तौल भरने लगा। नसीम समझ गई कि वह सोने के कमरे में क्या करने गया है। अतएव वह भी उठ पड़ी और उसके पीछे वहाँ जा पहुँची। उसे पिस्तौल भर बाहर निकलते देख मार्ग रोक खड़ी हो गई। चेतनानन्द उसका आशय समझ पूछने लगा, "क्यों ?"

"आप हिन्दू हैं और उनकी संख्या बहुत अधिक है।"

"मुझे डर नहीं लग रहा। तुम चिन्ता न करो, मैं अभी आता हूँ।

इतना कह चेतनानन्द नसीम को एक ओर हटाकर, कमरे के बाहर निकल गया। नसीम मुख देखती रह गई। वह मकान के नीचे उतर आया और भीड़, जिसमें प्रायः आस-पास के बंगलों के बैरे और खानसामे थे, की ओर जाने लगा। उसने देखा, लोग मकान के अन्दर घुस चुके हैं। मकान का दरवाजा तोड़ दिया गया है और मकान के अन्दर कोहराम मचा हुआ है। कुछ लोग भीतर से सामान निकाल-निकालकर बाहर ढेर लगा रहे थे। एक-दो दियासलाई जला उसे आग लगाने का यत्न कर रहे थे। इससे चेतनानन्द को कुछ अचम्भा हुआ। वह समझ नहीं सका कि सामान लूटकर ले जाया क्यों नहीं जा रहा और यदि आग ही लगानी है तो मकान ही को क्यों नहीं आग लगाई जा रही।

चेतनानन्द अभी भीड़ से कुछ अन्तर पर ही था कि उसे दो आदमी एक औरत को ढकेलकर बाहर लाते हुए दिखाई दिए। यह फणी बाबू की सबसे बड़ी लड़की थी। इसके बाहर निकलते ही एक और आदमी एक और लड़की को कंधे पर डाले हुए बाहर निकला। इसके पीछे एक और था। चेतनानन्द अधिक सहन नहीं कर सका। वह वहीं खड़ा हो गया और ललकारकर बोला, "ठहरो, कहाँ लिये जा रहे हो इन्हें ?"

भीड़ ने घूमकर चेतनानन्द की ओर देखा और उसे, अकेले को, इस प्रकार ललकारते हुए देख, सब खिलखिलाकर हँस पड़े। वे आदमी जो लड़कियाँ उठा लाए थे, बिना चेतनानन्द की ओर ध्यान किए, भीड़ से बाहर निकल एक ओर को चल पड़े। चेतनानन्द ने भीड़ की हँसी की ओर ध्यान किए बिना उस आदमी की ओर पिस्तौल का निशाना साधा जो मँझली लड़की को कंधे पर डाले ले जा रहा था। चेतनानन्द उस लड़की को तड़पते और रोते देख रहा था। उसे अपनी रक्षा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान नहीं था। उसने गोली चला दी। गोली लड़की ले जाने वाले की कमर में लगी और वह वहीं बैठ गया। लड़की उसके कंधे से लुढ़ककर भूमि पर गिर गई। चेतनानन्द ने तीसरी लड़की को उठाकर ले जाने वाले पर भी फायर किया। यह गोली भी निशाने पर बैठी। अब तक भीड़ को पता चल गया था कि क्या हो रहा है। इससे चेतनानन्द ने भीड़ को सम्बोधित कर कहा, "भाग जाओ। नहीं तो मार डालूंगा।" इतना कह उसने एक गोली उस पर चला दी जो असबाब के ढेर को आग लगाने का यत्न कर रहा था। गोली उसके हाथ में लगी और वह भाग खड़ा हुआ। उसने एक गोली और चलाई। यह एक की खोपड़ी में लगी। वह तो वहीं चित्त हो गया। इससे भीड़ में भगदड़ मच गई। फणी बाबू की सबसे बड़ी लड़की भूमि पर बैठ गई थी और उसको ले जाने वाले, उसे वहीं छोड़ भाग गए। दो आदमी एक और लड़की को पकड़े हुए मकान से बाहर निकले। लड़की हाथ-पाँव मारती हुई छटपटा रही थी। चेतनानन्द ने अब भीड़ को भागते छोड़ लड़की उठाने वालों पर पिस्तौल ताना और उनको ललकारा। उन्होंने मकान के बाहर निकल सबको भागते देख लिया था। इससे विना बहुत कुछ विचार किए, लड़की को वहीं छोड़ भाग गए।

मकान के भीतर अभी भी चीत्कार मच रही थी। चेतनानन्द ने भीड़ को भगाकर मकान की ओर ध्यान किया। वह मकान के भीतर जाने लगा तो नसीम ने, जो उसके पीछे आकर खड़ी हो गई थी, उसका हाथ पकड़कर बोली, "भीतर मत जाइए।" परन्तु चेतनानन्द नहीं माना। वह अपने को छुड़ाकर मकान में घुस गया। नीचे की मंजिल पर कुछ नहीं था। चेतनानन्द भागकर सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। नीचे से नसीम आवाज दे रही थी। "ठहरिए, मैं भी आ रही हूँ।" इस पर भी चेतनानंन्द नहीं ठहरा। वह सीढियाँ चढ़ता ही गया।

ऊपर की मंजिल पर पैशाचिक नृत्य हो रहा था। फणी बाबू का शव एक ओर पड़ा था। छूरे से उसका पेट फाड़ डाला गया था। उसके कुछ अंतर पर फणी बाबू की स्त्री भूमि पर चित्त लेटी हुई थी और एक आदमी उससे बलात्कार कर रहा था। दो आदमियों ने उसके हाथ और टाँगें पकड़ी हुई थीं। इसी प्रकार एक लड़की से भी व्यभिचार किया जा रहा था और वह अचेत पडी हुई थी। दो छोटी-छोटी लड़कियाँ कमरे के एक कोने में सहमी खड़ी थीं।

चेतनानन्द ने कमरे में दाखिल होते ही उस पर गोली चलाई जो बेहोश लड़की से व्यभिचार कर रहा था। उसको समाप्त कर चेतनानन्द ने अपनी पिस्तौल उस पर तानी जो फणी बाबू की स्त्री से व्यभिचार करने वाला था, परन्तु पिस्तौल खाली हो चुका था। वे, जो स्त्री के हाथ और पाँव पकड़े हुए थे, अपने साथी को मरता देख, हाथ-पाँव छोड़, उठ, चेतनानन्द पर लपके। चेतनानन्द ने फणी बाबू के पेट में भोंकी हुई छुरी निकाल ली परन्तु पूर्व इसके कि वह छुरी निकाल सीधा हो पाता, एक आदमी ने उसके सिर पर लाठी से वार किया। इसी समय फट-फट-फट्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन गोली चलीं और तीनों बलात्कार करने वाले घायल हो बेकार हो गए।

चेतनानन्द लाठी के प्रहार से अचेत हो भूमि पर गिर गया था। नसीम, जिसने अन्त में गोलियाँ चलाई थीं, कमरे का दृश्य देख काँप उठी। उसकी आँखों के सामने सब कुछ घूमने लगा। वह वहीं बैठ गई और अपने मन को काबू करने का यत्न करने लगी। कितने की काल के पश्चात् उसे चेतना हुई। मन को कड़ा कर उसने मकान की खिड़की में से अपने नौकर नजीर को आवाज दी। नजीर अपने मकान के नीचे खड़ा अपने साहब का कारनामा देख रहा था। जब बहुत देर तक उसके मालिक और मालकिन मकान से नीचे नहीं उतरे तो उसने समझ लिया था कि वे मारे गए होंगे। अब मालकिन को आवाज देते देख वह घबड़ाया। फिर सचेत हो फणी बाबू के मकान पर जा पहुँचा।

नसीम ने कहा, "कासिम को बुला, साहब को उठाकर ले चल।" वह स्वयं फणी बाबू की लड़की को सचेत करने में लग गई। इस समय तक दूसरी लड़कियाँ भी वहाँ आ गई थीं। उनकी सहायता से बेहोश लड़की सचेत हो गई। उन सबको और फणी बाबू की स्त्री को साथ ले अपने घर ले आई। नसीम ने चेतनानन्द की मरहम-पट्टी के लिए डाक्टर को बुलाने का यत्न किया, परन्तु कोई भी डाक्टर घर से बाहर निकलने का साहस नहीं करता था। विवश, पट्टी उसको स्वयं ही करनी पड़ी।

: ४ :

झगड़े के दूसरे दिन सायंकाल तक कलकत्ते की अवस्था में भारी परिवर्तन हो चुका था। रात के समय मकान की छत पर चढ़कर देखने पर अनिमा इत्यादि ने देखा कि यद्यपि आग की घटनाएँ कम हो रही थीं, फिर भी नगर में चारों ओर चीत्कार मचा हुआ था। अन्तर यह आ गया था कि पिछली रात को केवल 'अल्ला-हू-अकबर' के नारे सुनाई देते थे और इस रात इन नारों के साथ, 'हर-हर महादेव' के नारे भी पर्याप्त संख्या में सुनाई देने लगे थे।

निवारण और श्यामाचरण बहुत रात बीते लौटे। अनिमा ने जब उनसे पूछा तो उन्होंने बताया कि उस समय तक बाजारों में हिन्दुओं के लिए चलना-फिरना सुगम हो गया था। मुसलमान लूट का माल ले-लेकर भागने आरम्भ हो गए थे। अनिमा ने कहा, "कुछ ऐसा प्रबन्ध होना चाहिए कि मुसलमान चुराई हुई लड़कियों को न ले जा सकें।" इस विचार के उठते ही निवारण पुनः होस्टल जाने को तैयार हो गया। अनिमा छः घण्टे सो चुकने के कारण अपने को सर्वथा सबल और सचेत पाती थी। वह भी साथ जाने को तैयार हो गई।

जब दोनों एक कॉलेज के होस्टल में पहुँचे तो वहाँ कुछ गर्ल्ज-कॉलेज की लड़कियाँ इसी प्रयोजन के लिए पहले ही पहुँची हुई थीं। अनिमा के कहने पर पचास-पचास लड़कों के झुण्ड दो-दो, तीन-तीन लड़कियों को साथ लेकर [illegible]त्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बाहर को जाने वाली सड़कों पर जाकर खड़े हो गए। मुसलमान जो भारी संख्या में बाहर को जा रहे थे, इन विद्यार्थियों के जत्थों द्वारा रोक-रोककर देखभाल किए जाने लगे।

अनिमा अभी घर आकर बैठी ही थी कि किसी ने आकर बताया, "भवानीपुर में सिखों ने मुसलमान अफसरों के मकानों पर धावा बोल दिया है।"

"क्या वहाँ कोई मुसलमान अफसर रहता भी है?"

"कई हैं। सुना है कि एक ने तो अपने पड़ोसी हिन्दू अफसर की सात लड़कियों को घर में डाल लिया है।"

"कौन है वह?"

"नाम नहीं जानता। सुना है कि कोई पब्लिसिटी आफिसर है।"

"अरे! वह तो हिन्दू है।"

"आप भूल तो नहीं रहीं?"

"नहीं! उसका नाम चेतनानन्द है।"

"तब तो गजब होने वाला है। बहुत से सिख लोग कह रहे थे कि आज रात को उसके घर हल्ला बोला जावेगा।"

अनिमा यह समाचार पा बैठी नहीं रह सकी। वह तुरन्त उठकर चलने को तैयार हो गई। सुधीर भी साथ चल पड़ा। उसी गली में एक आदमी की अपनी मोटर-गाड़ी थी। जब नगर में मुसलमानों का डर कम प्रतीत हुआ तो वह अपनी मोटर में अनिमा को ले जाने को तैयार हो गया। दोनों उसकी गाड़ी में सवार होकर भवानीपुर में जा पहुँचे।

सत्य ही सिखों के एक जत्थे ने चेतनानन्द के मकान को घेरा हुआ था। और घर के भीतर से बाहर भीड़ पर गोली चलाई जा रही थी। सिख लोगों में से गोली चलने से दो तो मौत के घाट उतर चुके थे और तीन बुरी तरह घायल हो गए थे। अनिमा के आने से पूर्व सिखों में निराशा फैल रही थी। इसे आया देख उनमें पुनः उत्साह भर आया और 'सत् श्री अकाल' के तथा 'अनिमा देवी की जय' के नारे लगाने लगे। अनिमा देवी के पूछने पर उन्होंने बताया, "हमें बताया गया है कि उस सामने वाले मकान के बाबू की सात लड़कियाँ इस पंजाबी मुसलमान ने अपने मकान में छुपा रखी हैं।

"पर वह तो मुसलमान नहीं है।"

"नहीं बहिनजी। आप नहीं जानतीं। वह मुसलमान है और हमें मालूम हुआ है कि यहाँ के प्रीमियर साहब का सम्बन्धी है।"

"भाई जी! मैं उसे जानती हूँ। वह हिन्दू है।"

"पर उसने मेरे भाई को मार डाला है। मैं उसकी जान लिये बिना नहीं छोड़ूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, यह नहीं होगा ।"

इस समय मकान के भीतर से एक गोली और चली और अनिमा के पास खड़े उस सिख को लगी जो कह रहा था, 'मैं अपने भाई का बदला लिये बिना नहीं मानूँगा ।' हा ! कर वह वहीं लोट गया ।

अनिमा ने देखा कि मकान के भीतर से गोली चलनी बन्द करवानी चाहिए, अन्यथा फसाद बढ़ जाएगा । सिखों ने समझा कि गोली अनिमादेवी पर चलाई गई है । इससे क्रोध और जोश में भरकर सिख मकान की ओर लपके । अनिमा उनको रोकने के लिए जोर-जोर से चिल्लाने लगी । "ठहरो ! ठहरो ! वीर भाइयो ! ठहरो !"

जब वे नहीं ठहरे तो अनिमा भागकर उन सबके आगे जा खड़ी हुई । मकान में से गोलियाँ चल रही थीं और सिख धड़ाधड़ घायल हो गिर रहे थे । अनिमा देवी ने साहस नहीं छोड़ा और भागकर सीढ़ियों पर जा पहुँची । एक सिख उसके आगे था और हाथ में नंगी किरपान लिये सीढ़ियों पर चढ़ रहा था । अनिमा ने नीचे से उसकी टाँग पकड़ ली, वह सिख नीचे लुढ़क गया । इससे अनिमा सबसे आगे हो गई । उसने भुजाओं को फैलाकर सीढ़ियों का मार्ग रोककर अपने पूरे जोर से चिल्लाकर कहा, "वीरो, ठहरो ! क्यों व्यर्थ में अपनी जान गँवा रहे हो । यह हिन्दू का घर है । क्यों आपस में लड़कर एक-दूसरे की हत्या कर रहे हो ? लौट जाओ । मैं गोली चलनी बन्द करवाती हूँ ।"

सिख अनिमा के कहने पर रुक गए । इस पर भी एक ने कहा, "पर वे जो गोली चला रहे हैं ।"

"तुम सब मकान से दूर हट जाओ । मैं उनको मना करती हूँ । जल्दी करो, पीछे हट जाओ ।"

अनिमा की आँखों से विशेष चमक निकल रही थी । सिख इसे देख कुछ सहम गए और सीढ़ियों से नीचे उतर मकान से दूर हट गए । परन्तु ज्यों ही अनिमा ने सीढ़ियों पर चढ़ने के लिए मुख मोड़ा कि सीढ़ियों के ऊपर से किसी ने गोली चला दी और यह अनिमा के कंधे पर लगी । अनिमा ने ऊपर को देखा । नसीम सीढ़ियों के ऊपर खड़ी हाथ में पिस्तौल लिये सीढ़ियों की रक्षा कर रही थी । गोली लगने से अनिमा की आँखों के सामने तारे घूमने लगे । इस पर भी उसने दीवार का आश्रय लेकर कहा, "नसीम बहिन ! यह क्या कर रही हो ? देखो, मैं कौन हूँ । जल्दी मुझको ऊपर आने दो । नहीं तो सब बिगड़ जावेगा ।"

नसीम ने अनिमा को देखा और पहचान लिया । उसके मुख से एकाएक निकल गया, "तुम ?" फिर एक क्षण में यह समझ कि वही आक्रमण करने वालों की नेता है, बोली, "देखो, मैं कहती हूँ लौट जावो नहीं तो गोली चला दूंगी ।"

अनिमा समझ रही थी कि उसका विश्वास नहीं किया जा रहा । इस पर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने कहा, "नसीम बहिन ! मैं तुम्हारी शत्रु नहीं हूँ। देखो, वे लोग फिर आ जावेंगे। मुझे मकान की खिड़की में से उन्हें समझाने दो।"

पर नसीम समझ नहीं रही थी। उसने फिर कहा, "बहिन नसीम ! मैं तुम लोगों को बचाने आई हूँ। पीछे हट जाओ। देखो, मैं पहले ही घायल हो गई हूँ। कहीं ऐसा न हो जावे कि उनको हटाए बिना ही बेहोश हो जाऊँ।"

नसीम को इस पर भी विश्वास नहीं आया। उसने पिस्तौल तान लिया और कहा, "हट जावो। नहीं तो मार डालूँगी।"

पूर्व इसके कि वह अनिमा पर दूसरी गोली चलावे, पीछे से किसी ने हाथ पकड़ लिया। यह चेतनानन्द था। उसके सिर पर पट्टी बँधी थी। चेतनानन्द ने नसीम को कहा, "नसीम डियर ! घबराओ नहीं। इसे आने दो। अकेली ही तो है।"

नसीम एक ओर हट गई। अनिमा ऊपर की मंजिल पर पहुँची तो चेतनानन्द ने उसके कंधे से रक्त बहते देखा और पूछा, "ओह ! घायल हो गई हो अनिमा देवी ! इधर आओ, रक्त बन्द होना चाहिए।"

"ठहरो ! मैं नीचे खड़े लोगों को शान्त कर लूँ। मुझे न देख वे उपद्रव करने लगेंगे।

अनिमा खिड़की में चली गई। उसने देखा कि नीचे के लोग जोश में उतावले हो रहे हैं। उसने हाथ में रूमाल पकड़कर, लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए हिलाया और अपने पूर्ण बल से ऊँची आवाज में कहा, "वीरो ! मैं आपको कहती हूँ कि यह एक हिन्दू का घर है। ये लड़कियाँ यहाँ सुरक्षित हैं।"

अनिमा ने चेतनानन्द से लड़कियों के विषय में पूछा। चेतनानन्द ने लड़कियों को वहीं बुला दिया। अनिमा ने उन लड़कियों को अपने साथ खिड़की में खड़ा कर नीचे खड़े लोगों से कहा, "ये वे लड़कियाँ हैं। इनको बाबू चेतनानन्द ने मुसलमानों से छुड़ाया है। इनके पिता को कल कुछ गुण्डे मुसलमानों ने मार डाला था। तब से ये लड़कियाँ इस घर में रक्षा पा रही हैं।"

नीचे खड़े लोगों ने अनिमादेवी की जय के नारे लगाए और फिर अपने घायलों और मारे गए लोगों को उठाकर चल दिए। इस समय सुधीर बाबू भी ऊपर आ गए और अनिमा के कंधे से रक्त-स्राव होता देख चिंतित हो बोले, "अनिमा, ये देखो ख़ून है।"

चेतनानन्द ने पट्टी करने का सामान लाकर अनिमा की पट्टी कर दी और उसे वहीं ठहर जाने को कहा। अनिमा वापस घर जाना चाहती थी। इससे वह बोली, "नहीं, अब मुझे जाने दीजिए। दो दिन से गिरीश बाबू का कोई समाचार नहीं मिला। मैं उनका पता पाने जा रही हूँ।"

"उनको यहीं बुला लो न ?" नसीम ने मुस्कराते हुए कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह है तो ठीक, परन्तु मार्ग में उनकी रक्षा कौन करेगा?"

: ५ :

कलकत्ता में फसाद के समाचारों को सुन सिंध के एक मुस्लिम लीगी नेता ने प्रसन्नता से फूलते हुए कहा, "अब हिन्दुओं को पता चला है कि मुस्लिम लीग की राय न मानने का क्या परिणाम हो सकता है। हम आशा करते हैं कि इससे हिन्दुओं के होश ठिकाने आ जावेंगे।"

फसाद के पहले दो दिन के समाचारों पर तो मुसलमान बगलें बजाते रहे, परन्तु दूसरे दिन की रात और तीसरे दिन के समाचारों से उनके मुख विवर्ण हो गए। अब उन्होंने हिन्दुओं को गाली देनी आरम्भ कर दीं। वे कहने लगे कि फसाद हिन्दुओं ने आरम्भ किया था; उनकी बहुत तैयारी थी; इत्यादि।

तीसरे दिन बंगाल के प्रीमियर और कांग्रेसी नेताओं को हिन्दू-मुसलमानों में सुलह करवाने की चिन्ता होने लगी। बंगाल के गवर्नर बहादुर ने भी अपना वक्तव्य दे डाला। प्रीमियर साहब और कुछ कांग्रेसी नेता मोटर में घूम-घूमकर एकता रखने के पाठ देने लगे।

बंगाल के नेता तो इस डायरैक्ट ऐक्शन से घबरा उठे और वे इस घटना की जाँच की माँग करने लगे। इसके कुछ ही दिन बाद दिल्ली में कांग्रेसी नेताओं ने वाइसराय की कौंसिल की मेम्बरी स्वीकार कर ली। अतएव यह प्रश्न देश में बल पकड़ने लगा कि भारत सरकार की ओर से इस घटना की जाँच होनी चाहिए। भारत-सरकार और बंगाल सरकार में इस विषय पर क्या-क्या बातचीत हुई, कहना कठिन है। इतना स्पष्ट है कि कलकत्ता के फसाद की जाँच करने के लिए बंगाल की सरकार ने ही एक कमेटी नियत कर दी। देश-भर के हिन्दुओं को इस पर असंतोष था। वे चाहते थे कि जाँच भारत सरकार की ओर से हो। इस फसाद के मामले में वे बंगाल-सरकार को भी दोषी मानते थे। इससे उनका कहना था कि एक अपराधी भला अपनी ही क्या जाँच करेगा।

बंगाल से बाहर के मुसलमानों को पहले तो यह लगा था कि कलकत्ता के हिन्दुओं की भारी दुर्गति हुई है। इस पर उन्होंने भारी खुशियाँ मनाईं। एक मुसलमान नेता ने तो यहाँ तक कह दिया कि हिन्दुओं को अपनी दुष्टता का फल मिला है। परन्तु ज्यों-ज्यों लोगों को पूर्ण समाचार मिले तो वे गम्भीरतापूर्वक सोचने लगे। वे जो कुछ देखते थे वह उनके विचार में अनहोनी घटना थी। उनके लिए मुसलमानों को पीटा जाना एक असम्भव बात थी। छोटे दर्जे के मुसलमान तो भयभीत थे और ऊँचे दर्जे के मुसलमान नेता डायरैक्ट ऐक्शन की असफलता का बदला लेना चाहते थे।

इस विषय पर तार भेजे गए, गुप्त गोष्ठियाँ की गईं और कलकत्ता से अधिक अनुकूल क्षेत्र ढूंढ़ा गया। बंगाल के पूर्वी भाग में नोआखाली के थाना बेगमगंज,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामगंज और लखीमगंज इस नवीन हत्याकाण्ड के लिए चुने गए। बंगाल के मुसलमानों को इस काम के लिए योग्य न समझ पंजाब और सूबा सरहद से गुण्डों को लाया गया।

जब महात्मा गांधी हिन्दुओं को अपनी अहिंसात्मक नीति का पाठ दे रहे थे और भारत सरकार की अन्तरिम वाइसराय की कौंसिल के कांग्रेसी नेता राजधानी में पार्टियाँ उड़ा रहे थे, डायरैक्ट ऐक्शन की दूसरी कड़ी सम्पन्न की गई। नोआखाली में हिन्दू स्त्रियों और लड़कियों के साथ भारी संख्या में बलात्कार किया गया और उनका अपहरण किया गया। गाँव के गाँव जला दिए गए। इस हत्याकांड में भी बंगाल के सरकारी अफसरों ने भारी सहायता की। वाइसराय की अन्तरिम सरकार मुख देखती रह गई। बंगाल का मजदूर गवर्नर दार्जिलिंग की ठण्डी हवाएँ लेता रहा। बंगाल का प्रीमियर दंगा रोकने में अपनी विवशता प्रकट कर दार्जिलिंग में गवर्नर से मिलने चला गया।

कांग्रेस के प्रधान श्री कृपलानी जी हवाई जहाज में उन इलाकों के ऊपर घूमने गए जहाँ बलवा हो रहा था और उन्होंने मुसलमानों के जोरो-जुल्म (हिंसा और अत्याचार) का विवरण समाचार-पत्रों में प्रकाशित किया। परन्तु सरकार ने न तो वास्तविक अपराधियों को पकड़ने का यत्न किया और न ही भविष्य में होने वाले दंगों को रोकने का कोई उपाय किया। देश-भर के हिन्दू, सरकार की और कांग्रेसी नेताओं की अकर्मण्यता देख तिलमिला उठे।

इस समय कई लड़कियाँ नोआखाली से भगाकर बिहार के जिला आजमगढ़ लाई गईं। हिन्दुओंको सन्देह हो गया और झगड़ा हो गया। परिणाम यह हुआ कि बिहार के कई जिलों में फसाद हो गया। बिहार में हिन्दुओं की संख्या अधिक थी। इस कारण मुसलमान बहुत बुरी तरह पिटे। इस समय बिहार की प्रान्तीय-सरकार और केन्द्र की सरकार ने दंगे रोकने का पूरा प्रयत्न किया। अन्तरिम सरकार के उप-प्रधान पण्डित जवाहरलाल नेहरू, हवाई जहाज में पटना पहुँचे और उनके आदेश से झगड़े वाले क्षेत्रों में सेना भेजी गई। तीन दिन में झगड़ा शान्त हो गया। केन्द्र की सरकार ने प्रान्तीय-सरकार पर दबाव डालकर लाखों रुपये पीडित मुसलमानों की सहायता के लिए स्वीकार करवा दिए।

बंगाल-सरकार की ओर से कलकत्ते में झगड़े की जाँच आरम्भ तो हुई परन्तु वह जाँच पूरी नहीं हो सकी। चेतनानन्द इन सब घटनाओं को देख रहा था। नसीम की अवस्था विचित्र थी। वह यूँ तो कांग्रेस की नीति को ठीक नहीं समझती थी, तो भी उसे कलकत्ता और नोआखाली में मुसलमानों द्वारा किए गए हत्याकाण्ड अरुचिकर थे। चेतनानन्द इन दिनों गम्भीर विचार में मग्न रहता था। कार्यालय में सब काम मशीन की भाँति करता रहता था। परन्तु काम में अब उस की रुचि नहीं रही थी। घर पर वह खाना खाता था और सोता था और उसे सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो स्वप्न है। नसीम अपने पति के मन की अवस्था को समझ रही थी और एक दिन उससे झगड़ा होने की आशंका कर रही थी। वह तो चाहती थी कि उनका पति-पत्नी का सम्बन्ध राजनीतिक कीचड़ से ऊपर रहे परन्तु उसके मन में भय था कि ऐसा रह नहीं सकेगा। इससे वह भी चिन्तित रहने लगी थी। एक समस्या और उत्पन्न हो गई थी। उसके पेट में तीन महीने का बच्चा था।

चेतनानन्द दंगे के दूसरे दिन अनिमा से मिला था और उसके पश्चात् वह उसे देख नहीं सका था। उसके मन में उससे मिलकर उसके विषय में अधिक जानने की लालसा दिन-प्रतिदिन बढ़ रही थी। वह अपने कार्यालय से अनिमा के घर का पता मालूम कर उसका पता करने गया, परन्तु वह मकान जलकर भस्म हो चुका था। आसपास के लोगों से पूछने पर पता नहीं चला कि अनिमा और उस के पिता कहाँ गए हैं।

एक दिन उसे सुधीर के दर्शन हुए। वह रॉयल कैफे में चाय पी रहा था। सुधीर को कैफे में आकर एक खाली मेज पर बैठते देख चेतनानन्द स्वयं उठकर उसके पास जा पहुँचा।

"नमस्कार।" कह चेतनानन्द उसके सामने की कुर्सी पर जा बैठा। सुधीर उसे पहचान नहीं सका। इससे नमस्कार का उत्तर देकर प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा।

"आपने मुझे पहचाना नहीं ?" चेतनानन्द का प्रश्न था।

"क्षमा करें। मुझे स्मरण नहीं आ रहा कि आपको कहाँ देखा है।"

"आपने मुझको कभी नहीं देखा ?"

"नहीं, ऐसा नहीं। कहीं देखा तो है परन्तु याद नहीं आ रहा कि कहाँ ?"

"देखिए। मैं आपको याद दिलाता हूँ। सत्रह अगस्त की रात को आप एक लड़की के साथ मेरे मकान में मुझको सिक्खों के एक खूँखार जत्थे से बचाने आये थे। मैं उन दो दिन की बातों को भूल नहीं सकता। उन दिनों की सब घटनाएँ और सब देखे लोग मुझको भली-भाँति याद हैं।"

"ओह ! आप बाबू चेतनानन्द हैं। क्षमा करें। उन दिनों में मैंने जो कुछ देखा था वह इतना अधिक था कि सब कुछ याद रखना न तो मैं उचित ही समझता हूँ और न ही सम्भव।"

"विचित्र है ! खैर छोड़िए इस बात को। आप अनिमा देवी का पता बता सकते हैं क्या ?"

"अनिमा देवी ?" सुधीर ने विस्मय में पूछा। "तो आप उस लड़की को जानते थे, जो आपकी रक्षा करते-करते आप की बीवी के हाथों ही घायल हुई थी ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पब्लिसिटी डिपार्टमेण्ट में वह मेरी स्टेनो थी।"

"वह आजकल दिल्ली में है। उसके पिता का देहान्त हो गया था और उससे प्रेम करने वाले गिरीश बाबू दंगे के दिनों में आग की झपट में आ, इस प्रकार झुलस गए थे कि अपनी आँखें खो बैठे हैं। उनके पिता अब उनको चिकित्सा के लिए वियाना ले गए हैं। अनिमा उनके साथ जाना चाहती थी, परन्तु उसकी माँ नहीं मानी।"

"आपको उसकी कोई चिट्ठी आती है ?"

"नहीं। मेरा उससे सम्बन्ध उसके पिता के कारण था। वे बंगाल के पुराने क्रान्तिकारी थे। मैं उनका मान करता था। वह लड़की भी ठीक अपने पिता के समान ही केवल काम में निष्ठा रखती थी।"

"मैं उसका पता जानना चाहता था।"

"मुझको बहुत दुःख है। मैं स्वयं नहीं जानता।"

उस रात चेतनानन्द ने नौकरी छोड़ने का अपना निश्चय नसीम का कह दिया। नसीम इस घोषणा को अपने उससे सम्बन्ध के टूटने का प्रथम चरण समझती थी। उसने विस्मय में त्यौरी चढ़ाकर पूछा, "क्यों ?"

"इस नौकरी में मैं अपनी आत्मा की हत्या कर रहा हूँ।"

"नौकरी तो नौकरी ही है न। अपने को कुछ तो दूसरों के अधीन करना ही होता है।"

"कुछ की बात नहीं। यहाँ तो अपना सर्वस्व ही देना पड़ रहा है। देखो प्रिये! इन हिन्दू-मुसलमान दंगों को देखकर तो मेरी यह धारणा बन गई है कि अभी हिन्दू-मुसलमान एक कौम नहीं बन सकती। इसके लिए अभी कुछ सदियाँ और व्यतीत होनी चाहिएँ।"

"यह तो ठीक है, परन्तु इसका नौकरी से क्या ताल्लुक है ? लोग अंग्रेजों की नौकरी भी तो करते हैं। लोग देश-विदेश में नौकरी करने जाते हैं। आप ऐसा ही समझ लीजिए।"

"यह ठीक है, परन्तु एक ऐसी कौम की, जिससे जंग छिड़ जावे, नौकरी नहीं हो सकती। उसके देश में या तो कैदी होकर, या जासूस बनकर रहा जा सकता है। मैं कैदी बनकर रहना नहीं चाहता और मैं जासूस का काम करने के सर्वथा अयोग्य हूँ।"

"पर हिन्दू-मुसलमानों में जंग कब-से छिड़ी है ?"

"जब से मुस्लिम लीग ने डायरैक्ट ऐक्शन को आरम्भ किया है।"

"पर देखिए ! महात्मा गांधी भी तो इन दंगों की निन्दा कर रहे हैं। और कांग्रेस के नेता लोग बिहार में हिन्दू-मुस्लिम सुलह कराने की कोशिश कर रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं ! उनके करने से ऐक्य नहीं होगा। न ही यह ऐक्य का ढंग है। इससे तो मेरी समझ में एक ही बात आ रही है। भारत में दो पक्ष हैं। एक मुसलमान और दूसरे हिन्दू। अंग्रेजी राज्य तो समाप्त हो चुका है। इसलिए अंग्रेज हिन्दू-मुसलमान की शक्ति हथियाने के लिए जंग में एक का पक्ष लेकर देश में फूट डलवाने का यत्न कर रहे हैं। वे मुसलमानों का पक्ष ले रहे हैं। कांग्रेस अपनी बेसमझी के कारण मुसलमानों का पक्ष ले रही है। इस समय हिन्दू अपने नेताओं द्वारा धोखा दिए जाने पर अकेले हो गए हैं और स्थान-स्थान पर पिट रहे हैं।

"इस जंग में मैं वही अभिनय नहीं करना चाहता जो कांग्रेस कर रही है। यह अपने लोगों से, हिन्दुस्तान के बहुमत से, दगा है।"

"तो फिर आप क्या करेंगे ? खाना-पीना कहाँ से चलेगा ? और यह," उसने अपने पेट में के बच्चे की ओर संकेत कर कहा, "भी तो कुछ माँग कर रहा है।"

"मजदूर, भंगी और चमारों के भी तो बच्चे होते हैं। उनका भी तो पालन-पोषण होता है। जो उनकी देख-भाल करता है वह इसकी और हमारी भी देख-भाल कर सकता है।"

"तुमसे तो गरीबी का जीवन व्यतीत नहीं हो सकता।"

"तुम्हारे लिए मैं अपने पिताजी से क्षमा माँग सकता हूँ। मुझे पूर्ण आशा है कि वे तुम्हारे लिए और इस होने वाले बच्चे के लिए रहन-सहन का प्रबन्ध कर देंगे।"

"तो ऐसा करिए। कुछ दिन की छुट्टी लेकर लाहौर चलिए और वहाँ अपने पिताजी से सफाई कर लीजिए। जब सब बात स्पष्ट हो जाए तब नौकरी छोड़ दीजिएगा।"

"मेरी पिताजी से सफाई से नौकरी का कोई सम्बन्ध नहीं है। नौकरी से तो मैं कल त्याग-पत्र दे दूँगा। पिताजी मुझको क्षमा करते हैं या नहीं, इसका नौकरी से सम्बन्ध कैसे हो सकता है ?"

"यदि उन्होंने क्षमा न किया तो ?"

"तो मैं कोई काम कर लूँगा। दिल्ली में वकालत करने का यत्न करूँगा।"

"और यदि न चली तो ?"

"जैसी भी चलेगी वैसा ही निर्वाह करेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम परिच्छेद

: १ :

सदाशिव और खनीजा खुशीराम के घर खाने पर आए और दोनों पक्षों में परिचय बढ़ने लगा। खुशीराम ने दरगाह पीर शाह मुराद में लक्ष्मी की खोज करवाने का प्रयत्न तो किया ही था, साथ ही खनीजा से जो कुछ भी मालूम हो सके, जानने का यत्न जारी रखा। इस अर्थ से खनीजा और सदाशिव से घनिष्टता बनाए रखी। राधा और खनीजा की परस्पर मेल-मुलाकात दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। इसके साथ खनीजा की माँ से भी भेंट होने लगी।

एक दिन राधा खनीजा के यहाँ आई हुई थी कि खनीजा की माँ भी वहाँ आ पहुँची। दोनों में बहुत स्नेह का बर्ताव उत्पन्न हो चुका था। इस कारण खनीजा की माँ राधा से हर्ष से मिली और दोनों खनीजा को अपने बीच में बैठाकर बात करने लगीं।

"आपसे कई दिन से मिलने को मन कर रहा था, सो बहुत अच्छा हुआ कि आप मिल गई हैं।"

"मैं आपकी बहुत आभारी हूँ कि आप भी मुझे याद करती हैं। खनीजा तो कहती है कि उसका मुझसे स्नेह हो गया है, अब आपके स्नेह की भी मैं पात्र बन रही हूँ, यह सुन बहुत खुशी हो रही है।"

"राधा देवी! तुमसे कौन मुहब्बत नहीं करेगा। मगर मैं तो एक खास बात तुमसे करने के लिए सोच रही थी। तुम यह तो जानती हो कि वली इब्राहीम साहब ने खनीजा को अपनी लड़की बनाया हुआ है और वही इसकी बचपन की हालत से देखभाल कर रहे हैं। इस वक्त भी जो कुछ तुम देखती हो वह सब उन्हीं की बदौलत है। इससे वह देखते रहते हैं कि किस-किससे इसकी मुलाकात होती रहती है। इसलिए वे आपके विषय में कई बातें पूछते रहते हैं। मुझको आपकी कई बातों का पता नहीं और उनके जानने की ख्वाहिश दिल में बन जानी कुदरती है।"

"पर मेरी तो कोई बात छुपी नहीं और खनीजा प्रायः सब कुछ जानती है।"

"इस पर भी बहुत कुछ जानने योग्य रह जाता है। मसलन आपने इस्लाम क्यों छोड़ दिया?"

"रसमी तौर पर तो मैंने इस्लाम नहीं छोड़ा। हाँ इस्लाम की कुछ बुरी बातें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरूर छोड़ बैठी हूँ। साथ ही जात-पाँत को मैं नहीं मानती। मैं एक परमात्मा को मानती हूँ। मैं बुत-परस्त नहीं हूँ। इस तरह इस्लाम की बहुत-सी अच्छी बातें तो मैं अब भी मानती हूँ।"

"पर तुमने अपना नाम क्यों बदल लिया है?"

"राधा कहना ज्यादा आसान और मीठा है इसलिए।"

"तुम मुहम्मद साहब पर ईमान रखती हो क्या?"

"मैं उनकी सब बातों को नहीं मानती। मसलन जिमियों को दोजख की आग में जलना पड़ेगा, यह मैं ठीक नहीं समझती।"

"यह तो मुश्किल है। हजरत पर ईमान का भी बँटवारा कर दिया है तुम ने!"

"इसीलिए लोग मुझको मुसलमान नहीं कहते। मगर मैं अपने को न तो काफर समझती हूँ न ही इस्लाम से बाहर। देखो दीदी! हम इन्सान हैं। इन्सानियत हमारा मजहब है। अगर वह इस्लाम है तो मैं मुसलमान हूँ और अगर वह हिन्दू धर्म है तो मैं हिन्दू हूँ। इन्सान का सबसे बड़ा खासा अकल से काम लेना है। यह खुदा ने ही दी है और अकल यही कहती है कि हर बात को सोच-समझकर मानना चाहिए।"

"मगर हिन्दुओं की बहुत-सी बातें बेवकूफी की हैं।"

"मैं ऐसी बातों को नहीं मानती। देखिए, हिन्दुओं में छुआछूत है। मैं इसमें यकीन नहीं रखती। हिन्दुओं में ऊँच-नीच का मसला है। मेरा उसमें एतकाद नहीं है।"

"तो हिन्दू आपको अपने से बाहर नहीं कर देते क्या?"

"हिन्दू क्या कोई अहाता है या कोई घेरा है, जिससे बाहर कोई किया जा सकता है? यह तो एक नहायथ ही वसीह मैदान, या यूँ कहो कि एक फिजा है जिसकी हदबन्दी नहीं हो सकती। और जिसकी हदबन्दी नहीं, उसके भीतर और बाहर का सवाल ही पैदा नहीं होता।"

"मगर हिन्दू लोग अपने खयाल से नापाक लोगों को अपने से बाहर कर देते हैं। मेरी अपनी ही कहानी है। मैं एक ब्राह्मण की लड़की हूँ। तुम सुनकर हैरान होगी कि मैं अपने बचपन में लघु-कौमुदी पढ़ती रही हूँ। मुझे संगीत का बहुत शौक था। पिताजी के पास इतना धन नहीं था कि मेरी संगीत सीखने की लालसा पूरी कर सकते। हमारे पड़ोस में एक शादी में एक पेशावर गाने-बजाने वाली आई। लोगों ने सैकड़ों रुपये नजराना में उसको दिए। दो दिन वह हमारे गाँव में रही और दो दिन तक मैं उसका गाना और नाचना सुनती, देखती रही। दूसरे दिन सायंकाल की बात है कि वह शादी वाले मकान के दरवाजे पर खड़ी थी और मैं मकान के दरवाजे से निकल अपने घर को जा रही थी कि हमारी आँखें मिलीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो मेरे मुख पर मुस्कराहट दौड़ गई। उसने पूछा, 'क्या है बीवी ?' मैंने कहा, 'तुम बहुत अच्छा गाती हो। तुम्हारा 'बहार' मुझे बहुत पसन्द आया है।'

"मेरी उमर उस समय बारह साल की थी और मेरे मुख से राग के पहचानने की बात सुन वह हैरानी से मुझको सिर से पाँव तक देखने लगी। मैंने समझा कि शायद राग पहचानने में मुझसे गलती हो गई है। पीछे मैंने सोचकर कहा, 'आपने बहार ही तो गाया था न ?' मैंने वही बोला जो उसने गाया था, 'पनिया भरन कैसे जाऊँ' गाकर सुना दिया और साथ ही उसकी सरगम गा दी 'सनीपमपग्मरे-स···म। पधनीस। धनीप मप मग। म···'

"उसने मेरी पीठ पर हाथ रखकर कहा, 'शाबाश ! गाना कहाँ सीखती हो ?' मैंने उत्तर दिया, 'अब कहीं भी नहीं।' तो बोली, 'मेरे साथ चलो; मैं सिखाऊँगी।' मैंने कहा, 'बाबा नहीं जाने देंगे।' इस पर उसने कहा, 'तो उनको मत बताना। हम कल प्रातःकाल की गाड़ी से जा रहे हैं। स्टेशन पर आ जाना।'

"रात-भर मुझे नींद नहीं आई। गाड़ी प्रातः चार बजे खुलती थी और रात के तीन ही बजे खाट मुझे काटने लगी। मैं समझती थी कि मुझे नहीं जाना चाहिए। मैं यह भी समझती थी कि शायद उस गाने वाली ने मुझसे मजाक किया है पर कोई छुपी हुई ताकत मुझको धकेलती हुई गाड़ी के वक्त के पहले ही स्टेशन पर ले गई। घर के सब लोग सो रहे थे और मैं उठकर चल दी। स्टेशन पर वह गाने वाली मुझे देखकर चकित रह गई। मैंने तरल आँखों से उसकी ओर देखते हुए कहा, 'मुझे ले चलोगी न ?'

"उसने उस क्षण तक मेरी आँखों में देखते हुए कहा, 'मेरा कहना मानोगी ?' मैंने बिना सोचे-समझे कह दिया, 'हाँ ! मानूँगी।'

" 'तो चलो।' उसने कह दिया।

" 'मेरे पास पैसे नहीं हैं।'

"इस पर उसने अपने पास से अपने साथ आए सारंगी बजाने वाले को पैसे देकर मेरे लिए रेल का टिकट खरीद लिया। मेरे भाग जाने की खबर घर वालों को मिली तो मेरे पिता मुझे ढूँढ़ते हुए बम्बई पहुँचे और मुझे पकड़कर वापस ले गए। परन्तु गाँव वालों ने उनका हुक्का-पानी बन्द कर दिया। मेरे साथ मेरे माता-पिता और मेरे बहिन-भाई भी, खाने-पीने के लिए लाचार हो गए। मेरे पिताजी ने घर पर पंचायत बुलाई। उसमें मुझसे पूछा गया कि मैंने मांस खाया है या नहीं। मैंने सत्य बात बता दी, 'हाँ, खाया है।' इस पर पंच बोल उठे, 'जब तक यह लड़की घर पर रहेगी, आपका हुक्का-पानी नहीं खुल सकता। यह गोमांस खा चुकी है। यह अब भ्रष्ट हो गई है।'

"गाँव में एक ही कुआँ था और उस पर पंचायत ने पहरा बैठा दिया था। गाँव के बाहर एक तालाब था। उसमें गाँव के गाय-भैंस और दूसरे जानवर पानी पीते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। वहीं से बाबा पानी भरकर लाते थे। हम उसे छानकर पीते थे। मैं समझ रही थी कि मेरे कारण ही घर वालों को कष्ट हो रहा है। एक रात मेरी माँ पिताजी से कह रही थीं कि वे मुझे वहीं समुद्र में क्यों नहीं बहा आए? पिताजी चुप थे। अगले दिन प्रातःकाल उठ मैं उसी गाड़ी में सवार हो बम्बई पहुँच गई। मेरा खयाल है कि जब मैं घर से आने लगी थी तो मेरा बड़ा भाई जागता था परन्तु उसने मुझे रोका नहीं। इसके बाद भी मेरी टोह लेने कोई नहीं आया। सात साल के कठोर अभ्यास से मैं बम्बई की मशहूर गाने और नाचने वाली बन गई।

"रकासा का काम प्रलोभनों से भरा हुआ होता है। अच्छा खाना, अच्छा पहिनना और सज-धजकर रहना, यह सब वासना की ओर ले जाने वाली बातें हैं। इसी वजह से रकासा और रंडी एक ही मायने वाली दो बातें हैं। इन्हीं दिनों मुझे मेरे गुरु मिले। श्री केवलेश्वर राजवाड़े का संगीत सुन मैं उन पर मुग्ध हो गई। यह खनीजा उन्हीं की पुत्री है। मेरे बहुत आग्रह पर उन्होंने यह सन्तान देनी स्वीकार की। जब मुझे गर्भ ठहर गया तो उन्होंने मुझसे वचन लिया, कि यदि लडकी होगी तो उसका विवाह किसी हिन्दू-सन्तान से करूँगी और यदि लड़का हुआ तो उसको किसी हिन्दू को पालन-पोषण के लिए दे दूँगी।

"खनीजा के जन्म होने के बाद मेरी इच्छा और सन्तान पाने की नहीं हुई। परन्तु उस जीवन में बचकर रहना बहुत मुश्किल था। इस कारण जब वली इब्राहीम साहब ने मुझे अपने पास रखने की ख्वाहिश जाहिर की तो मैंने फौरन मान ली। दस साल से ऊपर हो गए हैं कि मैं उनकी खिदमत में हूँ। उन्होंने मुझको अपनी औरत मानकर रखा हुआ है और इस लड़की के साथ वे अपनी लड़की का-सा व्यवहार करते हैं। मेरे इसरार पर उन्होंने इसका एक हिन्दू की सन्तान से विवाह कर दिया है। इस पर भी वे फिकरमन्द हैं कि कहीं यह हिन्दुओं की नफरत का शिकार न बन जावे। आप और आपके घर वाले के व्यवहार से वे खुश तो हैं पर इसकी वजह नहीं जान सके।"

यह वृत्तान्त सुन राधा ने अपनी सफाई देने के लिए कहा, "जो कुछ आपके माता-पिता के साथ बीती है, वह किसी प्रकार भी सराहनीय नहीं है। फिर भी यदि आपके माता-पिता के मन में चोर न होता तो वे गाँव वालों के दबाव से दबते नहीं। मैं अपनी बात बताती हूँ। जब लाहौर में मुसलमानों को मालूम हो गया कि मैं हिन्दू हो गई हूँ, तो एक के बाद दूसरा मेरे पास आने लगे और मुझको मजबूर करने लगे कि मैं या तो उनको तलाक दे दूँ या उनको नमाज पढ़ने मस्जिद में जाने को कहूँ। जिनके घर में मैं पली थी वे मेरे पास आकर कहने लगे कि मैं जब तक उनको गोमांस नहीं खिलाती तब तक वे हिन्दू ही रहेंगे। मेरी समझ में नहीं आता था कि मैं क्या करूँ। हमारे एक मधुर चाचा थे। वे बहुत किताबें लिखा करते थे। एक दिन मैंने उनसे ही पूछा। उन्होंने सारी बात सुनकर कहा, 'देखो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटी ! इंसान का सबसे बड़ा पथ-प्रदर्शक उसका मन है। मन की चाहना तालीम और तरबीयत (संस्कारों) पर मबनी (स्थिर) है। संस्कार एक दिन में नहीं बनते। इससे मैं कहता हूँ कि तुम वही करो जो तुम्हारा मन चाहता है।' मैंने उनसे कहा, 'पर मैं तो उनको किसी बात के लिए मजबूर करना नहीं चाहती।' इस पर उन्होंने पूछा कि 'वे क्या चाहते हैं?' मैंने कहा, 'मैं उनसे पूछना उनका अपमान करना समझती हूँ।' उन्होंने कहा, 'तो बेटी ! अपने दिल को मजबूत करो। जो ठीक समझती हो, वही करो। याद रखो, पुण्य वही है जो मन भावे।'

"इससे मैं कहती हूँ कि यदि मेरी तरह आपके माता-पिता होते और वे समझते कि तुम्हें घर रखना ठीक है तो गाँव वालों का विरोध करते। ऐसा करने से वे भी मेरी तरह कामयाब होते।"

"आपकी बातों से तो मैं कुछ भी नहीं समझी। क्या आप हिन्दू रहना ठीक समझती हैं या क्या आप सदाशिव को मुसलमान हो गया समझती हैं?"

"मैं तो हिन्दू-मुसलमान के झगड़े में नहीं पड़ना चाहती। मैं नेक औरत हूँ और नेक लोगों की जमायत में रहना चाहती हूँ।"

"तो फिर तुम मुसलमानों को हिन्दू बनाने में मदद क्यों देती हो?"

"मैं नेक बनने में मदद देती हूँ। हिन्दू होने से नेक बनने में मदद मिलती है। इसी से मैं लोगों को हिन्दू बनने के लिए कहती हूँ। इस पर भी हिन्दुओं में जो कुछ भी खराबी है, वह स्वीकार करने के लिए मैं किसी को नहीं कहती। हिन्दू बनने से कोई मुसलमानों की, ईसाइयों, यहूदियों, पारसियों और बौद्धों की बातें मान सकता है। यहाँ तक कि अपने को मुसलमान और ईसाई वगैरा तक कह सकता है, मगर एक मुसलमान और ईसाई मत में रहता हुआ हिन्दुओं की बातें नहीं मान सकता। एक आदमी गोमांस खाता हुआ हिन्दू रह सकता है, मगर सूअर खाकर मुसलमान रहना मुश्किल है। राम और कृष्ण को गालियाँ देकर भी कोई हिन्दू रह सकता है मगर मुहम्मद को रसूलिल्लाह न मानने वाला मुसलमान नहीं हो सकता। इससे मैं कहती हूँ कि जब मैं किसी को हिन्दू बनने में मदद देती हूँ तो मैं उसके दिमाग के तालों को खोल देती हूँ। मैं उसे आजाद कर देती हूँ। बताओ मैं कौन-सी बुरी बात करती हूँ?"

खनीजा की माँ इन तत्त्व की बातों को सुनकर चकित रह गई। वह जानती थी कि दरगाह में हर जुम्मे के दिन हिन्दुओं को मुसलमान बनाया जाता है और कल्मा पढ़ाने से पहले उनको गोमांस खिलाया जाता है। औरतों को मुसलमान बनाने से पहले उनसे जनाह कराकर उनको अपनी नजरों में गिरा दिया जाता है। उसे अपनी बात अभी याद थी कि जब वह पहली बार बम्बई में आई थी तो उसे भी एक दिन बहुत अच्छा खाना खिलाकर कहा गया था कि उसमें गोमांस था। उस समय वह नाबालिग थी और अंजान थी। इससे वह इस हरकत का अर्थ नहीं समझी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। अब वह विचार करती थी कि यदि उसे वह न खिलाया जाता तो शायद गाँव वाले उसके माता-पिता पर उतनी कठोरता न करते।

आज उसके दिमाग में अनेक नये तथा पुराने विचार आने लगे थे। एक बात उसके मन में सूझी। उसने समझा कि शायद इसका जवाब राधा नहीं दे सकेगी। उसने पूछा, "भला बताओ तो कि मैं हिन्दू हूँ या मुसलमान ?"

"मुझको तो हिन्दू दिखाई पड़ती हो।"

"यह, भला कैसे ! मेरा नाम रसूलन है। मैं मुसलमान की बीवी हूँ। गोमांस खा चुकी हूँ और शायद अब भी कभी-कभी खाती हूँ।"

"देखो दीदी ! तुमने एक उदारता की बात तो यह की है कि अपनी लड़की का विवाह एक हिन्दू से कर दिया है। दूसरी बात यह है कि तुम मेरी इस्लाम पर टीका-टिप्पणी धैर्य से सुन रही हो। फिर तुम अपने वायदे को इस्लाम और अपने पति की इच्छा से भी ऊँचा समझती हो। यह बातें मुसलमानों की-सी नहीं। इस्लाम में मजहब को सर्वोपरि पदवी दी जाती है। इसके विपरीत हिन्दुओं में अपनी निज की शुद्धता और पवित्रता पर अधिक बल दिया जाता है। यहाँ वचन को पूरा करना ही धर्म है। प्रतिज्ञापालन और धर्म दो भिन्न-भिन्न बातें नहीं हैं, इस कारण तुम तो मुझको हिन्दू ही प्रतीत होती हो।"

"बहुत विचित्र बात है ! काश कि दूसरे भी ऐसा ही समझते !"

"इसका अर्थ मैं यह समझी हूँ कि आप अपने को हिन्दू माना जाना चाहती हैं, पर कुछ हिन्दू आपको ऐसा मानने को तैयार नहीं।"

खनीजा की माँ ने तो ऊपर का वाक्य बिना सोचे-समझे ही कह दिया था, परन्तु जब उसे अपने कहने का यह अर्थ समझ में आया तो वह स्वयं चकित रह गई। वह अपने मन के भावों का गम्भीरतापूर्वक मनन करने लगी।

: २ :

इस वार्तालाप में खनीजा ने कोई भाग नहीं लिया था। इस पर भी राधा के विश्लेषण ने उसके मन में भारी हलचल मचा दी थी। जब माँ को गम्भीर विचार में डूबा देखा तो उसने साहस कर पूछा, "राधाजी, विवाह में क्या एक मजहब का होना जरूरी है ?"

"मजहब तो अपना-अपना होता है, लेकिन मजहब और अदब (संस्कृति) दो भिन्न-भिन्न बातें हैं। संस्कृति दोनों की एक जैसी होनी चाहिए।"

"क्या अदब मजहब के मातहत नहीं है ?"

"नहीं, कम-से-कम हिन्दू ऐसा नहीं मानते। हिन्दुओं में कई मजहब हैं। मोटे तौर पर सिक्ख हैं, आर्यसमाजी हैं, वैष्णव हैं, शाक्त हैं, वेदांती हैं, और अन्य कई मत हैं। आपस में विवाह होते हैं और इसके लिए झगड़ा नहीं होता। कभी-कभी तो बहुत मजेदार बात होती है। पति मांस खाता है और पत्नी नहीं खाती। पति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यसमाज मन्दिर में जाता है जहाँ निराकार की पूजा होती है और पत्नी सत्य-नारायण का व्रत रखती है, पूजा करवाती है और पूजा का प्रसाद लाकर पति और उसके बच्चों को खिलाती है। यह है मजहब के विषय की बात। इसमें कोई दूसरे की बात में दखल नहीं देता। मगर एक बात रहन-सहन का ढंग है जो वे पति-पत्नी में एक समान रखना चाहते हैं। प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठना, दातुन-कुल्ला कर स्नान करना, फिर अपने-अपने इष्टदेव का चिन्तन करना, हाथ धो स्वच्छ जगह पर बैठकर भोजन करना, सत्य बोलना, धृति, क्षमा, संयम इत्यादि गुणों का पालन करना, यह बातें हैं जिनको वे पति-पत्नी में एक समान देखना चाहते हैं। कितनी सरल बात हैं। यही व्यवहार है जिस कारण हमारा आपस में कोई झगड़ा नहीं होता। उन्होंने मुझे कभी नहीं कहा कि मैं नमाज न पढ़ूँ। विवाहित जीवन के आरम्भ में मैं नमाज पढ़ती थी और अब मैं संध्या करती हूँ। इस परिवर्तन से उनके मेरे साथ व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आया।

इस दिन राधा ने सदाशिव के घर में क्रान्ति की नींव डाल दी। खनीजा की माँ तो इस्लाम और हिन्दुत्व में फरक जान चकाचौंध रह गई। उसे अपने पूर्ण जीवन पर सोचने का एक नया मार्ग दिखाई देने लगा था।

इस वार्तालाप के कई दिन बाद की बात है कि खनीजा की माँ, रसूलन, खुशी-राम के घर आई और अपनी परेशानी बताने लगी। "बहिन राधा, तुम्हारी उस दिन की बातों ने तो मुझे दोजख की आग में झोंक दिया है। मैं अब अपने आसपास होने वाली बातों को एक नई रोशनी में देखने लगी हूँ। जो बात मुझे पहले अच्छी और सवाब मालूम होती थी, वह अब नफरत पैदा करने वाली मालूम होने लगी है।

"कल जुमेरात थी। हमारी दरगाह की मस्जिद में हर जुम्मे को हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिए लाया जाता है। अकसर मुसलमान बनने वाली औरतों और मरदों को जुम्मे रात के दिन वहाँ की सराय में रखा जाता है। कल दो औरतें मुसलमान होने के लिए आईं। उनमें से एक पूना के एक ब्राह्मण परिवार की विधवा थी। रात दो गुण्डे उनसे बदफेली करने के लिए भेज दिए गए। उस विधवा ने बहुत चीखो-पुकार की। यहाँ तक कि उसकी चीखों की आवाज हमारी आराम-गाह तक आने लगी। मैं चौंककर उठी और जब मुझे मालूम हुआ कि आवाज सराय में से आ रही है तो मैंने हजरत वली साहब को, जो मेरे बिस्तर पर ही सो रहे थे, जगाया और उनसे उस बेचारी को बचाने के लिए कहा। वे बोलें, 'सो जावो मेरी जान! सब खुदा का फजल है।' इस पर मैंने कहा, 'नहीं हजरत! कोई रो और चीख रहा है।' वे बोले, 'आओ मेरे पास सो जावो। अभी खुदा की रहमत नाजल हो जावेगी!'

"मैंने उनके गले में बाँह डालकर इसरार किया कि उस औरत को छुड़ाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जावे। वे मेरी बात मान गए और हम दोनों कपड़े पहन सराय में जा पहुँचे। मुझे कहते हुए शरम आती है कि हम देरी से पहुँचे। हमारे पहुँचने से पहले वह प्राण छोड़ चुकी थी। उससे बदफेली करनेवाले आदमी से मैंने पूछा कि क्या हुआ है? उसने बताया कि वह पहले उसे हाथ लगाने से मना करती रही, पीछे उसकी हरकतों की मुखालफत करने लगी और जब उसने उससे जबरदस्ती करनी चाही तो उसने चीखोपुकार मचा दी। इस पर भी जब वह नहीं माना तो एकाएक वह चुप कर गई। उसने समझा कि बेहोश हो गई है और उसे होश में लाने की कोशिश करने लगा। इस पर पता चला कि उसका इन्तकाल हो गया है। मैं उसका बयान सुन सन्न रह गई। मेरे रुएँ खड़े हो गए और मैंने काँपती हुई आवाज में पूछा, 'तुमने जबरदस्ती क्यों की?'

" 'हजरत का हुक्म है।'

"मैं उस औरत का खुला मुख और ऊपर चढ़ी हुई आँखें देख काँप उठी और वहाँ से भाग अपनी आरामगाह में आ गई। हजरत कुछ देर बाद आये। मैं औंधे मुँह अपने पलंग पर लेटी हुई थी। हजरत ने मेरी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, 'उस रहीम और करीम परवरदिगार की याद करो, वह सबके दुःख-दर्द मिटा देने की ताकत रखता है।'

"मगर मैं उनका हाथ लगते ही काँप उठी। मुझे ऐसा मालूम हुआ, गोया कि कोई गरम लोहे की सलाख मेरी पीठ पर रख दी गई है। मैं चीख मारकर उठ पड़ी और पागलों की भाँति हजरत का मुँह देखने लगी। उन्होंने मेरे पास बैठकर समझाने के लिए कहा, 'देखो···' पर मैं उनके पास बैठते ही कूदकर और चीख मारकर दूर जा खड़ी हुई। हजरत मेरी हालत देख बहुत परेशान हुए और बहुत हलीमी ने बोले, 'रसूलन, क्या हो गया है तुम्हें? क्या चाहती हो?'

"मैंने कहा, 'मुझे अकेली छोड़ दीजिए। इस वक्त मेरी तबियत ठीक नहीं।'

"वे दूसरे कमरे में जाकर सो रहे और मैं पागलों की तरह अपने कमरे में चक्कर काटती रही। दिन चढ़ने पर मुझे होश आया और मैं समझने लगी कि इस कत्ल के भेद की बात जानकर मेरी जान भी खतरे में है। क्या जाने मेरे रात के रवैये से हजरत मुझपर अपना एतबार खो दें और अपनी और दरगाह की इज्जत बचाने के लिए मुझे भी इस दुनिया से बाहर कर दें। इस खयाल के आते ही मैं होश में आ गई और अपनी जान बचाने के लिए नाटक में एक्टिंग करने की तरह बातें करने के लिए अपने को तैयार कर बैठी। इस तरह 'ऐक्टिंग' करने की आदत तो हम नाचने-गाने वालियों को खूब होती है।

"जब हजरत, मेरे पास, आज सुबह आये तो मैंने उनके गले में हाथ डालकर अपने रात के रवैये के लिए मुआफी माँगी। वे मेरे इस सलूक से खुश होकर पूछने लगे, 'क्या हुआ था मुझे?' मैंने उनके साथ सटकर कहा, 'उस औरत की खौफनाक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शकल देखकर बदहवास हो गई थी ।' उन्होंने बहुत मुहब्बत से अपने वगलगीर कर मुझे कहा, 'इस्लाम की तबलीग के लिए मैं यह सब कुछ करता हूँ । इसी लिए ख़ुदा की रहमत मुझ पर बनी रहती है ।

"मेरी रात की बात को हजरत ने छोड़कर मुझे कहा कि मैं खनीजा से मिलने जाऊँ । उनका खयाल था कि मैं वहाँ जाने को पसन्द करूँगी और इससे मेरा दिल बहल जावेगा । हकीकत में वे उस लाश का इन्तजाम करना चाहते थे । मैंने भी यही ठीक समझा और मैं चली आई ।

"अब लड़की की बात सुन लो । उसको जब मैंने रात का किस्सा बताया तो कहने लगी, 'मेरे खयालात तो बिलकुल बदल गए हैं । मैं बहुत-सी बातों को जानती ही नहीं थी । अब राधाजी की बातों ने तो मेरी आँखों के सामने से पर्दा हटा दिया है । उसकी बातों से तो यह मालूम होता है कि हम मुसलमान हैं ही नहीं । मैं हिन्दू की लड़की और हिन्दू की नातिन हूँ । हम तो मुसलमान इसलिए हुए थे कि कुछ हिन्दू भूल से हमारा बायकाट कर बैठे थे । उनको ऐसा करने का अधिकार नहीं था । मगर यह तो कोई वजह नहीं थी कि हम भी वही भूल करते जो दूसरे कर रहे थे । किसी ने कह दिया कि हम मुसलमान हो गए और हम मान गए कि हम मुसलमान हैं । यह भी भला कोई बात थी ? अब हमें भूल का ज्ञान हो गया है और पता चल गया है कि हिन्दुओं में भी ऐसे लोग हैं जो हमें मुसलमान नहीं समझते ।

" 'मगर अम्मी, अब तो राधाजी की एक और बात का सबूत तुम ले आई हो । वे कहती थीं कि वे लोगों को हिन्दू बनने को कह उनको नेक बनने के लिए कहती हैं । हजरत ने कई बार मुझको यह कहा था कि मजहब की बातों में अकल को दखल नहीं । वे कहा करते थे कि खुदा की बातों को इन्सान समझ नहीं सकता । राधा जी का कहना था कि अकल भी खुदा की दी हुई चीज है और इसका इस्तेमाल करना खुदा को खुश करना है । हिन्दू होने से अकल के इस्तेमाल करने की आजादी मिलती है और मुसलमान बनने से अकल के इस्तेमाल में बन्दिश । मैं आजादी पसन्द करती हूँ ।

" 'अब एक और बात दिमाग में साफ हो गई है । तुमने कहा है कि रात की वारदात को हजरत इस्लाम की तबलीग के लिए समझते हैं । मैं सोचती हूँ कि अगर इस्लाम नेकी है तो इस किस्म की बुरी बातें कैसे इस्लाम की तबलीग कर सकती हैं । दो में से एक बात ही सिरफ ठीक हो सकती है । या तो यह कि इस्लाम नेकी नहीं है या इस किस्म की बातें इस्लाम की तरक्की नहीं कर सकतीं । दरगाह की बातों से तो मैं यही जानती हूँ कि फाशा औरतों की खिदमत इस्लाम की तबलीग़ के लिए कामयाब हथियार साबित हो रही है । इससे मैं इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि राधा का कहना ठीक है कि इस्लाम से हिन्दूपन नेकी के ज्यादा नजदीक है ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो लड़की की बातें सुनकर सन्न रह गई हूँ। मेरे पाँव तले से मिट्टी खिसक गई है। जो कुछ मैं अभी सोच रही थी, खनीजा उसे सोच नतीजे पर भी पहुँच गई है। उसकी बातें सुन मुझको तो उसके गुजर की फिकर होने लगी है। मैंने उससे पूछा, 'यह अभी किसी से कहा तो नहीं ? कहीं हजरत साहब को पता चल गया तो सब ऐशो-आराम खतम हो जावेगा।' इस पर उसने कहा है, 'अम्मी, अभी तो नहीं कहा, मगर आज की बात सुन तो मैंने फैसला कर लिया है कि उनको सब बात बता दूँगी। मैं अपने को हिन्दू समझती हूँ और हिन्दू बनकर रहूँगी।'

"मैंने उसको कहा कि अगर उसकी यह बात आली हजरत को पता चल गई तो सदाशिव की नौकरी छूट जावेगी। खनीजा इसकी परवाह नहीं करती थी। मैंने समझाया कि सदाशिव तो इस बात की परवाह नहीं करेगा। वह गरीबी में पला है, इसलिए उसको इससे तकलीफ नहीं होगी। इसके विरुद्ध वह चाँदी और सोने के बरतनों में खाती-पीती रही है। गरीबी उसके लिए दूभर हो जावेगी।

"आज मैं आपके पास आई हूँ। मुझको तो सब ओर विनाश ही दिखाई देता है। पीर साहब के पास जाने की तबीयत नहीं करती। सदाशिव की नौकरी छूटती मालूम होती है। खनीजा जवानी के जोश में जो कहती है कर लेगी, मगर उसके नतायज को सह सकेगी या नहीं, कहना कठिन है। राधा बहिन, यह आग तुमने ही लगाई है। अब तुम ही इसके बुझाने का यत्न करो।"

राधा अपनी छोटी-सी बात का इतना बड़ा नतीजा पैदा हो गया देख चकित रह गई। वह इस परिस्थिति को वश में करने का उपाय नहीं जानती थी। सदाशिव को एक हजार रुपया मासिक वेतन और एक प्रतिशत लाभ में भाग और साथ रहने को मकान, यह इतने बड़े प्रलोभन थे जो अन्य किसी तरह पूरे होने कठिन थे। सदाशिव क्या चाहेगा और खनीजा इसमें क्या करना चाहेगी, यही तो मुख्य बातें थीं।

राधा केवल यह कह सकी, "इश्क जब सिर पर सवार होता है तो फिर इस किस्म की गिनती-मिनती नहीं रहती। आदमी भवसागर में कूद पड़ता है और अपनी किश्ती को परमातमा के भरोसे पर छोड़ देता है।"

: ४ :

खनीजा नहीं मानी। उसने अपने मन के भावों को सदाशिव को बता दिया। परिणाम यह हुआ कि रसूलन ने पीर साहब का मकान छोड़ दिया और अपनी लड़की के पास आकर रहने लगी। बहाना यह बनाया कि लड़की के दिन चढ़ गए हैं और उसका उसके पास रहना निहायत जरूरी है। उसने अपना संगीत का अभ्यास आरम्भ कर दिया। उसको ऐसा लगने लगा था कि शायद उसको फिर अपनी जीविका के लिए नाचने-गाने का काम करना पड़ेगा।

सदाशिव अपनी असेम्बली के काम में लीन था और राधा तथा खुशीराम ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे समय में उनसे अपनी घनिष्ठता बनाए रखना ही ठीक समझा। जो सम्बन्ध लक्ष्मी को ढूँढ़ने के लिए बनाया गया था वह अब अपने लिए दृढ़ होने लगा था। राधा को माँ और बेटी में विशेष गुण प्रतीत होने लगे थे।

राधा एक दिन सदाशिव के घर जा पहुँची। वहाँ उसे एक और समस्या का सामना करना पड़ा। पीर इब्राहीम साहब एक दिन पूर्व सदाशिव से मिलने आये थे। बातों-ही-बातों में कहने लगे कि सदाशिव का नाम कम्पनी के कागजों में बदल कर करीम इलाही कर दिया है। इस पर सदाशिव ने बताया कि ज्यों ही लोगों को पता चला कि वह मुसलमान हो गया है तो उसकी असेम्बली में मेम्बरी समाप्त हो जावेगी। हजरत इब्राहीम का यह कहना था कि मोतबिर जरिए से मालूम हुआ है कि पाकिस्तान बने बिना नहीं रहेगा और बम्बई हिन्दुस्तान में रहेगा। पीर साहब अपनी कुल जायदाद कराची भेज देना चाहते थे। वहाँ यह जायदाद अपने नाम में जमा न कर सदाशिव के नाम करना चाहते थे। उनका खयाल है कि पाकिस्तान में किसी हिन्दू का रहना मुमकिन नहीं, इसलिए सदाशिव अभी मुसलमान हो जावे तो जायदाद पर उसका कब्जा रह सकता है और वह जायदाद का भोग कर सकता है।

पीर साहब की जायदाद एक करोड़ रुपये से ऊपर थी। जिसमें से पचास लाख से ऊपर तो वे अभी कराची में भेजने का प्रबन्ध कर रहे थे। यह इतना बड़ा प्रलोभन था कि सदाशिव कुछ उत्तर नहीं दे सका। वह चुपचाप बैठा रहा। पीर साहब तो यह कहकर चले गए परन्तु घर में तीनों प्राणी इस प्रलोभन से संघर्ष कर रहे थे। राधा को आया देख रसूलन ने शान्ति अनुभव की। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि मन से बोझा उतर गया है। उसने प्रसन्नता प्रकट करते हुए राधा से सब बात कह पूछा, "राधा बहिन ! अब तुम ही बताओ कि हम क्या करें ?"

राधा की राय तो त्याग की थी, परन्तु वह नहीं जानती थी कि सदाशिव और खनीजा का मन कितना दृढ़ है? उसने उनके मन की बात जानने के लिए पूछा, "सदाशिव क्या चाहते हैं ?"

"वे दोनों एकमत नहीं हो सके। सदाशिव ने पीर साहब के कहने पर विचार किया है। उसका कहना है कि जायदाद खनीजा के नाम कर दी जावे। परन्तु लड़की कहती है कि वह जायदाद अपने नाम नहीं कराना चाहती। सदाशिव को जरूरत है तो अपने नाम करवा ले। इतने धन के मुकाबले में कौंसिल की मेम्बरी की कुछ हकीकत नहीं।"

राधा हँस पड़ी और पूछने लगी, "कहाँ है खनीजा ?"

"भीतर कमरे में सो रही है और, मैं समझती हूँ कि अभी भी सोच रही है।"

"या यह कहो कि अपने मन के लालच से कुश्ती कर रही है।"

रसूलन हँस पड़ी। "जरा भीतर जाकर उसकी मदद कर दो न।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सदाशिव घर पर नहीं हैं क्या ?"

"नहीं। वे तो कौंसिल के इजलास के लिए गए हुए हैं।"

राधा भीतर चली गई। खनीजा फर्श पर चटाई बिछाकर घुटनों के बल बैठी हुई नमाज पढ़ रही थी। नमाज समाप्त की तो उसे सामने राधा बैठी दिखाई दी। इधर-उधर की बातों के बाद राधा ने बात पूछ ही ली, "खनीजा बहिन ! यह अम्मी क्या कह रही हैं ?"

"तो उन्होंने बताया है आपको ?"

"हाँ। क्या फैसला किया है आपने ?"

"वे तो कहते हैं कि वे अपना हिन्दू नाम नहीं बदलेंगे और यदि पाकिस्तान बना तो वे वहाँ नहीं जावेंगे। रही नौकरी की बात। उसकी बाबत उन्होंने यह फैसला कर लिया है कि इस महीने के आखीर में इससे इस्तीफा दे देंगे।

"मैं कुछ शशोपंज में थी। मगर खुदा परवरदिगार ने मुझको रोशनी बख्शी है और मैं इस नतीजे पर पहुँची हूँ कि वह सबकी परवरिश करने वाला है। हमें तो अपना फर्ज अदा करना है। मेरा फर्ज है कि मैं उनके साथ रहूँ।"

"मगर नौकरी छोड़ने पर यह मकान भी तो खाली करना पड़ेगा।"

"यह हमने सोच-समझ लिया है। माँ के कुछ जेवर दरगाह में रखे हैं। वे उन को ले आवेंगी और उनको बेचकर किसी मकान का इन्तजाम कर लेंगे। 'मेराईन ड्राईव' में एक मकान पाँच हजार पगड़ी पर मिल रहा है। माँ वहाँ संगीत सिखाने का स्कूल खोल लेंगी और एक कमरा हम अपने रहने के लिए ले लेंगे।"

"आपका इरादा तो ठीक ही मालूम होता है। मगर जिन्दगी बहुत कठिन हो जावेगी।"

"आप क्या समझती हैं कि मुहब्बत उस मुश्किल पर गालिब नहीं आ सकेगी ?"

"यह तो मुहब्बत की गहराई पर मुनस्सिर है। कितना बोझा वह सह सकती है, यह तो आप ही जान सकती हैं।"

"मैं तो समझती हूँ कि हम मुश्किल पार कर लेंगे। आप क्या समझती हैं ?"

"देखिए खनीजा बहिन ! खयालात ही इन्सान की जिन्दगी पर हुकूमत करते हैं। यह हिन्दुस्तान हमारा मुल्क है। हमें इसकी हिफाजत और बहबूदी के लिए सब कुछ कुरबान करने को तैयार रहना चाहिए। यह सब खयालात हैं। इन खयालात की मजबूती पर ही, सुख-दुःख में और मुश्किल-आसान में, कोई अपने इरादे पर कायम रह सकता है। मैं तो समझती हूँ कि सदाशिव का खयाल हिन्दुस्तान में रहने का बहुत मुबारिक है।"

"तो मेरा फैसला ठीक है ?"

"आपके इस फैसले से मेरी नजर में आपकी इज्जत बहुत बढ़ गई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम लोग आपकी मदद पर बहुत भरोसा करते हैं। आपने ही हमें रोशनी दिखाई है।"

"यह तो भगवान् की कृपा है। हम तो सदा आपसे स्नेह करते रहे हैं।"

खनीजा कुछ सोचने लगी। चटाई पर से उठी और राधा को साथ लेकर बाहर अपनी माँ के पास आ गई। उसे अपने समीप एक सोफा पर बैठाकर कहने लगी, "जब से आपने कहा था कि हिन्दू धर्म एक वसीह फिजा है, मैं मन-ही-मन हिन्दू होने की ख्वाहिश रखती थी। अब आज मुझे बताइए कि यह कैसे हो सकेगा?"

"यह हिन्दू बनना कैसे हो सकेगा—क्या? इसमें कोई मुश्किल नहीं। आप अपना नाम हिन्दुस्तान की जबान में रख लें। बस आप जाहरा तौर पर हिन्दू हो गईं। जहाँ तक मन की बात है, वह तो आहिस्ता-आहिस्ता ही होगा। आप हिन्दी जबान पढ़ लें। फिर उसमें लिखी हिन्दू धर्म की किताबें पढ़ें। हिन्दू धर्म एक बहुत ही वसीह चीज है। इसकी पूरी जानकारी तो बिरले ही लोगों को है। सब लोग ज्यादा-से-ज्यादा जानने की कोशिश करते रहते हैं। कोई दस कदम आगे है तो कोई दस कदम पीछे। इस पर भी ये सब लोग एक ओर को मुख किए हुए चल रहे हैं। सबसे पहली बात जो एक हिन्दू कहता और करता है वह हिन्दुस्तान को अपनी पाक (पुण्य) भूमि मानता है। यही वजह है कि सदाशिव इतने धन के लोभ पर भी हिन्दुस्तान को छोड़कर जाना नहीं चाहता।"

"तो मैं अपना क्या नाम रखूँ?"

"जो आपको सबसे ज्यादा पसन्द हो।"

"आप कोई तजवीज करिए।"

"शान्ति देवी। बहुत अच्छा नाम है।"

"शान्ति देवी? बहुत खूब है। मुझे पसन्द है।"

"मेरा नाम तो पहले ही है। मुझे सब रामी कहते थे।" खनीजा की माँ ने कहा।

"रामी। बहुत अच्छा नाम है। पूरा नाम रामप्यारी होगा।"

खनीजा ने पूछा, "मगर आपने किसी ब्राह्मण वगैरह को बुलाकर कोई रसम अदा करने को नहीं कहा।"

"मैं इसकी जरूरत नहीं समझती। मुसलमान से हिन्दू होने के लिए खयालात का बदलना ही सब कुछ है। सो, वह आपके बदल चुके हैं।"

: ५ :

महीना खत्म होने पर सदाशिव ने पिछले महीने का वेतन ले लिया और नौकरी से इस्तीफा दे दिया। उसी सायं अपना निजी सामान लेकर वह अपनी स्त्री और सास के साथ 'मेराईन ड्राईव' वाले मकान में चला गया। उसी सायं खुशीराम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और राधा उनसे मिलने आए। खनीजा, जिसने अपना नाम शान्तिदेवी रख लिया था, राधा को आया देख बहुत अनुगृहीत हुई। उसने कहा, "आपका बहुत शुक्रिया है कि आप आज आई हैं।"

"हम तो यह देखने आए हैं कि हम आपकी किस बात में सहायता कर सकते हैं। आज आप नये मकान में आए हैं। अभी तो सब वस्तुओं की आवश्यकता होगी। क्या मैं आपका घर देख सकती हूँ ?"

"हाँ, क्यों नहीं ? आइए। अम्मी दरगाह से अपने भूषण ले आई थीं और उनको बेचकर बीस हजार के लगभग रुपया मिल गया है। उसमें से पाँच हजार तो मकान खाली करने का, पहले किरायेदार को और दो हजार मालिक मकान को दिया। इस पर भी सन्तोष ही है कि अच्छा बड़ा मकान मिल गया है और दो हजार रुपया अम्मी अपने स्कूल के लिए साजों पर खर्च कर रही हैं। एक हजार रुपया स्कूल के लिए इश्तहार पर खर्च देने का विचार है। शेष दस हजार रुपया हमने कुछ देर तक गुजर करने के लिए रख लिया है।"

यह कहती हुई शान्ति देवी राधा को कमरे दिखा रही थी। "यह बैठक, स्कूल का कमरा होगा। इस बैठक के बाहर-बाहर ही भीतर के कमरों को जाने का मार्ग है। उसमें दो तो कमरे हैं। एक हमने अपने सोने का कमरा बना लिया है। एक आने-जाने वालों से मिलने का। मार्ग के इस ओर गुसलखाना है और दूसरी ओर रसोईखाना। यह मकान उतना अच्छा तो नहीं है जितना हमारा पहला मकान था। फिर भी यह साफ और हवादार है।"

दूसरी ओर सदाशिव खुशीराम को बता रहा था, "मुझको आशा नहीं थी कि खनीजा मेरा साथ देगी। वली का दृष्टिकोण भी ठीक ही था। वह मुसलमान है। उसकी नस-नस में इस्लाम समाया हुआ है। जब से उसे विश्वास हुआ है कि पाकिस्तान बनेगा तब से ही वह वहाँ जाने का प्रबन्ध कर रहा है। मैंने उसे कहा भी था कि हिन्दुस्तान से जाने की जरूरत नहीं है। यहाँ इस्लाम को पूरी आजादी होगी। उसने कहा कि वह सिर्फ आजादी से ही सबर नहीं कर सकता। वह ऐसे मुल्क में रहना चाहता है जहाँ मुसलमानों के सिवाय और कोई न हो। बचपन से वह यही स्वप्न देख रहा है और अब इस बुढ़ापे में उसके ख्वाब भर आए हैं। अब वह उनका लुत्फ उठाना चाहता है, यह उसकी बहुत मेहरबानी थी कि इतनी बड़ी जायदाद मुझे देने को तैयार था। एक बार तो मैं चकाचौंध रह गया और प्रलोभन में बह चला था परन्तु हिन्दुस्तान छोड़कर मैं ऐसे मुल्क में जाने के लिए तैयार नहीं हो सका जहाँ पर उनकी हकूमत होगी जिन्होंने नोआखाली की वारदात की है।

"मैंने जब अपनी स्त्री से कहा कि वह यह जायदाद अपने नाम करवा ले और वह वहाँ जाकर इसका भोग कर सकती है, तो उसने पूछा कि मैं उसके साथ वहाँ जाऊँगा कि नहीं ? जब मैंने कहा कि मैं हिन्दुस्तान में रहकर गरीबी का जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यतीत करना पसन्द करूँगा और अमीर बनकर भी पाकिस्तान में नहीं रहूँगा तो उसने तुरन्त कह दिया कि वह भी वहाँ नहीं जाएगी। मैंने उसे दो दिन सोचने को दे दिए। दो दिन के बाद वह सोकर उठी और मुझसे बगलगीर होकर कहने लगी, 'मैंने फैसला कर लिया है।' मैंने पूछा, 'क्या फैसला किया है मेरी जान!' उसने खुशी से चमकती हुई आँखों से मेरी आँखों में देखते हुए कहा, 'मैंने फैसला कर लिया है कि मैं वहाँ ही रहूँगी जहाँ आप रहेंगे और मैं उसी हाल में रहूँगी जिस हाल में आप रहेंगे।'

"आप अनुमान लगा सकते हैं कि इससे मुझको कितनी खुशी हुई है। खुशीराम जी, मैं इससे निहायत ही प्रसन्न हूँ।"

"मैं आज इस कारण आया हूँ कि आपने मकान बदला है। इससे क्या कोई सेवा मेरे योग्य है?"

"आपका धन्यवाद। इससे भी अधिक मैं राधा देवी का कृतज्ञ हूँ। मैं समझता हूँ कि मेरी स्त्री में यह परिवर्तन उनके ही कारण हुआ है।"

"मगर सदाशिवजी, एक बात जो मैं नहीं समझ सका वह आपका पाकिस्तान न जाने का फैसला है। आप तो हिन्दू-मुसलमान एक ही कौम मानते हैं न। आपके लिए तो 'जहाँ जा लगे वहीं किनारा हो गया' वाली बात है?"

"आपका कहना सत्य था, मगर तब। अब नहीं। कलकत्ता और नोआखाली के बाद मैं दूसरे ढंग से सोचने लगा हूँ। मैं अब यह समझ रहा हूँ कि हिन्दू और मुसलमान हैं तो दोनों इंसान, परन्तु इस वक्त मुसलमानों के मन में शैतानीयत सवार है और इस समय उनके राज्य में जाना अपने को शैतान के हाथ में सौंप देना है। यह करने के लिए मैं तैयार नहीं।"

"आपने क्या यह भी कभी सोचा है कि एक ही मुल्क में रहते हुए, एक ही भूमि का अन्न-अनाज खाते हुए, एक ही पानी पीते हुए और एक ही तरह की हवा में साँस लेते हुए, यह कैसे हो गया कि एक फिरके में तो शैतान घुस गया है और दूसरे में नहीं घुस सका। कौम की कौम एक किस्म के विचारों की हो गई है। आखिर यह क्यों है?"

सदाशिव चुप था और सोच रहा था। खुशीराम ने अपना कहना जारी रखा, "यह एक विचित्र घटना है कि नोआखाली में औरतों पर बलात्कार किया गया और सारी-की-सारी कौम में एक भी तो माई का लाल ऐसा नहीं निकला जो इस पशुपन की निंदा करता।"

"देखिए खुशीरामजी! मैं आपको एक और बात बताता हूँ। दिल्ली से एक आदमी की चिट्ठी बम्बई के प्रीमियर के नाम और उसकी नकल असेम्बली के सब सदस्यों के नाम आई है। उसमें लिखा है कि मुस्लिम लीग की वर्किंग कमेटी ने यह निश्चय किया है कि पहली नवम्बर को बम्बई में डायरैक्ट ऐक्शन शुरू किया जाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस सूचना को पहले तो प्रीमियर ने सत्य मानने से इंकार कर दिया। पश्चात् जब उसी चिट्ठी की नकल अन्य सदस्यों को भी मिल गई तो सदस्यों ने उनसे पूछना आरम्भ कर दिया। विवश होकर उनको कुछ कार्यवाई करनी पड़ी। परन्तु जानते हैं कि उनकी कार्यवाई का क्या परिणाम हुआ है। कल बम्बई में तीन सौ हिन्दू 'प्रिवेण्टिव डिटेन्शन' के कानून के अनुसार कैद कर लिये गए हैं। लगभग पाँच सौ लोगों की पब्लिक सिक्योरिटी एक्ट के अधीन जमानतें ले ली गई हैं और उनमें चार सौ से अधिक हिन्दू हैं। मैंने आज प्रीमियर साहब से इस विषय में पूछा तो अचंभे में मुझसे पूछने लगे कि तुम तो सोशलिस्ट विचार के आदमी हो फिर हिन्दू-मुसलमान में भेदभाव क्यों कर रहे हो? मैंने कहा भी कि जिनसे शान्तिभंग की आशंका है उनको पकड़ने से ही तो शान्ति रह सकेगी। गरीब बेकसूर लोगों को पकड़ने से क्या होगा? वे कहने लगे कि ताली एक हाथ से नहीं बजती। किसी भी एक तरफ के गुण्डों को पकड़ लेने से शांतिभंग नहीं होगी। अब बताइए इसमें क्या युक्ति है?

"मैं तो लाचार हो गया हूँ। मैं विचार करता हूँ कि महात्माजी इतने योग्य माने जाते हैं परन्तु उनके सब साथी इतनी थोथी युक्ति करते हैं कि नहीं जानता कि महात्माजी की योग्यता पर अविश्वास करूँ अथवा उनकी नेकनीयत पर? कुछ समझ में नहीं आता।"

"परन्तु पहली नवम्बर तो कल है न? क्या हम कल यहाँ फसाद की आशंका करें?"

"यह मैं कैसे बता सकता हूँ? हमारे पास तो किसी गुमनाम आदमी ने सूचना भेजी है। उस सूचना की सचाई की कौन गारण्टी कर सकता है? मैं तो उस सूचना पर सरकारी कार्यवाई की बात बता रहा था।"

खुशीराम ने कलाई पर बँधी घड़ी में समय देखा और कहा, "अब हमें एक और काम पर जाना है। किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो बताइए।"

"सब आपकी कृपा है।"

: ६ :

पहली नवम्बर को जुम्मे का दिन था और जब नमाज पढ़कर मुसलमान मस्जिदों से बाहर निकले तो एकाएक हिन्दू-मुसलमान झगड़ा आरम्भ हो गया। कोई नहीं जानता कि झगड़ा कहाँ से और कैसे आरम्भ हुआ। कोई कहता है कि कुछ गुण्डे एक औरत को तंग कर रहे थे। दुर्भाग्य से वह गुण्डे मुसलमान थे। इससे हिन्दू-मुसलमान फसाद आरम्भ हो गया। इसके विपरीत एक और भी कहानी कही जाती है। एक बनिए ने एक लड़के से दाम तो ले लिया परन्तु उसे माल देने के वक्त कह दिया है कि उसने दाम नहीं दिया। दुर्भाग्य से लड़का था मुसलमान और बनिया था हिन्दू। इस कारण हिन्दू-मुसलमान झगड़ा हो गया। फिर भी यह कहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठिन था कि अमुक बात ही झगड़े का कारण बनी ;

पहले तो कुछ दुकानें लुट गईं और कुछ चलते-फिरते लोगों के पेटों में छुरे घोंपे गए। साथ ही मुसलमान लोग घबराए हुए इधर से उधर भागने लगे। इस प्रकार फसाद आरम्भ होते ही बम्बई नगर बन्द हो गया। कारखानों में खबर पहुँची तो उनमें काम छोड़कर मजदूर बाहर निकल आए। सायंकाल तक यह समाचार भी मिल गया कि अहमदाबाद में भी फसाद हो गया है। रात को बम्बई सरकार ने तीन दिन का कर्फ्यू लगा दिया।

इन तीन दिनों में कारखाने बन्द रहे और मजदूर घरों में बेकार बैठ रहे। इन दिनों में बम्बई और अहमदाबाद, दोनों स्थानों पर छुरे घोंपने की घटनाएँ होती रहीं, तीन दिन के उपरान्त जब बम्बई में कर्फ्यू उठा तो मुसलमानों ने एक-दो ट्राम गाड़ियाँ घेरकर हिन्दू कत्ल कर दिए और ट्राम गाड़ियाँ जला दीं। परिणाम यह हुआ बम्बई में बाजार फिर बन्द हो गए और कारखाने खुले रहने पर भी मजदूर उनमें काम करने नहीं पहुँचे।

अब कर्फ्यू सायंकाल पाँच बजे से लेकर प्रातःकाल आठ बजे तक कर दिया गया। फिर भी कारखाने नहीं खुल सके। कुछ कारखाने कुछ घंटों के लिए काम करने लगे.परन्तु कुछ घण्टों से कारखाने चलाने में घाटा होने से तुरन्त बन्द करने पड़े। इस सब समय में छुरे घोंपने की वारदातें होती रहीं। बम्बई में एक विशेष बात यह हुई कि यहाँ के कुछ हिन्दुओं ने भी मुसलमानों की नकल कर मुसलमानों को चलते-फिरते मारना आरम्भ कर दिया। इससे मुसलमान बहुत घबराए।

फसाद आरम्भ होने के बाद पहला जुम्मा आया तो मुसलमान नमाज पढ़ने के लिए मस्जिदों में एकत्रित हुए। इसके बाद झुण्ड-के-झुण्ड मुसलमान बाजारों में घूमने लगे और सार्वजनिक हिन्दू इमारतों पर आक्रमण होने लगे। एक झुण्ड आर्य-कन्या पाठशाला के बोर्डिंग हाउस पर चढ़ आया। खुशीराम इस बात की आशंका कर रहा था, इससे उन्होंने बहुत-सी लड़कियों को बम्बई से बाहर अपने-अपने घरों को भेज दिया था। फिर भी बीस के लगभग लड़कियाँ, जिनको कहीं नहीं भेजा जा सकता था, वहीं थीं। पुलिस से रक्षा के लिए सहायता माँगी गई थी और एक कांस्टेबल बन्दूक के साथ वहाँ पर भेजा भी गया था परन्तु उससे इतने बड़े मजमे का रोका जा सकना असम्भव था। वहाँ टेलीफोन था। इससे मुसलमानों के उधर आते ही पुलिस को और खुशीराम को सूचना भेज दी गई। उस दिन बम्बई में बीस ऐसे स्थानों पर आक्रमण किया गया था और सब स्थानों पर से पुलिस से सहायता माँगी गई थी। इस कारण पुलिस की सहायता तुरन्त नहीं पहुँच सकी।

जब खुशीराम अपनी मोटर में वहाँ पहुँचा तो कांस्टेबल और संस्था के दोनों चपरासी मोर्चा बाँधे भीड़ को रोकने का यत्न कर रहे थे। खिड़कियों के शीशे टूट चुके थे और चपरासियों के सिर फूट चुके थे। कांस्टेबल भी घायल हो चुका था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांस्टेबल ने गोली चला दी थी जिससे भीड़ और भी क्रोध से भर गई थी। खुशीराम इमारत के पिछवाड़े से इमारत में जा पहुँचा। लड़कियाँ और अध्यापिकाएँ भयभीत पिछवाड़े से भाग जाने का विचार कर रही थीं। खुशीराम का कहना था कि नगर में बलवा जोरों से हो रहा है और उनका मकान से बाहर जाना अपने को और भी खतरे में डालना होगा। उनको इसी मकान में रहकर आक्रमण करने वालों का मुकाबला करना चाहिए। लड़कियाँ लड़ने-मरने पर तैयार हो गईं। वे मकान पर चढ़ गईं और मकान की मुँडेर तोड़ नीचे खड़े मुसलमानों की भीड़ पर ईंटों की बौछार करने लगीं।

खुशीराम स्वयं कांस्टेबल के पास पहुँचा और अपना रिवाल्वर निकाल आक्रमणकारियों पर गोली चलाने लगा। इससे कांस्टेबल का उत्साह बहुत बढ़ गया और छत पर से ईंटों की बौछार ने भी अपना काम किया। इस समय विद्यालय के एक चपरासी ने खुशीराम से कहा कि भीड़ में सबसे आगे खड़ा हुआ वह आदमी लक्ष्मी के अपहरण के समय आया था। वही राधा बीवीजी की चिट्ठी लाया था। खुशीराम ने उसकी ओर देखा और उसे पहचान लिया। वह मन्नू था। खुशीराम ने निशाना ताककर उसके घुटने पर गोली चलाई। निशाना ठीक बैठा और वह वहीं बैठ गया। इस समय तक छत पर से ईंटों की बौछार के कारण आक्रमण करने वाले भागने आरम्भ हो गए थे।

खुशीराम ने अपने समीप खड़े कांस्टेबल को लेटे हुए मन्नू को दिखाकर कहा, 'देखो उस घायल को जाने नहीं देना। बहुत मार्के का मुजरिम है।' भागती भीड़ में से कुछ लोग उसको उठाने आए परन्तु गोलियों की बौछार से उसके समीप आ नहीं सके। परिणाम यह हुआ कि जब भीड़ तितर-बितर हो गई तो खुशीराम ने मन्नू जमादार को उठवाकर अपने अधिकार में कर लिया।

खुशीराम ने देखा कि उसके घुटने की चप्पनी टूट गई है और बिना दस-बीस दिन अस्पताल में रखे वह ठीक नहीं हो सकेगा। इससे उसने मन्नू को कहा, "देखो मन्नू! यदि तुम लक्ष्मी का पता बता दो तो मैं तुम्हें पुलिस के हवाले नहीं करूँगा और तुम्हारी टाँग को ठीक करने को डाक्टर का प्रबन्ध घर पर कर दूँगा। नहीं तो एक नाबालिग लड़की को भगा ले जाने के जुर्म में छः वर्ष की कैद करवा दूँगा।"

मन्नू को भारी वेदना हो रही थी और उसकी टाँग से रक्त बह रहा था। साथ ही खुशीराम की हिरासत में होने से वह घबड़ा गया और बक गया, "पता मैं बता सकता हूँ मगर वह मेरी बीवी बन चुकी है। और उसको मुझसे छीनने की कोशिश अन्याय होगी।"

"यह ठीक है।" खुशीराम ने कहा। "अगर वह अपनी खुशी से तुम्हारी बीवी बनी है और खुशी से तुम्हारी बीवी रहना चाहती है तो मैं उसको तुमसे जुदा नही करूँगा। साथ ही तुम्हारा इलाज अपने मकान में करवाऊँगा और उसको तुम्हारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा के लिए तुम्हारे पास रहने दूंगा।"

मन्नू ने सन्देह-भरी दृष्टि से खुशीराम की ओर देखा। खुशीराम ने अपनी बात दुहराई और उसे कहा, "यदि वह अपनी इच्छा से तुम्हारे पास रहना चाहेगी तो मैं वचन देता हूँ कि तुम्हारे अपराध को भूल जाऊँगा। जल्दी बताओ, पुलिस आने ही वाली है। एक बार तुम उनके हाथ में गए तो मैं बचा न सकूँगा।"

मन्नू नरम हो गया और वह बोला, "वह मुझसे मुहब्बत करती है और मुझको यकीन है कि मुझसे जुदा होना पसन्द नहीं करेगी।"

"अगर तुम्हें यकीन है तो बताओ, मैं उसको यहाँ बुला लूँगा और फिर तुम्हारी भी हिफाजत हो जावेगी।"

मन्नू ने बताया कि दरगाह शाह मुराद के पिछवाड़े में दरगाह के कुछ भाड़े के मकान हैं। उन मकानों में नम्बर ग्यारह के मकान के नम्बर चार का कमरा उसके पास है और वह इस वक्त वहीं पर है।

खुशीराम ने मन्नू को उठवाकर अपनी मोटर में लाद लिया और उसे अपने घर ले गया। राधा खुशीराम को सही-सलामत और फिर मन्नू के साथ देखकर बहुत प्रसन्न हुई। खुशीराम का लड़का अपने पिता की तलाश में जाने के लिए बेताब हो रहा था। इस प्रकार उसके आने से मन्नू के विरोधीभाव क्षमा और सहानुभूति में बदल गए। डॉक्टर को बुलाया गया, उसकी मरहम-पट्टी करवाई गई और उसी समय मोटर पर सवार हो खुशीराम, खुशीराम का लड़का और दो और आदमी लक्ष्मी को ढूँढ़ने चले गए।

: ७ :

लक्ष्मी खुशीराम को देख हैरान रह गई। वह इस बात की किंचित् मात्र भी आशा नहीं करती थी। इस कारण जब उसने दरवाजा खोला और खुशीराम को कुछ अन्य लोगों के साथ खड़ा देखा तो डर गई। खुशीराम ने कहा, "लक्ष्मी ! नहीं पहचाना मुझको ?" लक्ष्मी के मुख से आवाज नहीं निकली। खुशीराम ने फिर कहा, "मैं खुशीराम हूँ। मैं तुमको छुड़ाने आया हूँ।"

बड़ी कठिनाई से लक्ष्मी के मुख से निकल सका, "अब यहाँ क्या रखा है ? मैं अब करीमा हूँ। लक्ष्मी मर गई है।"

"मैं जानता हूँ।" खुशीराम ने बात बदलकर कहा, "मन्नू घायल हो हमारे घर में पड़ा है। उसने तुमको बुलाया है।"

"घायल ! कहाँ घायल हुआ है ? वह तो दरगाह में वली साहब की खिदमत के लिए गया हुआ है। मुझे वली साहब के पास ले चलो।" इतना कह वह बुर्का पहन जाने को तैयार हो गई।

खुशीराम ने नीति से काम लेने का विचार कर कहा, "चलो, मैं वली साहब से पुछवा देता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, मैं खुद चली जाऊँगी।" लक्ष्मी ने कहा।

"अरे बाबा कहाँ जावोगी। वली साहब भी तो हमारे घर में पहुँचे हुए हैं। तुम नहीं जानतीं कि बाहर क्या हो गया है आज ? पुलिस ने दरगाह पर अधिकार कर लिया है। मन्नू और वली साहब भागकर बच निकले हैं। हमारे मकान के सामने कुछ गुण्डों ने उनको घेर लिया और वे तो उनको मार ही डालते अगर मैं पिस्तौल लेकर उनको छुड़ाने न पहुँच जाता। पर दोनों घायल हो गए हैं और मेरे मकान में पड़े हैं।"

लक्ष्मी हैरानी में खुशीराम का मुख देखने लगी। खुशीराम ने बिना उसकी हैरानी की ओर ध्यान दिए अपना कहना जारी रखा, 'मन्नू ने स्वयं कहा है कि तुमको बुला दूँ।"

लक्ष्मी ने फिर कहा, "झूठ तो नहीं बोलते ?"

"तुम कुछ पागल हो रही हो लक्ष्मी। अपनी जान को जोखिम में डालकर तुमको लेने आया हूँ और यह सब किसलिए ?"

लक्ष्मी अभी भी अनिश्चित मन खड़ी थी। खुशीराम समझ रहा था कि उसकी तरकीब काम कर रही है। इससे उसने अपनी बात जारी रखी। "उसने कहा है कि तुम उससे मुहब्बत करती हो। इस पर मैंने उसे वचन दिया है कि अगर उसका कहना ठीक है तो मैं उसके ठीक हो जाने पर उसको बम्बई से बाहर सुरक्षित स्थान पर पहुँचवा दूँगा।"

लक्ष्मी साथ चलने को तैयार हो गई। खुशीराम ने कहा, "बुर्का उतार दो। नहीं तो रास्ता चलते मुसलमान लोग समझेंगे कि हम किसी मुसलमान औरत को भगाकर लिये जा रहे हैं और तुमको लेकर वहाँ पहुँचना कठिन हो जावेगा।"

लक्ष्मी मान गई। और वे उसको मोटर में बैठाकर घर ले आये। लक्ष्मी ने मन्नू को पट्टियों में लपेटा हुआ देख सन्तोष अनुभव किया। मन्नू ने उसको बताया कि खुशीराम ने वचन दिया है कि यदि वह अपनी खुशी से उसके पास रहना पसन्द करेगी तो वे हमारी मदद करेंगे और मेरा इलाज करवाएँगे। या जहाँ मैं कहूँगा वहाँ पहुँचा देंगे।"

लक्ष्मी राधा से मिली तो उसने कहा कि जब तक मन्नू ठीक नहीं हो जाता, वे दोनों उसके घर रह सकते हैं। लक्ष्मी ने पूछा, "आप मुझसे घृणा तो नहीं करेंगी ?"

"क्यों, घृणा क्यों करूँगी ? तुमको क्या हो गया है ?"

"मैं···मैं···मुसलमान हो गई हूँ।"

"तो फिर क्या हुआ है ? हो तो तुम वही लक्ष्मी न जो इस घर में आकर यहाँ से जाना पसन्द नहीं करती थीं। तुम्हारे लिए ही तो मैंने मन्नू को घर में रखना पसन्द किया है।"

"मगर वली साहब कहाँ हैं ?" लक्ष्मी ने खुशीराम को सामने देख पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुशीराम इस प्रश्न के लिए तैयार था। उसने कहा, "लक्ष्मीदेवी ! तुम मन्नू से प्रेम करती हो या वली साहब से ?"

लक्ष्मी की हँसी निकल गई। उसने पूछा, "आपने वली साहब को देखा है कभी ?"

"नहीं। मैं उनको नहीं जानता। हाँ उनकी बाबत सुना बहुत कुछ है। वे पचहत्तर वर्ष के बूढ़े हैं और पैंतीस वर्ष की एक रसूलन नाम की औरत से प्रेम करते हैं। वे हिन्दू औरतों को भ्रष्ट करने के लिए अपने पास गुण्डे रखे रहते हैं। भ्रष्ट करने के बाद जब उनके लिए और कोई चारा नहीं रह जाता तो उनको मुसलमान बनाकर उनका मुसलमान आदमियों से विवाह कर देते हैं। उनकी और भी बहुत-सी बातें मैंने सुनी हैं।"

लक्ष्मी चुप थी और गम्भीर विचार में पड़ी हुई थी। वह मन-ही-मन सोच रही थी कि यह सब बातें इनको कैसे पता लग गई हैं। खुशीराम ने लक्ष्मी को चुप देख कहा, "लक्ष्मीदेवी ! अभी आराम करो। मन्नू अभी कई दिन तक ठीक नहीं हो सकेगा। तब तक वह यहीं रहेगा। तुमको भी यहीं रहना चाहिए। जब वह जाने लायक होगा तब तुम चाहोगी तो उसके साथ जा सकोगी।"

लक्ष्मी अभी भी चुप थी। वास्तव में वह घटनाओं के हेर-फेर को समझ नहीं सकी थी। खुशीराम उसको राधा के पास छोड़ बाहर मन्नू के पास चला गया। मन्नू को भय लग रहा था कि खुशीराम अपना वचन पूरा करेगा या नहीं। खुशीराम इस बात को समझता था। इस कारण मन्नू के चित्त को शान्त करने के लिए वह कहने लगा, "मन्नू भाई ! मैंने जो वचन तुमको दिया था, वह पक्का है। डॉक्टर कहता है कि तुम्हारी पट्टी बीस दिन से पहले नहीं खुल सकती, तब तक तुम हमारे यहाँ रहोगे। तुम्हारी बीवी तुम्हारी सेवा-सुश्रूषा के लिए यहाँ रहेगी। जब तुम यहाँ से जाने लगोगे तब वह, यदि चाहेगी तो, तुम्हारे साथ जा सकेगी।"

"अगर मैं एक-दो दिन में यहाँ से जाना चाहूँ तो ?"

"तो सीधे हवालात में जाओगे।"

"क्या मतलब ?"

"हम लक्ष्मी को समझाना चाहते हैं और इसलिए कुछ दिन उसके यहाँ रहने की जरूरत है। तुमने इतने महीने उसे अपने पास रखकर बहका रखा है। उसे अपना मानसिक सन्तुलन ठीक करने के लिए कुछ दिन सोचने-समझने को चाहिए।"

"वह मुझसे मिल सकेगी या नहीं ?"

"मिल सकेगी, मगर मैं तुम दोनों पर पहरा बैठा रहा हूँ। बीस दिन से पहले तुम यहाँ से नहीं जा सकोगे और यदि इतने दिन में भी लक्ष्मी तुम्हारे साथ जाने के विचार पर डटी रही तो निश्चय जानो कि मैं उसको रोकूँगा नहीं।"

मन्नू बहुत परेशान था। उसे डर था कि लक्ष्मी को ये लोग बहका लेंगे। इससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह लक्ष्मी को वहाँ से भगा देने की तजवीज सोचने लगा।

लक्ष्मी उसके लिए खाना लेकर आई। कमरे के बाहर महावीर दल के दो स्वयंसेवक पहरा दे रहे थे। यद्यपि वे मन्नू की बातें सुन सकने में अशक्त थे तो भी मन्नू लक्ष्मी से षड्यन्त्र कर सकने में कठिनाई पा रहा था। उसने लक्ष्मी को अपने समीप बुलाकर कहा, "करीमा ! यहाँ से भाग जाओ।"

"क्यों ?"

"भागकर दरगाह में चली जावो और हजरत से मेरे यहाँ कैद होने की बात कह दो। वे मुझको यहाँ से छुड़ा लेंगे।"

"आपको कुछ कष्ट है यहाँ ?"

"कष्ट की बात नहीं करीमा। ये लोग तुमको बरगलाकर मुझसे जुदा करने की कोशिश करेंगे।"

"पर आप तो कहते थे न, कि अब मुझसे कोई हिन्दू शादी नहीं करेगा ?"

"तुमको रखैल तो रख लेगा। मगर तुमसे विवाह नहीं करेगा।"

"तो फिर आप डरते क्यों हैं ?"

"मैं पूछता हूँ कि तुम हजरत वली साहब के पास जाने से डरती क्यों हो ?"

"तो आप नहीं जानते कि मैं क्यों डरती हूँ ? क्या कोई औरत उनके पास जाकर बिना खराज दिए वापस आ सकती है ? मुझको यह बात पसन्द नहीं।"

"तुमने उनको गलत समझा है करीमा। अब तुम मुसलमान हो चुकी हो। अब वे तुमको तंग नहीं करेंगे।"

"अभी उस दिन जब मुझे एक हिन्दू औरत से बातचीत करने के लिए बुलाया था तो जानते हो वे क्या कहते थे ? मेरी बाँह पकड़कर कहने लगे, 'करीमा बेगम, रसूलन आजकल नाराज रहने लगी है। वह अपनी लड़की के साथ रहने चली गई है। अगर तुम उसकी जगह मेरे पास रहना पसन्द करो तो मैं तुमको कराची ले चलूँगा और मेरे मरने के बाद पचास लाख की जायदाद की मालिक बनोगी।' मैं अभी सोच ही रही थी कि क्या कहूँ कि उन्होंने मेरी बाँह पकड़ ली और अपनी तरफ घसीटकर मेरा मुख चूम लिया। मैंने झटका दे अपने को उनसे छुड़ाया और सीधी अपने घर भाग आई। मैं अकेली अब उनके सामने नहीं जा सकती।"

"मगर ये लोग भी तो तुमको मुझसे जुदा कर देंगे।"

"जबरदस्ती नहीं करेंगे। मुझे राधा दीदी पर विश्वास है।"

"पर मैं कहता हूँ कि यहाँ कैद होकर रहना, क्या अच्छा मालूम होता है ?"

"मैं समझती हूँ कि हम कैद नहीं हैं। आपकी मरहम-पट्टी हो रही है और मैं यहाँ मजे में हूँ।"

मन्नू को कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि उसकी बीवी में वह बेबसी और नम्रता नहीं रही जो उसमें उसके घर पर थी। इससे वह बहुत घबराया। अगर अपने घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर होता और चल-फिर सकता तो मार-पीटकर उसे ठीक कर लेता। परन्तु इस समय बेबस था। इसलिए चुप रहा।

: ८ :

रात राधा और लक्ष्मी एक ही कमरे में सोईं। राधा ने बातों-ही-बातों में उस का अपहरण होने के काल से लेकर उस दिन तक का इतिहास जान लिया। लक्ष्मी मन्नू की स्त्री बनने के लिए बिलकुल तैयार नहीं थी। परन्तु दरगाह की सराय में जब उससे नित्य बलात्कार किया जाने लगा तो विवश हो उसने मन्नू की बीवी बनना स्वीकार कर लिया। इसके पश्चात् उसको ऐसी कहानियाँ सुनाई गईं जिससे उसके मन से हिन्दू होकर जीवन व्यतीत करना असम्भव प्रतीत होने लगा। फिर मन्नू ने दरगाह में नौकरी कर ली और वहाँ से उसे बढ़िया-से-बढ़िया खाने को मिलने लगा। धीरे-धीरे उसके मन में यह अंकित कर दिया गया कि अब इस जन्म में उसके लिए मुसलमान बनकर रहना ही ठीक है। साथ ही भोग-विलास के आनन्द को प्रेम का रूप देकर मन्नू ने उसे अपनी बना लिया।

अपनी पूर्ण कथा सुनाकर लक्ष्मी ने कहा, "दीदी, अब इस जन्म में क्या रह गया है। मैं अपवित्र हो गई हूँ और किसी भी हिन्दू के घर में रहने के योग्य नहीं रही। अब तो मैं भगवान् से यही प्रार्थना करती रहती हूँ कि मुझे अगले जन्म में पुनः हिन्दू की कोख से उत्पन्न करे और मुझमें शक्ति दे कि मैं हिन्दू के कर्तव्य का पालन कर सकूँ।"

"लक्ष्मी! बहुत ज्ञान की बातें करने लग गई हो, अब तो?"

"मुसीबत ने सब कुछ सिखा दिया है। जिन दिनों मैं दरगाह की सराय में थी और नित्य रात को जो दुर्गति मेरी होती थी वह मैं मरणपर्यन्त नहीं भूल सकती। नित्य कोई नया आदमी मेरे पास भेज दिया जाता था। उन दिनों की बात अब भी याद करती हूँ तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। उन दिनों भगवान् के सिवाय और आश्रय ही क्या था? एक रात मुझको स्वप्न में भगवान् की-सी सूरत में एक आदमी ने कहा, 'एक की बीवी बनकर रहो। जने-खने से बदफैली कराने से तो यही अच्छा है।' अगले दिन मैंने मन्नू से मिलने की इच्छा प्रकट की और उससे मुलाकात होने पर उससे विवाह का इकरार कर लिया।"

"मैं एक बात कहूँ लक्ष्मी। अभी तुम्हारी उमर सोलह वर्ष की भी नहीं हुई। अगर और सब बातें ठीक रहें तो तुम सत्तर-अस्सी वर्ष की उमर तक जी सकती हो। अभी तो साठ-पैंसठ वर्ष जीवन और हो सकता है। इससे मैं कहती हूँ कि जो बात तुम आज से साठ वर्ष बाद अर्थात् अगले जन्म में करना चाहती हो, वह आज से ही क्यों आरम्भ नहीं कर देतीं?"

"यह कैसे हो सकता है? इस अपवित्र शरीर को कौन ग्रहण करेगा!"

"देखो लक्ष्मी! मैं तुम्हें अपनी आपबीती सुनाती हूँ। मैं जन्म से मुसलमान हूँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बचपन से ही एक मुसलमान अमीर आदमी के घर नौकरी करती थी। इन्हीं नौकरी के दिनों में मेरे विवाह का प्रबन्ध मालकिन के भाई के रसोइए से होने लगा तो मुझको यह पसन्द नहीं आया। वह एक आँख से काना था और अपनी पहली बीवी को बहुत पीटा करता था। इस समय देवकीनन्दन के पिता से मेरी भेंट हो गई। विवाह तो हमारा हो नहीं सकता था। ये हिन्दू थे और मैं एक मतान्ध मुसलमान की नौकरानी। मैं इनके साथ भाग गई। हम दिल्ली जा पहुँचे। वहाँ किसी बदमाश ने धोखा देकर मेरा अपहरण कर लिया। उन लोगों ने मेरे साथ बहुत बुरा सलूक किया। वे मुझसे पेशा करवाने लगे थे। पश्चात् इन्हीं के पास उन बदमाशों ने बेचने का यत्न किया, परन्तु मेरे भाग्य अच्छे थे कि इस छापेखाने के मालिक की चतुराई से मैं बच गई और वे बदमाश पकड़ लिये गए। जिनके घर में मैं नौकरानी थी वे मेरा विवाह एक मुसलमान से करना चाहते थे। इस पर इन्होंने मुसलमान बनना स्वीकार कर लिया और मेरा विवाह इनसे हो गया। अब तुम देख ही रही हो कि मेरा जन्म सुधर गया है। मैं समझती हूँ कि तुम्हारे साथ भी ऐसा हो सकता है। सौभाग्य की बात है कि तुम उस नरक से बाहर आ गई हो।''

उस रात तो इतनी ही बात हुई। राधा उसको सोचने का अवसर देना चाहती थी। लक्ष्मी रात-भर अपनी अवस्था पर विचार करती रही। क्या वह विवाह के बिना रह सकेगी ? यदि नहीं, तो क्या उससे भी खुशीराम जैसा कोई विवाह करने पर राजी हो सकेगा ? एक बात वह समझती थी कि मन्नू उसको कई बार मार-पीट चुका था और जब भी वह उसे कुछ कहती थी, उसे वह फिर सराय में छोड़ आने की धमकी देता था। कम-से-कम यहाँ रहते तो उसको इन बातों का भय नहीं था। वह अभी किसी बात का निर्णय नहीं कर सकी थी।

दो दिन तक उसके मन में संघर्ष चलता रहा और इस समय में राधा अथवा खुशीराम ने उससे कोई बात नहीं की। मन्नू भी सोच रहा था कि लक्ष्मी को मजबूर न किया जावे। कहीं वह बिगड़ ही न जावे परन्तु लक्ष्मी का मन चुप नहीं था। वह भीतर-ही-भीतर प्रश्नोत्तर कर रहा था। दो दिन के सवाल के पश्चात् भी उस के मन में भविष्य का चित्र स्पष्ट नहीं हुआ। इसलिए वह राधा के पास अपने मन के संशयों के निवारण के लिए जा पहुँची। ''राधा दीदी ! एक बात पूछूँ ? आप सत्य बताएँगी न ? अगर मैं अपने खाविन्द को न छोड़ूँ तो आप क्या करेंगी ? क्या उनको पुलिस के हवाले कर देंगी ?''

''नहीं ! देवकीनन्दन के पिताजी ने उनको वचन दिया है कि यदि वे तुमको अपनी बीमारी के दिनों में हमारे पास रहने देंगे तो वे उनको पुलिस के हवाले नहीं करेंगे।''

''इससे आपको क्या लाभ होगा ?''

''हम समझते हैं कि हिन्दू रहना तुम्हारे लिए अच्छा है और तुमको समझाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम पुनः हिन्दू बना लेना चाहते हैं। इसीलिए तुम पर और उस पर इतना कुछ खर्च कर रहे हैं।"

"फिर भी यदि मैं न मानूँ तो आप क्या करेंगे ?"

"उसकी टाँग ठीक हो जाने पर तुम दोनों की जहाँ जाने की इच्छा हो, जाने देंगे ?"

"इससे तो आपको बहुत हानि होगी ?"

"ठीक है, परन्तु हमारा यत्न तो पवित्र है। हम अपने विचार से तुमको हानि से बचने में मदद दे रहे हैं।"

उस दिन बात यहीं समाप्त हो गई। लक्ष्मी के मन में अभी भी बात स्पष्ट नहीं हुई थी। वह यह तो समझ गई थी कि उसको हिन्दू बनाने का यत्न किया जा रहा है। मगर क्यों ? यह वह नहीं समझ सकी थी। इससे अगले दिन जब मन्नू सो रहा था और खुशीराम काम पर गया था, लक्ष्मी ने बात अपने विषय में कर दी। "आपने कल कहा था कि आप मुझको समझावेंगी। परन्तु आप तो इस विषय में अपने आप बात ही नहीं करतीं।"

"बातें करने से भी भला कोई समझ सकता है ? हमने तुमको दूषित वातावरण से निकाल स्वच्छ और स्वतन्त्र वायुमण्डल में रख छोड़ा है। इससे भी यदि तुम नहीं समझ सकतीं तो फिर हम क्या कर सकते हैं ? यदि कोई बात समझ में नहीं आती तो तुमको स्वयं पूछना चाहिए।"

"पर दीदी ! कई बातें हैं। मैं क्या-क्या पूछूँ ? समझ में नहीं आता। अच्छा यह बताइए कि आपको मेरे हिन्दू हो जाने से क्या लाभ होगा।"

"जब हम किसी भिखारी को दान देते हैं तो हमें क्या लाभ होता है, कभी तुमने सोचा है ?"

"कहते हैं कि पुण्य होता है। इससे हमारा अगला जन्म सुधरेगा।"

"बस फिर यही समझ लो। तुम्हारे हिन्दू होने से तुम सुखी होगी। इससे हमारा भी भला होगा। परन्तु मैं तुमको एक बात और कहती हूँ। यह भला अगले जन्म में होगा या नहीं, कहना कठिन है, परन्तु इस जन्म में तो अवश्य होगा।"

"यही तो मैं जानना चाहती हूँ।"

"तुम जानती हो कि मुसलमान इस समय देश में क्या कर रहे हैं ? वे हमारे देश के एक भाग को पाकिस्तान बनाना चाहते हैं। पाकिस्तान के अर्थ ऐसी जगह है जहाँ कोई हिन्दू न रह सके। यह व्यवहार सब मुसलमानों का है और सब मुसलमानी देशों में और सब कालों में रहा है। यदि हिन्दुस्तान में मुसलमानों की तादाद बढ़ती गई तो ये एक दिन यहाँ भी पाकिस्तान बनाने के लिए कहेंगे। परिणाम यह होगा कि हम यहाँ हिन्दू होते हुए नहीं रह सकेंगे। इससे हम अपने देश में मुसलमान की संख्या बढ़ने नहीं देना चाहते। यदि तुम एक मुसलमान की बीवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनी रहीं तो तुम्हारी संतान मुसलमान होगी और इस प्रकार देश में मुसलमानों की संख्या बढ़ जावेगी। यह न तो हमारे, न ही देश के लाभ की बात है।"

लक्ष्मी की समझ में यह बात आ गई। वह जानती थी कि मन्नू के संगी-साथी हिन्दुओं को मिटा देने की बातें करते रहते हैं। आज उसे पता चला कि हिन्दू-मुसलमान में झगड़े की नींव में देश की बात है। इस दृष्टिकोण से सोचने पर उसे अपने एक मुसलमान से शादी कर लेने के दूसरे ही अर्थ निकलने लगे।

लक्ष्मी गंभीर विचार में बैठी रह गई। उसी दिन सायं खाना खाने के समय उसने मन्नू से कह दिया, "मैं सोच रही हूँ कि मैंने एक मुसलमान से विवाह क्यों किया ?"

"तो तुमको मालूम नहीं ?"

"मालूम तो है। मेरे साथ नित्य बलात्कार किया जाता था। उससे बचने के लिए मैंने आपसे विवाह कर लिया था। वह मजबूरी की हालत थी।"

"पर तुम तो कहती थीं कि तुम मुझसे प्रेम करती हो।"

"वह कहना भी मजबूरी थी।"

मन्नू यह सुन क्रोध से उतावला हो रहा था, परन्तु विवश था। वह अभी हिल नहीं सकता था। इस कारण चुप रहा और दाँत पीसता रहा।

"मैं सोच रही हूँ, कि यदि मैंने विवाह विवशता से किया था तो वह विवशता अब नहीं रही। तुमने मुझको कई बार पीटा भी है, परन्तु मैं अपने को निर्दोष समझते हुए भी आपके पास रहने के लिए विवश थी। अब मैं अपने को आपके वश में नहीं पाती। इससे समझती हूँ कि मैं आपकी बीवी नहीं हूँ।"

"पर तुम्हारा मुझसे निकाह जो पढ़ा जा चुका है।"

"निकाह पढ़ने से क्या होता है ? मैं आपके पास नहीं रहना चाहती।"

जब राधा को पता चला कि लक्ष्मी ने मन्नू को जवाब दे दिया है तो उसने उसे, उसके समीप रखना उचित नहीं समझा। इस कारण उसने लक्ष्मी से कहा, "क्या तुमने उसके साथ रहने से इन्कार कर दिया है ?"

"हाँ। उन लोगों ने मुझको मजबूर कर दिया था, कि मैं मन्नू से विवाह करूँ। अब आपकी कृपा से वह मजबूरी नहीं रही। किन्तु एक बात है। मेरा उससे निकाह पढ़ा गया था। उसका क्या होगा ?"

"वह निकाह अनियमित था। उसका अस्तित्व नहीं है। वह जुरम था।"

"तब ठीक है। यदि हो सका तो मैं उसके साथ नहीं जाऊँगी।"

अगले दिन खुशीराम लक्ष्मी को साथ लेकर मन्नू के पास गया और बोला, "मन्नू भाई ! मैं जैसा समझता था वैसा ही हुआ है। यह कहती है कि यह अब तुम्हारे साथ नहीं जावेगी।"

"क्यों ?" मन्नू का प्रश्न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर लक्ष्मी ने दिया, "इसलिए कि आप लोगों ने मेरे साथ भारी अन्याय किया है। आपका मेरे साथ जो व्यवहार था वह भारी जुरम है। मैं अपनी इच्छा से न कभी तुम्हारी बीवी बनी थी और न अब बनूँगी।"

"खुदा की नजरों में जब एक दफा खाविन्द-बीवी बन गए तो हमेशा के लिए बन गए। अब हमको जुदा करने वाला कौन है !"

"यह बात नहीं मन्नू। तुम्हारा इससे विवाह खुदा की रजामन्दी से नहीं हुआ। वह तो शैतान की करामात कही जा सकती है।"

"मैं समझती हूँ कि यहाँ मैं आजाद हूँ और निकाह हुआ है अथवा नहीं, मैं अब आपके साथ नहीं जाऊँगी।"

"मन्नू ! तुमने सुन लिया है न। अब मैं तुम्हें दरगाह में भेज रहा हूँ। अगर तुम चुपचाप चले जावोगे तो ठीक है और अगर किसी प्रकार का भी हल्ला किया तो पुलिस के हवाले कर दिए जावोगे। और एक नाबालग लड़की के अगवा (अपहरण) का मुकद्दमा चलाया जावेगा। साथ ही दरगाह में जो कुछ होता है उसका राज फाश कर (भेद खोल) दिया जावेगा।"

मन्नू चुप था। वह सोच रहा था कि किस प्रकार अपनी बीवी को फिर पा सके।

: ६ :

बम्बई में बलवा जारी रहा। नित्य छुरे पेट में घोंपे जाने की घटनाएँ होती रहीं। सरकार की ओर से रात को कर्फ्यू लगा रहा। परिणामस्वरूप कारोबार में बाधा बनी रही। कभी-कभी मुसलमान इकट्ठे मिलकर भी मन्दिरों पर अथवा अन्य हिन्दू सार्वजनिक संस्थाओं पर आक्रमण करते रहे। आर्य कन्या पाठशाला पर तो गुर्खा फौजियों का पहरा बैठा दिया गया था। इस समय तक हिन्दू लोग भी जवाबी आक्रमण करने लगे थे। एक दिन बीस हिन्दुओं को पेट में छुरे घोंपकर मार डाला गया। दूसरे दिन उतने ही मुसलमानों को मार डाला गया। एक दिन एक हिन्दू मन्दिर पर आक्रमण किया गया तो दूसरे दिन एक मस्जिद पर हल्ला बोल दिया गया। इससे बम्बई में छुरा घोंपने की घटनाएँ कम हो गईं। एक दिन मुसलमानों की भीड़ ने बालेश्वर के मन्दिर पर आक्रमण की कोशिश की। उससे अगले दिन हिन्दू लोगों ने दरगाह वली शाह मुराद पर आक्रमण कर दिया। हिन्दू लोग जानते थे कि वहाँ भारी मुकाबिला किया जावेगा। इस कारण इस आक्रमण की भारी तैयारी की गई। लगभग दो सौ हिन्दू युवक भिन्न-भिन्न दिशाओं से एक निश्चित समय पर वहाँ पहुँच गए। फाटक पर नियुक्त दो चपरासियों को मारकर लोग भीतर घुस गए। यह इतना जल्दी-जल्दी हुआ कि फाटक के चपरासियों को दरगाह के भीतर सूचना भेजने का अवसर ही नहीं मिला। फाटक खोलकर जब भीड़ दरगाह में प्रवेश करने लगी तो खतरे का घंटा बजा दिया गया। इस घण्टे का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सुनकर सराय की ओर से बहुत से लोग हाथों में लाठियाँ लेकर आते दिखाई दिए। आक्रमण करने वाले इस बात के लिए तैयार थे। वे प्रायः सब लाठियाँ लेकर और उनमें से कई बन्दूकें लिए हुए थे। परिणाम यह हुआ कि डटकर लड़ाई हो गई। दरगाह के रक्षकों के पास भी बन्दूकें थीं। यदि आक्रमण करने वालों की संख्या दरगाह की रक्षा करने वालों से बहुत अधिक न होती तो आक्रमण करने वाले खदेड़ दिए जाते। आक्रमण करने वालों ने भागकर रक्षा करने वालों को घेर लिया। पाँच मिनट से अधिक नहीं लगे और दरगाह के रक्षक भाग गए। आक्रमण करने वालों ने पीर साहब की आरामगाह में सब रक्षा करने वालों को धकेल दिया। पीर साहब ने स्वयं और दूसरे बन्दूकचियों ने मोरचा बाँध लिया। आक्रमण करने वालों ने भी पेड़ों के पीछे बैठकर आरामगाह पर गोलियाँ चलानी आरम्भ कर दीं। शेष लोगों ने सराय पर धावा बोल दिया।

सराय की रक्षा करने वाले पुरुष तो पहले ही भाग गए थे और स्त्रियों ने आक्रमण करने वालों के आगे घुटने टेक अपनी जान की भिक्षा माँगनी आरम्भ कर दी। आक्रमण करने वालों को सराय में कैद पन्द्रह औरतें मिलीं। उन्होंने बताया कि वे हिन्दू हैं और उनको भाँति-भाँति के प्रलोभन देकर वहाँ लाया गया और पश्चात् उनको पतित कर उन्हें मुसलमान बनाया गया है और अब उनकी मुसलमानों से शादी करने का प्रबन्ध किया जा रहा था।

जब सराय की औरतें छुड़ा ली गईं तो बन्दूकों से आरामगाह पर गोलियाँ चलाने वाले और दूसरे आक्रमण करने वाले पीछे हटते हुए दरगाह के फाटक से बाहर निकल गए, और फाटक का दरवाजा बन्द कर औरतों को साथ ले वहाँ से चले गए।

इस डाके के समाचार ने बम्बई नगर में भारी हलचल उत्पन्न कर दी। मुसलमानों ने यह विख्यात किया कि दरगाह से मुसलमान यतीम औरतों और बच्चों को हिन्दू उड़ाकर ले गए हैं। और हिन्दुओं ने यह बात नगर-भर में फैला दी कि दरगाह पीर शाह मुराद में सैकड़ों हिन्दू औरतें मुसलमान बनाने के लिए कैद कर रखी थीं। वे सब छुड़ा ली गई हैं।

इस घटना का प्रभाव इसके पश्चात् दो दिन तक बम्बई में सैकड़ों छुरा घोंपने की वारदातों के रूप में हुआ। मन्नू दरगाह में वापस जा चुका था और उसके बताने पर मुसलमानों ने कई बार खुशीराम के घर पर आक्रमण किया। एक दिन तो खुशीराम अपने मकान की खिड़की में बैठा हुआ और अपने साथ बीस महावीर दल के स्वयंसेवकों की सहायता से आक्रमणकारियों का मुकाबला करता रहा। अगले दिन वह मकान को ताला लगाकर और अपने परिवार तथा लक्ष्मी सहित बम्बई से बाहर चला गया। मुसलमान आक्रमणकारियों को विदित था कि मकान का मालिक मुसलमान है। इससे मकान को ताला देख आक्रमण बन्द हो गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरगाह वाली घटना के पश्चात् बम्बई सरकार को शान्ति स्थापित करने में कई दिन लग गए। कांग्रेसी क्षेत्रों में यह कहा जा रहा था कि हिन्दुओं ने यह आक्रमण कर सैकड़ों लोगों की हत्या करवाई है। जहाँ कहीं ये लोग एकत्रित होते थे वहाँ दरगाह वाली वारदात का उल्लेख अवश्य होता था और हिन्दुओं को मूर्ख और शरारती कहा जाता था।

सदाशिव बम्बई असैम्बली की मीटिंग में गया तो अपने साथियों से उक्त बातें सुनकर तिलमिला उठा। आनन्द प्रिय देसाई ने तो यहाँ तक कह दिया, "जब तक यह मराठे बम्बई से निकाल नहीं दिए जाते तब तक यहाँ शान्ति नहीं हो सकती।"

गोड़बोले कहने लगे, "महाराष्टियों की बात नहीं, यह तो चितपावन ब्राह्मणों की बदमाशी है।"

एक और कहने लगे, "अजी पंजाबियों ने बम्बई में आकर यह झगड़ा खड़ा कर दिया है। मैं तो एक प्रस्ताव असैम्वली में रखने वाला हूँ कि सब गैर-बम्बई वालों को पुलिस ऐमरजैंसी पावर्ज एक्ट के अधीन बम्बई से बाहर चले जाने की आज्ञा दे दी जावे।"

इन बातों को सुनकर सदाशिव का मस्तिष्क चक्कर खाने लगा। उसने कहा "मुझे बहुत शोक है कि मैं आप जैसे अनभिज्ञ लोगों की पार्टी में हूँ। आपको क्या यह भूल गया है कि दिल्ली से एक खुली चिट्ठी मिली थी ? उसमें यह कहा गया था कि मुस्लिम लीग बम्बई में डायरैक्ट ऐक्शन करने वाली है ? उस चिट्ठी में तो इसके आरम्भ होने की तारीख तक दे दी गई थी। इस समय पर की चेतावनी से लाभ न उठाकर हमने मुसलसानों पर प्रतिबन्ध नहीं लगायें। अब जब मुसलमानों की करतूत का हिन्दू विरोध करने लगे हैं तो तुम लोग उनको गाली देने लगे हो।"

गोड़बोले ने मुस्कराकर कहा, "ओह, मैं भूल गया था कि आप भी चितपावन हैं। परन्तु भाई सदाशिव, तुम तो सोशलिस्ट थे। आज यह क्या हो गया है ?"

"और मेरा विचार था कि आपकी स्त्री मुसलमान है।" एक और ने कहा।

सदाशिव ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा, "सोशलिस्ट होने से क्या न्याय-अन्याय जानने की बुद्धि लोप हो जाती है ? अथवा मुसलमान बीवी रखने से मनुष्य अंधा हो जाता है ? आपकी युक्ति मेरी समझ में नहीं आ रही। देखिए, झगड़ा मुसलमानों ने आरम्भ किया और जब सब कारोबार बंद होने लगा, कारखाने बन्द होने से मजदूर भूखे मरने लगे और सरकार शान्ति स्थापित करने में सफल नहीं हुई, तो क्या यह लोगों का कर्तव्य नहीं कि अपनी भी रक्षा कर सकें। दरगाह के विषय में मैं जानता हूँ कि वहाँ हिन्दू औरतें कैद कर रखी जाती हैं और उनको मुसलमान बन जाने पर विवश किया जाता है। अगर वहाँ से उन औरतों को छुड़ा लिया गया है तो कौन-सा पाप हो गया है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदाशिव की बात अभी समाप्त भी नहीं हुई थी कि सुनने वाले बिना उसके कहने की ओर ध्यान दिए वहाँ से चल दिए। उसी सायंकाल कुछ और सदस्य दरगाह पर हिन्दू लोगों के आक्रमण की निंदा कर रहे थे। एक कह रहा था, "इन लोगों ने दरगाह पर आक्रमण कर अपने को झगड़ा करने वाला सिद्ध कर दिया है। यह सावरकर-पार्टी ही थी जिसका यह काम है। ये लोग सदैव से देशद्रोह करते रहे हैं। देखो न, पंजाब में तो मुसलमानों ने शान्तिमय सत्याग्रह करने का फैसला कर लिया है और यह हिन्दू अभी तक मूर्खता पर तुले हुए हैं।"

इस पर फिर सदाशिव को क्रोध आ गया। उसने घूमकर उनसे पूछा, "यहाँ शान्तिमय सत्याग्रह हो रहा था शायद ?"

वहाँ पर सब खड़े हुए सदाशिव का मुख इस प्रकार देखने लगे जैसे उसने कोई यूनानी अथवा अरबी भाषा बोली है। उनको इस प्रकार अपनी ओर देखते हुए पा सदाशिव ने कहा, "मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि मुसलमानों ने बम्बई में तो सशस्त्र लड़ाई-फसाद किया है। इससे यहाँ पर उनका मुकाबला यदि कोई सशस्त्र करता है तो क्या बुरा करता है ? फिर दरगाह में, जो बदमाशी हो रही थी उसका भेद खोलने के लिए जो कुछ किया गया है वह प्रशंसनीय नहीं है क्या ? इस बदमाशी को बन्द करना तो सरकार की सहायता ही हुई है।"

"पर यह तो कानून को हाथ में लेने के बराबर है।" एक ने कहा।

"कानून कहीं है भी ? यदि कानून होता तो इतने दिन से चल रहा झगड़ा बंद न हो जाता।"

सदाशिव के इस कथन पर सब अचम्भे में उसका मुख देखने लग जाते थे। कई लोग तो यह समझने लगे थे कि झगड़े की किसी घटना को देखकर उसका मन डोल गया है। यह समझकर वे उसको वहीं खड़ा छोड़ दूसरी ओर चले जाते थे। सदाशिव उन लोगों का यह व्यवहार देखकर चकित रह जाता था। एक बात उसके मन में अंकित होती जाती थी कि देश की वर्तमान परिस्थिति में ये लोग राज्य करने के योग्य नहीं। मुसलमानों को इस प्रकार खुली छुट्टी देनी और उन लोगों की निंदा करनी, जो देश में अशान्ति उत्पन्न करने वालों का विरोध कर रहे हैं, देशद्रोह से कम अपराध नहीं। ऐसा समझकर वह अपनी पार्टी के लोगों को खरी-खरी सुनाने का विचार कर रहा था। यह अवसर उसे पार्टी की मीटिंग में मिला।

पार्टी की मीटिंग में बम्बई नगर और अहमदाबाद में शान्ति स्थापित करने में सरकार की असफलता पर विचार करने के लिए एक प्रस्ताव रखा गया था। इस प्रस्ताव पर सदाशिव ने कई बार बोलने का यत्न किया और बहुत कठिनाई से पार्टी के प्रधान ने उसको पाँच मिनट दिए।

सदाशिव ने कहा, "मेरी बीवी दरगाह शाह मुराद में पली है। पीर वली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इब्राहीम ने उसे अपनी लड़की मानकर पाला था। इस कारण जो बातें उस दरगाह के विषय में मैं जानता हूँ वह असत्य नहीं हो सकतीं। मैं जानता हूँ कि हिन्दू लड़कियों को चुराकर और धोखा देखकर वहाँ लाया जाता है, उनसे बदफेली करने के लिए गुण्डे उस दरगाह में खिला-पिलाकर तैयार रखे खाते हैं। उन औरतों पर बलात्कार तब तक जारी रखा जाता है, जब तक कि वे मुसलमान से विवाह करने पर राजी नहीं हो जातीं। ऐसी अवस्था में उस दरगाह पर तो आज से कितने ही काल पहले सरकारी कब्जा हो जाना चाहिए था। हम जो इस समय प्रान्त की सरकार बनाए हुए हैं, प्रान्त में इस दरगाह जैसी संस्थाओं को सहन नहीं कर सकते। मैं चाहता हूँ कि हमारी पार्टी सरकार से यह माँग करे कि इस दरगाह पर सरकार अधिकार कर ले और इसके वली को पकड़कर इस पर बरदाफरोशी करने का मुकदमा चलाया जावे।"

एक कांग्रेसी सोशलिस्ट सदस्य ने कहा, "यह झूठ है। इस किस्म के मजहबी नेता को इस प्रकार झूठे इल्जाम लगाकर कैद करने से भारतवर्ष की तमाम मुसलमान जनता को अपने खिलाफ कर लेने के बराबर है। इस किस्म की बेवकूफी कांग्रेस पार्टी नहीं कर सकती।"

सोशलिस्ट सदस्य के इस वक्तव्य पर पार्टी के सब सदस्यों ने तालियाँ पीटीं। इस बात का उत्तर देने के लिए सदाशिव ने खड़े होकर समय माँगा तो प्रधान ने कह दिया कि "बस हो गया।"

: १० :

सदाशिव के पार्टी में इस प्रकार खुलकर मुसलमानों के और दरगाह शाह मुराद के विरुद्ध कहने पर नगर भर में उसकी चर्चा फैल गई। कांग्रेसी सदस्य ही उसकी निंदा करने लगे थे। दूसरी ओर हिन्दू खयाल के लोग यह जान गए कि दरगाह के भीतर की बातें सत्य ही बहुत भयानक हैं, वे सदाशिव की प्रशंसा करने लगे। उसके द्वारा कही बातों का समाचार मुसलमानों और पीर इब्राहीम तक भी पहुँचा। वह उसके यह कहने पर कि उसकी लड़की से उसकी शादी हुई है, जल-भुन गया। उसने उसका पता निकाला तो उसके अचम्भे का ठिकाना न रहा। उसे यह मालूम नहीं था कि सदाशिव नौकरी छोड़कर मकान भी बदल चुका है। उसने उसकी खोज आरम्भ कर दी।

धीरे-धीरे झगड़ा शान्त हो चला था। कुछ लोग तो लड़ते-लड़ते थक गए थे। कुछ मुसलमान यह अनुभव करने लगे थे कि लड़ाई में दूसरे भी चोट कर सकते हैं और उनकी चोट अधिक गहरी भी हो सकती है। इसके साथ यह भी बात थी कि मुस्लिम लीग समझने लगी थी कि उसने बम्बई और अहमदाबाद के मिल-मालिकों को काफी नुकसान पहुँचा दिया है। मुस्लिम लीग के नेताओं को यह विश्वास हो गया था कि मिलों के मालिक कांग्रेसी नेताओं पर जोर डाल रहे हैं कि मुसलमानों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से समझौता कर लें।

इस पर भी एक दिन लगभग बीस मुसलमान गुण्डों ने सदाशिव के मकान को रात के दो बजे, जब नगर में कर्फ्यू आर्डर लगा हुआ था, घेर लिया। मकान का दरवाजा तोड़ भीतर घुस गए और सदाशिव के हाथ-पाँव बाँधकर कमरे के एक कोने में डालकर उसकी बीवी और सास को पकड़कर ले गए। अगले दिन पुलिस ने मकान के दरवाजे टूटे हुए देख मकान की तलाशी ली, तो सदाशिव के बन्धन खोले। सदाशिव ने थाने में जाकर रिपोर्ट लिखवाई कि उसे यकीन है कि उसके घर में डाका डालने वाले दरगाह के गुण्डे थे। पुलिस दरगाह के विरुद्ध रिपोर्ट लिखने में झिझकती थी। सदाशिव ने जब बताया कि वह असेम्बली का मेम्बर है तो उन्होंने रिपोर्ट तो लिख ली परन्तु उस पर कार्यवाई करने के लिए तब तक तैयार नहीं हुए जब तक कि सदाशिव प्रीमियर से लिखवाकर नहीं लाया। इसमें दो दिन लग गए और जब पुलिस वहाँ पहुँची तो खनीजा, जिसने अब अपना नाम शान्ति देवी रख लिया था, और उसकी माँ, दोनों बम्बई से बाहर ले जाई जा चुकी थीं।

सदाशिव बहुत परेशान था। एक तो उसे पुलिस के सम्मुख और दूसरे प्रीमियर के सामने लज्जित होना पड़ा। दूसरी ओर स्त्री भी नहीं मिली। वह इतने दिन से खुशीराम से नहीं मिला था। अब उसने अनुभव किया कि किसी गैर-सरकारी संस्था से सहायता लेनी चाहिए। खुशीराम अब बम्बई में लौट आया था। उसने जब सदाशिव की कहानी सुनी तो कहा कि दोनों औरतें जरूर हैदराबाद में हैं। उसका अनुमान था कि पीर साहब के हैदराबाद में बहुत-से मुरीद हैं और औरतों को सुरक्षित रखने के लिए उस रियासत से अधिक उपयुक्त स्थान कोई और नहीं हो सकता।

खुशीराम का कहना था कि इस प्रकार की बातों का पता करना सहज नहीं। सरकार, जिसके पास अनन्त साधन हैं, वह भी खोज करे तो सफलता निश्चित नहीं।

"पर खुशीरामजी !" सदाशिव का कहना था, "मैं यत्न करना चाहता हूँ।"

"मुझे आपकी मनोवृत्ति में यह परिवर्तन देख बहुत प्रसन्नता हुई है। बताइए, मैं आपकी कैसे सहायता कर सकता हूँ?"

"आप ही बताइए न कि मैं क्या करूँ? आप ऐसी बातों में बहुत अनुभव रखते हैं। यदि कुछ धन की आवश्यकता हो तो मेरी सास का कुछ रुपया मेरे पास रखा है। वह खर्च हो सकता है। मैंने टुनियाँ के विषय में भूल की थी और उसका मुझे अभी तक शोक है। यद्यपि उसके न मिल सकने से ही मुझको खनीजा मिली थी, किन्तु मैं उसके साथ न्याय नहीं कर सका। मेरे ही कारण उसका अपहरण हुआ है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिए सदाशिव, एक बात मैं आपको बताना चाहता था, वह आपसे मिल न सकने के कारण अभी तक बता नहीं सका। पिछले झगड़े के दिनों में हम लक्ष्मी को छुड़ाने में सफल हुए हैं। वह मन्नू के पास थी। उसे उससे मुक्त कराकर मैंने लाहौर भेज दिया है।"

"अच्छा ! यह तो बहुत खुशी की बात है। कहाँ मिली थी वह ?"

"दरगाह शाह मुराद के पिछवाड़े में, एक मकान में रहती थी।"

"भाई खुशीराम, इन औरतों को छुड़ाने का भी कोई उपाय बताओ। मुझको विश्वास है कि वे दोनों मेरे साथ रहना पसन्द करेंगी। इस समय जो अत्याचार उन पर हो सकता है, उसका ध्यान कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।"

खुशीराम गहरे सोच में पड़ गया। कुछ काल तक सोचने के पश्चात् उसने कहा, "अच्छी बात है, एक-दो दिन में मैं आपसे मिलूँगा। यदि कोई तरकीब निकल सकी, जिससे शान्ति देवी और उसकी माँ छुड़ाई जा सकीं तो हम यत्न करेंगे।"

तरकीब निकल आई और सदाशिव को बता दी गई। उसने एक सहस्र रुपया खुशीराम को देते हुए कहा, "मेरे पास कुछ और भी है और दे सकता हूँ। आप इसमें पूरा यत्न करें।"

: ११ :

दो-तीन दिन बाद की बात है। एक युवक लहू-लुहान हुआ दरगाह के फाटक के बाहर अर्द्ध-चेतनावस्था में पड़ा देखा गया। उन दिनों फाटक बन्द रहता था। आने-जाने वालों के लिए खिड़की खुल जाती थी। भीतर से कोई बाहर आने लगा तो खिड़की खुली और वह आदमी बाहर निकला। खिड़की उसके निकलने के पश्चात् बन्द नहीं हुई थी कि निकलने वाले की दृष्टि उस घायल पर पड़ी। उसने खिड़की को बन्द नहीं होने दिया और उस घायल के पास जाकर पूछा कि कौन है ? जब कुछ जवाब नहीं मिला तो उसने उसके हृदय पर हाथ रखकर देखा कि उसका दिल धड़क रहा है। उसने उसकी तहमत उठाकर देखा और विश्वास कर लिया कि घायल कोई मुसलमान है। पश्चात् उसने खिड़की बन्द करने के लिए खड़े चौकीदार को कुछ कहा। उसने आवाज दी जिससे भीतर से दो और आदमी आ गए और उस घायल को उठाकर भीतर सराय में ले गए।

सराय में ले जाकर देखा गया कि उसके कंधे पर छुरे का घाव है। वहाँ उसकी मरहम-पट्टी की गई। जब उसे शोरबा इत्यादि पिलाया गया और उसे होश आया तो उसने बताया कि "मैं बाहर सड़क पर जा रहा था कि एक काफिर ने पीछे से आकर छुरा दे मारा। मैं उसे पकड़ने लगा तो वह भाग गया। खून बहुत निकल जाने के कारण मुझे बहुत कमजोरी मालूम होने लगी थी। मैंने देखा कि बड़ा-सा फाटक है। अवश्य किसी धनी आदमी की कोठी होगी, इससे सहायता की आशा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बैठ गया। खून बहुत निकल जाने की वजह से मुझमें बेहोशी आने लगी तो मैं लेट गया। मुझको होश आया है तो अपने को यहाँ पाता हूँ।"

"तुम कहाँ के रहने वाले हो?"

"मैं यू० पी०, लखनऊ का रहने वाला हूँ। दसवीं जमात पास की है और तीन दिन से बम्बई में काम की तलाश में आया हुआ हूँ।"

"क्या नाम है?"

"नजीरुद्दीन।"

"यहाँ किस जगह ठहरे हो?"

"दादर, पंजाबी सराय में।"

"कुछ सामान भी है?"

"एक छोटा-सा बिस्तर है, वहाँ सराय वाले के पास रखा हुआ है।"

"अच्छी बात है, तुम यहाँ रह सकते हो। जब ठीक हो जाओ तो बिस्तर ले आना।"

"पर साहब, मैं बेकार हूँ और जेब में रुपये भी सिर्फ चार रह गए हैं। इस-लिए यहाँ शहर से इतनी दूर रहकर क्या करूँगा?"

"देखो, यहाँ के मालिक आवेंगे तो कहना। वह तुम्हारी बहुत कुछ मदद कर सकते हैं।"

"वे कब आवेंगे?"

"शाम की नमाज के बाद यहाँ आते हैं। तुम उनसे कहना।"

नजीरुद्दीन खामोश हो गया। मरहम-पट्टी करने वाला चला गया। दोपहर बाद उसको चाय और खाने को भुने चने दिए गए। रात होते-होते पाँच आदमियों के साथ पीर इब्राहीम साहब आए। सराय के सब आदमी उठकर उनकी दुआ लेने के लिए घुटनों के बल होकर उनके चोगे के किनारे को आँखों से लगाने लगे। वे एक हाथ में तसबीह लिये हुए मुख में कुछ बुदबुदाते हुए चले आ रहे थे। जब वे नजीरुद्दीन के सामने पहुँचे तो उसने भी दूसरों की भाँति उनके चोगे को आँखों से लगाया। पीर साहब उसके सामने ठहर गए। उसे उठने का संकेत कर कहने लगे, "इन काफिरों को छुरा चलाना भी नहीं आता।"

"हजूर", नजीरुद्दीन ने झिझकते हुए कहा, "मैं जख्मी हो जाने के बाद भी उसको मार डालने की ताकत रखता था, मगर वह भाग ही गया।"

"खैर छोड़ो इस बात को। क्या करना जानते हो?"

"दसवीं जमायत तक पढ़ा हूँ। जिसम तो आप देख ही रहे हैं कि वर्जिश से कैसा गठ गया है। कहने से मुराद यह है कि कुली के काम से लेकर बाबू के काम तक, सब कुछ कर सकता हूँ।"

"बहुत अच्छी बात है। उम्मीद है कि दो दिन तक तुम्हारा जख्म ठीक हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जावेगा। तब तक यहीं ठहरो।"

पीर साहब चले गए। नजीरुद्दीम ने अपने पास बैठे आदमी से पूछा, "ये कौन थे?"

"यहाँ के मालिक थे।"

"इस कोठी के मालिक। यह तो कोई खुदा दोस्त मालूम होते थे।"

दूसरे ने मुस्कराकर कहा, "भाई यह कोई कोठी नहीं है। यह तो दरगाह है। आप हजरत वली हैं। इस दरगाह के पीर हैं। आपका नाम हजरत वली इब्राहीम साहब है।"

"दरगाह! मैंने समझा था किसी धनी आदमी की कोठी है। खुदा का शुकर है कि किसी काफर से वास्ता नहीं पड़ा।"

धनी की कोठी की बात सुनकर समीप बैठे सब हँसने लगे। नजीरुद्दीन भी हँसने लगा। इस समय एक और ने पूछा, "इस सड़क की तरफ कैसे चले आये थे?"

"मैं समझता था कि इस तरफ बड़े-बड़े लोगों की कोठियाँ हैं। किसी के यहाँ नौकरी मिलने की उम्मीद में घूम रहा था। मुझको लोग कहते हैं कि औरतें मेरी सूरत-शक्ल को पसन्द करती हैं।"

उसकी इस बात को सुन सब हँसने लगे मगर वह सिर्फ मुस्कुराकर रह गया। इस पर एक ने उससे हँसी करने के लिए कह दिया, "दोस्त! बात तो किसी ने ठीक ही बताई मालूम होती है। खुदा ने जिस्म अच्छा गठा हुआ दिया है और देखने में भी नक्श खराब नहीं है, मगर औरतों को वश में करने वाली चीज तुम्हारे पास नहीं है। इससे मेरी राय मानो और औरत का तब तक नाम न लेना जब तक जेब में काफी पैसा न हो जावे।"

दो दिन में नजीरुद्दीन की मेल-मुलाकात सराय में दूसरे रहने वालों से हो गई थी। वह हँसोड़ मुख और दूसरों की मजाक उड़ाना पसन्द करता था। दो दिन में ही वह वहाँ रहने वाले सब लोगों से हिल-मिल गया और उनके साथ अपनी और उनकी अंतरंग बातें करने लगा था। उसको आये हुए तीसरा दिन हुआ था कि उस से किसी ने पूछ ही लिया, "भाई नजीर, तुमसे किसी औरत ने आज तक मुहब्बत की है या नहीं?"

"चुप रहो दोस्त। यह बातें कहने-सुनने की नहीं होतीं।"

"तब तो जरूर सुननी चाहिए। मैं तो तुमको अभी बच्चा ही समझता था।"

"तो ठीक ही समझते थे। औरतों के मुहब्बत करने के यह मायने नहीं कि मैंने भी उनसे मुहब्बत की है।"

"तो क्या तुम्हारा इससे यह मतलब है कि तुम्हें किसी ने प्यार किया और तुमने उसकी ओर देखा भी नहीं।"

"बिल्कुल यही मतलब है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बल्लाह ! हमसे तो ऐसा हो नहीं सकता। और मैं समझता हूँ ऐसा होना भी नहीं चाहिए।"

"तुम तो फिर पूरे भैंसे ही हो। भाईजान ! मनपसन्द की वस्तु न हो तो कैसे मुहब्बत हो सकती है ! वह तो पशुओं की बात हुई। जिस गाय-भैंस को देखा वहीं पर इश्क सिर सवार हो गया।"

"मरहबा। बलिहारी हूँ आप पर। पर दोस्त यह तो बताओ कि तुम्हारे पसन्द की अभी कोई मिली भी है या नहीं ?"

"नहीं। अच्छा भाई यह तो बताओ कि हमारे पीर साहब ने अपने लिए इतनी बड़ी आरामगाह बना रखी है, क्या अकेले हैं या इनका बहुत बड़ा कबीला है ?"

"कबीला तो लम्बा-चौड़ा नहीं, पर हकीकत यह है कि यह आजकल हिन्दुओं के हमले से डरते बहुत हैं। इसलिए बहुत-से आदमी अपनी हिफाजत के लिए ऐसे ही रख छोड़े हैं। वैसे तो इनकी एक बीवी और एक लड़की थी। मगर वे एक हिन्दू के चंगुल में फँस गई थीं। हम सबने मिलकर उनको छुड़ाया और अब वे कहीं बाहर भेज दी गई हैं।"

"कहाँ ?"

"यह तो हमें मालूम नहीं। सुना है कहीं हैदराबाद की तरफ हैं।"

"बहुत खूबसूरत है इनकी लड़की ?"

"मैंने इतनी खूबसूरत औरत और कहीं नहीं देखी।"

"तुम्हारी बातें मेरे मन में गुदगुदी पैदा कर रही हैं।"

"बड़े अजीब आदमी हो जी। बिना देखे ही मुहब्बत करने लगे हो।"

"तुमने तो देखी है न ?"

"देखी ही नहीं बल्कि उसके खाविन्द के घर से उठाकर मैं ही नीचे मोटर तक लाया था।"

"ओह ! तो सचमुच ही वह बहुत खूबसूरत है !"

"बल्लाह। कुछ न पूछो। पर हम गरीबों को उसका खयाल मन में लाकर अपना दिमाग खराब नहीं करना चाहिए।"

"तो उसकी शादी किसी बहुत अमीर के साथ हुई है शायद !"

"नहीं, बहुत अमीर तो नहीं। परन्तु लड़का बहुत खूबसूरत है। सुना है कि बहुत शरीफ भी है।"

"तो फिर उसको यहाँ से निकाला क्यों है ?"

"वह था हिन्दू। खयाल यह था कि इनकी लड़की उसे मुसलमान बना लेगी। मगर हुआ इससे उलटा। लड़की और उसकी माँ भी, दोनों खुद हिन्दू हो गईं।"

नजीरुद्दीन ने आगे बात नहीं चलाई। वह चुपचाप अपने मन में कुछ सोचता रहा। उससे बातें करने वाले ने यह समझा कि उस पर इश्क का भूत सवार हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है। इससे मन-ही-मन मुस्कराता हुआ उसके पास से चला गया।

अगले दिन नजीरुद्दीन को पीर साहब ने बुलाया और अपने सामने बैठने को कहकर पूछा, "जखम का क्या हाल है?"

"अब तो ठीक मालूम होता है।"

"तुम मेहनत का काम कर सकोगे?"

"जी हाँ। मैं समझता हूँ कि अब मैं बहुत अच्छी तरह हूँ।" इतना कहकर उसने अपना जख्मी हाथ उठाकर और दो-तीन बार ऊपर-नीचे हिलाकर दिखाया।

"मेरा मतलब यह नहीं है। मैं तुमको गल्ला ढोने के लिए नहीं लगा रहा। मेहनत से मेरा मतलब है कि सफर पर जा सकते हो?"

"जी हाँ। बखूबी जा सकता हूँ।"

"लेकिन तुम पर मैं कितना एतबार कर सकता हूँ?"

"अज़मा कर देख लीजिए।"

"जो लोग मैंने यहाँ रखे हुए हैं, वे सब बेवकूफ हैं। काम कम करते हैं और शोर ज्यादा मचाते हैं। देखो, एक बात मैं तुमको बताता हूँ। जो इन्सान अपने काम से वास्ता रखता है और फिजूल की बातों की ओर तवज्जो नहीं करता, वह हमेशा अपने मकसद में कामयाब होता है। अगर तुम वायदा करो कि रास्ते में औरतों के पीछे नहीं भागते फिरोगे तो मैं तुमको अपने यहाँ नौकर रख सकता हूँ।"

"हुजूर! मैं जब जखमी होकर इस दरगाह के फाटक पर आया था तो मेरा खयाल था कि यह किसी अमीर का घर है। पहले दिन ही जब आपके दीदार हुए थे तो मैं समझता था कि किसी अमीर लखपति से गुफ्तगूह कर रहा हूँ। बाद में मुझको मालूम हुआ कि आप कौन हैं और क्या हैं। जब से मुझको आपकी असली सिफत मालूम हुई है, तब से ही मेरे मन में हुजूर की खिदमत करने का खयाल उठ रहा है। अब आपने मेरे सामने मेरे मन की बात कहकर मेरे रोएँ-रोएँ को खुश कर दिया है। मैं आपकी खिदमत बजा लाने के लिए अपनी जान तक हाजिर करने को तैयार हूँ। हुक्म दीजिए और देखिए कि मैं कितनी जाँ फशानी से हुक्म बजा लाता हूँ।"

"तुम बात करने में बहुत चालाक मालूम होते हो। अगर काम भी इतनी ही खूबी से कर सको तो मैं तुमको सोने का बना दूंगा।"

"हुजूर, अजमा कर देखिए।"

"अच्छा तो यह लो। यह तुम इस पते पर ले जाओ और तीन-चार दिन में इसका जवाब लेकर वापस आ जाना।"

: १२ :

नजीरुद्दीन को एक चिट्ठी दी गई थी। उस पर हैदराबाद रियासत में होशंगाबाद का पता लिखा था। उसको आने-जाने और रास्ते में खाने-पीने लायक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खर्चा दिया गया और लक्ष्य-स्थान पर पहुँचने का मार्ग तथा रेल का टाइम टेबल दे दिया गया था। उसको यह बता दिया गया था कि उसे अपना अथवा लक्ष्य-स्थान किसी को नहीं बताना। नजीरुद्दीन पीर साहब से आज्ञा लेकर जब बाहर आया तो उसका हृदय धक-धक कर रहा था। उसके मन में यह आशा अंकुर पकड़ती जा रही थी कि वह जरूर पीर साहब की लड़की के पास चिट्ठी लेकर जा रहा है। उसका बिस्तर सराय से पीर साहब ने मँगवा लिया था और वह उसे साथ ले जाने को दे दिया गया। दरगाह से जब वह जाने को तैयार हुआ तो सब उसके आसपास जमा हो गए और पूछने लगे कि क्या उसकी नौकरी नहीं लगी? क्या पीर साहब ने उसकी मदद नहीं की? उसने यह बताया कि हजरत ने उसको कुछ रुपये दिए हैं जिससे वह बम्बई में कुछ दिन रहकर काम ढूँढ़ सके। अब वह काम ढूँढ़ने की कोशिश करेगा।

"आज बम्बई में फसाद की वजह से बेकारी बढ़ गई है और काम मिलना मुश्किल है।" उनमें से एक ने कहा। सब लोग उसके चले जाने से अफसोस कर रहे थे। वह तीन दिन में ही सबका प्रिय हो गया था। एक ने तो यहाँ तक कहा कि वह उस दिन न जावे और उस शाम को हजरत के आने पर वे सब उसकी सिफा-रिश करेंगे। परन्तु नजीरुद्दीन का यह कहना था कि अब वह हजरत से वायदा कर आया है कि नौकरी ढूँढ़ने की पूरी कोशिश करेगा।

सराय में रहने वाले लोगों की संख्या ग्यारह थी और नजीरुद्दीन के जाने से सब दुःख अनुभव कर रहे थे। नजीरुद्दीन ने सबसे हाथ मिलाया और कई लोगों से गले मिला। इस प्रकार सबको सलामालैकुम कर दरगाह से बाहर निकल सीधा विक्टोरिया टर्मिनस की ओर चल पड़ा।

अगले दिन वह होशंगाबाद जा पहुँचा। चिट्ठी पर लिखे पते पर पहुँच उसने देखा कि एक आलीशान मकान है। मकान के चारों ओर अहाता है। अहाते के फाटक पर चौकीदार ने उसे रोक लिया। "कहाँ जा रहे हो?"

"बीबी फातिमा के नाम की चिट्ठी है।"

"कहाँ से आये हो?"

"बम्बई से।"

"भीतर जा सकते हो।"

नजीरुद्दीन अहाते में से गुजरकर सामने तीन मंजिली इमारत की ड्योढ़ी पर जा पहुँचा। वहाँ खाकी वर्दी पहने चपरासी खड़ा था। उसके पास पहुँच उसने कहा, "भाई! बीबी फातिमा की चिट्ठी है।"

उसने भी वही प्रश्न किया जो बाहर चौकीदार ने किया था। चपरासी ने उस का उत्तर सुन कहा, "चिट्ठी मुझको दे सकते हो।"

"हुक्म है कि बीबी फातिमा को ही दी जावे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब तो यहाँ रहना पड़ेगा। जब तक मालिक नहीं आ जाते वे चिट्ठी लेने बाहर नहीं आ सकतीं। मालिक शहर से बाहर गए हुए हैं।"

"मजबूरी है। चिट्ठी तो उनको ही दे सकता हूँ। हाँ! आपके मालिक का इन्तजार कर सकता हूँ। वे कब तक आवेंगे?"

"मोटर से गए हैं। रात को आ सकते हैं। नहीं तो कल आवेंगे।"

"तब तक तो बहुत देर हो जावेगी। पर मैं कर भी कुछ नहीं सकता। यहाँ कोई और नहीं जो उनको यहाँ ला सके?"

चपरासी ने सिर हिला दिया। इस पर नजीरुद्दीन ने कहा, "तो भाई, कहाँ ठहरूँ? कल का चला हुआ हूँ। सफर की थकावट से चूर-चूर हो गया हूँ।"

"नाम क्या है?" चपरासी ने पूछा।

"नजीरुद्दीन।"

"अच्छी बात है। तुम उस सामने के कमरे में आराम कर सकते हो।"

"कुछ खाने-पीने और गुसल वगैरा का भी बन्दोबस्त हो सकेगा?"

"हाँ। कमरे के साथ संडास है। कमरे के पीछे नल लगा है। वहाँ एक और चपरासी है। उससे कहना। वह तुम्हारे खाने-पीने का बन्दोबस्त कर देगा।"

नजीरुद्दीन ने बिस्तर कन्धे पर रखा और बताए हुए स्थान पर जा पहुँचा। वहाँ एक और चपरासी बैठा था और उसने भी वही सवाल किए जो चौकीदार ने और पहले चपरासी ने किये थे। उसने भी पहले की भाँति ही उत्तर दोहरा दिए। उसके उत्तरों से सन्तुष्ट हो इसने उसको बताता कि मालिक फारम पर गए हुए हैं और अगले दिन सुबह आवेंगे। तब तक वह इस मेहमानखाने में रह सकता है। इसके पश्चात् वह उसे कमरे के भीतर ले गया। उसको एक खाट पर बिस्तर रख, गुसल वगैरा करने के लिए कह, पूछने लगा, "अभी सुबह से कुछ खाया है या नहीं?"

"भाई, बिना टट्टी-पेशाब किए खाने की तबियत नहीं की।"

"तो आप इससे फारिग हो जावें, तब तक मैं खाने के लिए जो कुछ इस वक्त मिल सकता है, लाने की कोशिश करता हूँ।"

नजीरुद्दीन ने स्नानादिक से छुट्टी पा कपड़े बदल लिये। चपरासी तीन तन्दूरी रोटियाँ और उस पर सलूना रखकर उसके लिए ले आया। नजीरुद्दीन ने बाएँ हाथ में रोटी पकड़ लीं और दाहिने हाथ से खाने लगा। वह चपरासी उसके लिए मिट्टी के मटकैने में पानी भर लाया। पानी उसके सामने रख स्वयं भी उसके सम्मुख बैठ गया। नजीरुद्दीन धीरे-धीरे रोटी चबाते हुए चपरासी से बातें करने लगा, "बहुत बड़ी कोठी है आपके मालिक की।"

"हाँ! क्यों न हो। साहब पाँच सौ गाँवों के मालिक हैं।"

"ओह! यह ईस्माईल मंजिल उनके अपने नाम पर है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नही ! यह उनके वालिद शरीफ का नाम था। इनका नाम अब्दुल करीम खाँ है। बहुत बहादुर आदमी हैं। शेर से कम का शिकार नहीं करते। साथ ही चार बीवियाँ और दस लौंडियाँ हैं। दो बाँदियाँ तो अभी-अभी बम्बई में लूट के वक्त मिली हैं।"

"ओह ! तो हिन्दनी हैं दोनों !"

"हाँ। सुना तो यही है। एक तो, सुना है, निहायत ही खूबसूरत है।"

"किससे सुना है ?"

"मेरी बीवी जनानखाने में काम करती है। वह भीतर की सब बातें बताया करती है।"

"तब तो तुम बहुत खुशनसीब हो। तुम्हारे मालिक अच्छे हैं या बेगमें ?"

"मालिक तो फरिश्ता हैं। जब भी मैंने कोई सवाल किया है, उन्होंने इन्कार नहीं किया। आज से दो साल की बात है। मैंने उनकी सबसे बड़ी बेगम की बाँदी सुखिया को अपनी बीवी बनाने की इजाजत माँगी। हुजूर ने मेरा सवाल मंजूर कर लिया और उसका मुझसे निकाह पढ़ा दिया गया। हम दोनों बड़े मजे में हैं।"

"तो तुम्हारी बीवी अभी तक बड़ी बेगम की खिदमत में है ?"

"हाँ। सुना है कि मझली बेगम निहायत ही जालिम है।"

"यह फातिमा, जिसके नाम यह खत है, नई बाँदी ही तो नहीं ?"

"तो तुम नहीं जानते ? वही तो है। सुना है कि पीर साहब ने डाके में उड़ाई हुई औरतों में से इनको इतना खूबसूरत पाया कि खाँ साहब के लिए भेज दिया है।"

"क्या पीर साहब ने इनका दाम वसूल किया है ? कितना दाम लिया होगा ?"

"यह तो मुझको पता नहीं। हाँ, इतना मैं जानता हूँ कि हमारे मालिक पीर साहब के मोतकिद हैं और दरगाह के लिए एक लाख रुपया सालाना देते हैं।"

"लाहौलविला। तब तो इनका क्या दाम लिया होगा।

"मगर यह क्या है कि फातिमा बीवी की चिट्ठी बिना मालिक के उनको नहीं दी जा सकती।"

"सब बेगमों के लिए यही हुक्म है। अगर तुम चिट्ठी चपरासी को दे देते, तो वह मालिक के आने पर उनको दे देता और वे खुद जनाने में ले जाकर दे देते। जब तुमने कहा कि चिट्ठी फातिमा के हाथ में देनी है तो मालिक की इजाजत के बिना ऐसा नहीं हो सकता।"

नजीरुद्दीन समझ गया कि इस जगह पर अभी तक सतरहवीं सदी के रिवाज चल रहे हैं। इससे वह जनानखाने के विषय में और सवाल करने लगा। उसने पूछा, "क्यों साहब ! ये बेगमें लड़तीं नहीं ? इतनी इकट्ठी कर रखी हैं, कि समझ में नहीं आता कि इनका होता क्या होगा। बेगमों के अलावा कई बाँदियाँ भी हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अजी मालिक बहादुर आदमी हैं। सब वेगमें और सुना है, बाँदियाँ भी खुश हैं।"

"इस बात पर यकीन करना जरा मुश्किल है।"

"मालिक की शकल और कद्दोकदामत देखोगे तो शक की गुंजाइश नहीं रहेगी।"

"तो फातिमा बीबी खुद चिट्ठी लेने आवेंगी।"

"कह नहीं सकता। ऐसा कभी पहले नहीं हुआ। होता यह है कि मालिक खुद चिट्ठी ले लेते हैं और बेगम के पास ले जाते हैं। वहाँ से जवाब ले आते हैं और चिट्ठी लाने वाले को दे देते हैं।"

"तब तो बहुत मुश्किल होगी। मुझे तो हुक्म है कि चिट्ठी फातिमा के हाथ में ही दूँ। एक बात तुम कर सकते हो।"

"क्या?"

"तुम अपनी बीवी के हाथ फातिमा को कहला दो कि बम्बई से उसके लिए कोई चिट्ठी लाया है। मैं समझता हूँ कि वे खुद मालिक से कहकर चिट्ठी खुद वसूल करने की कोशिश करेंगी।"

"मगर यह नमकहरामी होगी। मुझसे यह नहीं हो सकेगा।"

"इसमें क्या नमकहरामी है? चिट्ठी तो भीतर ले जानी नहीं। सिर्फ इतना करना है कि उनको बता देना है। अगर उनको मालूम हो जावे कि उनकी चिट्ठी आई है और इनके सिवाय और किसी को नहीं मिलेगी तो वे अपनी मुहब्बत के जोर से शायद चिट्ठी खुद पाने की कोशिश कर सकें।"

"पर इस काम के लिए मुझको क्या मिलेगा?"

"भाई, मेरे पास तो कुछ है नहीं। हाँ अगर फातिमा बीवी खुश हो गई तो वे तुम्हारी बीवी को खुश कर सकती हैं।"

"मैं अपनी बीवी से राय करके ही बता सकता हूँ।"

"खैर तुम अपनी बीवी से कह देना। उसकी ख्वाहिश होगी तो उनको खुश कर सकेंगी। और फिर कभी फायदे की तवक्को की जा सकती है।"

चपरासी की बीवी फातिमा बीवी को खुश करने के लिए राजी हो गई।

: १३ :

नजीरुद्दीन ने, जब वह अकेला था, चिट्ठी को निकाला और उसको बहुत ध्यान से देखा। उसने जेब से कलम निकाली और बहुत ही बारीक अक्षरों में लिफाफे के पिछली ओर एक कोने में कुछ लिख दिया। ऐसा मालूम होता था कि उसने अपने हस्ताक्षर किए हैं। पश्चात् उसने लिफाफे को फिर अपने बटुए में रख लिया और गम्भीर हो पीर साहब की लड़की को देख सकने की आशा करने लगा।

अब्दुल करीम खाँ उस रात नहीं लौटे। अगले दिन प्रात:काल जब वे आए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो सीधे स्नानादिक के लिए भीतर चले गए। उस दिन तीसरे प्रहर नजीरुद्दीन की पेशी हुई। उसने निवेदन कर दिया, "मैं हजरत इब्राहीम साहब पीर दरगाह शाह मुराद के पास से आया हूँ। मेरे पास उनकी लिखी एक चिट्ठी बनाम फातिमा बीवी है। मुझे हुक्म है कि वह चिट्ठी मैं उनके हाथ में ही दूँ।"

अब्दुल करीम खाँ यह सुन हैरान रह गया। उनको पीर साहब से यह उम्मीद नहीं थी। फिर भी पूछने लगे, "क्या मुझ पर बेइतबारी है ?"

"हुजूर, मैं यह नहीं जानता। गुस्ताखी के लिए मुआफी चाहता हूँ। मगर एक वफादार नौकर की तरह वही करना चाहता हूँ जो मालिक ने करने को कहा है।"

"लेकिन हमारे घर की औरतें कभी भी गैर मर्द के सामने नहीं आईं।"

"तो हुजूर एक बात हो सकती है। मैं आज वापस बम्बई चला जाता हूँ और वहाँ से हजरत की इजाजत ले आता हूँ। तब ही चिट्ठी किसी दूसरे के हाथ में दे सकता हूँ।"

"हम तुमसे जबरदस्ती छीन लें तो ?"

"तो यह मजबूरी हो जावेगी। बेवफाई नहीं होगी। मैं आपके सामने खड़ा हूँ। आप किसी को हुक्म दे दीजिए कि मुझसे चिट्ठी छीन ले। मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूँगा कि वह छीन न सके। मगर आपके दरबार में हाजिर हूँ। आप कई आदमियों को लगा दीजिएगा तो चिट्ठी देने पर मजबूर हो जाऊँगा। मैंने अपना हक अदा कर दिया होगा और आपको चिट्ठी मिल जावेगी।"

"तो तुम महात्मा गांधी की तरह सत्याग्रह करोगे ?"

"नहीं हुजूर ! मैं लड़ूँगा-झगड़ा करूँगा और कोशिश करूँगा कि मेरे जीते जी, चिट्ठी न छिन सके।"

"शाबाश ! क्या नाम है तुम्हारा ?"

"नजीरुद्दीन। हुजूर !"

"क्या तनखाह पाते हो ?"

"अभी कुछ मुकर्रिर नहीं हुई। हजरत फरमाते थे कि खाना खा लिया करूँ और छः महीने में नये कपड़े मिल जाया करेंगे।"

"हमारी नौकरी करोगे ?"

"पहले इस चिट्ठी का जवाब दे आऊँ।"

"हमारा मतलब यह है कि अगर तुम चिट्ठी दे दो तो हम तुमको नौकर रख लेंगे।"

"पर हुजूर, मेरा मतलब यह है कि चिट्ठी का जवाब बम्बई पहुँचा दूँ और उसके बाद अगर आपकी ख्वाहिश हो तो खिदमत में हाजिर हो जाऊँगा।"

"क्या तनख्वाह लोगे ?"

"जो हुजूर, खुश होकर दे देंगे !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ पढ़े-लिखे भी हो ?"

"जी हाँ ! उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी और दसवीं पास कर चुका हूँ ।"

"अच्छा तो भाई नजीर ! चिट्ठी तो हम लेंगे । हाँ, हम तुमको नौकर रख सकते हैं । पचास रुपया महीना और खाना । बताओ मंजूर है ?"

"चिट्ठी की शर्त के बिना नौकरी मंजूर है ।"

"तो फिर तुम जा सकते हो । चिट्ठी इस तरह से नहीं ली जा सकती । रही तुम्हारी नौकरी । उसकी बाबत चिट्ठी वापस कर आना तो सोच लिया जावेगा ।"

नजीरुद्दीन ने झुककर सलाम की और कमरे से बाहर निकल आया । मेहमानखाने के कमरे में पहुँच, अपना बिस्तर बाँधने लगा । इस समय चपरासी आया और पूछने लगा, "क्यों जी, जा रहे हो ? काम हो गया क्या ?"

"अजी साहब कहाँ ? बैरंग वापस जा रहा हूँ ।"

"मेरी बीवी ने तो फातमा बीवी से बात कह दी थी ।"

नजीरुद्दीन ने बिस्तर बाँध लिया और उसको उठाकर चपरासी से सलामालैकुम की और कोठी के फाटक की ओर चल पड़ा । फाटक पर चौकीदार ने उसका रास्ता रोक लिया और कहा, "जाने का हुक्म नहीं ।"

"क्यों ?"

"मैं क्या जानूँ ।"

"किसका हुक्म कह रहे हो ?"

"यहाँ सिर्फ एक का ही हुक्म चलता है । मालिक का हुक्म है कि तुमको न जाने दिया जावे । अगर जबरदस्ती करो तो गोली से मार डाले जावोगे ।"

"जबरदस्ती करने की क्या जरूरत है । मैं यहाँ बैठा हूँ ।" इतना कहकर वह वहीं फाटक के एक ओर होकर भूमि पर बैठ गया । चौकीदार अपने स्थान पर बंदूक लिये खड़ा रहा । कुछ काल के उपरान्त कोठी का चपरासी आया और नजीरुद्दीन से बोला, "चलो, मालिक बुलाते हैं ।"

"क्यों, क्या बात है ?"

"हमें मालूम नहीं । हम मालिक से दलील नहीं कर सकते ।"

नजीरुद्दीन उठा और चपरासी के साथ हो लिया । वह बैठकखाने में, जहाँ उसकी पहले मालिक से भेंट हुई थी, ले जाया गया । अब्दुल करीम खाँ वहाँ उसके इन्तजार में खड़ा था । उसे आया देख बोला, "लो भाई, तुम जीते और मैं हारा । मैंने एक और तरकीब निकाली है । वे चिक के पीछे तुम्हारे सामने आकर खड़ी हो जावेंगी । तुम वह चिट्ठी उनको दे देना । मैं तुम्हारे पास खड़ा रहूँगा ।"

"मुझे मंजूर है ।"

मालिक नजीरुद्दीन को लेकर जनानखाने में चला गया । वहाँ एक कमरे में ले जाकर उसको एक चिक के सामने खड़ा कर दिया और कहा, "अभी फातिमा बीवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवेंगी। तुम यह चिट्ठी उनको दे देना।"

यह कह अब्दुल करीम खाँ पीछे हट एक कुर्सी पर बैठ गया। उसको दो मिनट से अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। चिक हिली और उसके पीछे से आवाज आई, "क्या चाहते हो?"

"हुजूर! एक चिट्ठी फातमा बीवी के लिए बम्बई से लेकर आया हूँ। हजरत का हुक्म है कि चिट्ठी उनके ही हाथ में दी जावे। मैं आपको जानता नहीं, पहचानता नहीं। इससे खुदा परवरदिगार की कसम देकर कहता हूँ कि अगर यह चिट्ठी आपकी है तो यह ले लीजिए।" इतना कहकर उसने चिट्ठी चिक की तरफ बढ़ा दी। चिक के पीछे से एक हाथ निकला और चिट्ठी को लेकर पीछे हट गया। नजीरुद्दीन ने चिक की तरफ मुख कर और झुककर सलाम की और फिर मालिक-मकान की ओर देखकर बोला, "हुजूर! अब गुलाम को हुक्म दीजिए।"

अब्दुल करीम खाँ ने उसे यह कह कि वह बाहर बैठक में इन्तजार करे, स्वयं चिक के पीछे चला गया। फातमा शान्तिदेवी ही थी और उसने अब्दुल करीम खाँ को भीतर आते देख चिट्ठी बिना खोले ही उसको दे दी। अब्दुल करीम ने लिफाफा खोल चिट्ठी निकाल ली और उसको पढ़ने लगा। चिट्ठी पढ़कर पुनः लिफाफे में डालकर उसको देते हुए बोला, "तुम्हें पढ़कर अमल करने के लिए है।"

शान्तिदेवी ने चिट्ठी ले ली और अपने कमरे में चली गई। वहाँ जाकर उसने चिट्ठी खोल पढ़नी आरम्भ की। उसमें लिखा था, "मुझको यह जानकर बहुत खुशी हुई है कि अब तुम्हें अब्दुल करीम खाँ साहब ने बीवी बना लिया है। मेरी दुआ है कि तुम फूलो-फलो। अपने पिछले कामों को भूलकर अपनी जिन्दगी को खुशी और खुदा के नूर से पुर कर लो। तुम्हारी शादी, खाना आबादी करने वाली साबित हो। मैं कुछ दिनों में वहाँ आऊँगा। तुम्हारी माँ को ले जाऊँगा और तुमको इस जिन्दगी के फायदे बताऊँगा। कभी-कभी इन्सान अपने भले की बात खुद नहीं सोच सकता। उसे पकड़कर सीधे रास्ते पर लाने की जरूरत होती है। सो मैंने तुम्हारे लिए यह कर दिया है। खुदा हाफिज।"

चिट्ठी पढ़कर उसने क्रोध में टुकड़े-टुकड़े कर डाली और फेंक दी। लिफाफा उसके हाथ से गिर गया था। उसका ध्यान उस तरफ नहीं गया। वह पलँग पर लेट गई और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। कितनी ही देर तक वह पलँग पर लेटी-लेटी रोती रही। उसकी माँ आई तो उसने मुख पर चादर डाल उसे छुपा लिया। माँ को मालूम नहीं था कि उसके पास बम्बई से कोई चिट्ठी आई है। इससे वह उसके पास बैठकर उसके सिर पर हाथ फेरकर पूछने लगी, "बेटी, क्या कोई नई बात हुई है?"

इससे शान्तिदेवी और भी विह्वल होकर रोने लगी। माँ ने बहुत ही प्यार से फिर पूछा, "क्या है बेटी? क्यों रोती हो? क्या वह पाजी फिर आया था?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्तिदेवी ने करवट बदलकर अपना मुख घुटनों में दे लिया और रोती रही। उसकी माँ भी दुखी हो रोने लगी थी। रोते-रोते उसकी नजर नीचे गिरे लिफाफे पर पड़ी। उसने उसको उठाकर देखना चाहा कि कहाँ से आया है। उर्दू भाषा में पता लिखा था। वह पता उनके वहाँ का था। चिट्ठी शान्तिदेवी के वहाँ के नाम, फातिमा के नाम थी। उसने लिफाफे को उलटकर देखना चाहा कि कहाँ की मुहर लगी है। मुहर कहीं की नहीं थी। चिट्ठी दस्ती आई मालूम होती थी। एकाएक उसकी नजर बहुत बारीक अक्षरों में एक लिखावट पर गई। उसने लिफाफे को रोशनी में ले जाकर देखा। हिन्दी में नाम लिखा था। उसने बचपन में हिन्दी पढ़ी थी और सदाशिव के घर में रहकर उसका अभ्यास किया था। इससे उसने पढ़ा, "सदाशिव की नमस्ते।"

वह पढ़कर चकित रह गई। उसने समझा कि वह चिट्ठी सदाशिव की आई है। इससे उसने शान्तिदेवी को हिलाकर कहा। "अरी कहाँ है यह चिट्ठी! क्या लिखा है उसने। और फिर कैसे आई है उसकी चिट्ठी?"

शान्तिदेवी ने लेटे रहने पर हठ किया। वह समझती थी कि उसकी माँ पीर साहब की चिट्ठी के विषय में पूछ रही है। माँ ने फिर उसे हिलाकर कहा, "बेटी, अगर यहाँ पता चल ग़या कि सदाशिव की चिट्ठी आई है तो बहुत बुरी होगी। लाने वाले की शामत आ जावेगी।"

सदाशिव का नाम सुनकर शान्तिदेवी अचम्भे में अपनी माँ का मुख देखने लगी। माँ उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देख रही थी। शान्तिदेवी ने पूछा, "कहाँ हैं वे?"

"अरी पगली उनकी चिट्ठी आई है न!"

"कहाँ आई है?"

"इस लिफाफे में। देखो न उनकी नमस्ते लिखी है।"

"नमस्ते! कहाँ लिखी है?" वह उठकर बैठ गई। माँ ने लिफाफे पर हिन्दी में लिखा दिखा दिया। शान्ति उसको पढ़कर एकदम गम्भीर विचार में पड़ गई। बहुत देर तक वह उस लिखावट को देखती रही। आखिर बोली, "यह उनकी लिखावट नहीं है। पर यह किसने लिखा है?"

"यह लिफाफा यहाँ पड़ा था।"

"पर यह पता तो हजरत की लिखावट में लिखा है। यह नहीं देखा तुमने माँ?"

माँ ने पुनः उर्दू की लिखावट को गौर से देखा और कहा, "ठीक है, यह उस दुष्ट की ही लिखावट है। पर यह सदाशिव की नमस्ते कैसे आ गई?"

"मैं समझ गई हूँ। जो इस चिट्ठी को लाया है वह शायद मुझको जानता है और उनसे मेरे सम्बन्ध को भी जानता है। नहीं तो उनकी नमस्ते न लिखता। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब समझी कि क्यों वह इस बात पर हठ कर रहा था कि चिट्ठी मेरे हाथ में ही दे।"

माँ उसकी बातों को नहीं समझी। उसने पूछा, "तुम क्या कह रही हो ? मैं कुछ नहीं समझ रही।"

एकाएक शान्ति के मन में एक विचार आया। उसने माँ से कहा, "जरा ठहरो, अभी आती हूँ।" इतना कह वह उस नौकरानी की खोज में चली गई जो उसको यह कहने आई थी कि बम्बई से आई चिट्ठी को वह खुद लेने की कोशिश करे। अब उसे सब बात साफ-साफ समझ में आ रही थी। वह नौकरानी बाहर से आती दिखाई दी। उसने उसको रोककर कहा, "जरा मेरे कमरे में आओ।"

वह नौकरानी डर गई। उसका ख्याल था कि उसने जो बाहर की खबर बताई थी वह नहीं बतानी चाहिए थी। इसके लिए उसको डाँट पड़ेगी। इससे काँपती हुई वह शान्ति के पीछे-पीछे उसके कमरे में जा पहुँची। शान्ति ने उसको अपने सामने भूमि पर बैठने को कहा। वह बैठने में डरती थी। काँपते हुए उसने कहा, "हुजूर, मेरा कसूर नहीं है। मैं तो···"

"चुप रहो ! देखो किसी से कहना नहीं। वह आदमी जो चिट्ठी लाया था, चला गया है या अभी यहीं है ?"

"अभी मेहमानखाने में ठहरा है।"

"तुमने मुझको बताकर कोई बुराई नहीं की। वह मेरे बाप का भेजा आदमी है। मैं उससे कुछ पूछना चाहती हूँ। पूछ दोगी ?"

नौकरानी घबराई हुई सामने खड़ी रही। उसके मुख से आवाज नहीं निकलती थी।

शान्ति ने फिर कहा, "देखो, अगर तुम इस चिट्ठी का जवाब ला दो तो तुमको एक रुपया दूँगी।"

नौकरानी ने जब यह बात सुनी तो उसकी जान में जान आई। उसकी मुस्कराहट निकल गई। उसने कहा, "बेगम साहबा ! हम गरीब आदमी हैं। हमको रुपये की बहुत जरूरत रहती है। मगर मेरी बात किसी से न कहना। नहीं तो नौकरी छूट जावेगी।"

"नहीं, डरो नहीं। मैं बड़ी बेगम से तुमको अपने लिए माँग लूँगी और तुमको इतना कुछ दूँगी कि तुम मालामाल हो जावोगी। बताओ करोगी ?"

"बताइए।"

शान्ति ने वही लिफाफा फाड़कर उसके एक छोटे से टुकड़े पर हिन्दी में लिख दिया, "तुम कौन हो ?" यह कागज का टुकड़ा उसने नौकरानी को देते हुए कहा, "देखो सुखिया ! अगर तुम वफादारी से मेरा काम करोगी तो मैं तुमको मालामाल कर दूँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखिया ने वह कागज का टुकड़ा अपनी अंटी में छुपा लिया और बोली, "अभी कुछ देर में बड़ी बेगम के काम से बाहर जाऊँगी, तो जवाब ले आऊँगी।"

उसे भेज शान्ति वापस अपने कमरे में आई और विस्मय में बैठी अपनी माँ को सब बात समझाकर बोली, "माँ, कोई उनका आदमी मालूम होता है।"

: १४ :

अब्दुल करीम जनानखाने से बाहर आया तो बैठक में प्रतीक्षा कर रहे नजीरुद्दीन से बोला, "देखो नजीर ! मैं तुम्हारी कारगुजारी देखकर बहुत खुश हूँ। शायद उस चिट्ठी का जवाब बेगम साहिबा देना चाहेंगी। वह तुम लेकर चले जाना। मगर मैं चाहता हूँ कि अगर हजरत तुमको नौकर रखना ना चाहें तो तुम यहाँ चले आना। मैं तुमको नौकर रख लूँगा।".

"हुजूर की ऐन अनायत है। यूँ तो मैं अभी हजरत वली साहब का पक्का नौकर नहीं हूँ। फिर भी मैं चाहता हूँ कि आपकी खिदमत में आने से पहले उनको बता दूँ।"

"ठीक है, ठीक है ! मैं भी यही चाहता हूँ। पीर साहब की चिट्ठी का जवाब कल तक मिलेगा। तब तक तुम ठहरो।"

नजीरुद्दीन सलाम कर बैठकघर से बाहर आकर मैदान में खड़ा होकर मकान की बनावट को देखने लगा। कुछ देर तक देखकर वह मेहमानखाने को चला गया। वहाँ जाकर वह अपनी खाट पर लेट छत की तरफ देख उसकी धन्नियाँ गिनने लगा। इतने में वहाँ का चपरासी आया और उसको मकान से वापस आया जान पूछने लगा, "तो तुम चिट्ठी दे आए हो ?"

"हाँ भाई ! मालूम होता है कि बेगम साहिबा ने खान साहब को राजी कर लिया है। मेरी तजवीज कामयाब हो गई है।"

"तो चिट्ठी तुमने अपने हाथ से दी है ?"

"हाँ, वे चिक के पीछे आ खड़ी हुई थीं। मैंने खुदा की कसम डालकर कहा कि अगर आप फातिमा बीवी हैं तो चिट्ठी ले लें। चिक के पीछे से हाथ निकाला और मैंने चिट्ठी दे दी।"

"तो तुम ठग लिये गए हो। वह जरूर कोई नौकरानी होगी। यहाँ बेगमों के इस तरह बाहर आने का रिवाज नहीं है।"

"कुछ हो, मेरा तो जमीर साफ है। मैंने तो कसम देकर बात पक्की कर ली थी।"

"कुछ भी हो। हमारे मालिक बहुत होशियार हैं।"

"आपकी बीवी से पता चल जावेगा कि चिट्ठी वे खुद लेने आई थीं या कोई नौकरानी।"

"उसको कैसे पता चलेगा. वह तो उस वक्त यहाँ पर थी। अभी-अभी गई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नौकरानियों के पेट में बात नहीं समाती। जब खाली बैठेंगी तो जरूर बातचीत होगी। और आपकी बीवी असली बात बता देगी।"

रात का खाना खाते समय सुखिया आई और नजीर से कहने लगी, "फातिमा बीवी को आपकी चिट्ठी मिल गई है। आपको उसने यह बात लिखकर भेजी है और आपसे जवाब माँगा है।" इतना कह उसने वही लिफाफे का टुकड़ा उसे दे दिया जो शान्ति देवी ने दिया था।

नजीर ने लिफाफे का टुकड़ा उसके हाथ से ले लिया और पढ़कर उसको बहुत खुशी हुई। वह समझ गया कि उसका लिफाफे की पीठ पर लिखा उन्होंने पढ़ लिया है। उसने जेब से एक टुकड़ा निकाला और पेंसिल से उस पर बहुत ही बारीक अक्षरों में लिख दिया, "उनका एक मित्र। उनके ही काम से आया हूँ।" नजीर ने वह कागज का टुकड़ा सुखिया को देते हुए कहा, "देखो! बेगम साहिबा से कहना कि तुमने इनाम का काम किया है।"

"यह तो उन्होंने खुद ही कहा था।"

प्रातःकाल अब्दुल करीम फातिमा के कमरे में आया और उससे पिछले दिन की चिट्ठी का उत्तर माँगने लगा, "क्या तुम भी चिट्ठी सीधे उसी के हाथ में दोगी?"

"मैं इसकी जरूरत नहीं समझती। मैं आपसे डरती नहीं, क्योंकि मैं कोई नाजायज बात नहीं कर रही। जो मैं समझती हूँ वह आपको कहती हूँ और वही लिख दिया है। क्या आप पढ़िएगा?"

"अगर तुम दिखाओ तो।"

फातिमा ने अपने तकिए के नीचे से चिट्ठी निकालकर खाँ साहब के हाथ पर रख दी। उसने पढ़ी। लिखा था—"मुहतरम वालिद साहब! आपकी चिट्ठी मिली। आपकी दुआ के लिए शुक्रिया। आपने पहली शादी पर भी दुआ दी थी। दोनों में इख्तिलाफ हो गया है। देखूँ कौन-सी दुआ बर आती है। आपने बुढ़ापे में एक नौजवान लड़की की उमर बरबाद कर दी है। मगर यह तो आपका शेवा ही है। इसलिए गिला करने की गुंजाइश नहीं है। आपने जिस आदमी से मेरी शादी की बात कही है वह न तो मेरे लायक है और न ही किसी भी औरत से शादी करने के लायक। वह हकीकत में जेल का दरोगा है या भेड़-बकरियों को पालने वाला गड़रिया। मुझको खुदा ने इतनी समझ दी है कि जैसा वह रखे वैसा सबर से रहना चाहिए। आखिर रंडी की बेटी तो हूँ ही। माँ की ख्वाहिश थी कि नेक औरत बन जिन्दगी बसर करूँ, मगर आपकी दुआ से पेशेवर की जिन्दगी बन गई है। खुदा आपका भला करे।

"माँ को लेने के लिए आने की जरूरत नहीं। वे आपके साथ नहीं जावेंगी।

"कभी-कभी लिखते रहिएगा। आपकी चिट्ठी देखने से बचपन की वे सब बातें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याद याद आ जातीं हैं जो आपकी आरामगाह में दिल को मुसर्रत बख्शती रही हैं।"

इस चिट्ठी को पढ़कर खाँ साहब खिलखिलाकर हँस पड़े। चिट्ठी को बहुत एतयात से लपेटकर उससे कहने लगे, "तुम्हारी तारीफ के लिए शुकरिया। अरे मैं गड़रिया तो तुम भेड़ तो बनीं। मैं जेल का दरोगा तो तुम चोर तो बनीं। देखो फातिमा ! मुझको मजाक बहुत पसन्द है। पीर साहब के नौकर ने मजाक किया। उसने कहा कि चिट्ठी सीधे तुम्हारे हाथ में देगा, मैंने कहा ठीक है, वह मेरी बीवी का हाथ देख सकता है। उसने अपने मालिक की वफादारी में मेरी बेअदबी की। मैंने उसको अपना ही नौकर बना लिया। पीर साहब ने रोटी-कपड़े पर रखा था, मैंने पचास रुपये साथ देने कबूल कर लिये हैं। अब तुम मुझको किसी भी औरत के लायक नहीं समझतीं और मैं तुमको सिरफ अपने ही लायक समझता हूँ।"

खाँ की इस प्रकार की बातों पर और चिट्ठी लाने वाले नौकर को अपनी नौकरी में ले लेने के समाचार से वह बहुत खुश हुई। खाँ ने यह देखा तो अपने को बहुत खुशनसीब समझकर वहाँ से चला गया।

शान्ति देवी को सुखिया द्वारा लाया गया कागज का टुकड़ा मिल गया था। अब वह आशा कर रही थी कि शायद वहाँ से निकल सकेगी। इसके लिए वह सोचती थी कि किस प्रकार उस जेलखाने से निकलना सम्भव हो सकेगा। उसने नजीर के जाने के पहले एक संदेश और भेजा। उसमें उसने लिखा, 'सवाल बहुत मुश्किल है। उनके भरोसे पर ही जिन्दगी बसर हो रही है।' इससे अधिक लिखने का उसको साहस नहीं हो सका। उसे अभी सुखिया पर पूरा एतबार नहीं था।

सुखिया को एक रुपया देते हुए उसने कहा, "अभी तुम यह रखो। वालिद साहब कुछ दिन में आवेंगे। तुम्हें बहुत इनाम दिलवाऊँगी।"

शान्ति की माँ उससे कई कमरे दूर रहती थी। यूँ तो खाँ दोनों को अपनी बीवी बनाना चाहता था मगर जब उसे मालूम हुआ कि फातिमा उसकी लड़की है तो उसने उसको अपनी लड़की की खिदमत करने पर लगा दिया। फिर भी उसको दूसरी लौंडियों से ऊँचे दर्जे पर रखा। शान्ति की माँ आई तो उसने दरवाजा बन्द कर उसको धीरे से बताया कि उसने अपना सन्देश सदाशिव को भेज दिया है। पीर साहब का नौकर, जो उनकी चिट्ठी लाया है, उनका मित्र है। शायद हिन्दू है। कुछ भी हो, मैंने यह खतरा तो सिर पर ले लिया है कि उससे सम्बन्ध बनाने का यत्न करूँ। इसके बिना कोई चारा ही नहीं।"

उसकी माँ ने कहा, "देखो बेटी ! साहस से काम लेना। परमात्मा हमारी सहायता करेगा। और यदि कहीं इससे भी ज्यादा कष्ट हुआ, तो धीरज से सहन करना, निराश नहीं होना। आत्मघात करना आदमियों का काम नहीं। तुमने एक दिन ऐसा कहा था। मैं इसको पसन्द नहीं करती।"

"माँ ! मुझको एक बात का ही डर है कि हम जो जान जोखम में डालकर यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से निकलें और जब हम वहाँ पहुँचें तो वे मुझको भ्रष्ट हो गई समझकर स्वीकार ही न करें।"

"यह कितनी व्यर्थ बात करती हो तुम। हमारा यहाँ से बचकर निकल जाना इसलिए भी तो है कि यह जेलखाना है, यह दोजख है, यह बेइज्जती है। यहाँ रहकर हम अपने आत्मा को पतित कर रही हैं। मैं सच कहती हूँ कि जिन दिनों मैं गाने-बजाने का काम करती थी, उन दिनों भी मैं अपने को इतना पतित हुआ नहीं समझती थी। वहाँ भी बहुत हद तक आजादी की जिन्दगी बसर करती थी।"

: १५ :

नजीरुद्दीन बम्बई पहुँचा तो दरगाह जाने से पहले खुशीराम के घर जा पहुँचा। खुशीराम उसे देख बहुत प्रसन्न हुआ और उठकर उसे गले मिला। पश्चात् अपने समीप आदर से बैठाकर पूछने लगा, "सुनाओ भैया, क्या हुआ ?"

"अजी क्या पूछते हो ! जाते ही दाँव पौ बारह पड़ा। मेरी बातचीत ने और मेरे रोब-दाब ने ऐसा प्रभाव जमाया कि मुझको, उसी काम पर लगाया गया जहाँ उनको न लगाना चाहिए था। पीर साहब ने शान्ति देवी के पास ही चिट्ठी देकर भेज दिया। उस समय मैं विश्वास से नहीं जानता था कि मैं उनके पास जा रहा हूँ। यह तो वहाँ जाकर पता लगा।

"होशंगाबाद में एक साहब अब्दुल करीम खाँ भारी जागीरदार हैं। उनकी शरह के मुताबक उसकी चार बीवियाँ हैं और उनकी प्रथा के अनुसार उसकी दस रखैल हैं। इन दस में एक शान्ति देवी भी हैं। रियासत का मामला है। कानूनी तौर पर कुछ भी हो सकना कठिन है।

"शान्ति देवी ने एक पंक्ति भी लिखकर दी है। वह यह है।" इतना कह उसने वह कागज का टुकड़ा दिखा दिया जो शान्ति देवी ने सुखिया के हाथ भेजा था।

खुशीराम ने पूछा, "दादा ! तुम्हारा काम पीर साहब के यहाँ खतम हो गया है। फिर भी मेरी राय है कि उनसे कहकर ही तुमको छोड़ना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि उनको सन्देह नहीं होना चाहिए कि हम किसी प्रकार की खबर पा गए हैं।"

"एक और मजेदार बात हो गई है। खाँ साहब मेरी बातों से इतने प्रभावित हुए हैं कि उन्होंने मुझको अपने पास नौकर रख लेने की ख्वाहिश जाहिर की है। अब अगर आप कहें तो मैं इस बात के लिए यत्न करूँ ?"

"पीर साहब की नौकरी तो छोड़ ही देनी चाहिए। उनसे कह देना कि खाँ साहब ने इसरार किया है कि तुम उनकी नौकरी में चले आओ। वह तुमको जाने की स्वीकृति दे देगा। तब तुम यहाँ आ जाना। उस समय तक हम अपनी अगली योजना बना रखेंगे।"

पीर साहब ने शान्ति देवी की चिट्ठी पढ़ी तो आगबबूला हो गए। वे पूछने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे, "तो तुमने चिट्ठी उसके हाथ में दी थी ?"

"हजरत ! मैं ठीक बात तो नहीं कह सकता। चिक के पीछे खड़ी थीं। मैंने कह दिया था कि वह चिट्ठी फातिमा बीवी के लिए है। उन्होंने हाथ चिक के पीछे से निकाला और चिट्ठी ले ली। खुदा जाने मुझको धोखा दिया गया है या नहीं। अगले दिन खाँ साहब ने यह चिट्ठी मुझको देकर कहा कि उन्होंने दी है।"

"चिट्ठी तो उसके हाथ की ही लिखी है। मगर इस बदमाश सदाशिव ने उसके सिर पर ऐसा जादू किया है कि हर बात, जो मैं कहता हूँ, उसे उलटी ही लगने लगती है।"

"हजरत एक बात और है। खाँ साहब ने ख्वाहिश जाहिर की है, मैं उनके यहाँ नौकरी कर लूं। इसमें मैं इजाजत चाहता हूँ।"

"क्या तनख्वाह देने को कहते हैं ?"

"मैंने पूछा ही नहीं। वे कुछ कहते जरूर थे मगर मैंने उस ओर ध्यान ही नहीं दिया। बात तो यह है कि आप क्या पसन्द करेंगे। बिना आपकी इजाजत के मैं इसकी बाबत सोच भी नहीं सकता।"

"तुम क्या पसन्द करोगे ?"

"बम्बई जैसे शहर में रहने की बजाय देहात में रहना ज्यादा पसन्द करूँगा। मगर मैं आपके अहसान के नीचे दबा हूँ। मुझको मरते हुए आपने पनाह दी थी। मैं उसको भूल नहीं सकता।"

"मेरी तरफ से तुमको इजाजत है। मैंने बम्बई छोड़ने का फैसला कर लिया है। इसी साल के जून-जुलाई में मैं कराची चला जाऊँगा। मैं इस काफिरों के मुल्क में रहना नहीं चाहता।"

"हैदराबाद तो ठीक जगह मालूम होती है। वहाँ इस्लाम की हकूमत है। और खुदा का फजल है कि एक दीनदार के हाथ में है।"

"ठीक है, ठीक है। यह लो।" पीर साहब ने पचास रुपये नजीरुद्दीन को देते हुए कहा, "अब तुम जा सकते हो। देखना, अगर हैदराबाद में रहना चाहो तो उस बेवकूफ लड़की का ख्याल रखनां। मैंने बचपन से उसकी परवरिश की है और उससे मुहब्बत हो गई है। शायद ऐसा मौका आन पड़े कि वहाँ से भी मुसलमानों को कराची में आना पड़े तो उनकी वफ़ादारी से खिदमत सरंजाम देना। मैं इसका सिला दूंगा।"

नजीरुद्दीन ने घुटनों के बल हो पीर साहब के चोगे के किनारे को चूमा और सिर आँखों से लगाया और दुआ माँगी। यह दुआ पीर साहब ने दोनों हाथों को उसके सिर पर से कुछ ऊपर रखकर मुख में बुड़बुड़ाते हुए दी। नजीरुद्दीन दुआ ले उठकर दरगाह से बाहर आ गया।

वहाँ से वह सीधा खुशीराम के घर पहुंचा। वहाँ पर सदाशिव आया हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। उसने नजीरुद्दीन के काम की प्रशंसा करते हुए कहा, "मदन भैया ! तुमने तो कमाल कर दिया है। मगर अब आगे जो कुछ करने को है वह इससे भी अधिक जान जोखम का काम है। अब तुम सोच लो कि इसमें हाथ डालना चाहते हो या नहीं। मैं तो जान हथेली पर रखकर वहाँ जा रहा हूँ। शायद कुछ और लोग भी जाने का विचार रखते हैं। वहाँ से बिना लड़े काम बनता नहीं दिखाई देता।"

"सदाशिव भैया ! मैं तो खाँ साहब की नौकरी करने जा रहा हूँ। यह बात कि वहाँ क्या करना होगा और फिर उसमें कितनी हानि-लाभ की सम्भावना होगी, यह सब जब वहाँ आइएगा, विचार कर लिया जावेगा। मुझको तो वहाँ जाना ही है।"

"इसके अर्थ यह हुए कि छुड़ाने का यत्न करना ही है। तुम ठीक कहते हो। एक बार पहले दंगा-फसाद से डरकर मैं एक निर्दोष बालिका को गुण्डों के हवाले कर बैठा था। अब मैं समझ गया हूँ कि डरने वालों के लिए संसार में स्थान नहीं है।"

बात तय हो गई। नजीरुद्दीन जिसका असली नाम मदनमोहन था, होशंगाबाद के लिए चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षष्ठ परिच्छेद

: १ :

"जब मरहठों ने सन् १७५६ में हैदराबाद की सेना को पराजय दी थी तब ही हिन्दुस्तान से मुसलमानों के राज्य के उठ जाने की नींव पड़ी थी। मरहठे यदि अपनी जीत को उसके स्वाभाविक परिणाम तक ले जा सकते, अर्थात् हैदराबाद पर अपना अधिकार बना लेते और निजाम हैदराबाद की हुकूमत को एक हिन्दू-राज्य में बदल सकते तो हिन्दुस्तान से मुस्लिम राज्य का बीजनाश हो जाता। ऐसा नहीं हो सका और शायद हो भी नहीं सकता था। उस समय का बच गया बीज आज एक सुदृढ़ पेड़ बनकर भारत के मुसलमानों को अपनी छाया में सुख और आराम पाकर फलने-फूलने का निमंत्रण दे रहा है।"

बीस-पच्चीस आदमियों की सभा में एक वक्ता यह बात कह रहा था। उसने अपना कथन जारी रखते हुए कहा, "सन् १७६१ के पानीपत के तीसरे युद्ध के पश्चात् मरहठों का सूर्य अस्ताचल की ओर चल पड़ा और अंग्रेजों का सूर्य उदयाचल की ओर से ऊपर उठना आरम्भ हो गया।

"१७५७ के वर्ष में प्लासी का युद्ध हुआ। अंग्रेजों की विजय हुई, परन्तु यदि मरहठे पानीपत के युद्ध में परास्त न होते तो इस विजय से अंग्रेजी-राज्य पूर्ण भारत-वर्ष में न हो सकता। दिल्ली पर राज्य पा जाने से वे इतनी शक्ति पा जाते कि फिर उन पर अंग्रेजों की विजय प्रायः असम्भव हो जाती। १७६१ में मरहठों की पराजय से अंग्रेज समझ गए कि मरहठों में किस बात की न्यूनता थी। मुगल-साम्राज्य तो जर्जरीभूत हो चुका था। उस पर शक्ति व्यय करना व्यर्थ समझ, अंग्रेजों ने उसी दिन से अपना ध्यान मरहठों की ओर लगाया। सन् १७७६ में इनसे प्रथम युद्ध हुआ। यद्यपि इस युद्ध में अंग्रेजों की पराजय हुई तो भी मरहठों को इससे शक्ति नहीं मिली। तीन युद्धों में मरहठों को अंग्रेजों ने धराशायी कर दिया।

"अंग्रेजों की ताकत बढ़ती गई और इस बढ़ती ताकत को पहला धक्का १८५७ में पहुँचा। इस धक्के से अंग्रेजी-राज्य को बचाने के लिए ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बन्द कर भारत के राज्य को अंग्रेज सरकार ने अपने हाथ में ले लिया। मलिका विक्टोरिया से घोषणा कराकर सरकार ने अपने राज्य को नया जीवन प्रदान किया। यह १८८५ तक चलता रहा। इस समय भारत के नीतिज्ञों ने देश में पुनः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जागृति उत्पन्न करने के दो आन्दोलन चला दिए। एक था राजा राममोहन राय का 'ब्रह्मसमाज', दूसरा था स्वामी दयानन्द का 'आर्यसमाज'। इन दोनों प्रयत्नों से भारत की सरकार अनभिज्ञ नहीं थी। राजा राममोहन राय ने अपने पूरे बल से हिन्दुओं की कुरीतियों को दूर करने के लिए ब्रह्मसमाज का आन्दोलन चलाना चाहा और दूसरी ओर स्वामी दयानन्द ने उसी अभिप्राय से आर्यसमाज का आन्दोलन खड़ा कर दिया।

"भारत-सरकार ने इन दोनों आन्दोलनों को बेकार करने के लिए दो आन्दोलन उठाए। एक से आर्यसमाज के आन्दोलन को निर्जीव करने के लिए एक नई कौम के होने की सृष्टि कर दी। आर्यसमाज यह समझती थी कि भारतवर्ष में रहने वाली जाति हिन्दू है, जिसका पुराना नाम आर्य था। सरकार के प्रयत्नों से कांग्रेस की नींव रखी गई, जिसका उद्देश्य यह था कि हिन्दुस्तान में रहने वाली जाति हिन्दुस्तानी कौम है और इसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों सम्मिलित हैं।

"राजा राममोहन राय और उनके साथी सरकार द्वारा उठाए कांग्रेस के आन्दोलन में सम्मिलित हो गए। इसके विरोध में सरकार ने कर्नल बैक द्वारा मुसलनानों की अलीगढ़-नीति की नींव रखवाई। अलीगढ़-नीति से यह अभिप्राय है कि मुसलमान और हिन्दू दो जातियाँ हैं और मुसलमान हिन्दुस्तान में हिन्दुओं पर हुकूमत करते रहे हैं। इससे हिन्दू-मुसलमान के साँझे अधिकार का तो प्रश्न ही नहीं रहता। राज्य होगा तो मुसलमानों का।

"हिन्दुस्तान में मुसलमानों की हुकूमत का बचा हुआ बीज हैदराबाद अलीगढ़-नीति का पोषक हो गया। हैदराबाद की रियासत ने अलीगढ़ की यूनिवर्सिटी को धन दिया और यहाँ के पढ़े ग्रेजुएटों को अपने यहाँ स्थान दिया। इसके प्रतिकार में हैदराबाद रियासत के रूप में मुस्लिम हुकूमत के बचे बीज की सिंचाई, अलीगढ़ के ग्रेजुएटों के रूप में, पानी से होने लगी। अलीगढ़ के देशघातक झरने का दूसरा मुख हैदराबाद के अन्दर ही बना दिया गया। यह उसमानिया यूनिवर्सिटी के रूप में और अधिक विषैला जल प्रस्तुत करने लगा।

"फिर यूरोप के प्रथम युद्ध के समाप्त होने पर हैदराबाद के राज-परिवार के सिर पर एक और पंख लग गया। निजाम हैदराबाद के लड़के के साथ टर्की के खलीफा की लड़की का विवाह हो गया। यदि महात्मा गांधी की खिलाफत मूवमेंट सफल हो जाती तो निजाम हैदराबाद का लड़का खलीफा घोषित हो जाता, और फिर मुस्लिम जगत् के बल पर हैदराबाद दुनिया की एक प्रबल शक्ति बन जाती, जिसको न केवल हिन्दुस्तान के मुसलमान ही सहायता देते बल्कि दूसरे मुसलमानी देशों के भी राज्य हैदराबाद की सहायता में खड़े हो जाते।

"जहाँ हैदराबाद को मुसलमानी राज्य के बीज के रूप में मरहठों ने छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया; जहाँ इस बीज की सिंचाई और फिर भराई अलीगढ़ के कालेज के विद्यार्थियों और उसमानिया यूनिवर्सिटी के ग्रेजुएटों ने की, वहाँ महात्मा गांधी ने तो इस राज्य को न केवल हिन्दुस्तान के सिर चढ़ाने का, प्रत्युत दुनिया के गले में फाँस बनाकर डालने का यत्न किया।

"महात्मा गांधी अपने इस मुस्लिम-पोषक आन्दोलन में असफल हुआ तो संसार ने सुख की साँस ली। महात्मा गांधी तो अपनी मुसलमान-पोषक नीति के कारण हैदराबाद की प्रशंसा करता रहा। यहाँ तक कि एक बार सन् १९४० में महात्मा ने यह कह दिया कि यदि अंग्रेज हिन्दुस्तान से चले गए और हैदराबाद, जो यहाँ पर सबसे बड़ी रियासत है, देश पर अधिकार जमा बैठी तो मैं इसका स्वागत करूँगा।

"गांधी का खिलाफत आन्दोलन और यह वक्तव्य भारत में मुसलमानी राज्य स्थापित करने का एक प्रबल प्रमाण है। इससे पहले सन् १९३८ में, जब रियासत हैदराबाद का वहाँ के हिन्दुओं पर अत्याचार बहुत बढ़ गया था, और जब आर्य-समाज और हिन्दुओं ने सत्याग्रह आरम्भ कर दिया था, तो महात्मा गांधी ने इस रियासत के विरुद्ध सत्याग्रह का विरोध किया था। कहने का अभिप्राय यह है कि भारत में मुसलमानी राज्य के शेष बीज के बढ़कर पेड़ बनने में तथा पुनः मुसलमानी राज्य के स्थापित होने में कांग्रेस और महात्मा गांधी भरसक यत्न करते रहे हैं।

"यही कारण है कि आज हैदराबाद मुस्लिम लीग का एक भारी स्तम्भ बन रहा है। मुस्लिम लीग चाहती है कि भारत के एक टुकड़े में इस्लाम का राज्य स्थापित हो। साथ ही मुस्लिम लीग के एक कर्ता-धर्ता यह भी चाहते हैं कि वह राज्य अर्थात् पाकिस्तान, तो एक पग और आगे कूदने का स्थान बने जिससे वे पूरे हिन्दुस्तान पर इस्लाम का हलाली झंडा फहरा सकें।

"यह इतिहास की बात तो मैंने इस कारण बताई है कि हैदराबाद का बीज-नाश करना देश से मुसलमानी हुकूमत का बीजनाश करना है। अब वर्तमान परि-स्थिति का वर्णन कर देना आवश्यक समझता हूँ। हिन्दुस्तान के वे सब लोग जो पाकिस्तान के हिमायती हैं और जो हिन्दुस्तान की हिन्दू कौम को नुकसान पहुँचाना चाहते हैं, सब हैदराबाद में एकत्रित हो रहे हैं। साथ ही देश-भर की लड़कियाँ और औरतें भगा-भगाकर यहाँ लाई जा रही हैं। यहाँ की रंजाकार संस्था भी इसी प्रयोजन से बनाई गई है।

"यदि आप इसका प्रमाण चाहते हैं तो यहाँ हमारे शहर के ही जागीरदार अब्दुल करीम खाँ साहब की कोठी की तलाशी ले ली जावे। इनके पास जहाँ एक फौज को खिलाने लायक अन्न जमा है; जहाँ एक फौज के लड़ने लायक अस्त्र-शस्त्र जमा हैं वहाँ औरतों की एक फौज भी रखी हुई है जिनमें कई हिन्दू भी हैं। उनमें एक या शायद दो तो अभी-अभी बम्बई के बलवे में चोरी की हुई हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह एक वक्तृता थी जो एक नवयुवक साधु होशंगाबाद के एक मकान में वहाँ के नवयुवकों की एक मंडली के सम्मुख दे रहा था। उसके मुख पर तेज और हाथों में स्फूर्ति दिखाई देती थी। नवयुवक साधु पंजाबी प्रतीत होता था। श्रोतागण बहुत उत्तेजित अवस्था में थे। एक तो देश का वायुमण्डल हिन्दू-मुस्लिम झगड़े से भर रहा था और दूसरे, एक विशेष घटना होशंगाबाद में हो गई थी। अब्दुल करीम खाँ के एक बैरे की आशनाई शहर के एक बनिये की लड़की से हो गई थी। इस सभा से एक दिन पहले पाँच-छः आदमी बलपूर्वक उस लड़की को उठाकर ले गए थे। खाँ साहब के एक नौकर ने, जिसका नाम नजीरुद्दीन था, बाजार में किसी से कहा था कि लड़की खाँ साहब की कोठी में मौजूद है और अगर दस-बीस आदमी रात के दस बजे के बाद वहाँ पर सशस्त्र आक्रमण करें तो वह औरत पकड़ी जा सकती है। उस लड़की का पिता भी उस सभा में उपस्थित था। साधुवक्ता कई दिन से होशंगाबाद के एक मन्दिर में आकर ठहरा हुआ था और हिन्दू संगठन का काम कर रहा था। उसका सब प्रयत्न रजाकार संस्था के विरोध में एक हिन्दू स्वयं-सेवक दल बनाने का था। इस सभा में बहुत-से युवक उसी दल के सदस्य थे।

लड़की के पिता ने कहा, "नजीरुद्दीन हर रोज मुझसे सौदा-सुलफ लेने आता है और वह बहुत ही भला आदमी मालूम होता है। उसका कहना है कि अभी तक लड़की का निकाह उस चपरासी से नहीं पढ़ा गया। इस कारण खाँ साहब ने उसको अपनी एक रखैल के पास रखा हुआ है। एक-दो दिन में वह चपरासी उस लड़की के लिए कपड़े वगैरा बनवा लेगा तो निकाह पढ़ा दिया जावेगा। ऐसी अवस्था में यदि कुछ करना है तो फौरन करना चाहिए। कहीं निकाह पढ़ा दिया गया तो वह बेचारी न इधर की रहेगी न उधर की।"

साधु ने कहा, "क्यों साहब ! आप लोग इस जोखम के काम को करने के लिए तैयार हैं ?"

इस प्रश्न पर सब नवयुवकों ने हाथ उठा दिए और सबने यह कहा, "हम सब हिन्दू औरतों को छुड़ाकर रहेंगे।"

"इसमें सम्भव है कि लड़ाई हो जावे और दोनों ओर से लोग घायल हों। जो अपनी जान तक इस काम में दे देना चाहेंगे वह उठकर एक ओर हो जावें।"

एक दर्जन से ऊपर नवयुवक एक ओर होकर खड़े हो गए। उन सबसे यह शपथ ली गई कि वे खान अब्दुल करीम खाँ के घर से उन सब औरतों को बिना छुड़ाए दम नहीं लेंगे जो पहले हिन्दू रही हैं। अन्य उपस्थित लोगों से यह शपथ ली गई कि जो कुछ वहाँ हो रहा है उसकी सूचना आक्रमण से पूर्व और पश्चात् किसी को नहीं देंगे। वहाँ उपस्थित लोगों में से किसी का नाम किसी को नहीं बताएँगे।

: २ :

नजीरुद्दीन अब्दुल करीम खाँ के यहाँ नौकरी पा गया था। उसमें एक विशेष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुण था। वह अपने मन की बात ऐसे ढंग से कहता था कि दूसरे को वह उसी के लाभ की प्रतीत होती थी। नजीरुद्दीन ने नौकरी के पहले ही दिन मालिक से पूछा, "हुजूर ! मेरे लिए क्या काम मुकर्रिर किया है ? मैं बेकार बैठना नहीं चाहता।"

"भाई, काम सोचकर बताया जाएगा। मैंने तुमको चपरासी बनाकर तो रखा नहीं। तुम्हारे लिए कोई अच्छा-सा काम सोचना होगा।"

"तो इसका यह मतलब हुआ कि जब तक आप सोचिएगा तब तक का वेतन हराम में मिलेगा। तब तक के लिए मेहमानखाने का ही इन्तजाम मुझे करने दीजिए।"

"हाँ, ठीक है। वह बहुत गंदा रहता है। वहाँ का चपरासी बहुत काहिल मालूम होता है।"

उसी दिन से नजीरुद्दीन ने वहाँ के चपरासी से मिलकर वहाँ की झाड़-फूँक करनी आरम्भ कर दी। वहाँ की खाटें टूटी हुई थीं। उनकी मरम्मत करने को बढ़ई बुलवाया। फर्नीचर पर पालिश करने को सामान बाजार से ले आया। मेहमानखाने के सामने सब जगह गंदी थी। उसने चपरासी की सहायता से साफ कर, वहाँ पर सुर्खी बिछा दी। इसके पश्चात्, वहाँ आसपास घास लगा, उसमें फूलों की क्यारियाँ लगा दीं।

अभी तक भी खाँ साहब यह नहीं जान सके थे कि उससे क्या काम लिया जावे। एक दिन नजीरुद्दीन ने फिर पूछा, "हुजूर ! मेरे लायक कोई काम तजवीज नहीं किया आपने ?"

"अरे भाई, कुछ तो करते ही हो। अब कोई यह तो नहीं कह सकता कि नजीर हराम की खाता है।"

"यह तो हुजूर की मेहरबानी है कि इस मामूली-सी बात को काम समझते हैं। हकीकत में मैं इतने में अपनी तनख्वाह हक की कमाई नहीं समझता।"

"यह तो मैं समझता हूँ कि तुम्हारी या किसी और नौकर की कितनी तनख्वाह होनी चाहिए। इसमें मैं तुम्हारी राय नहीं चाहता।"

इन दिनों में नजीरुद्दीन ने सुखिया से गहरा मेल-जोल पैदा कर लिया था। वह उसे भाभी करके पुकारता था और वह उसे भैया कहती थी। इतने मात्र से ही वह शान्ति देवी से चिट्ठी-पत्री कर रहा था। जब भी वह आती तो वह उससे पूछता, "भाभी कहो, फातिमा बेगम ठीक-ठाक हैं ?"

वह उत्तर देती, "बेचारी बहुत उदास रहती हैं। लो, उन्होंने यह चिट्ठी दी है। कहती थीं, पीर साहब की कोई चिट्ठी आई हो तो उनकी राजी-खुशी की खबर लिखना।" नजीर चिट्ठी लेकर पढ़ता और झूठ-मूठ कह देता, 'लिखती हैं कि खाँ साहब बहुत ही दयालु आदमी हैं। आज उन्होंने उनकी मुहब्बत से खुश होकर बहुत बढ़िया साड़ी ले दी है।' इस प्रकार की खबरें सुनकर सुखिया बहुत खुश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती। वह समझती कि अपने मालिक की प्रशंसा सुनकर उसे खुश होना चाहिए।

फिर जब वह एकान्त में होती तो चिट्ठी पढ़ता, और पश्चात् उत्तर देता। एक दिन शान्ति देवी की चिट्ठी आई, "क्या हो रहा है? यहाँ मेरा जीवन एक गुलाम औरत-सा हो रहा है। मैं यहाँ के मालिक को किसी भी बात में न नहीं कर सकती। मैं कितना भी शोर मचाऊँ कोई सुनने वाला नहीं है। मकान ऐसा बना है, कि भीतर यदि किसी को मार भी डाला जाए तो बाहर किसी को खबर तक भी नहीं हो सकती। जब वह भैंसा मुझसे हमबिस्तर होना चाहता है और मैं इस बात से इन्कार करती हूँ तो वह मेरे से बलात्कार करता है और यदि चीख-पुकार करूँ तो मेरी साथिनें वहाँ आ जमा होती हैं और मुझको रोते देख हँसती हैं। फिर मुझको मजबूर करने के लिए मेरी माँ को सामने खड़ा करके पीटा जाता है। भैया नजीर, अब इस दोजख से छुड़ाओ। उनको कहो कि जल्दी करें। नहीं तो जान तो एक दिन ऐसे ही निकल जावेगी।"

नजीरुद्दीन को खाँ साहब की नौकरी में आए हुए एक महीने से ऊपर हो चुका था। उसने एक लम्बी चिट्ठी लिखी, जो इस प्रकार थी—"बहिन! आज बहुत-सी बातें निश्चय हो गई हैं। यहाँ के कई नौजवान तुम्हारे लिए लड़ाई करने को भी तैयार हो गए हैं। उनकी योजना यह है कि बाहर किंचित् मात्र भी हल्ला-गुल्ला होने पर तुम अपने कमरे में घुस, भीतर से बन्द कर बैठ जाना जब तक कोई बाहर से दो बार, तीन-तीन खट-खट न करे तुम दरवाजा न खोलना। साथ ही महल के फाटक से लेकर अपने कमरे तक के मानचित्र खींचकर भेज दो। आक्रमण करने वाले एक क्षण भी व्यर्थ खोना नहीं चाहते।

"कल तक यह मानचित्र आ जाना चाहिए और मैं समझता हूँ कि उसके एक दिन बाद जंगे-आजादी होगा।"

शान्ति देवी ने मकान के भीतर का पूरा ब्यौरा लिखकर भेज दिया। इससे अगले दिन दोपहर के समय जब सुखिया आई तो नजीर ने उसको एक पत्र लिख भेजा। उसमें केवल यह लिखा था, 'रात के दो बजे।' शान्ति देवी इसका अर्थ समझती थी और वह उसके अनुकूल अपनी योजना बनाने लगी। सबसे प्रथम उसने अपनी माँ को बुलाकर सब बात बताई। उसने कहा, "माँ! बाहर से सन्देश आया है कि आज रात के दो बजे हमको छुड़ाने का यत्न किया जावेगा। हमको तो सिर्फ यह करना है कि जब भी बाहर किसी प्रकार की हलचल देखें तो हम एक कमरे में आकर, भाग जाने के लिए तैयार बैठी रहें। इसके लिए मेरा कमरा निश्चय हुआ है। उनके पास मेरे कमरे तक पहुँचने के मार्ग का मानचित्र है। माँ, तुम याद रखना कि कुछ भी सन्देह होने पर भागकर मेरे कमरे में चली आना। मुझको शीघ्र ही दरवाजा बन्द करके बैठ रहना है। दरवाजे पर संकेत के अनुसार ठपठपाने पर ही दरवाजा खोलना है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति देवी का मन बहुत प्रकार के विचारों में घूमने लगा था। वह सोचती थी कि यदि योजना सफल न हुई तो क्या हो सकता है। यदि कोई भी मर गया तो मारने वाले पर मुकद्दमा होकर फाँसी का दण्ड हो सकता है।

वह इस काम की भयंकरता देखकर भय से काँप रही थी। वह सोचती थी कि क्या उसका जीवन इतना कीमती है कि उसके लिए कई नवयुवकों का जीवन स्वाहा किया जावे। साथ ही वह अपनी पतित अवस्था पर विचार करती थी। क्या उस जैसी नीच औरत के लिए इतना खून-खराबा होना चाहिए। अभी समय था कि वह सुखिया के हाथ उनको कहला भेजे कि उसको न छुड़ाया जावे। इसके साथ ही वह अपनी मुसीबत और अपमान, जो प्रतिदिन की बात थी, की बाबत सोचती थी तो चुप रह जाती।

वह अपने मन के संशयों को लेकर अपनी माँ के पास पहुँची। उसकी माँ ने उसके मन के विचार सुने और पीठ नंगी कर उस पर तीन दिन पहले की मार के चिह्न दिखा दिए। उसकी माँ ने कहा, "देखो बेटी! देवता और असुरों में लड़ाई आदिकाल से होती रही है। इस कारण युद्ध करने में देवताओं पर दोषारोपण कोई नहीं करता। राम ने लंका पर आक्रमण किया था और इस आक्रमण में सहस्रों वानर मारे गए थे। परन्तु इसका अपराध राम के सिर नहीं लगा। दोषी तो रावण था। इसी प्रकार कृष्ण ने कंस की हत्या की थी, परन्तु हत्या का पाप कंस के अपने ऊपर था। कृष्ण ने पाप नहीं किया था। इसलिए तुम डरती क्यों हो? यह संसार की रीति है कि दुष्टों के दमन के लिए भले लोग अपने जीवन को भय में डालें।

"मैं तुमको एक कथा, जो मैंने अपने बचपन में अपने पिता से सुनी थी, सुनाती हूँ। कौरव अति दुष्ट थे। उन्होंने एक बार अपनी भाभी द्रौपदी को भरी सभा में नंगा करने का यत्न किया था। बाद में जब उसके पाँच पतियों में और कौरवों में युद्ध होने लगा और जब कृष्ण युद्ध को रोकने के लिए, कौरवों के बड़े भाई दुर्योधन के पास जाने लगा तो द्रौपदी उसके सम्मुख उपस्थित होकर अपने केश दिखाकर बोली, 'देखो भैया कृष्ण! इन केशों को पकड़कर ही दुर्योधन के भाई दुःशासन ने भरी सभा में घसीटा था, और मुझको नग्न करने का यत्न किया था। क्या संसार में इसके लिए कोई दण्ड नहीं है?'

"'दण्ड है और दोषी को वह मिलेगा।' कृष्ण का उत्तर था। 'यदि दोषी को दण्ड न मिले तो संसार में इतनी दुर्व्यवस्था उत्पन्न हो जाएगी कि किसी भले आदमी का इसमें रहना दुर्भर हो जाएगा। तुम निश्चिन्त रहो द्रौपदी! परमात्मा भले लोगों की ओर होता है।'

"इस कारण मैं कहती हूँ कि जो कुछ हो रहा है वह भगवान् की प्रेरणा से ही समझना चाहिए। इसमें हमारा हस्तक्षेप उसके न्याय-पक्ष में बाधा खड़ी करना होगा। जब हम समझते हैं कि एक दुष्ट को दण्ड देने का आयोजन हो रहा है तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस दण्ड के मार्ग में हम रुकावट बनने से स्वयं दण्ड के भागी हो जावेंगे।"

इस प्रकार शान्ति देवी के मन को सान्त्वना दे उसकी माँ अपने कमरे में जा कर, भीतर से दरवाजा बन्द कर अति विनीत भाव से परमात्मा से प्रार्थना करने लगी।

: ३ :

शान्ति देवी बहुत सहमी हुई प्रतीत होती थी और यह बात खाँ साहब से छिपी नहीं रह सकी। खाना खाते समय खाँ साहब ने उसके समीप बैठते हुए कहा, "फातिमा, आज तो तुम बहुत खूबसूरत मालूम हो रही हो। तुम्हारे मुख पर यह लाली आज मैंने कई दिन के बाद देखी है।"

"मैंने अपनी माँ की पीठ पर उस दिन की मार के निशान अभी-अभी देखे हैं।"

"तब तो तुम्हारा मन हमारी ताकत का अन्दाजा लगा रहा होगा। तुम अब तो समझ रही होगी कि मेरा कहना मानने के सिवाय और चारा नहीं है।"

आज शान्ति देवी झगड़ा खड़ा करना नहीं चाहती थी। वह जानती थी कि जिस दिन उसकी माँ पीटी गई थी, घर के भीतर रहने वाले सब लोग रात के दो बजे तक नहीं सोए थे। आज वह ऐसी बात करना नहीं चाहती थी। वह चाहती थी कि दो बजे तक घर भर में शान्ति हो जावे और सब लोग गहरी नींद सो रहे हों, जिससे आक्रमण करने वालों को कम-से-कम खतरा हो और उन्हें अपना काम करने का अवसर मिल सके। इस कारण वह चुपचाप बैठी रही। इस पर खाँ बोला, "मेरे कहने की सचाई समझ में आ गई है न?"

शान्ति देवी अभी भी चुप रही। उसने फिर कहा, "खामोशी नीम-रजा समझनी चाहिए। तो लो, हम ऐलान करते हैं कि आज हम फातिमा बेगम के मेह-मान होंगे।"

शान्ति देवी यह सुनकर काँप उठी। इस पर खाँ साहब ने उसके गले में बाँह डालकर उसका मुख चूम लिया। वह इस समय झगड़ा नहीं करना चाहती थी। इस पर भी उसने यह समझाने का यत्न किया कि उसको उस रात क्षमा कर दिया जाए। परन्तु खाँ साहब पर भूत सवार हो गया था। उसने कहा, "नहीं बेगम! आज हम तुमको प्रसन्न पाते हैं और हम तुमको खुश कर देना चाहते हैं।"

इतना कहकर वह उठकर चला गया। फातिमा इस नयी परिस्थिति से घबरा उठी। वह समझने लगी कि पूरी योजना असफल हो जावेगी। जरा-सा भी शोर हुआ तो वह जाग उठेगा और फिर न जाने क्या कर देगा। वह खाने से उठकर सीधी अपनी माँ के कमरे में गई और उसको इस नई परिस्थिति से परिचित कर उसकी राय पूछने लगी। माँ ने एक क्षण सोचकर कहा, "बेटी! भगवान् की बातें हम क्या जान सकती हैं। हमें तो जो कुछ हो रहा है उसमें अपना कर्तव्य ही बनाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और करना है। देखो, मैं रात-भर जागती रहूँगी। ठीक समय पर मैं तुम्हारा दरवाजा खटखटाऊँगी। तुम उठकर मुझे भीतर कर लेना। वहाँ हम यत्न करेंगी कि खाँ किसी प्रकार से भी आक्रमण करने वालों के मुकाबले में न जा सके। तुम उस को वहीं अपने कमरे में सुलाकर रखना।"

शान्ति देवी के व्यवहार से खान बहुत प्रसन्न था। रात के बारह बजे तक वह उससे प्रेम-प्रलाप करता रहा। इसके पश्चात् वह सो गया। सोने से पूर्व उसने यह कहा था कि अगले दिन वह उसे एक सहस्र स्वर्ण निजामी अशरफियाँ देगा। शान्ति देवी ने मन कड़ा कर अपना व्यवहार ऐसा बनाए रखा कि जिससे वह अति प्रसन्न और सन्तुष्ट होकर सुख की नींद सो गया। उसे गहरी नींद में सोता देख शान्ति देवी पलंग से उठी और समीप रखी कुर्सी पर बैठकर धक-धक करते हुए दिल से समय की प्रतीक्षा करने लगी। वह अँधेरे में बैठी हुई भय के मारे काँप रही थी।

अभी दो नहीं बजे थे कि उसको बाहर से दरवाजा धकेलते हुए कोई जान पड़ा। उसने समझ लिया कि अवश्य उसकी माँ है। उसने उठकर आराम से दरवाजा खोल दिया। उसकी माँ ही थी। उसके हाथ में कुछ था। लड़की ने उसको कोने में ले जाकर पूछा, "यह क्या है माँ?"

"एक मजबूत रस्सा है। यह बहुत काम की वस्तु है। भागने के वक्त यह कई काम दे सकता है। मैं समझती हूँ कि इसकी जरूरत पड़ेगी।"

अब दोनों आराम से कुर्सियों पर बैठ गईं। समय आ गया। बाहर घड़ियाल बजाने वाले ने दो बजाए। जैसे बिजली का स्विच दबाने से मशीन काम करती है, इसी प्रकार घड़ियाल का शब्द सुनकर दोनों खड़ी हो गईं। परन्तु बाहर कुछ नहीं हुआ। शान्ति देवी अपने स्थान से चलकर दरवाजे के पास पहुँच, उससे कान लगा, सुनने लगी। उसकी माँ, जिस पर खान सो रहा था, उस पलंग के पास खड़ी हो गई। उसका खयाल था कि बाहर हल्ला-गुल्ला होगा। इससे खान की नींद खुल जावेगी और वह उठकर बाहर भागेगा। उसका यह भी खयाल था कि उसे बाहर नहीं जाने देना चाहिए। अगर जरूरत पड़ी तो उसको रस्से से बाँधकर यहाँ कैद कर रखना चाहिए।

लगभग दो बजने के पन्द्रह मिनट पश्चात् किसी ने दो बार तीन-तीन खट-खट की। शान्ति देवी दरवाजे के पास ही खड़ी थी। उसने धीरे से दरवाजा खोल दिया। पाँच आदमी भीतर आ गए। सदाशिव इनमें एक था। उसने धीरे से पूछा, "शान्ति!"

"मैं हूँ।" उसने उत्तर दिया। पश्चात् उसने बिजली का स्विच दबाकर रोशनी कर दी। इस समय खाँ जाग पड़ा और कमरे में रोशनी देख पूछने लगा, "क्या है बेगम?" परन्तु पूर्व इसके कि वह भलीभाँति परिस्थिति को समझ सकता, सदाशिव पिस्तौल लेकर उसकी छाती की ओर निशाना बाँधकर खड़ा हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। सदाशिव ने कहा, "देखो, अगर जरा भी हिले तो काम तमाम कर दूंगा।"

खाँ अभी भी समझ नहीं सका था कि क्या हो रहा है। हाँ, उसने पिस्तौल का काला मुख अपनी ओर झाँकते हुए देख लिया था। इससे उसने समझ लिया कि बोलना और शोर करना खतरे से खाली नहीं। उसने वैसे ही लेटे हुए कहा, "क्या चाहते हो?"

"चाहते हैं कि तुम लेटे रहो और बोलो नहीं।" इस समय सदाशिव के साथियों ने खाँ के मुँह में कपड़ा ठूँस दिया और उसके हाथ-पाँव बाँध दिए। उसको कसकर पलंग से बाँध उन्होंने बिजली बुझा दी और सब, शान्ति देवी और उसकी माँ को लेकर कमरे से बाहर आ गए। कमरे के बाहर दो और युवक हाथों में पिस्तौल लिये हुए खड़े थे। कमरे से बाहर निकल शान्ति की माँ ने दरवाजा बाहर से बन्द कर दिया।

बीस के लगभग युवक आये थे। फाटक पर चौकीदार को भी हाथ-पाँव बाँध कर मुख में कपड़ा ठूँसकर और फाटक के साथ बाँधकर छोड़ आए थे। कोठी की ड्योढ़ी पर खड़े पहरेदार सो गए थे। इस कारण उनको काबू कर लेना आसान ही रहा। थोड़ा-सा झगड़ा जनानखाने के बाहर जो चौकीदार खड़ा था, उसके साथ हुआ। वह शोर मचाने लगा था परन्तु एक युवक ने अपने हाथ में पकड़ी बन्दूक के कुन्दे की चोट से उसको अचेत कर दिया। इस प्रकार बिना किसी प्रकार का शोर किए सब लोग कोठी में दाखिल हो गए। इस समय नजीरुद्दीन भी वहाँ आ गया। उसने सुखिया से भीतर की सब सूचना प्राप्त कर रखी थी। इस प्रकार उसने सदाशिव को तो शान्ति देवी के कमरे की ओर भेज दिया और स्वयं विवाहित बेगमों की ओर जा पहुँचा। वहाँ चारों बेगमों को एक स्थान पर एकत्रित कर नजीरुद्दीन ने उनसे पूछा, "तुममें से हिन्दू की लड़की कौन है?"

सबसे छोटी बेगम जिसका विवाह पिछले वर्ष ही हुआ था बोल उठी, "मैं हूँ।"

"किसकी लड़की हो?"

"हैदराबाद के विख्यात वकील केलकर की। मेरा अपहरण खाँ साहब ने एक सिनेमा हाल के बाहर से किया था।"

"इधर हट जावो।"

इसके पश्चात् उसने दूसरी बेगमों से कहा, "तुम में से कोई यहाँ से चली जाना चाहती है?"

कोई नहीं बोली। अब नजीरुद्दीन ने युवकों को कहा, "इन सबके मुख, हाथ और पाँव बाँध दो और इन सबको इकट्ठा बाँधकर कमरे में बन्द कर दो।"

इस प्रकार जब सब लोग बाहर आ गए तो बनिया, जिसकी लड़की पर यह सब झगड़ा खड़ा हुआ था, कहने लगा, "पर नजीर बाबू! श्यामा तो मिली नहीं।"

"लालाजी, रात को तो महल में थी। अब कहीं दिखाई नहीं देती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे उसको बहुत निराशा हुई। वहाँ ठहरे रहने के लिए समय नहीं था। इस कारण सब इन तीन औरतों को साथ लेकर कोठी से बाहर निकल आये। कोठी के बाहर मोटर गाड़ियाँ खड़ी थीं। शान्ति देवी और उसकी माँ तथा सदाशिव एक गाड़ी में बैठ गए। सुखिया इनके साथ थी। वह गाड़ी हैदराबाद की सरहद की ओर तेज गति से चल पड़ी। दूसरी गाड़ी में छोटी बेगम और नजीरुद्दीन, साथ में वह पंजाबी साधु जो एक दिन होशंगाबाद के युवकों की सभा में व्याख्यान दे रहा था, बैठ गए। उन्होंने वहाँ से हैदराबाद की ओर का रास्ता पकड़ा। अन्य युवक दो-दो तीन-तीन कर मण्डलियों में विभक्त हो गए और पैदल भिन्न-भिन्न दिशाओं में चले गए।

: ४ :

प्रातःकाल होशंगाबाद में यह विख्यात हो गया कि अब्दुल करीम खाँ की कोठी पर डाका पड़ा है। उस इलाके के थानेदार को यह समाचार मिला तो उसको विश्वास नहीं आया। उसके थाने में किसी प्रकार की रिपोर्ट नहीं लिखवाई गई थी। पहले तो कुछ काल तक वह किसी के रिपोर्ट लिखवाने के लिए आने की प्रतीक्षा करता रहा। जब कोई नहीं आया तो वह स्वयं पता करने खाँ साहब की कोठी पर पहुँच गया। खाँ साहब से उसकी मुलाकात थी। जब वह कोठी में पहुँचा तो उसने देखा कि लोग छोटी-छोटी टोलियों में इधर-उधर खड़े हुए आपस में बातें कर रहे थे।

थानेदार ने चपरासी से पूछा, "खाँ साहब घर पर हैं ?"

"जी हुजूर। मगर तबीयत कुछ खराब है।"

"हमारी इत्तला कर दो।"

चपरासी गया और भीतर से खबर लाया कि खाँ साहब अभी आते हैं और दरोगा साहब बैठक में बैठें। दरोगा बैठक में जा बैठा। पन्द्रह-बीस मिनट प्रतीक्षा करने पर खान आया। उसका मुख उतरा हुआ था। दरोगा ने उठकर सलाम की, हाथ मिलाया और खैर-खैरियत पूछी। खाँ ने कहा, "और तो सब खैर है मगर कल रात हमारे यहाँ से कुछ चीजें चुरा ली गई हैं। इस वजह से कुछ परेशानी हो रही है।"

"मगर उस चोरी की इत्तला आपने थाने में नहीं की।"

"मैंने मुनासिब नहीं समझा।"

"क्यों ?"

"चोरी का माल चोरी गया हो तो कैसे इत्तला करता ?"

"तो आपके पास चोरी का माल रखा था ?"

"देखो मिस्टर यूसुफ ! बात कुछ ऐसी ही है। आप तो दोस्त ठहरे। आपसे क्या छिपाना है। खुदा ने मुझको कुछ शौकीन-तबीयत बनाया है। इसलिए कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़िया जवाहरात देखे तो तबीयत मचल गई। कुछ जवाहरात ऐसे भी होते हैं कि वे मोल पर नहीं मिल सकते। उन्हें हासिल करने के लिए हर किस्म के तरीके इस्तेमाल होते रहते हैं। उनमें एक तरीका चोरी करना भी है।"

दरोगा यूसुफ मियाँ अब्दुल करीम खाँ की युक्ति सुनकर हँस पड़ा। उसने कहा, "आपके फिलासोफरों जैसे ख्यालात सुनकर दिल बहुत खुश हुआ है। मगर हुजूर, एक बात मैं गुजारिश कर देना चाहता हूँ कि हमारा महकमा फिलासोफी पर 'मबनी' नहीं है। हम तो इन्साफ के लिए बने हैं।"

"वह तो भाई बहुत अच्छी तरह मालूम है। उस दिन जब लभू बनिये को ब्लैक मार्केटिंग करते पकड़कर भी छोड़ दिया था तो न्याय का पालन ही तो किया था।"

"वह तो एक दूसरी बात है। उसमें बन्दा को खुरचन काफी मिली है। फिर एक बहुत जरूरी बात यह भी तो है कि शायद चोरी करने वाले हिन्दू हों।"

"वह ठीक है। भाई लभू बनिया भी तो हिन्दू था और वह अभी तक भी मुसलमान नहीं हुआ। खैर, छोड़ो इस बात को। मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि क्या मुझसे भी खुरचन की उम्मीद में आए हो?"

"अजी तौबा करो। भला आपसे कैसे ले सकता हूँ। अगर आप इत्तला कर देते तो हम इधर-उधर हाथ मारते।" इतना कहकर उसने खाँ के मुख की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा।

खाँ ने उत्तर दिया, "मगर एक बात तुम्हारी अकल में नहीं आई मालूम होती। वह है चोरी हुई चीज में जिन्दगी का होना। अगर वह अदालत में पेश हो गई तो बोल उठेगी और मेरे द्वारा चुराए जाने की बात, बता देगी।"

"तो वह कोई औरत है। तब तो बात ठीक है। एक गई तो दूसरी आ जावेगी।"

"हाँ। तुम अब समझे हो। मेरे माल को कुछ भी नुकसान नहीं हुआ। किसी जान का नुकसान भी नहीं हुआ। कुछ थोड़ा-सा मेरी बहादुरी को बट्टा लगा है। पर मैं क्या करता? रात का सोया हुआ था कि कम्बख्तों ने आन दबाया। लेटे-लेटे मुँह में कपड़ा ठूँस दिया और हाथ-पाँव बाँध दिए। चपरासी और चौकीदारों के साथ भी यही हुआ मालूम होता है। अब किसको कसूरवार कहूँ और किसको बेकसूर। गजब तो यह हुआ है कि एक शादी-शुदा बेगम भी भाग गई है।"

"तो उसकी ही रपट लिखवा दीजिए।"

"यूसुफ साहब, नहीं। वह हिन्दू की लड़की थी और पिछले साल हैदराबाद के विक्टोरिया सिनेमा हाल के बाहर से चुराई गई थी। यहाँ लाकर उससे शादी कर ली। यूँ तो वह बहुत प्रसन्न मालूम होती थी। क्या हुआ समझ में नहीं आता। न जाने उसने क्या देखा है कि रात उन लोगों के साथ भाग गई है। दो औरतें और भागी हैं। एक तो मुसलमान की लड़की थी और उसके बाप ने ही उसके हिन्दू खाविन्द से चुराकर यहाँ भेजी थी। साथ उसके उसकी माँ भी थी। दोनों ही भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई हैं। असल में मैंने एक बहुत वफादारी दिखाने वाला नौकर रखा था। मालूम होता है कि वही इन सबको भगाकर ले गया।"

"पर खाँ साहब, यह एक आदमी का काम तो मालूम नहीं होता। इसमें तो कोई बहुत बड़ी साजिश मालूम होती है।"

"अजी छोड़िए इस बात को। मैं रिपोर्ट नहीं लिखवाऊँगा।"

थानेदार बहुत हैरान और एक भारी आमदनी का स्रोत हाथ से जाता देख, दुखी हुआ था। वह वहाँ से वापस आया तो नगर से एक और समाचार मिला। लोटन बनिये की लड़की छः दिन तक घर से गायब रहकर रात लौट आई है। लोटन ने उसके गायब हो जाने की रपट थाने में नहीं लिखवाई थी। इससे वह उसके मिलने की भी सूचना देने नहीं आया। थानेदार इस समाचार से आग-बबूला हो गया। उसने समाचार लाने वाले के सामने ही लोटन को गालियाँ देनी आरम्भ कर दीं। "बदमाश के बच्चे, क्या समझते हैं, यह अपने को? इन्होंने घर में ही थानेदारी खोल रखी है। घर में ही रिपोर्ट लिख लेते हैं और घर में ही सुराग लगाना आरम्भ कर देते हैं...ओ! पीरदीन! जाना जरा लोटन को बुला लावो।"

लोटन आया और थानेदार के सामने हाजिर हुआ। थानेदार क्रोध कर अभी शान्त नहीं हुआ था। इससे कहने लगा, "क्यों बे लोटन के बच्चे! लड़की की गायब हो जाने की खबर क्यों नहीं लिखवाई?"

"हुजूर! कोई नेकनामी की बात होती तो लिखाने आ जाता। अपने मुख पर आप ही कालख कैसे पोत लेता?"

"अबे, थाने में रिपोर्ट तो लिखवाई जाती है।"

"मुझे मालूम नहीं था। उमर भर में पहली ही बार लड़की भागी थी। अब फिर कोई भागेगी तो जरूर लिखा दूँगा।"

"तो इसी की अब ही लिखा दो न?"

"अब क्या लाभ होगा?"

"अबे यह दस्तूर है।"

"न हुजूर। अभी तक तो सिरफ आपको ही पता लगा है और रिपोर्ट लिखाने पर तो सबको मालूम हो जावेगा।"

"तो फिर चोर कैसे पकड़ा जावेगा?"

"वह चोर नहीं था साहब। लड़की कहती है कि कोई साधु महात्मा थे। उन्होंने उसको बहुत भलीभाँति रखा था। खाने-पहरने और प्रत्येक प्रकार का आराम उसको दिया था।"

इस बात से तो थानेदार की भी हँसी निकल गई। उसने कहा, "ओ बेवकूफ लोटन! किसी के घर भी लड़की को भेज दो। वह दो-चार दिन तो उसकी जरूर खातिर करेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह नहीं दरोगा साहब ! क्या मैं समझता नहीं हूँ । सब कुछ जानता हूँ । पाँच बच्चों का बाप हूँ । मैंने सब कुछ मालूम कर लिया है । उसको ले जाने वाला एक विशेष प्रयोजन से उसको ले गया था । वह प्रयोजन मुझको मालूम हो गया है ।"

"देखो लोटन ! तुमको वह प्रयोजन बताना होगा और उस साधु का नाम भी बताना होगा । नहीं तो तुमको अपनी लड़की से पेशा कराने के जुरम में हवालात में रखना पड़ेगा ।"

लोटन बनिया इससे घबराया । उसने हाथ जोड़कर कहा, "हुजूर ! यह बहुत सखत बदनामी का कारण बन जावेगा । मैं आपको विश्वास दिलाने के लिए वह कारण बता सकता हूँ, जिससे वह साधु लड़की को अपने पास ले गया था । मगर मैं उस साधु का नाम नहीं बता सकता । न तो मैं उसका नाम जानता हूँ और न ही लड़की जानती है । इसलिए मैं क्षमा माँगता हूँ ।

"मेरी लड़की ने मुझको बताया है कि खाँ साहब के बैरा रफीक ने उससे विवाह कर लेने को कहा था । वह उसके साथ भाग जाने वाली थी कि खाँ साहब के एक और नौकर नजीरुद्दीन ने उससे मिलकर उसको मना किया । जब वह नहीं मानी तो वह उसको धोखा देकर उसी साधु के पास ले गया । वहाँ उस साधु ने उसको अपने मकान में बन्द करके रखा । उसी नजीर ने मुझको बताया कि मेरी लड़की को रफीक बैरा चुराकर ले गया है । साथ ही मुझको कहा कि उसका अभी निकाह नहीं पढ़ा गया । इसके बाद उसने कहा कि वह उसके छुड़ाने का यत्न कर रहा है । अब आज सुबह वह स्वयं आ गई है । उसने कहा साधु इतने दिन तक उसको समझाता रहा है कि उसको किसी मुसलमान से विवाह नहीं करना चाहिए । अब वह उस रफीक से विवाह करना नहीं चाहती । उसका कहना है कि साधु और नजीर दोनों उससे सगे भाई का-सा सुलूक करते रहे हैं । अब दरोगा साहब जो कुछ भी हुआ है मैं उसको अदालत मेंवसीटकर अपने ही मुख पर कालिख नहीं पोतना चाहता ।

"मैंने नजीर को ढूँढ़ने का यत्न जरूर किया है, वह न मालूम कहाँ चला गया है ।"

यह कहानी सुनकर थानेदार जोर से हँसा और बोला, "बहुत अच्छी तरह बेवकूफ बनाया है उन्होंने तुमको । छ: दिन तक तुम्हारी लड़की का भोग किया और फिर हिन्दू और मुसलमान की बात बनाकर चल दिए । एक बात बताओ तो । कितना माल तुम्हारी लड़की घर से चुराकर ले गई थी ?"

"सत्य बताऊँ हुजूर ? कोई दो हजार का जेवर ले गई थी, परन्तु वह सबका सब अपने साथ वापस ले आई है ।"

"तुम झूठ बोलते हो ! मैंने इतनी उमर में कोई माई का लाल इतना ईमानदार नहीं देखा जो घर में आई औरत को छुए नहीं और इस प्रकार आए धन को वापस कर दे । देखो लोटन ! अगर तुम कहते हो कि तुम्हारी लड़की को अदालत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में न घसीटूँ और उसका डाक्टरी मुआइना न कराऊ ता कुछ हमारा भी खयाल करना होगा। पाँच सौ रुपया आज शाम तक जमा कर दो। नहीं तो भाईजान फिर न कहना। उस साधु और नजीर की तलाश तो हो रही है। उन्होंने खाँ साहब के घर डाका डाला है।"

"हाँ ! कुछ उड़ती बात सुनी तो है। कुछ बहुत माल गया है उनके घर से ?"

"उनकी बात छोड़ो तुम। वे बहुत अमीर आदमी हैं। तुम अपनी बात कहो। रुपया शाम तक आएगा या नहीं ?"

"कहीं से ढूँढ़ता हूँ साहब !"

: ५ :

सदाशिव दिन निकलने से पूर्व शान्ति देवी और उसकी माँ को लेकर हैदराबाद की सीमा से बाहर निकल गया। मार्ग में शान्ति देवी ने बम्बई 'मेराईन ड्राईव' वाले मकान से अपहरण होने के समय से लेकर छूटने के समय तक अपनी पूर्ण आप-बीती सुना दी। इस काल में इतनी करुणाजनक घटनाएँ हो गई थीं कि इनको सुनाते-सुनाते कई बार उसके आँसू बह निकले। सदाशिव दाँत पीस रहा था। शान्ति की माँ भविष्य के विषय में सोचती गम्भीर बैठी थी। शान्ति देवी अपनी कथा सुना चुकी तो कहने लगी, "इस बदमाश पीर को मैं अपना बाप समझती थी। जब मुझे दरगाह की घृणित बातों का पता चला तो कई बार मेरे मन में उसके लिए घृणा होती थी, परन्तु उसको पिता का आदर देकर अपने मन में कभी भी उसके विरुद्ध विचार नहीं आने देती थी। उसने अपने मन की नीचता का परिचय उसके साथ भी दिया जिसको वह अपनी लड़की कहता था।"

शान्ति देवी इतना कह हिचकियाँ भरकर रोने लगी। तीनों पिछले दो मास की बातों से इतना दुःख अनुभव करने लगे कि उनको कुछ समझ ही नहीं आता था कि क्या करें। सबसे पहले शान्ति देवी की माँ ने होश सम्भाली और उससे कहा, "बेटी ! अब इस रोने-धोने को छोड़ हमको आगे के विषय में विचार करना चाहिए। भगवान् का धन्यवाद है कि उसने पुनः हमारे लिए नया संसार खोल दिया है। इसमें हमको कहाँ कैसे रहना होगा और अपनी बिगड़ी हालत को कैसे बनाना होगा, इस समय यही एक सोचने की बात है।"

सदाशिव ने कहा, "देखो माता जी ! मैंने इतना तो सोच रखा है कि अब बम्बई में नहीं रहूँगा। मैंने अभी यह विचार नहीं किया कि किस स्थान पर चल कर रहूँ। इस बात पर सोचने का समय नहीं था। सबसे पहले तो आपको छुडाने की बात थी। सो हो गई है। अब इसके आगे विचार करने का समय आ गया है। बम्बई पहुँचते ही अपना सामान ठीक कर चल देंगे।"

"यह तो ठीक है।" शान्ति देवी ने कहा, "परन्तु मेरा आपके साथ रहना ठीक भी है या नहीं, मेरी समझ नहीं आ रहा। मेरी अब वह बात नहीं रह गई। शायद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं अब वेश्या का काम करने के लायक ही रह गई हूँ।"

"क्या हो गया है तुमको ?" सदाशिव ने सचेत हो पूछा।

"बताया तो है। मेरे शरीर को उस शैतान के हाथ लग चुके हैं, यह अब गन्दा हो गया है।"

"शरीर गन्दा हो गया है या मन भी ?"

"क्या मतलब ?" शान्ति देवी ने पूछा।

"मतलब तो स्पष्ट है। क्या तुम मन से भी कभी उसकी बीवी बनी हो !"

"उस पशु की ? उसके लिए मेरे मन में पति की भावना कैसे हो सकती थी जो मुझको वश में करने के लिए मेरी माँ को नंगा कर मेरे सामने पीट सकता है। मैं इतनी मूर्ख नहीं हो सकती।"

"यही तो कहता हूँ, तुम्हारा केवल शरीर ही पतित हुआ है। उसको साबुन मलकर साफ कर लूंगा। इस गन्दे शरीर की दुर्गन्ध निकालने के लिए खुशबूदार उबटन मल लूँगा। मन तो तुम्हारा मेरे से मुहब्बत करता है न ? एक बात और बताऊँ शान्ति देवी ! हम हिन्दू तो मन को भी शुद्ध कर सकते हैं। उसके लिए प्रायश्चित करना होता है और वह भी शुद्ध हो जाता है।"

"यह बात पहले तो आपने कभी नहीं बताई। मैं समझती हूँ कि मेरा मन बहलाने के लिए ही आप कह रहे हैं।"

"मन बहलाना नहीं शान्ति ! मन से भ्रम को दूर करना कहो तो ठीक है।"

"देखो बेटा सदाशिव ! हम बदनसीबों के लिए तुम अपनी जिन्दगी खराब न करना। तुम कौंसिल के मेम्बर हो। बड़े आदमियों में तुम्हारा चलना-फिरना है। हम नहीं चाहते कि तुम से लोग घृणा करने लगें और कहीं वह तुमसे बात करना अथवा तुमसे मेल-जोल रखना ना पसन्द करें। तुम हमको हमारे हाल पर छोड़ दो। हम किसी-न-किसी तरह अपना निर्वाह कर लेंगे।"

"देखिए माँ जी ! मैं आपको बदनसीब नहीं समझता। जो कुछ हुआ है वह आज इस देश में किसी भी औरत के साथ हो सकता है। यह हमारी सरकार की दुर्बलता के कारण हुआ है। आप नहीं जानतीं क्या कि दरगाह में नित्य हिन्दू औरतों के साथ क्या होता है ? किस-किस को बदनसीब कहूँ ? उन औरतों का कुछ भी दोष नहीं है। देश में राज्य ही दुर्बल हो गया है। यह देश की बदनसीबी है। वह अब भी इस दरगाह की और उसके पीर की कथा पर विश्वास नहीं करेगा।"

"बेटा ! मैं तो तुम्हारे भविष्य का विचार कर ही कह रही हूँ।"

"मैंने फैसला कर लिया है कि कौंसिल छोड़ दूंगा। इसलिए नहीं कि तुम्हारे साथ होने के कारण मेरे पर लोग उँगली करेंगे, प्रत्युत इसलिए कि मुझको उन लोगों के साथ रहते लज्जा आती है। वे लोग इस प्रकार के नासमझ हैं कि उनकी बचपन की-सी बातों पर मुझको कई बार सिर झुकाना पड़ता है। उनकी नासमझी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारण जो हानि देश और जाति को होने वाली है, उसके करने वालों में मैं नाम लिखाना नहीं चाहता।

"शान्ति ! मैंने सब कुछ जानते हुए तुमको छुड़ाने का इतना कठिन काम करने का साहस किया है तो कुछ सोच-समझकर ही किया। मदनमोहन, जिसको तुम नजीर के नाम से जानती हो, तुम्हारे विषय में मुझको सब कुछ बता चुका था। फिर भी मैंने यह षड्यन्त्र किया और अपने तथा खुशीराम जी के मित्रों की जानें खतरे में डालीं। हम सब यह भलीभाँति समझते थे कि तुम सर्वथा पवित्र हो।"

शान्ति इसका उत्तर नहीं दे सकी। उसकी आँखों से टप-टप आँसू गिर रहे थे। उसकी माँ, जो उसके पास दूसरी ओर बैठी हुई थी, उसके गले में हाथ डालकर कहने लगी, "देखो बेटी, मैं कहती न थी कि सदाशिव ऐसा है। अब छोड़ो इस बात को। आओ सोचें कि बम्बई छोड़कर कहाँ चलना चाहिए और बम्बई से जाते समय ऐसे जाना चाहिए कि पीर का बच्चा हमको पा न सके।"

तीनों बम्बई में पहुँचे तो अपने घर जाने के स्थान खुशीराम के घर चले गए। खुशीराम को अपनी योजना के सफल होने से बहुत प्रसन्नता हुई। उसने उनको अपने घर में रखा और उनके छूटने की पूर्ण कथा सुनी।

एक-आध दिन में ही उनके बम्बई छोड़कर जाने का विचार हो गया। उन दिनों बम्बई की धारा-सभा की बैठक हो रही थी। इस पर भी सदाशिव ने बम्बई को सदा के लिए छोड़ने का विचार कर लिया। उन सबका विचार पहले हरिद्वार जाने का ही ठहरा। पश्चात् दिल्ली में कोई काम कर लेने का विचार पक्का कर लिया।

बम्बई से विदा होते समय सदाशिव ने खुशीराम का धन्यवाद करते हुए कहा, "दादा, मैं जीवन-पर्यन्त तुम्हारे किए को भूल नहीं सकता। इस परिवर्तनशील काल ने मुझे वह शिक्षा दी है जिससे मुझमें एक प्रकार की मानसिक क्रान्ति उत्पन्न हो गई है। मैं समझता हूँ कि मेरी देश तथा जाति के विषय में धारणा अशुद्ध थी।

"यद्यपि मैं यह नहीं समझ सका कि मुसलमान क्यों देश-हित का विरोध कर रहे हैं, फिर भी यह बात तो स्पष्ट हो गई है कि वे प्रायः सब अपने मजहब को देश से ऊँची पदवी देते हैं और मजहब को देश से ऊपर रखने के लिए प्रत्येक प्रकार के, उचित अथवा अनुचित उपायों को प्रयोग में लाने में संकोच नहीं करते।"

सदाशिव ने हरिद्वार पहुँचकर भाड़े का एक मकान ले लिया। उसका विचार था कि वह शान्ति से कुछ दिन रहकर दिल्ली जाने की बात निश्चय करेगा। परन्तु यहाँ भी उसको शान्ति नहीं मिली। रावलपिंडी और मुलतान के हिन्दू अपना घर-बार लुटा सहस्रों की संख्या में आने लगे थे।

सदाशिव उनकी दुर्दशा की कथाएँ सुनकर पागल हो रहा था। वह सोचता था कि क्या हिन्दुओं के लिए मुसलमानों के साथ रहने को स्थान नहीं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्तम परिच्छेद

: १ :

अनिमा देवी अपने पिता के देहान्त हो जाने पर उदास तो थी ही परन्तु जब उसे गिरीश के चक्षु-विहीन हो जाने का समाचार मिला तो उसकी कमर ही टूट गई। कई दिन तक तो वह खाट से उठ ही न सकी। सुधीर और उसके पिता के अन्य साथी उसका मन बहलाने का प्रयत्न करते रहे। गिरीश के पिता जब अपने पुत्र को वियाना ले जाने लगे तो उसने साथ जाने की इच्छा प्रकट की परन्तु गिरीश की माँ तो गिरीश की मुसीबतों का कारण उसे ही समझती थी। इससे उसने अनिमा को गिरीश से मिलने ही नहीं दिया।

जब गिरीश को हवाई जहाज के अड्डे पर ले जाया जा रहा था तो अनिमा वहाँ पर जा पहुँची और उसकी माँ के मना करने पर भी उसके सामने जा खड़ी हुई। "गिरीश जी !"

अनिमा इतना कहकर रुक गई। शब्द उसके गले में अटक गए। गिरीश ने हाथ फैलाते हुए कहा, "अनिमा ! तुम हो।" अनिमा ने हाथ बढ़ाकर अपना हाथ गिरीश के हाथ में दे दिया। गिरीश ने टटोलकर अपना हाथ उसके कंधे पर रख उसका आश्रय लेकर खड़े होकर कहा, "तुम इतनी देर तक कहाँ रही हो ? पहले मुझे बताया गया था कि तुम घायल हो गई हो, फिर तुम पिताजी के शोक में घर से नहीं निकलतीं और पश्चात् तुम रुग्ण होकर दिल्ली चली गई हो।"

अनिमा ने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर उसकी माँ की ओर देखा। वह लज्जा से आँखें नीचे किए हुए खड़ी थी। अनिमा समझ गई कि उसने अपने पुत्र को उससे पृथक् रखने के लिए झूठ बोला है। उसने एक क्षण में अपने व्यवहार का निश्चय कर लिया और कह दिया। "हाँ, मेरी नानी जी आई थीं और एकाएक उनका मुझको ले चलने का विचार हो गया। मैं कल ही लौटी हूँ। यहाँ आकर पता चला कि आप वियाना जा रहे हैं। इसलिए आपसे मिलने यहाँ चली आई हूँ।"

"कितना अच्छा होता यदि तुम मेरे साथ चल सकतीं।"

"परन्तु अब इतनी जल्दी तो पासपोर्ट बन नहीं सकता।" अनिमा ने उसकी माँ की ओर घृणा की दृष्टि से देखते हुए कहा। गिरीश की माँ की आँखों से झर-झर आँसू बह रहे थे। अनिमा ने अपना कहना जारी रखा, "मुझको बहुत शोक है कि मैं आपकी सेवा करने के लिए साथ नहीं जा सकी। अपना समाचार भिजवाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का यत्न करिएगा और मैं यहाँ आपकी प्रतीक्षा करूँगी।"

गिरीश ने टटोलते हुए अपना हाथ अनिमा के सिर पर रख दिया और आर्द्रता के भाव में सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "पत्र नहीं लिखूँगा। स्वयं लिख नहीं सकता और किसी दूसरे से लिखाना नहीं चाहता। तुम्हारा भेजा पत्र भी तो पढ़ नहीं सकूँगा। अतएव अब चलता हूँ। आशा करता हूँ कि याद रखोगी।" इतना कह उसने अनिमा के हाथ को अपने दोनों हाथों में दबाकर छोड़ दिया और अपने पिताजी का हाथ पकड़कर हवाई जहाज की ओर चल पड़ा।

अनिमा को गिरीश की माँ का झूठ बोलना बहुत बुरा प्रतीत हुआ। फिर भी उसकी इच्छा नहीं हुई कि माँ-पुत्र में वैमनस्य उत्पन्न कर दे। गिरीश आँखों के ऑपरेशन के लिए और उसकी माँ उसकी सेवासुश्रूषा के लिए साथ जा रही थी। दोनों में मनमुटाव हो जाने से गिरीश को ही हानि थी।

जब पिता-पुत्र आगे निकल गए तो गिरीश की माँ ने अनिमा को पीछे रोक लिया। जब वे आवाज सुनने की सीमा से दूर निकल गए तो उसकी माँ ने कहा, "अनिमा! मैं तुम्हारी कृतज्ञ हूँ और हृदय से धन्यवाद करती हूँ।"

अनिमा की आँखों से भी आँसू टपकने लगे थे और उसके मुख से केवल यह उत्तर निकला, "क्या लाभ होगा इससे?"

उसी दिन सायंकाल अनिमा ने कलकत्ता छोड़ दिया। उसका ननिहाल दिल्ली में था जरूर, परन्तु वे इतने गरीब हो गए थे कि जब से अनिमा और उसकी माँ वहाँ से गए थे तब से न तो कोई उनको मिलने गया था और न ही कोई चिट्ठी-पत्री आती-जाती थी। अनिमा जब दिल्ली ननिहाल में पहुँची तो सब अचम्भे में उसका मुख देखते रह गए। उसकी नानी थी, नाना था। दो मामा-मामियाँ और उनके बच्चे थे। सब मिलकर ग्यारह प्राणी थे। अब खाने को एक मुख और आता देख कोई नहीं जानता था कि क्या कहे।

सबसे पहले नानी ने मुख खोला, "अनिमा! तुम अब काफी बड़ी हो गई हो। तुम्हारा विवाह नहीं हुआ अभी?"

"माँ जी नहीं!" अनिमा ने वास्तविक बात समझते हुए कहा, "मैं यहाँ केवल छः फीट भूमि रात को सोने को चाहती हूँ। इससे अधिक आप पर बोझा नहीं डालूँगी।"

नाना ने इस बात की कटुता का अनुभव कर रहा, "नहीं बेटी। यह बात नहीं। जैसा हम खाते-पीते हैं, वैसा तुम भी खा-पी सकती हो। हम इतने गए-गुजरे नहीं कि दो वक्त अपनी बेटी को रोटी भी न दे सकें।"

अनिमा एक बिस्तर ही साथ लेकर आई थी। सो उसने अपने नाना के कमरे में एक कोने में रख दिया। अगले दिन से उसने नौकरी ढूँढ़नी आरम्भ कर दी। अपने घर का सब बचा हुआ और सामान के बेचने से प्राप्त, धन लेकर आई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसको उसने सेविंग बैंक में हिसाब खोलकर जमा करा दिया। एक हजार से ऊपर रुपया था। शोर्टहैंड और टाईप करने का काम जानने से नौकरी पाने में कठिनाई नहीं हुई।

उसे दिल्ली में आये अभी एक सप्ताह भी नहीं हुआ था कि अनिमा ने एक सायंकाल अपने नाना को बताया कि उसे 'बनारसी दास एण्ड सन्स' कम्पनी में एक सौ पचास रुपया मासिक की नौकरी मिल गई है। नाना ने उसके सिर पर हाथ फेरकर आशीर्वाद देते हुए पूछा, "यह कम्पनी कहाँ है बेटी !"

"नयी दिल्ली में बारहखम्भा सड़क पर एक ठेकेदार हैं। कल उनका इश्तहार हिन्दुस्तान समाचार-पत्र में पढ़ा था। आज गई तो उन्होंने परीक्षा ली और रख लिया है।"

नाना को तो खुशी हुई ही साथ ही दोनों मामियों के टेड़े हुए मुख भी सीधे हो गए। बड़ी, जिसका नाम सन्त कुमारी था इतने दिन के पश्चात् उसके पास आकर बैठी और घण्टा-भर बातें करती रही। छोटी मामी प्रकाशवती जिसकी पकी रोटी उसके नाना, नानी और वह स्वयं इतने दिन खाती रही थी, उसकी ओर देखते समय माथे पर त्यौरी चढ़ा लेती थी, आज हँसकर बोली। अनिमा सब बात समझती थी। उसको मालूम हो चुका था कि उसके बड़े मामा केवल एक सौ दस रुपये महीना वेतन पाते हैं और उसके तीन बच्चे हैं। वे अपने पिता को पन्द्रह रुपया महीना देते हैं और शेष में बहुत कठिनाई से खाना-पीना चलता है। छोटा मामा पौने दो सौ वेतन पाता था। वह अपने माता-पिता को खाने को भोजन देता था। छोटी मामी बहुत फिजूलखर्च थी। इससे वेतन अधिक और बच्चे कम होने पर भी उसके पास बचता कुछ नहीं था।

अगले दिन अनिमा ने कुछ रुपये बैंक से निकलवाकर छोटी मामी के हाथ पर रखते हुए कहा, "अभी आप तीस रुपये खाने के लिए और दस रुपये मकान के किराए के हिसाब में रख लीजिए। फिर जो कुछ आवश्यकता होगी बताइएगा। वेतन मिलने पर दे दूँगी।"

मामी ने एक-आध बार न की परन्तु रुपए हाथ में लेते ही आँचल में बाँध लिये। अनिमा के नाना को यह बात पसन्द तो नहीं आई परन्तु अपनी विवशता जान चुप रहा।

अनिमा अब नित्य नौकरी पर जाने लगी थी। प्रातः पाँच बजे उठकर स्नानादिक से छुट्टी पा चौका-बासन में लग जाती। ठीक साढ़े आठ बजे भोजन तैयार कर मामा को खिला और स्वयं खाकर नौ बजे काम पर जाने को तैयार हो जाती।

काम से सायं पाँच बजे वापस आती थी और फिर बच्चों को पढ़ाई कराने लग जाती थी। रात खाना उसकी मामी पकाती थी। रात को दस बजे सोकर अगले दिन फिर पाँच बजे प्रातः उठना और सदा की भाँति काम करना होता था। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार दिन व्यतीत हो रहे थे। अब उसने एक बाईसिकल खरीद ली थी, जिस पर वह अपने घर से नयी दिल्ली में काम पर जाया करती थी।

नवम्बर के दिन थे और गरम सूट पहनकर अनिमा बाईसिकल पर सवार, दरियागंज से बारहखम्भा रोड की ओर आ रही थी, कि एक तांगे में बैठे चेतनानन्द ने उसे पहचान लिया और ताँगा खड़ा कर लपककर उतर उसकी बाईसिकल को रोक खड़ा हो गया। अनिमा बाईसिकल से नीचे उतर, नमस्कार कर, पूछने लगी, "आप यहाँ कैसे घूम रहे हैं ?"

चेतनानन्द ने उत्तर देने के स्थान पर अपनी बात कह दी, "आप कलकत्ता से आईं तो मिलकर भी नहीं आईं। आपका धन्यवाद करने के लिए आपके मकान पर पहुँचा तो पता मिला कि आपके रहने का मकान जलकर भस्म हो चुका था। एक दिन सुधीर बाबू से भेंट हो गई। उनसे पता चला था कि आप दिल्ली में हैं। मुझे दिल्ली में आये तीन दिन हो चुके हैं। मुझको पूर्ण आशा थी कि आपसे चलते-फिरते अवश्य कहीं भेंट हो जावेगी। मेरा अनुमान ठीक ही निकला है। बताइए आप कहाँ रहती हैं ?"

"सुधीर बाबू ने क्या यह नहीं बताया कि पिताजी का देहान्त हो गया है और गिरीश बाबू की आँखें जाती रही हैं ?"

"बताया था।"

"इस कारण वहाँ मेरा रहना असम्भव हो गया। यहाँ एक ठिकाना है, इस कारण यहाँ आ पहुँची हूँ। आप यहाँ कब तक रहिएगा ?"

"अपने विचार से तो सदैव के लिए रहने आया हूँ। मैंने नौकरी छोड़ दी है।"

"नौकरी छोड़ दी है ! क्यों ?"

"मेरे मस्तिष्क में यह बात बैठ गई है कि बंगाल की सरकार शत्रु-जाति की सरकार है। मैं उसमें नौकरी नहीं कर सकता।"

अनिमा यह सुन गम्भीर विचार में पड़ गई। उसने अधिक गहराई में जाने की आवश्यकता नहीं समझी। इससे बात बदल दी, "नसीम बहिन साथ आई हैं क्या ?"

"नहीं। उनका कहना है कि वहाँ तो मकान मिला है। यहाँ मैं मकान और काम का प्रबन्ध कर लूँ तो वे आ जावेंगी।"

"मैंने सुना है कि उसके भाई यहाँ रहते हैं।"

"हाँ, परन्तु वह अपने भाई के पास रहना नहीं चाहती।"

"विचित्र है ! मैं तो अपने नाना के पास रहने आ गई हूँ।"

"अनिमा देवी ! उसमें और आपमें अन्तर है न।"

"मैं अब काम पर जा रही हूँ। आपसे फिर कहाँ भेंट होगी ?"

"सायं काल छः बजे। मैं रायल होटल में ठहरा हूँ। कमरा नम्बर सोलह है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छी बात है। आशा करती हूँ कि आज ही आपसे भेंट होगी।"

अनिमा नसीम के अपने पति के साथ दिल्ली न आने में विशेष कारण मानती थी। केवल स्थान की असुविधा को वह कुछ अधिक महत्ता नहीं देती थी। इस प्रकार के विचारों में मग्न वह अपने काम पर चली गई।

कार्यालय में बनारसीदास का लड़का इन्द्रजीत काम की देखभाल करता था। वह अनिमा की विशेष प्रतिभा से बहुत प्रभावित हुआ था। इसका परिणाम यह हुआ कि अनिमा दिन-प्रतिदिन बनारसीदास के घरवालों के निकट होती जाती थी। इन्द्रजीत की स्त्री कमला से उसका परिचय हो गया और दोनों परस्पर मिलती भी रहती थीं।

आज जब अनिमा कार्यालय में पहुँची तो उसकी मेज पर एक निमन्त्रण-पत्र पड़ा दिखाई दिया। निमन्त्रण इन्द्रजीत की स्त्री कमला की ओर से था। लिखा था, पिताजी के मित्र और लाहौर के प्रसिद्ध रईस लाला जीवनलाल की पुत्री रेवा देवी अपने पति सहित हमारे यहाँ चाय पर आ रही हैं। अतएव अनिमा देवी से भी प्रार्थना है कि सायं चार बजे चाय-पार्टी में सम्मिलित होकर अनुग्रहीत करें।"

अनिमा देवी न नहीं कर सकी। उसका विचार था कि इस चाय-पार्टी में उसका जाना एक व्यावहारिक-सी बात है। वास्तव में कमला देवी का आशय भी ऐसा ही था।

महेश और रेवा एक मास के लिए लाहौर से बाहर घूमने निकले हुए थे। उन का विचार था कि दिल्ली, अजमेर, चित्तौड़, बम्बई, नासिक, मद्रास, रामेश्वर इत्यादि स्थानों पर भ्रमण कर दिसम्बर मास के अन्त तक लाहौर लौट जावेंगे। सब स्थानों पर लाला जीवनलाल के परिचित लोग थे और उन सबके लिए महेश परिचय-पत्र लाया था। दिल्ली में वह लाला बनारसीदास के नाम पत्र लाया था। आज की चाय-पार्टी उस पत्र का परिणाम थी। महेश और रेवा नई दिल्ली में मरीना होटल में ठहरे थे।

पौने चार बजे कमला देवी कार्यालय में आकर अनिमा को ले गई। कार्यालय घर के एक भाग में ही था। चार बजे रेवा और महेश आये। इन्द्रजीत और बनारसीदास भी इस समय वहाँ आ गए। कोठी के ड्राइंग-रूम में चाय-पार्टी का आयोजन था। लाला बनारसीदास रेवा को तो जानते थे परन्तु महेश को उसने पहली बार ही देखा था। इस कारण उसका परिचय इस पार्टी में एक मुख्य बात हो गई। कमला और अनिमा रेवा को एक ओर को लेकर बैठ गईं।

कमला ने अनिमा का परिचय रेवा से कराया। "ये हैं अनिमा देवी, हमारे कार्यालय में स्टेनो-टाइपिस्ट। बहुत योग्य और समझदार काम करने वाली हैं।"

रेवा ने हाथ जोड़कर नमस्ते कर दी। नमस्ते करते समय जब अनिमा से उस की आँखें मिलीं तो उसको पता चल गया कि यह कोई साधारण लड़की नहीं। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार दिन व्यतीत हो रहे थे। अब उसने एक बाईसिकल खरीद ली थी, जिस पर वह अपने घर से नयी दिल्ली में काम पर जाया करती थी।

नवम्बर के दिन थे और गरम सूट पहनकर अनिमा बाईसिकल पर सवार, दरियागंज से बारहखम्भा रोड की ओर आ रही थी, कि एक तांगे में बैठे चेतनानन्द ने उसे पहचान लिया और ताँगा खड़ा कर लपककर उतर उसकी बाईसिकल को रोक खड़ा हो गया। अनिमा बाईसिकल से नीचे उतर, नमस्कार कर, पूछने लगी, "आप यहाँ कैसे घूम रहे हैं ?"

चेतनानन्द ने उत्तर देने के स्थान पर अपनी बात कह दी, "आप कलकत्ता से आईं तो मिलकर भी नहीं आईं। आपका धन्यवाद करने के लिए आपके मकान पर पहुँचा तो पता मिला कि आपके रहने का मकान जलकर भस्म हो चुका था। एक दिन सुधीर बाबू से भेंट हो गई। उनसे पता चला था कि आप दिल्ली में हैं। मुझे दिल्ली में आये तीन दिन हो चुके हैं। मुझको पूर्ण आशा थी कि आपसे चलते-फिरते अवश्य कहीं भेंट हो जावेगी। मेरा अनुमान ठीक ही निकला है। बताइए आप कहाँ रहती हैं ?"

"सुधीर बाबू ने क्या यह नहीं बताया कि पिताजी का देहान्त हो गया है और गिरीश बाबू की आँखें जाती रही हैं ?"

"बताया था।"

"इस कारण वहाँ मेरा रहना असम्भव हो गया। यहाँ एक ठिकाना है, इस कारण यहाँ आ पहुँची हूँ। आप यहाँ कब तक रहिएगा ?"

"अपने विचार से तो सदैव के लिए रहने आया हूँ। मैंने नौकरी छोड़ दी है।"

"नौकरी छोड़ दी है ! क्यों ?"

"मेरे मस्तिष्क में यह बात बैठ गई है कि बंगाल की सरकार शत्रु-जाति की सरकार है। मैं उसमें नौकरी नहीं कर सकता।"

अनिमा यह सुन गम्भीर विचार में पड़ गई। उसने अधिक गहराई में जाने की आवश्यकता नहीं समझी। इससे बात बदल दी, "नसीम बहिन साथ आई हैं क्या ?"

"नहीं। उनका कहना है कि वहाँ तो मकान मिला है। यहाँ मैं मकान और काम का प्रबन्ध कर लूँ तो वे आ जावेंगी।"

"मैंने सुना है कि उसके भाई यहाँ रहते हैं।"

"हाँ, परन्तु वह अपने भाई के पास रहना नहीं चाहती।"

"विचित्र है ! मैं तो अपने नाना के पास रहने आ गई हूँ।"

"अनिमा देवी ! उसमें और आपमें अन्तर है न।"

"मैं अब काम पर जा रही हूँ। आपसे फिर कहाँ भेंट होगी ?"

"सायं काल छः बजे। मैं रायल होटल में ठहरा हूँ। कमरा नम्बर सोलह है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छी बात है। आशा करती हूँ कि आज ही आपसे भेंट होगी।"

अनिमा नसीम के अपने पति के साथ दिल्ली न आने में विशेष कारण मानती थी। केवल स्थान की असुविधा को वह कुछ अधिक महत्ता नहीं देती थी। इस प्रकार के विचारों में मग्न वह अपने काम पर चली गई।

कार्यालय में बनारसीदास का लड़का इन्द्रजीत काम की देखभाल करता था। वह अनिमा की विशेष प्रतिभा से बहुत प्रभावित हुआ था। इसका परिणाम यह हुआ कि अनिमा दिन-प्रतिदिन बनारसीदास के घरवालों के निकट होती जाती थी। इन्द्रजीत की स्त्री कमला से उसका परिचय हो गया और दोनों परस्पर मिलती भी रहती थीं।

आज जब अनिमा कार्यालय में पहुँची तो उसकी मेज पर एक निमन्त्रण-पत्र पड़ा दिखाई दिया। निमन्त्रण इन्द्रजीत की स्त्री कमला की ओर से था। लिखा था, पिताजी के मित्र और लाहौर के प्रसिद्ध रईस लाला जीवनलाल की पुत्री रेवा देवी अपने पति सहित हमारे यहाँ चाय पर आ रही हैं। अतएव अनिमा देवी से भी प्रार्थना है कि सायं चार बजे चाय-पार्टी में सम्मिलित होकर अनुग्रहीत करें।"

अनिमा देवी न नहीं कर सकी। उसका विचार था कि इस चाय-पार्टी में उसका जाना एक व्यावहारिक-सी बात है। वास्तव में कमला देवी का आशय भी ऐसा ही था।

महेश और रेवा एक मास के लिए लाहौर से बाहर घूमने निकले हुए थे। उन का विचार था कि दिल्ली, अजमेर, चित्तौड़, बम्बई, नासिक, मद्रास, रामेश्वर इत्यादि स्थानों पर भ्रमण कर दिसम्बर मास के अन्त तक लाहौर लौट जावेंगे। सब स्थानों पर लाला जीवनलाल के परिचित लोग थे और उन सबके लिए महेश परिचय-पत्र लाया था। दिल्ली में वह लाला बनारसीदास के नाम पत्र लाया था। आज की चाय-पार्टी उस पत्र का परिणाम थी। महेश और रेवा नई दिल्ली में मरीना होटल में ठहरे थे।

पौने चार बजे कमला देवी कार्यालय में आकर अनिमा को ले गई। कार्यालय घर के एक भाग में ही था। चार बजे रेवा और महेश आये। इन्द्रजीत और बनारसीदास भी इस समय वहाँ आ गए। कोठी के ड्राइंग-रूम में चाय-पार्टी का आयोजन था। लाला बनारसीदास रेवा को तो जानते थे परन्तु महेश को उसने पहली बार ही देखा था। इस कारण उसका परिचय इस पार्टी में एक मुख्य बात हो गई। कमला और अनिमा रेवा को एक ओर को लेकर बैठ गईं।

कमला ने अनिमा का परिचय रेवा से कराया। "ये हैं अनिमा देवी, हमारे कार्यालय में स्टेनो-टाइपिस्ट। बहुत योग्य और समझदार काम करने वाली हैं।"

रेवा ने हाथ जोड़कर नमस्ते कर दी। नमस्ते करते समय जब अनिमा से उस की आँखें मिलीं तो उसको पता चल गया कि यह कोई साधारण लड़की नहीं। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे पूर्व परिचय पूछने लगी। अनिमा ने संक्षेप में अपना परिचय दे दिया। जब उसने अपने पिता का नाम बताया तो बनारसीदास, जो मेज के दूसरी ओर बैठा हुआ था, कान खड़े कर अनिमा की बात सुनने लगा। जब अनिमा अपनी कहानी सुना चुकी तो बनारसीदास ने पूछ लिया, "अनिमा देवी! आप गुरु धीरेन्द्र जी को जानती हैं?"

अनिमा देवी ने अचम्भे में लालाजी का मुख देखा। पश्चात् कुछ सोचकर कहा, "हाँ। एक गुरु धीरेन्द्र जी मेरे पिता के सहयोगी थे। उनका देहान्त हो गया है।"

"कब?"

"आज पाँच मास हो चुके हैं।"

"आप शंकर पण्डित को जानती हैं क्या?"

"जी हाँ, उनके भी दर्शन किए हैं।"

"और शिशिर कुमार?"

"उनका भी देहान्त हो गया है।"

"तो आप अपने नाना के यहाँ रहती हैं?" बनारसीदास ने गम्भीर हो पूछा।

"मैं नहीं जानती थी कि आप मेरे विषय में इतना कुछ जानते हैं।"

"आपके विषय में तो नहीं परन्तु आपके पिताजी को जानता था। उनके कार्य को जानता था और उनके मित्रों को जानता था। परन्तु अब तो समय बदल गया है।"

अनिमा देवी विस्मय में लालाजी का मुख देखती रह गई। रेवा ने उसका ध्यान तोड़कर पूछा, "आपके पिता कोई धनी-मानी आदमी रहे होंगे।"

"हम बहुत गरीब आदमी थे। पिताजी का काम छूटे तीन वर्ष से ऊपर हो चुके थे और हमारा निर्वाह मेरे वेतन पर चलता था। मेरी नौकरी भी, वहाँ कलकत्ता में, छूट चुकी थी। जब उनका देहान्त हो गया तो मेरे लिए कलकत्ता में रहना कठिन हो गया। मैं अपने घर का सब सामान बेचकर यहाँ आ सकी थी।"

"अब यहाँ तो कोई कष्ट नहीं होगा?" रेवा ने पूछा।

"अब तो मैं अकेली हूँ। एक सौ पचास रुपये मासिक यहाँ से मिल जाते हैं। निर्वाह होकर भी कुछ बच जाता है।"

बनारसीदास महेश से व्यापार की बातें करने लगा था। इन्द्रजीत रेवा से बातें कर रहा था। चपरासी 'ईवनिंग न्यूज' पत्र दे गया। पत्र लेकर बनारसीदास ने पढ़ना आरम्भ कर दिया। उसमें एक समाचार मिला। समाचार का शीर्षक था, 'भारत के डिप्टी-प्रधान पर मुसलमान गुण्डों का आक्रमण'। बनारसीदास ने इस समाचार को ऊँचे-ऊँचे पढ़ना आरम्भ कर दिया। आगे समाचार था, "जब मुस्लिम लीग के नेता शपथ उठाने वाइसराय के महल में जा रहे थे तो पण्डित जवाहरलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेहरू भी उस अवसर पर उपस्थित होने के लिए वहाँ गए। वह अपनी मोटरगाड़ी बाहर छोड़कर जब भीतर गए तो कुछ मुस्लिम गुण्डों ने पण्डितजी की गाड़ी पर जलते सिगरेट और दियासलाई फेंकी, जिससे पण्डितजी की मोटर की गद्दियाँ जल गईं। जब पण्डितजी शपथ लेने की रस्म से लौटे तो मुसलमान गुण्डों ने उन पर पत्थर फेंके। यदि सेक्रेटेरिएट के हिन्दू क्लर्क, जो तमाशा देखने निकल आये थे, उन मुसलमानों से न भिड़ जाते तो झगड़ा बढ़ जाने की सम्भावना थी।"

इस समाचार को सुन सब विस्मय में एक-दूसरे का मुख देखने लगे। बनारसीदास ने कहा, "मुसलमानों का बहुत साहस बढ़ गया है।"

"पर प्रश्न तो यह है कि क्या वहाँ पुलिस उपस्थित नहीं थी? और यदि थी तो उसने कोई गिरफ्तारी की है अथवा नहीं।" अनिमा देवी ने पूछा।

"समाचार-पत्र में ऐसी कोई बात नहीं लिखी।"

"मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह भी डायरैक्ट ऐक्शन का एक अंग ही है।"

"हो सकता है।" बनारसीदास का उत्तर था। इसी समय एक खद्दरधारी लम्बे छरहरे शरीर के व्यक्ति, कमरे में प्रवेश करते हुए बोले, "हो क्या सकता है, असलियत में यही बात है।"

बनारसीदास ने आने वाले व्यक्ति को देखा तो प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, "ओह! सआदत हुसैन साहब! सुनाओ भाई कहाँ रहते हो? कैसे आना हुआ है?"

"यही, जिस विषय में आप बात कर रहे थे। लालाजी, बात यह है कि कल मुस्लिम लीग के डायरैक्ट ऐक्शन का एक महान दिन है, ऐसा हमें मालूम हुआ है। कल केन्द्रीय असेम्बली की मीटिंग आरम्भ होगी और सुना है कि मुसलमान असेम्बली हॉल के सामने प्रदर्शन करेंगे। उस समय यदि अवसर मिल गया तो पण्डितजी पर हाथ सफा करने का यत्न किया जावेगा।"

"यह हो सकता है।" लाला बनारसीदास ने कहा। "परन्तु हजरत! इस विषय की चर्चा करने के लिए तो आपको डिप्टी कमिश्नर साहब के पास जाना चाहिए। यहाँ आने से क्या लाभ होगा?"

"डिप्टी-कमिश्नर तो अंग्रेज है न। मैं उसके पास गया था। हजरत कहते थे कि उसे पक्का विश्वास नहीं होता। मैंने कहा कि पुलिस का प्रबन्ध तो हो ही जाना चाहिए। तो जनाब फरमाने लगे कि क्यों? मैं उसे प्रबन्ध के मामले में सबक सिखाने आया हूँ? नतीजा यह हुआ कि मैं अपना-सा मुख लेकर चला आया हूँ।"

"तो आप होम-मेम्बर को टेलीफोन कर दीजिए न।"

"कर दिया है और वह कहते हैं चीफ-कमिश्नर को कहूँ।"

"गजब है। कैसे आदमियों से वास्ता पड़ा है! हिन्दुस्तान पर राज्य करने बैठे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं या बच्चों का खेल खेल रहे हैं। अरे बाबा, ऐसे आदमी को तो हवालात में रात गुजारनी चाहिए। देखो न, आज पण्डितजी की गाड़ी पर पत्थर फेंके गए हैं और समीप खड़े पुलिस वाले किसी को भी पकड़ नहीं सके। अगर कोई आदमी हकूमत करने वाला होता तो आज पुलिस के कई अफसर डिसमिस हो चुके होते। जब अपने ही विषय में ये लोग इतने अयोग्य सिद्ध हो रहे हैं तो प्रजा की ये क्या रक्षा करेंगे?"

"पर लालाजी ! उनकी नीति की नुक्ताचीनी करने की जगह क्या यह अच्छा न होगा कि हम सोचें कि इस मामले में हम कुछ कर सकते हैं या नहीं?"

"हम क्या कर सकते हैं? हमारे पास क्या अधिकार है और फिर हमारी शक्ति ही क्या है?"

"मैं तो निराश होकर घर जा पहुँचा था, परन्तु वीणा ने मुझे आपके पास भेजा है। उसका कहना है कि आप आर्यसमाजी हैं। आप हिन्दूसभा के भी कुछ हैं। आप यदि चाहें तो अपने छुपे हाथों से पण्डितजी की जान की रक्षा कर सकते हैं।"

इस प्रस्ताव से लाला बनारसीदास गम्भीर विचार में पड़ गए। उन्हें इस प्रकार चुप देख सआदत हुसैन ने कहा, "आपके पास एक ऐसी संस्था है जिसने एक बार एक हिन्दू लड़की को, जिसे कुछ मुसलमान गुण्डे उड़ाकर लाहौर की एक दर-गाह में ले गए थे, एक रात के अन्दर न सिर्फ ढूँढ़ निकाला था बल्कि उसे छुड़ाकर दिल्ली पहुँचा दिया था।"

"हाँ, आप सत्य कहते हैं। परन्तु अब वह नहीं है। वह हिन्दू-मुसलमान मित्रता की चट्टान से टकराकर चकनाचूर हो गई है।"

"क्या मतलब? क्या यह संस्था अब नहीं है?"

कुछ सोचकर बनारसीदास ने कहा, "कम-से-कम वह मेरे अधीन नहीं है। और मैं नहीं कह सकता कि हिन्दू-मुसलमान के झगड़े में वह अब कोई हस्तक्षेप करेगी या नहीं?"

"लेकिन एक हिन्दू लड़की को मुसलमानों के हाथ से छुड़ाने से क्या पण्डितजी की जान बचानी ज्यादा फिरकेदाराना बात है?"

"मैं तो नहीं समझता, मगर जिसके अधीन वह है, उसके समझने की बात है।"

"तो वह कौन है?"

"मैं उससे पूछकर बता सकता हूँ। मेरा उसमें अब कोई अधिकार नहीं है।"

इतना कह बनारसीदास उठकर साथ के कमरे में, जहाँ टेलीफोन रखा था, चला गया। सआदत हुसैन भी उनके पीछे कमरे से निकल गया। उनकी बातें सुन और लाला बनारसीदास के मुख से गुरु धीरेन्द्र का नाम सुन अनिमा समझ गई कि स्वराज्य-संस्थापन-समिति की बात हो रही है। उसे यह जानकर कि बनारसीदास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी इस संस्था से सम्बन्ध रखते हैं, बहुत प्रसन्नता हुई। वह अपने इनके यहाँ नौकरी पाने के संयोग पर बहुत विस्मय करने लगी। चाय समाप्त हो चुकी थी और इधर-उधर की बातें हो रही थीं। अनिमा को अपने विचारों में खोया हुआ देख कमला ने पूछ लिया, "अनिमा देवी ! क्या विचार कर रही हो ?"

"मैं सोच रही थी कि कौन-सी ऐसी संस्था है जो एक ही रात में किसी लड़की को ढूँढ़कर लाहौर से दिल्ली में पहुँचाने की शक्ति रखती है।"

कमला हँस पड़ी और बोली, "छोड़ो, इस बात को अनिमा। यह रेवाजी कहती हैं कि आप अति दृढ़ निष्ठावाली लड़की प्रतीत होती हैं।"

"रेवा बहिन की बहुत कृपा है जो ऐसा समझती हैं। वास्तव में मैं एक निर्धन परिवार की लड़की हूँ। मुझे दृढ़ संकल्प वाली होना ही चाहिए, अन्यथा जीना ही दुर्भर हो जावे।"

"इसमें निर्धनता अथवा साधन-सम्पन्नता की बात नहीं।" रेवा ने कहा, "मैं तो आपको दृढ़-चिबुक देखकर कह रही हूँ। मैं फिजिओनौमी का अध्ययन कर चुकी हूँ और मेरा अनुमान है कि अनिमा बहिन सहस्रों लोगों के सामने भी अपने निश्चय और विश्वास से डिग नहीं सकतीं।"

इस समय बनारसीदास सआदत हुसैन के साथ कमरे में आ गया। लालाजी ने उसे चाय पर निमन्त्रित करते हुए कहा, "अब चिन्ता की आवश्यकता नहीं। जब शेखरानन्दजी ने कहा है तो वह कर दिखाएँगे।"

: २ :

सआदत हुसैन ने जल्दी-जल्दी एक प्याला चाय पी और यह कहकर कि वे अपने साथियों की चिन्ता कम करने जा रहा है, चला गया। उसके जाने के पश्चात् कमला ने पूछ लिया, "तो शेखरानन्दजी मान गए हैं ?"

"बड़ा मजा हुआ।" लालाजी ने कहा, "शेखरानन्दजी कहने लगे, 'सआदत हुसैन साहब ! वे हजारों वालंटियर, जो अंग्रेजी सरकार की जेलें भर देते थे, अब कहाँ हैं ?' वे बोले, 'वे तो लड़ना नहीं जानते। साथ ही यदि कांग्रेस के वालंटियर लड़ने लगे तो महात्माजी नाराज हो जावेंगे। उनका तो कहना है कि स्वराज्य मिल ही इसलिए रहा है कि कांग्रेस ने अहिंसा की नीति का अवलम्बन किया है'।"

अनिमा की हँसी निकल गई। रेवा विस्मय में उसकी ओर देखने लगी। बनारसीदास भी हँस रहा था। अनिमा ने अपने हंसने का कारण बताते हुए कहा, "रेवा बहिन ! ये अहिंसा के देवता वास्तव में भीरुता की मूर्ति हैं। जब भी कभी कहीं मरने की आशंका होती है तो ये महात्माजी की ओट में छुप जाते हैं। ये लोग अपने पाप-कर्मों का बोझा दूसरों पर लादने में बहुत चतुर हैं।"

बनारसीदास ने अनिमा का समर्थन करते हुए कहा, "देखो, बेटी कमला ! अकर्मण्यता को वैराग कहने वाले संसार में कम नहीं हैं। इसी प्रकार विवशता को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहिंसा का नाम देने वाले भी बहुत हो गए हैं। दोनों प्रकार के लोग महापातकी हैं। ये लोग यह तो चाहते हैं कि इनका नेता बच जाए, परन्तु यह भी चाहते हैं कहीं खून-खराबा हो जाए तो कांग्रेस का नाम न लगे।

"फिर भी शेखरानन्द ने कहा है कि पंडितजी के जीवन और मान की रक्षा तो करनी ही है, चाहे कुछ भी हो।"

अनिमा ने कहा, "यह तो ठीक ही है परन्तु कलकत्ता और नोआखाली में मुसलमानों का व्यवहार देखकर भी कांग्रेसी लीग की सहायता करने वालों को राष्ट्रवादी कहते हैं और इनको भी मुसलमानों के हाथ से बचाने का यत्न करने वालों को ये साम्प्रदायिक कहेंगे।"

सत्य ही मुसलमानों ने शरारत करने का विचार कर रखा था। सआदत हुसैन भी असेम्बली का एक सदस्य था। यद्यपि शेखरानन्द ने उसे वचन दे रखा था कि वह पंडितजी के जीवन और मान की रक्षा करेगा, फिर भी सआदत हुसैन घबराया हुआ, बहुत प्रातः बनारसीदासजी के घर पहुँच गया। वहाँ जाकर लाला जी को विवश कर दिया कि शेखरानन्द को काम की याददाश्त करा दें। लालाजी ने कहा भी कि इसकी आवश्यकता नहीं, परन्तु सआदत हुसैन की घबराहट देख लालाजी ने शेखरानन्द को टेलीफोन कर दिया। शेखरानन्द घर पर नहीं था। उसकी स्त्री ने टेलीफोन में उत्तर दिया कि वे बहुत प्रातःकाल के गये हुए हैं और दोपहर से पूर्व नहीं लौटेंगे।

शेखरानन्द के घर पर न मिलने से सआदत हुसैन की चिन्ता कम नहीं हुई। लाला बनारसीदास उसे घबराया हुआ देख कहने लगे, "आप चिन्ता न करें। वे अवश्य इसी के प्रबन्ध में लगे होंगे।" सआदत हुसैन को इससे संतोष नहीं हुआ। वह यहाँ से विदा होकर कौंसिल-चेम्बर में जा पहुँचा। वहाँ चपरासी झाड़-फूँक कर रहे थे। वह पार्टी रूम में गया। वहाँ भी कोई नहीं था। आधा घंटा तक वह अकेला बेचैन इधर-उधर घूमता रहा। सबसे पहले पार्टी के 'विप' श्री विश्वेश्वरन आए। वह सआदत हुसैन को पार्टी-रूम में घबराए हुए इधर से उधर घूमते हुए देख पूछने लगा, "मालूम होता है कि हालत ठीक नहीं?"

"कह नहीं सकता। डिप्टी कमिश्नर ने तो यह कहकर टाल दिया कि वह अपने काम को मुझसे अधिक अच्छी तरह जानता है। नगर के एक स्वयंसेवक दल वालों ने वचन दिया था, परन्तु अभी तक उनमें से कोई नहीं आया।"

"मैं समझता हूँ कि मुसलमानों के विषय में आपका भ्रम-मात्र भी तो हो सकता है। दिल्ली में ये लोग कोई शरारत करेंगे, मुझे विश्वास नहीं होता।"

"परन्तु आयंगर साहब, मैं पक्के रूप में जानता हूँ कि वे आज शरारत करेंगे। इसमें उनका उद्देश्य वही है जो कलकत्ता में और नोआखली में फसाद करने का था। वे चाहते हैं कि हिन्दुओं को इतना डरा-धमका दिया जाए कि वे उनकी सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँगें मान लें।"

"यह तो ठीक है, परन्तु मैं कहता हूँ कि दिल्ली और बंगाल में बहुत अन्तर है। वहाँ की सरकार बदमाशों की सहायता कर रही थी।"

"और यहाँ की सरकार क्या कर रही है?"

"तो क्या हमारे होम-मेम्बर यहाँ फसाद चाहते हैं?"

"अभी होम-मेम्बर साहब का राज्य नहीं हुआ। यहाँ राज्य चीफ कमिश्नर और डिप्टी कमिश्नर का है। दोनों अंग्रेज हैं और दोनों होम-सेक्रेटरी के अधीन हैं। वह भी अंग्रेज है।"

"खैर, यह तो है ही। पर मैं पूछता हूँ कि क्या आपके पास कोई निश्चित प्रमाण है, जिससे झगड़े की आशंका हो रही है?"

"हाँ, मेरे खानसामे ने बताया है कि उनके पड़ोस की मस्जिद में परसों एक मीटिंग हुई थी, जिसमें उन्होंने यह फैसला किया है कि पंडितजी पर हाथ साफ किया जाए। इसी मतलब से कल उन्होंने यत्न किया था। कुछ हिन्दू क्लर्कों ने उनकी कोशिश पर पानी फेर दिया। उसका कहना है कि आज काम पूरा कर दिया जाएगा। वह बेवकूफ समझता है कि मैं इससे खुश हुआ हूँ।"

इस प्रकार दोनों बातें करते हुए असेम्बली-चेम्बर के बाहर आ गए। वहाँ ड्योढ़ी में खड़े होकर वह लोगों की छोटी-सी भीड़ को, जो इस समय तक एकत्रित हो गई थी, देखने लगे। सआदत हुसैन ने उन लोगों को देखकर कहा, "यह सब मुसलमान हैं। इनमें हिन्दू कोई नहीं और पुलिस वाला भी अभी कोई नहीं आया।"

मिस्टर आयंगर ने हाथ पर बँधी घड़ी देखकर कहा, "साढ़े दस बज गए हैं।"

"यही तो कह रहा हूँ। हिन्दू सेवक दल वालों ने धोखा दिया है।"

इस समय एक भारी शरीर का आदमी, सिर से पाँव तक खद्दर पहने, ताँगे में से अहाते के बाहर ही उतरा और वहीं ठहर गया। मिस्टर आयंगर ने पूछा, "उस आदमी को जानते हो?" इतना कह उसने खद्दरपोश की ओर संकेत कर दिया।

सआदत हुसैन ने उसकी ओर देखकर सिर हिला दिया और कहा, "नहीं, मैं नहीं जानता। देखने से हिन्दू मालूम होता है।"

सेक्रेटेरिएट के कुछ क्लर्क जाते-जाते रुककर तमाशा देखने लगे। इस प्रकार वहाँ खड़े लोगों के दो गिरोह बन गए। ज्यों-ज्यों समय समीप आने लगा, दोनों गिरोह बढ़ने लगे। एक ओर, हाथों में फाइलें लिये हुए क्लर्क मालूम होते थे और दूसरी ओर नगर के बदमाश और कोठियों के खानसामे और बैरे मालूम होते थे। इस परिस्थिति को देख सआदत हुसैन के माथे पर पसीने की बूंदें झलकने लगी थीं। उसने आयंगर को भी दिखाया कि मुसलमानों की भीड़ में कई लोग लाठियाँ लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए थे। एक मुसलमान हाथ में नंगी छुरी लिये दूसरों को दिखा रहा था। यह देख तो आयंगर का दिल भी बैठने लगा। वह यह कह कि भीतर जाकर देखना चाहता है कि कौन-कौन आया है, सआदत हुसैन को वहीं छोड़ भीतर पार्टी-रूम में चला गया। सआदत हुसैन आने वाले सदस्यों से मिल रहा था। इस सब समय उसकी दृष्टि भीड़ की ओर थी। अभी तक पुलिस नहीं आई थी। तमाशा देखने वालों की भीड़ बढ़ रही थी। इस समय तक बीच की सड़क छोड़कर सामने का फुटपाथ लोगों से भर गया था। अभी तक भी भीड़ में दो गिरोह स्पष्ट दिखाई देते थे। ज्यों-ज्यों कांग्रेसी मेम्बर आते थे मुसलमान, 'अल्ला-हू-अकबर' का नारा लगाते थे और हिन्दू खड़े-खड़े 'महात्मा गांधी की जय' कहते थे।

ग्यारह बजने में केवल दस मिनट रह गए थे। इस समय भीड़ एकाएक इतनी बढ़ गई कि लोग सड़क पार कर चेम्बर की ड्योढ़ी में भी एकत्रित हो गए। सआदत हुसैन को यह देख संतोष अनुभव हो रहा था कि हिन्दुओं की संख्या बहुत अधिक हो गई थी। अभी भी पुलिस के दो-तीन कांस्टेबलों के अतिरिक्त कोई नहीं था।

एकाएक मुसलमानों का वह झुण्ड जो सबसे पहले वहाँ पहुँचा था सामने के फुटपाथ को छोड़, सड़क पार कर ड्योढ़ी में घुस आया। ये मुसलमान आगे बढ़ने के लिए यत्न करने लगे। वे हिन्दू क्लर्कों को, जो वहाँ पहले ही खड़े थे, धकेलकर आगे आने लगे। सआदत हुसैन ने देखा कि वह आदमी जो अपने साथियों को छुरी दिखा रहा था, सबसे आगे की पंक्ति में खड़ा है। उसके दोनों हाथ ओवरकोट की जेबों में थे। सआदत हुसैन ड्योढ़ी में खड़ा था परन्तु उसके चारों ओर लोग खड़े हो गए थे और वह दीवार के साथ ठसकर खड़ा, हिल नहीं सकता था।

इतने में मिस्टर लियाकत अली खान की मोटर आई परन्तु वह ड्योढ़ी में खड़ी न होकर असेम्बली-चेम्बर का चक्कर काटकर पिछले दरवाजे की ओर चली गई। इसी समय पंडितजी की मोटर आई और ड्योढ़ी में आकर खड़ी हो गई। 'अल्ला-हू-अकबर' और 'महात्मा गांधी की जै' के नारे लगे। ज्यों ही पंडितजी गाड़ी से निकले कि एक मुसलमान ने हाकी निकाल वार करने के लिए उठाई, परन्तु पीछे से किसी ने हाकी पकड़ ली। पंडितजी सीढ़ियाँ चढ़ने लगे तो छुरे वाले ने अपने कोट की जेब से छुरी पकड़ा हुआ हाथ निकाला और पंडितजी पर लपका, परन्तु पूर्व इसके कि वह एक भी पग आगे बढ़ता, उसी भारी शरीर के खद्दरधारी ने उसका छुरी वाला हाथ पकड़ लिया। इसी समय उसके सिर पर किसी ने हाकी से चोट की और वह घायल हो वहीं लेट गया। इतने में पंडितजी ड्योढ़ी की सीढ़ियाँ चढ़ भीतर जा पहुँचे। ड्योढ़ी में मुक्केबाजी आरम्भ हो गई।

एक-दो मिनट में पाँच-छः आदमी लहू-लुहान हो भीड़ से निकलते दिखाई दिए। इस समय भीड़ तितर-बितर होने लग गई। ठीक इसी समय दो ट्रकों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस वहाँ आ पहुँची। पुलिस को देखते ही लोग भाग खड़े हुए और देखते-देखते चेम्बर के सामने का मैदान खाली हो गया।

सआदत हुसैन चाहता था कि उस भारी शरीर वाले आदमी से, जिसने छुरी वाला हाथ पकड़ा था, मिले, परन्तु जब तक उसके आगे से लोग हटते और वह हिल-डोल सकता, वह खद्दरधारी लापता हो गया था। सआदत हुसैन ड्योढ़ी से बाहर निकल उस आदमी को ढूँढ़ने लगा। उसका कहीं पता नहीं चला।

: ३ :

अनिमा अगले दिन सायंकाल रॉयल होटल में चेतनानन्द से मिलने गई। चेतनानन्द उसकी प्रतीक्षा पहले दिन भी करता रहा था और उस दिन भी कर रहा था। अनिमा देवी को आया देख उसने प्रसन्न होकर कहा, "शुकर है। कल रात के आठ बजे तक बैठा रहा और मैंने मन में यह निश्चय कर लिया था कि जब तक आप नहीं आतीं, नित्य छः बजे से आठ बजे तक आपकी प्रतीक्षा किया करूँगा।"

"बात यह हुई कि कल हमारे लालाजी के लाहौर के एक मित्र, लाला जीवन-लाल जी की पुत्री लालाजी के घर चाय पर आई थी। लालाजी की पुत्रवधू कमला देवी ने मुझे उस पार्टी में सम्मिलित होने के लिए कहा तो मैं इनकार नहीं कर सकी। वहाँ इतनी देर हो गई कि फिर यहाँ नहीं आ सकी।"

चेतनानन्द अपने पिताजी का नाम सुन गम्भीर विचार में पड़ गया। फिर सोचकर बोला, "क्या नाम है उस लड़की का।"

"रेवा देवी!" अनिमा ने चेतनानन्द के मुख पर गम्भीर भाव देखा तो उसने पूछा, "चेतनानन्दजी, क्या बात है? आपका मुख मलिन क्यों हो गया है?"

चेतनानन्द ने गम्भीर भाव में धीरे-धीरे कहा, "वह मेरी सगी बहिन है। उसके साथ उसका पति है क्या?"

"हाँ, महेशचन्द्रजी भी हैं।"

"कहाँ ठहरे हैं?"

"मरीना होटल में।"

कुछ सोच चेतनानन्द अपने स्थान से उठ मैनेजर के कमरे में टेलीफोन करने चला गया। उसके चले जाने पर अनिमा ने उसके कमरे की ओर ध्यान किया। उसने देखा कि एक बिस्तर और एक छोटी-सी अटेची केस के अतिरिक्त और कोई सामान नहीं था। इस सबसे उसके मन में कई प्रकार की आशंकाएँ उठने लगीं। चेतनानन्द ने मैनेजर के कमरे से आकर कहा, "रेवा और महेश अभी आ रहे हैं।"

"कल से दो विचित्र घटनाएँ हुई हैं। एक तो आपकी बहिन के मेरे सम्पर्क में आने की घटना और दूसरे मुझे कल मालूम हुआ है कि लाला बनारसीदास, जिनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम्पनी में मैं नौकरी करती हूँ, मेरे पिताजी को भली-भाँति जानते थे। कल मैं अपना परिचय रेवा देवी को दे रही थी कि लालाजी ने मेरे पिताजी का नाम सुन लिया और लगे अन्य परिचितों का नाम बताने। आज उन्होंने मुझको बुलाकर कहा है कि मैं उनको अपने पितातुल्य ही मानूँ। उन्होंने अपनी पुत्रवधू को बुलाकर भी कह दिया है कि मैं उनके एक परममित्र की लड़की हूँ। आज उनका पोता आकर बोला, "बाबा कहते थे कि तुम मेरी बुआ हो।"

"तो आज हम दोनों के लिए बहुत अच्छा दिन चढ़ा है।"

"खैर यह तो हुआ, पर मैं जो जानने के लिए उत्सुक हो रही हूँ वह है आपके विषय में। आप नसीम बहिन को पीछे क्यों छोड़ आए हैं? और फिर आप उसके भाई के घर क्यों नहीं ठहरे?"

"इसमें विस्मय की कौन-सी बात है, अनिमा देवी! नसीम के बच्चा होने वाला है और उसके लिए इधर-उधर भागना अच्छा नहीं समझा गया। रहा उसके भाई के घर में रहना, जब वह स्वयं अपने भाई के घर नहीं रहना चाहती तो मेरे लिए भी वहाँ जाकर रहना ठीक नहीं रहा।"

"उसके बच्चा होने वाला है? इससे तो और भी आवश्यक था कि वह अपने भाई के यहाँ आ जाती। यहाँ उसकी भाभी है और अन्य स्त्रियाँ हैं। वहाँ वह अकेली है। खैर, छोड़िए इस बात को। आप नहीं बताना चाहते तो न सही। अब बताइए आप यहाँ काम की खोज में क्या कर रहे हैं? यदि आपकी इच्छा हो तो मैं लाला बनारसीदासजी से कहूँ। उनका काम बहुत बड़ा है। वे आपके लिए कुछ तो कर ही सकते हैं।"

चेतनानन्द ने हँसकर अनिमा की बात टाल दी और अपने विषय में कहने लगा, "मैं यहाँ आया तो था वकालत का काम आरम्भ करने के विचार से, परन्तु यहाँ पर कानूनी प्रोफेशन की दुर्गति देख मेरा विचार बदल गया है। कल से मैं सोच रहा हूँ कि अपने पिताजी से क्षमा माँगकर उनकी शरण में चला जाऊँ।"

"तो पिताजी से आपका कुछ झगड़ा था?"

"मुझे अब कहते लज्जा लगती है कि हाँ। मेरा उनसे राजनीति में और हिन्दू संस्कृति के विषय में मतभेद था। यह मतभेद बढ़ता-बढ़ता कलह में बदल गया। अब मुझे अपनी भूल का भास हो रहा है। रेवा और महेश के यहाँ मिल जाने से मेरा पिताजी से क्षमा प्राप्त कर लेना सुगम हो गया है।"

इस आत्मा के विनीत भाव को देख अनिमा के मन में भाँति-भाँति के विचार उठने लगे थे और वह गम्भीर विचारों में डूब गई। चेतनानन्द भी अपने मन में अपने भावों के संचय में लग गया था। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे से बिना बात किए अपने-अपने विचारों में लीन थे कि महेश और रेवा आ पहुँचे। रेवा ने अनिमा को देखा तो विस्मय में उसका मुख देखती रह गई। उसने अनिमा की बाँह में बाँह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डालते हुए कहा, "अनिमा जी ने बताया है कि हम यहाँ हैं ?"

"मुझे क्या मालूम था कि ये आपके भाई हैं। मैंने तो साधारण रूप में बताया था कि हमारे लालाजी के एक मित्र, लाहौर के लाला जीवनलालजी की लड़की दिल्ली में आई हुई है। इस पर ये कहने लगे कि आप इनकी बहिन हैं।"

जब रेवा और महेश बैठ गए तो अनिमा ने जाने की स्वीकृति माँगी। चेतनानन्द ने आग्रह कर कहा, "अनिमा देवी ! तनिक बैठो तो। आपसे मेरी कोई बात छिपी तो है नहीं। और फिर मैं तुम्हारा परिचय इनसे कराना चाहता हूँ।"

"सो तो हो गया है।" रेवा ने कहा, "परन्तु ये यहाँ बैठ सकती हैं।"

"नहीं, अब तो क्षमा करें। मुझे सायं होने से पहले घर पहुँच जाना चाहिए। मैं कहकर नहीं आई।"

अनिमा चली गई। चेतनानन्द ने महेश और रेवा के दिल्ली आने के विषय में पूछा। पिताजी और रेवा के श्वसुर के स्वास्थ्य के विषय में पूछा। इसके उपरान्त महेश और रेवा चेतनानन्द के विषय में, भाभी नसीम के विषय में और उसके काम के विषय में पता करने लगे। चेतनानन्द ने बताया, "यह लड़की, अनिमा देवी मेरे जीवन में क्रान्ति उत्पन्न करने वाली हुई है। यह कलकत्ता में मेरे अधीन 'स्टैनो-टाईपिस्ट' थी। इसने भारत के इतिहास को और फिर कांग्रेस की नीति को ऐसे ढंग से मेरे सामने रखा कि मुझको सब कुछ पहले से उलट दिखाई देने लगा। मुझको नसीम की मुहब्बत और पार्वती से अपना व्यवहार भूल प्रतीत होने लगा। जब मैं इसके कथन पर विचार कर अपने जीवन का निरीक्षण करने लगा तो मेरे ज्ञानचक्षु खुल गए। इसके पश्चात् इसके कहने का प्रमाण मुझे कलकत्ता के हिन्दू-मुस्लिम फसाद के दिनों में मिला। इस लड़की की कर्मनिष्ठा और निर्भयता का परिचय मुझे उन दिनों में पता चला और साथ ही मुझको मुसलमानों (लीगी और नेश्नलिस्ट दोनों) के दृष्टिकोण का ज्ञान हुआ। मैं अब पिताजी से अपने झगड़े में अपने को दोषी समझने लगा हूँ और जब से यहाँ आया हूँ लाहौर जाकर उनके चरणों पर सिर रख उनसे क्षमा माँगने की बात सोच रहा हूँ।"

रेवा ने मुस्कराते हुए पूछा, "तो अब पार्वती और नसीम का स्थान यह अनिमा देवी लेने वाली हैं ?"

"यदि यह हो सकता तो बहुत अच्छा होता। परन्तु रेवा ! तुम इसका इतिहास नहीं जानतीं। यह एक पढ़े-लिखे सुन्दर युवा से प्रेम करती है और उससे विवाह में भारी बाधा होने पर भी उसकी प्रतीक्षा कर रही है। इसके दृढ़ निश्चय को देख मैं इससे प्रेम करने का साहस भी नहीं कर सकता। हमारा सम्बन्ध भाई-बहिन का है। इसी नाते से इसने पिछले फसाद में अपनी जान को खतरे में डालकर मेरी रक्षा की थी। इसका प्रमाण, उसके कंधे पर नसीम की गोली का निशान, सदैव के लिए बन गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अनिमा के विषय में लाला बनारसीदास जी ने भी हमें बहुत-सी बातें बताई हैं। भैया, हमें प्रसन्नता है कि आप अब इस प्रकार सोचने लगे हैं। मुझको पूर्ण विश्वास है कि पिताजी में और आपमें मनमुटाव मिट जावेगा। मैं आपके लाहौर जाने के विषय में उनको आज ही लिख दूँगा।" महेश ने प्रसन्नता प्रकट कर कहा।

"पर नसीम के विषय में क्या होगा? क्या वह पिताजी के घर में रहना पसन्द करेगी?" रेवा का प्रश्न था।

"वह तो शायद मेरे साथ भी रहना पसन्द नहीं करेगी। उसके और मेरे में तलाक हुए बिना नहीं रहेगा। कठिनाई यह है कि उसके बच्चा होने वाला है। इसी कारण वह इस विषय में चुप है और बात इस नौबत तक नहीं पहुँची।"

"तब तो सुलह हो जाने की अभी आशा है।" रेवा का कहना था।

"मैंने उससे झगड़ा नहीं किया। उसे मुझसे निराशा हुई है। उसने मुझको जैसा देखा था, वैसा मैं नहीं रहा। इससे उसे मेरी संगति में मिठास मालूम नहीं होती।"

"उसे आपके बच्चे में मिठास प्रतीत होने लगेगी और वह आपको छोड़ नहीं सकेगी।" महेश ने कहा।

: ४ :

महात्मा गांधी नोआखाली से लौट आए थे। दो मास तक वे उस इलाके में पैदल घूमते रहे जिससे वे वहाँ की देहाती जनता के हृदय तक पहुँच सकें। जहाँ-जहाँ महात्मा जी गए वहीं-वहीं लोगों की भीड़ उनके आगे-पीछे घूमती रही। गाँव-गाँव में 'अल्लाह ईश्वर तेरो नाम' की धुन गाई जाती रही और महात्मा जी के चेले-चपाटों के कथनानुसार महात्मा जी का यह प्रयास अति सफल रहा। देश-भर में महात्मा जी को शान्ति का अवतार कहकर स्मरण किया गया।

जब नयी दिल्ली, भंगी कालोनी में महात्मा जी अपनी राम-धुन गा रहे थे, उनसे दो-अढ़ाई मील के अन्तर पर हिन्दुओं के कत्ले-आम की योजना बन रही थी। मुस्लिम लीग की मीटिंग डायरैक्ट ऐक्शन की सफलता के कारणों पर विचार करने के लिए हो रही थी। मिस्टर जिन्ना प्रधान पद पर सुशोभित थे। भिन्न-भिन्न प्रान्तों से आए हुए लोग अपना-अपना अनुभव बता रहे थे। आसाम से एक दुबला-पतला व्यक्ति महात्मा जी के नोआखाली के दौरे के विषय पर एक प्रश्न के उत्तर में कह रहा था—

"महात्मा जी के वहाँ जाने का नतीजा यह हुआ कि हिन्दू लोग वहाँ से भागने बन्द हो गए हैं। हमारा खयाल था कि नोआखाली के फसाद के बाद वह इलाका हिन्दुओं से बिल्कुल खाली हो जावेगा और अगर पाकिस्तान के मुतल्लिक वोट लिया गया तो वोट हमारे हक में होगा।

"आसाम में बंगाल के मुसलमान न भेजकर बिहार के मुसलमान भेजने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए। बंगाल में मुसलमानों की तादाद हिन्दुओं से कुछ ही ज्यादा है और बिहार में हमारी तादाद कभी भी ज्यादा नहीं हो सकती। वहाँ कुछ और कम हो जाने से नुकसान नहीं हो सकता। बिहार के फसाद से भागे हुए जितने भी लोग इस वक्त कलकत्ता में पड़े हैं, सब आसाम में भेज देने चाहिए। यह हमारी खुशनसीबी है कि हमारे गवर्नर मुसलमान हैं और अगर उन पर ठीक ढंग से दबाव डाला गया तो वे इस मसले में हमारी मदद करेंगे।

"रहा आसाम में डायरैक्ट ऐक्शन। मैं समझता हूँ कि बिहार के वाकयात ने वहाँ के मुसलमानों को ऐसा डरा दिया है कि वहाँ इसका होना निहायत मुश्किल है। मुझको इसके हमारे सूबा में कामयाब होने की भी उम्मीद नहीं···।"

इससे इजलास का प्रधान तिलमिला उठा और बोला, "अगर वहाँ के लोग इतने बुजदिल हैं तो पाकिस्तान में उनका शामिल होना, न होना एक बराबर है। आसाम के मसले को छोड़िए। मैं आपको बम्बई के मुतल्लिक कुछ वाकयात बताना चाहता हूँ। बम्बई, कांग्रेस का मोदी है। कांग्रेस की सब मूवमेंट बम्बई की मदद से चलती रही हैं। इसलिए कांग्रेस को किसी बात के लिए मजबूर करने के लिए बम्बई का गला दबाना जरूरी था। इसलिए बम्बई और अहमदाबाद में डायरैक्ट ऐक्शन जारी कर दिया है। वहाँ पर लगभग एक महीने से कारखाने बन्द पड़े हैं। बम्बई और अहमदाबाद के व्यापारी लोग अभी से कांग्रेस के पीछे पड़ रहे हैं। यह ठीक है कि बम्बई में हमारा भी बहुत नुकसान हुआ है मगर पाकिस्तान बनने में बहुत मदद मिली है। वाइसराय की कौंसिल में आधी सीटों का हमको मिलना, यह बम्बई-अहमदाबाद में डायरैक्ट ऐक्शन का पहला नतीजा है।

"मैं चाहता हूँ कि वहाँ पर इतना फसाद जारी रहना चाहिए जिससे मिलें अभी कुछ देर तक बन्द रह सकें। बम्बई के मिल-मालिक जब देखेंगे कि बिना पाकिस्तान बने उनका कारोबार चल नहीं सकेगा तो वे कांग्रेस को यह मानने पर मजबूर कर देंगे।"

बिहार का एक प्रतिनिधि उठकर कहने लगा, "पंडित जवाहरलाल जी ने बिहार के हिन्दुओं को फसाद करने पर बहुत कोसा है। महात्मा गांधी ने भी उनकी सख्त इल्फाज में निन्दा की है। ऐसे मौके से फायदा उठाकर हमें सरकार की ओर से मजलूम मुसलमानों की मदद करवानी चाहिए।"

"इसका इन्तजाम कर दिया गया है। वाइसराय की कौंसिल में मुस्लिम लीग के नुमाइन्दों ने सबसे पहले इसी बात को छेड़ा था और उन्होंने इस मतलब के लिए पचास लाख मंजूर करवा लिया है।"

इसके बाद मीटिंग में पंजाब का मसला आरम्भ हुआ। पंजाब का नुमाइन्दा उठकर कहने लगा, "हमारे यहाँ तो जब तक यूनियनिस्ट पार्टी कायम है, डायरैक्ट ऐक्शन नहीं हो सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो फिर इस पार्टी को हटा दो।"

"इसी मसले पर गौर करने के लिए तो लिखा था।"

"तो आपकी कोई तजवीज नहीं है ?"

"तजवीज तो है। अगर आप इजाजत दें तो अर्ज करूँ। हमारा कहना है कि यूनियनिस्ट सरकार को बदलने के लिए पुर अमन हलचल करनी चाहिए। जलूस, जलसे और, जैसा कि पंजाब में मशहूर है, 'सिआपे' करने चाहिए। हिन्दू इस एजीटेशन की मुखालफत करेंगे और कुदरती तौर पर हिन्दू-मुसलमान फसाद हो जावेगा। यह हमारे डायरैक्ट ऐक्शन का आगाज होगा।"

"बहुत खूब" प्रधान ने कहा, "मुझको यह बात मंजूर है। शर्त सिरफ यह है कि पंजाब को बिलकुल खाली करवाना है।"

"ऐसा ही होगा। हमारा बस चल गया तो दो महीने में पंजाब में हिन्दू का नाम लेने वाला नहीं रहेगा।"

प्रधान ने कहा, "मेरा ख्याल है कि सिन्ध में अभी हलचल नहीं होनी चाहिए। वहाँ के हिन्दू तो सौ फीसदी मुसलमान हो जावेंगे। उनको निकालने की जरूरत नहीं पड़ेगी। एक बात और याद रखने की है कि सिक्ख कौम हमारी दुश्मन नम्बर एक है। उसके मरद, औरत व बच्चे, हर को मौत के घाट उतारना है। इस कौम का बीजनाश करना है।"

जिस समय यह योजनाएँ बन रही थीं, भंगी कालोनी में महात्मा जी हिन्दुओं को डाँट रहे थे। महात्मा जी की प्रार्थना में किसी ने कुरान के पढ़े जाने पर आपत्ति उठाई थी। कुरान पढ़ने के समय एक औरत ने उठकर कहा था, "यहाँ यह नहीं पढ़ा जाना चाहिए।"

"क्यों ?" महात्मा जी का प्रश्न था।

"यह हिन्दू मन्दिर है और इसमें कुरान का पढ़ना हिन्दू धर्म के विरुद्ध है।"

"मैं ऐसा नहीं समझता।"

"परन्तु हम आपको धर्म में व्यवस्था देने योग्य नहीं मानते।"

"तो इसमें उपस्थित लोगों का मत ले लिया जावे।"

"क्या धर्म के विषय में वोटों से निर्णय हो सकता है ? धर्म-शास्त्रियों को बुलवाकर इस बात में मत लिया जावे।"

"आप मेरे धर्म में हस्तक्षेप कर रही हैं।"

"महात्मा जी ! यह नहीं। आप कोटि-कोटि हिन्दुओं के धर्म में नाजायज दखल दे रहे हैं।"

"मैं तो कुरान सुनूंगा।"

"मैं इसका विरोध करूँगी।"

तभी दस-बारह नवयुवक उठ खड़े हुए और कुरान पढ़े जाने का विरोध करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे। जब यह झगड़ा हो रहा था, महात्मा जी के भक्तों में से कोई उठकर टेलीफोन करने गया और उसने पुलिस को बुला लिया। पुलिस आई और कुरान पढ़ने का विरोध करने वाले युवकों को पकड़कर ले गई और उनके खिलाफ दफा एक सौ सात का मुकदमा चला दिया।

उनके गिरफ्तार होने के पश्चात् महात्मा गांधी ने कुरान पढ़ने के लिए कहा और फिर प्रार्थना में विघ्न डालने वालों को डाँटना आरम्भ कर दिया।

: ५ :

यह वही दिन था जिस दिन चेतनानन्द अपनी बहिन रेवा और महेश से मिला था। अगले दिन चेतनानन्द ने इस घटना को समाचार-पत्र में पढ़ा तो उसका रक्त उबलने लगा। वह सोचता था कि दूसरे कांग्रेसी चाहे कितने भी खराब हों पर महात्मा गांधी तो शान्ति और सत्याग्रह के अनुयायी हैं। उसे पहले तो यह समाचार असत्य ही प्रतीत हुआ। उसने बाजार में जाकर दूसरे समाचार-पत्र खरीदे। सबमें इस समाचार को एक समान लिखा पाकर क्रोध से उतावला हो महात्मा जी के निवास-स्थान पर जा पहुँचा। जाते ही उसने महात्मा जी के आस-पास रहने वाले लोगों से महात्मा जी से भेंट करने की स्वीकृति माँगी। यह सुन महात्मा के प्राइवेट सेक्रेटरी बाहर आ गए और पूछने लगे, "आप कौन हैं?"

चेतनानन्द ने मुलाकात हासिल करने के लिए कह दिया, "मैं बंगाल सरकार का पब्लिसिटी आफिसर हूँ।"

भेंट तुरन्त हो गई। चेतनानन्द देख रहा था कि कई खद्दरधारी वहाँ पर घण्टों से बैठे थे। उन सबको छोड़कर चेतनानन्द को भेंट का अवसर मिल गया।

"आपका इस्म-शरीफ क्या है।" महात्मा जी का पहला प्रश्न था।

"चेतनानन्द।"

"मैंने समझा था कि आप कोई मुसलमान हैं। अच्छा खैर। आप जल्दी करिए, क्या काम है?"

चेतनानन्द इस बात से तो सन्न रह गया। उसने जरा अकड़कर कहा, "यदि मैं मुसलमान होता तो आपको जल्दी नहीं थी? आपको हिन्दू से बात करने में भी दुःख होता है?"

"नहीं! नहीं! यह बात नहीं। आप जानते हैं कि मुझे काम बहुत रहता है। इसलिए आप काम की बात करिए।"

चेतनानन्द ने भी समय व्यर्थ न खोने का विचार कर इस बात को छोड़ दिया और अपने आने का उद्देश्य कहने के लिए जेब से समाचार-पत्र निकालकर महात्मा जी के सम्मुख रखकर पूछा, "क्या यह सत्य है?"

"हाँ, यह सब सत्य है।"

"आपकी प्रार्थना में ये लोग पकड़े गए हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ।"

"इन्होंने किसी को मारा-पीटा तो नहीं था।"

"इन्होंने प्रार्थना में बाधा डाली थी।"

"पर इनके विरुद्ध तो दफा १०७ की कार्रवाई हो रही है।"

"यह देखना मेरा काम नहीं है।"

"पर यह तो अन्याय हो गया है और आपकी प्रार्थना में।"

"मैं क्या कर सकता हूँ? मैं सरकार नहीं हूँ। इन पर कौन-सी दफा लग सकती है, यह देखना मेरा काम नहीं है।"

"पर महात्मा जी! आपकी प्रार्थना में गिरफ्तारियाँ हों और आप सहन करें, यह मेरी समझ में नहीं आ रहा। शायद आप उन युवकों को छुड़ाने के लिए आमरण व्रत रखेंगे?"

महात्मा जी चुप रहे। इसी समय महात्मा जी के प्राइवेट सेक्रेटरी ने चेतनानन्द को कहा, "आपका समय हो गया।"

"पर मैं तो बहुत जरूरी बातचीत करने आया हूँ। मैं चाहता हूँ कि महात्मा जी सरकार के इस अनुचित हस्तक्षेप को हटवाने के लिए व्रत रखें। मैं तो उनके साथ व्रत रखने आया हूँ।"

"पर भाई साहब, सरकार तो अब अपनी है। जब बेगानी थी तब तो सत्याग्रह ही ठीक था परन्तु अब जो कुछ वह कर रही है सब हमारी भलाई के लिए ही है।"

"तब तो और भी जरूरी है कि सत्याग्रह किया जावे। अपनी सरकार तो तुरन्त मान जावेगी। व्रत बहुत लम्बा नहीं चलेगा।"

"पर कोई बात भी तो हो।"

"इससे भी बढ़कर कोई बात हो सकती है क्या? महात्मा जी की प्रार्थना में पुलिस आवे और प्रार्थना करने वालों को पकड़कर ले जावे। भला इस प्रकार काम कैसे चलेगा? उन लड़कों को छुड़ाना चाहिए। उन्होंने कोई बुरी बात नहीं की।"

"अच्छा, अच्छा महाराज। चलिए! अन्य मिलने वाले बहुत बाहर बैठे हैं।"

विवश चेतनानन्द बहुत निराश हो लौट आया। मार्ग में और होटल में भी जब तक अनिमा नहीं आई वह गम्भीर विचार में पड़ा रहा। वह सोचता था कि महात्मा जी तो विचार-स्वतन्त्रता और सत्याग्रह के पुजारी हैं। उन्होंने सत्याग्रह करने वाले लड़कों को पकड़वा दिया सो अत्यन्त विस्मय करने की बात है। सबसे बड़ी बात यह थी कि उन पर दफा १०७ का मुकदमा बनाया गया था। महात्मा जी जानते थे कि उन्होंने कोई फसाद नहीं किया। दूसरे शब्दों में, उन पर अन्याय हो रहा है और महात्मा जी चुपचाप बैठे हैं। वह मन में सोचता था कि क्या महात्मा जी भी दूसरों की भाँति सत्य और न्याय का ढोंग करते हैं। जब वह इस परिणाम पर पहुँचता था तो काँप उठता था। जब महात्मा ऐसे हैं तो उनके शिष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या होंगे ? इन लोगों पर कितना भरोसा रखना चाहिए और इनसे क्या कुछ आशा करनी चाहिए ?

सायं अनिमा आई तो उसे चेतनानन्द का मुख उतरा हुआ दिखाई दिया। उसने चिन्ता के भाव में पूछा, "यह आज क्या हो रहा है ?"

"आज मुझे जीवन की सबसे बड़ी बात में धोखा हुआ है। वकालत उत्तीर्ण करने के बाद पाँच वर्ष मैंने एक थोथे व्यक्ति के पीछे व्यर्थ खोए हैं। मैं उसे महात्मा समझता था परन्तु वह तो सर्वथा ही साधारण-सा व्यक्ति सिद्ध हुआ। मुझे अपनी मूर्खता पर भारी पश्चात्ताप हो रहा है।"

"कौन हैं वे, जिनसे आपको इतना धोखा हुआ है ?"

"आज तो हिन्दुस्तान में केवल एक ही महात्मा है। मेरा मतलब महात्मा गांधी से है। कल उनकी सभा में कुछ लड़कों ने कुरान पढ़े जाने के विरुद्ध आग्रह किया। इस पर उनको पुलिस बुलाकर पकड़वा दिया है। जिस बात में महात्मा गांधी की महिमा थी उसी में वे असत्य सिद्ध हुए। दूसरे राजनीतिक नेताओं की बात न मान कर महात्मा जी के पीछे तो मैं इसीलिए लगा था कि वे सत्य के साक्षात् अवतार और शान्ति के सबसे बड़े समर्थक हैं। मुझे आज पता चला है कि वे अपने विरुद्ध न तो सत्याग्रह सहन कर सकते हैं, न ही वे किसी दूसरे के दृष्टिकोण को समझने की क्षमता रखते हैं।"

"पर इसमें निराश और उदास होने की क्या आवश्यकता है ? कई बार मनुष्य धोखा खाता है। जब किसी को ठीक वस्तु का ज्ञान प्राप्त हो तो उसे उदास होने के स्थान पर प्रसन्न होना चाहिए। महातमा लोग भी तो संसार में मनुष्य ही होते हैं और भूल कर सकते हैं। यह बात निर्विवाद सत्य है कि महात्मा जी की पूर्ण योजनाएँ असफल हुई हैं। उनके प्रतिपादित सिद्धान्त असत्य सिद्ध हुए हैं। अहिंसात्मक सत्याग्रह अफ्रीका में निष्फल हुआ, पश्चात् १९२१ में भारत में असफल रहा, १९३१-३२ का आन्दोलन व्यर्थ गया और १९४२ में चल भी नहीं सका। वास्तव में महात्मा जी स्वयं भी अपनी योजनाओं की व्यर्थता और अपने सिद्धान्तों की असत्यता को समझने लगे हैं। यद्यपि वे अपनी असफलता को मानते नहीं, फिर भी उनकी अन्तरात्मा, इस असफलता का भान करती प्रतीत होती है। यही कारण है कि वे अपने विरुद्ध न तो किसी की बात सुन सकते हैं और न ही अपने पर आक्षेप सहन कर सकते हैं।"

"विचित्र बात है। महात्मा को तो मन, वचन और कर्म से एक समान होना चाहिए। अनिमा देवी ! तुम्हारी सूझ और तुम्हारे वस्तु-स्थिति को समझने की शक्ति की मैं दाद दिए बिना नहीं रह सकता। आज मैंने उनसे कहा कि आपकी प्रार्थना में सत्याग्रह करने वाले पर दफा १०७ की कार्रवाई हो रही है तो बोले कि वे सरकार नहीं हैं। मैं तो यह सुनकर चकित रह गया था। वे तो कभी भी सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हुए। फिर पहली सरकारों के विरुद्ध वे क्यों इतना झगड़ा करते रहे हैं? उनकी बात मेरी समझ में नहीं आई थी, परन्तु आपके उनकी मानसिक अवस्था के विश्लेषण से मैं समझ गया हूँ कि उनकी अन्तरात्मा उनको कह रही है कि पहले वे गलती करते थे।"

"केवल यही नहीं, प्रत्युत यह भी है कि पहले वे जानते थे कि वे सरकार नहीं थे और अब वे साक्षात् सरकार हैं। इसी से जो कुछ सरकार के विरुद्ध वह पहले कर सकते थे, अब नहीं करना चाहते। उनके सत्याग्रह, सत्य इत्यादि सब बातें दूसरों के लिए थीं। अपने लिए नहीं।"

"बहुत विस्मयजनक बात है! समझ में नहीं आता कि क्या मानूँ और क्या न मानूँ?"

"और भी देखिए। जो कुछ कांग्रेसी नेता कर रहे हैं, सब उनकी राय ले रहे हैं। फिर भी समय-समय पर वे लोगों को कहते रहते हैं कि वे सरकार नहीं हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि यदि कुछ खराबी हो गई तो उत्तरदायित्व उन पर न हो। जब कांग्रेस कमेटी नेताओं की बात को सुन रद्द करने लगी थी तो वे उनकी सहायता के लिए मौन व्रत तोड़कर भी और कांग्रेस का मेम्बर न होते हुए भी सभा में जा पहुँचते हैं और वैसे कहते रहते हैं कि वे पण्डित जवाहरलाल आदि से सहमत नहीं हैं।"

"देखो अनिमा देवी! मेरा सब प्रयास विफल गया है। इन्हीं महात्मा जी की नीति का अनुकरण करते हुए मैं अपने पिताजी से लड़ गया था। मैं नसीम से विवाह कर बैठा और अब बेकार बेमददगार और अपने मन में ही दोषी अनुभव कर रहा हूँ।"

"रेवा देवी आज मुझे मिलने आई थीं और मेरा धन्यवाद कर रही थीं। मैंने कारण पूछा तो कहने लगीं कि आपसे पूछ लूँ।"

चेतनानन्द हँस पड़ा। अनिमा देवी विस्मय में उसका मुख देखती रही। इस पर उसने कहा, "मैंने तो केवल इतना कहा था कि आपने मेरे विचारों में परिवर्तन उत्पन्न कर दिया है जिससे मैं पिताजी से क्षमा माँगने लाहौर जा रहा हूँ। शायद इसी कारण वह आपकी सराहना करती होगी। वास्तव में आप हैं भी इसी योग्य।"

: ३ :

लाला जीवनलाल को दो तार मिले। एक महेश का भेजा हुआ और दूसरा लाला बनारसीदास का। महेश ने लिखा था—"भाई चेतनानन्द परेशानी में हैं। आ जाइए।" बनारसीदास ने कुछ व्याख्या में लिखा था—"चेतनानन्द चौराहे पर पहुँच गया है। आपसे पथ-प्रदर्शन लाभ कर सकता है, जरूर आइए।"

जीवनलाल महेश के कहने पर शायद न भी आता परन्तु बनारसीदास जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभवी मित्र का कहना वह टाल नहीं सका। तार मिलते ही हवाई जहाज द्वारा दिल्ली पहुँच गया। हवाई जहाज के अड्डे से वह सीधा बनारसीदास की कोठी पर पहुँचा। बनारसीदास उसके आने की आशा अगले दिन करता था, परन्तु उसे उसी सायंकाल अपनी कोठी में प्रवेश करते देख समझ गया कि बाहरी कठोर आवरण के भीतर पिता का स्नेहमय हृदय अभी जीता है।

बनारसीदास बाहर आकर जीवनलाल का स्वागत करने लगा। दोनों गले मिले और कोठी में पहुँचे तो रेवा और महेश को टेलीफोन कर दिया। वे पिक्चर देखने के लिए जाने वाले थे कि उनको टेलीफोन मिला। वे तुरन्त पिता को मिलने चले आये।

स्वास्थ्य समाचार हो चुकने पर जीवनलाल ने चेतनानन्द की बात आरम्भ कर दी।

"भाई बनारसीदास ! चेतनानन्द की क्या बात है ?"

"यह तो महेश जी बतावेंगे। तब तक हम चाय पी लें। फिर उनसे मिलने चलेंगे।"

संकेत पा महेश ने बता दिया, "हमको तो मालूम नहीं था कि भैया यहाँ दिल्ली में हैं। परसों हम चाय पर यहाँ आये तो इनके ऑफिस की एक स्टैनो-टाइपिस्ट श्रीमती अनिमा देवी को हमारा परिचय प्राप्त हो गया। वे भैया के अधीन कलकत्ते में स्टैनो रह चुकी थीं और यहाँ पर उनसे मिलती रहती हैं। कल वे उन से मिलने गईं तो रेवा के विषय में बात हो गई। इससे भैया को हमारे यहाँ होने का पता चल गया और उन्होंने हमको टेलीफोन कर दिया। हम दोनों कल उनसे मिले थे। भैया यहाँ एक छोटा-सा अटैची-केस और बिस्तर लेकर होटल के सबसे सस्ते कमरे में ठहरे हुए हैं। उस कमरे को ही देखकर अनुमान लग सकता है कि उनकी आर्थिक स्थिति बहुत दुर्बल है। भैया अपने पूर्व के व्यवहार पर पश्चात्ताप भी करते थे और मैंने उनको वचन दिया था कि आपको पत्र लिखूंगा। आज जब लालाजी से मिलने आये तो हमने उनसे सब बात कही। उनकी सम्मति हुई कि आपको तार देकर यहाँ बुला लिया जावे।"

महेश और लाला जीवनलाल इन्द्रजीत की गाड़ी में बैठकर रायल होटल में जा पहुँचे। अनिमा बैनर्जी चेतनानन्द से उस दिन की भंगी कालोनी वाली घटना की विवेचना कर ही रही थी कि उसका पिता और महेश कमरे के दरवाजे पर आ खड़े हुए। अनिमा की पीठ दरवाजे की ओर थी। चेतनानन्द ने पिताजी को देखा तो जाकर उनके पाँव पड़ा। अनिमा उसे एकाएक उठ और दरवाजे की ओर जाते देख खड़ी हो, घूमकर देखने लगी और महेश के साथ एक साठ-पैंसठ वर्ष की आयु के व्यक्ति को देखकर वह समझ गई।

जीवनलाल ने चेतनानन्द को उठाकर पीठ पर हाथ फेर स्नेह से गले लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया। पश्चात् कमरे में प्रवेश किया। इस समय महेश ने अनिमा देवी का परिचय कराया।

जीवनलाल ने होटल के कमरे के फरनीचर और चेतनानन्द के सामान पर एक नजर दौड़ाई तो महेश के कहने की सत्यता जान गया। दो-तीन मिनट तक इधर-उधर की बातचीत करने के पश्चात् जीवनलाल ने चेतनानन्द से कहा, "यहाँ आकर तुम बनारसीदासजी से मिलने नहीं गए। मेरा विचार है तुमको उनसे मिलने चलना चाहिए। क्या अब चल सकोगे?"

चेतनानन्द उठ चलने को तैयार हो गया। अनिमा भी उठ खड़ी हुई और विदा माँगने लगी। अनिमा के चले जाने के पश्चात् चेतनानन्द अपने पिता और महेश के साथ बनारसीदासजी की कोठी पर आ गया।

मार्ग में चेतनानन्द अपने विचारों का संकलन करता रहा। वह अपनी भूल को उपयुक्त शब्दों में अपने पिता के सम्मुख रखना चाहता था। जीवनलाल भी सोच रहा था कि यदि दिन-भर का भूला रात को भी घर आ जावे तो प्रसन्नता का ही विषय है।

बनारसीदास जी की कोठी में पहुँचते ही चेतनानन्द ने अपने राजनीतिक विषयों में निर्भ्रान्त होने की पूर्ण कथा सुना दी। जब से वह बंगाल सरकार का पब्लिसिटी ऑफिसर बना था, तब से लेकर उस दिन के महात्मा गांधी से भेंट करने तक पूर्ण विवरण और अनुभव वर्णन कर उसने बताया, "पिताजी, मैं रुपये-पैसे से दुखी होकर पश्चात्ताप नहीं कर रहा। अभी मेरा त्याग-पत्र बंगाल सरकार ने स्वीकार नहीं किया। इसके अतिरिक्त अभी भी, यदि मैं चाहूँ तो, भारत-सरकार में कुछ-न-कुछ काम पा सकता हूँ। परन्तु मेरे दृष्टिकोण में इतना भारी अन्तर आ गया है कि मैं अब न तो कांग्रेस सरकार से सहयोग कर सकता हूँ और न बंगाल की मुस्लिम सरकार से।

"मैं समझता था कि हिन्दू-मुसलमान एक ही जाति है, परन्तु कलकत्ता, नोआखाली और बम्बई के झगड़ों को देख मेरा भ्रम दूर हो गया है। इच्छित लक्ष्य और वस्तु-स्थिति में अन्तर दिखाई देने लगा है।

"मैं समझता था कि कांग्रेस राष्ट्रीय संस्था है। आज मेरा यह स्वप्न भी भंग हुआ है और मुझको दिखाई देने लगा है कि कांग्रेस एक सम्प्रदाय बन गया है। इस सम्प्रदाय के गुरु, पीर, मुर्शिद महात्मा गांधी हैं और उन पर सम्प्रदाय के लोगों की अगाध श्रद्धा है। यह कांग्रेसी सम्प्रदाय हिन्दू-विरोधी और मुस्लिम-परस्त है।

"मैं समझता था कि मैं कांग्रेस में सम्मिलित होकर देश तथा जाति की सेवा कर रहा हूँ। मेरा यह भ्रम भी दूर हुआ है और मुझको ऐसा प्रतीत होने लगा है कि मैं देश का गला काटने वाली छुरी की पैनी धार बना हुआ था।

"मैं अपने किए पर पश्चात्ताप कर रहा हूँ और अपने भावी जीवन के मार्ग को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पष्ट देखने लगा हूँ। यह मार्ग गांधीवाद से विपरीत दिशा की ओर जाता है।"

"देखो चेतन्नानन्द ! यदि वास्तव में तुम यह समझ गए हो तो मैं ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ। मनुष्य को ज्ञान देने वाला वही है, परन्तु मैं तुमको एक बात और बताना चाहता हूँ। मेरी विचारधारा का आधार यही बात है। मैं समझता हूँ कि देश एक निर्जीव वस्तु है। यहाँ नदी-नाले हैं। पहाड़ और झीलें हैं। हरे-भरे मैदान और फूलों से लदी घाटियाँ हैं। ये सब बहुत सुन्दर हैं, परन्तु इनसे भी अधिक सुन्दर स्थान अन्य देशों में हो सकते हैं। अतएव देशप्रेम इन नदी-नालों और पर्वत-झरनों के प्रति प्रेम को नहीं कहते। देश-प्रेम यहाँ बसे हुए लोगों के प्रति प्रेम को कहते हैं। भारत में रहने वाले हिन्दू हैं और जो संस्था उनका ही नाश करने वाली है वह देश-हितैषी नहीं हो सकती। साथ ही यह भी याद रखना चाहिए कि हिन्दू एक जन-समूह है। यह पशुओं का झुण्ड नहीं है। प्रयोजन यह कि हिन्दू भी अपना आचार-व्यवहार और विचार रखते हैं। इस देश में रहने वाले अस्सी प्रतिशत संख्या लोगों के अर्थात् हिन्दुओं के आचार और विचारों की हत्या करने वाली संस्था अथवा व्यक्ति देशप्रेमी नहीं, देश-घातक कहा जाना चाहिए।

"मैंने तुमको घर से नहीं निकाला। उस समय भी जब तुम इन सब बातों को समझते नहीं थे, तब भी तुमको निर्वाह योग्य देने को कहता था। अब भी वही दे सकता हूँ। दान में दिया धन तो दे ही दिया है। अब वापस नहीं लूँगा।

"तुम युवा हो, समझदार हो, पढ़े-लिखे हो, क्या इतने से तुम सीधी ग्रीवा कर चल नहीं सकते ? चलो मेरे साथ और संसार-सागर में डुबकी लगावो। अभी भी इसके मन्थन से रत्न निकल ही आएँगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की ऐतिहासिक रचनाएं

परित्राणाय साधूनाम	(महाभारत पर आधारित सम्पूर्ण उपन्यास)
वैशाली विलय	(बहती रेता)
अस्ताचल की ओर	(3 भाग)
खण्डहर बोल रहे हैं	(3 भाग)
अमृत मन्थन	(राम कथा-1)
परम्परा	(राम कथा-2)
अग्नि परीक्षा	(राम कथा-3)
जमाना बदल गया	(4 भाग)
दो लहरों की टक्कर	(2 भाग)
सम्भवामि युगे युगे	(2 भाग)
विक्रमादित्य साहसांक	
पत्रलता	
दिग्विजय	
वाम मार्ग	
लुढ़कते पत्थर	
गंगा की धारा	
सागर तरंग	
मेघवाहन	
भैरवी चक्र	
महाकाल	
अवतरण	

श्री गुरुदत्त की चर्चित उपन्यास

स्वाधीनता के पथ पर	(स्वाधीनता आन्दोलन 1930 से 35 का काल)
पथिक	(स्वाधीनता आन्दोलन 1935 से 40 का काल)
स्वराज्यदान	(स्वाधीनता आन्दोलन 1940 से 46 का काल)
विश्वासघात	(स्वाधीनता आन्दोलन 1946 से 47 का काल)
देश की हत्या	(स्वाधीनता आन्दोलन 1947 से 48 का काल)
दासता के नए रुप	(1948 से 49 का काल)
सदावत्सले मातृभूमे	(1949 - .... का काल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त के चुने हुए उपन्यास

अनदेखे बन्धन	रु 100	प्रारब्ध और पुरुषार्थ	रु 40
आवरण	रु 70	प्रेयसी	रु 40
अन्तरिक्ष में	रु 40	बन्धन शादी का	रु 160
आकाश पाताल	रु 50	भगवान भरोसे	रु 150
इबलीस	रु 30	भाग्य का सम्बल	रु 40
कला	रु 70	भूल	रु 150
घर की बात	रु 200	भूत और भविष्य	रु 55
आशा निराशा	रु 40	ममता	रु 100
अपने पराए	रु 40	मायाजाल	रु 55
कामना	रु 100	मै न मानूँ	रु 40
ग्रह संसद	रु 60	यह संसार	रु 45
गुंठन	रु 100	यात्रा का अंत	रु 40
चंचरीक	रु 40	युद्ध और शान्ति (दो खण्ड)	रु 90
ज़िन्दगी	रु 100	लालसा	रु 75
जीवन ज्वार	रु 60	विश्वास	रु 40
दो भद्र पुरुष	रु 40	विकार	रु 40
न्यायाधिकरण	रु 70	विलोम गति	रु 60
नए विचार नई बातें	रु 40	विकृत छाया	रु 60
नगर परिमोहन	रु 80	स्वार्थ	रु 30
नास्तिक	रु 55	सब एक रंग	रु 40
पंकज	रु 30	सभ्यता की ओर	रु 40
परिमल	रु 50	संस्कार	रु 30
परिवर्तन	रु 20	सफलता के चरण	रु 65
पड़ोसी	रु 45	सर्वमंगला	रु 60
पाणिग्रहण	रु 60	साहित्यकार	रु 30
प्रवंचना	रु 45	सुमति	रु 40
प्रगतिशील	रु 40	हम और तुम	रु 30
प्रतिशोध	रु 50	बनवासी	रु 40
		पाप और पुण्य	रु 40

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की वेद, श्रीमद्भगवद्गीता, दर्शन शास्त्रों व उपनिषदों पर रचनाएं

श्रीमद्भगवद्गीता (भाष्य)
श्रीमद्भगवद्गीता (अध्ययन)
यजुर्वेद और गृहस्थ धर्म
हमारी सांस्कृतिक धरोहर
वेद प्रवेशिका (सम्पूर्ण)
ईश केन् कठ उपनिषद्
तैत्तिरीय उपनिषद्
प्रश्न ऐत्तरेय उपनिषद्
मुण्डक माण्डूक्य उपनिषद्
वेद मन्त्रों के देवता
वेद और वैदिक काल
वेदों में सोम
वेदों में इन्द्र
विश्वेदेवा
सायंस और वेद
अद्वैत मीमांसा
विज्ञान और विज्ञान
सृष्टि रचना
सांख्य दर्शन
न्याय दर्शन
ब्रह्मसूत्र -1 (वेदान्त दर्शन)
ब्रह्मसूत्र -2 (वेदान्त दर्शन)

हिन्दी साहित्य सदन
2 बी डी चैम्बर्स, 10/54 डी बी गुप्ता रोड, करोल बाग पुलीस स्टेशन के पास, नई दिल्ली-05
E-mail : indiabooks@rediffmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री तेजपाल सिंह धामा की रचनाएं

हमारी विरासत — अर्थात दिव्य **भारत का गौरवशाली इतिहास**
मनुर्भव — अर्थात् विजयी विश्व हिन्दुत्व हमारा
अजेय अग्नि — अर्थात महारानी कर्मदेवी की शौर्यगाथा
अग्नि की लपटें — अर्थात महारानी पदमिनी की बलीदान गाथा
पृथ्वीराज चौहान एक पराजित विजेता
अखण्ड आर्यवर्त — अर्थात **चन्द्रगुप्त चाणक्य** कथा
पंक से पंकज — अर्थात **महर्षि वाल्मिकी** कथामृत
नल नील अभियान — **"श्री राम सेतु निर्माण"**
(सचित्र उपन्यास श्री वी सुन्दरम द्वारा नैट पर दिये प्रमाणो पर आधारित कथा)
गौ का गौरव — गाय का विश्वकोष

वीर सावरकर साहित्य

हिन्दुत्व के पंच प्राण
हिन्दुत्व
मोपला — मोपला विद्रोह कथा
गोमांतक — पुर्तगालीयों द्वारा गोमांतक (गोवा) भूमि पर जघन्य अत्याचार की कथा
प्रतिशोध — मरहटों द्वारा पानीपत पराजय के प्रतिशोध पर आधारित
अमर सेनानी सावरकर — शिवकुमार गोयल
महामना सावरकर — हरि बाबू देसाई
लोकोत्तर द्रष्टा सावरकर — हरि बाबू देसाई

क्रांतिकारी साहित्य

क्रांतिकारी आन्दोलन (सशस्त्र क्रांति का इतिहास) — शिव कुमार गोयल
धरती है बलिदान की — शान्ता कुमार
क्रान्तिकारी भगत सिंह — सुरेश
झांसी की रानी — परमेश्वर प्रसाद सिंह
महाराणा प्रताप — परमेश्वर प्रसाद
वीर बन्दा वैरागी — नवीन जैन
क्रान्तिकारी आज़ाद — शंकर सुल्तानपुरी
क्रान्तिकारी सुभाष — शंकर सुल्तानपुरी
क्रान्तिकारी देशभक्त सिख — भरतराम भट्ट
क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल — डा0 ईश्वर प्रसाद वर्मा
मदनलाल ढींगरा और ऊधमसिंह-लंदन में गोली — बनारसीसिंह
शक्तिपुत्र शिवाजी — सीताराम गोयल
हरि सिंह नलवा — अशोक कौशिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की इतिहास पर रचनाएं

भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास
इतिहास में भारतीय परम्पराएं

श्री पुरुषोत्तम नागेश ओक की खोजपूर्ण रचनाएं

भारत का द्वितीय संग्राम "आज़ाद हिन्द फौज की कहानी, रंगीन चित्रों सहित"
भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें
भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें (डीमाई बड़ा साईज़ नये टाईप में)
क्या भारत का इतिहास भारत के शत्रुओं द्वारा लिखा गया है ?
विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय
ताजमहल मन्दिर भवन है
ताजमहल तेजोमहालय शिव मन्दिर है
भारत में मुस्लिम सुल्तान भाग (2 भाग)
आगरा का लाल किला हिन्दू भवन है
फतहपुर सीकरी हिन्दु नगर है
लखनऊ के इमामबाड़े हिन्दू भवन हैं
दिल्ली का लाल किला लाल कोट है
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास (4 भाग)
कौन कहता है अकबर महान था ?
हास्यास्पद अंग्रेज़ी भाषा
क्रिश्चियनिटी कृष्ण नीति है
आरोग्य सौन्दर्य तथा दीर्घायु (व्यायाम, व सूर्य नमस्कार)
ज्योतिष स्वयं शिक्षक - फल ज्योतिष

Central Library
Gurukula Kangri ... Haridwar
167984

नरेन्द्र पिपलानी

081
167984

इतिहास की मृत्यु

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी डी चैम्बर्स, 10/54 डी बी गुप्ता रोड, करोल बाग पुलीस स्टेशन के पास, नई दिल्ली-05
E-mail : hindisahityasadan@gmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY		
	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

R 089.9143 GUR-V

वर्ग संख्या..................... आगत संख्या 167984

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी डी चैम्बर्स, 10/54 डी बी गुप्ता रोड, करोल बाग पुलीस स्टेशन के पास, नई दिल्ली-05

E-mail : hindisahityasadan@gmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

शिक्षा: एम. एस. सी.

8-12-1894 से 8-4-1989

लेखक की कुछ अन्य रचनाऐं

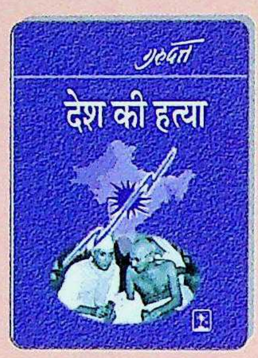

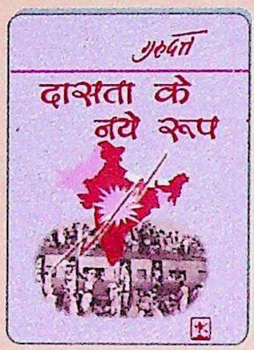

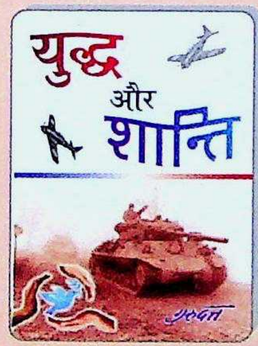

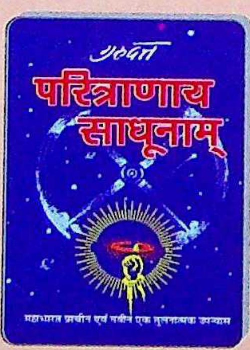

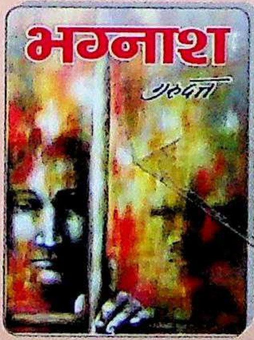

हिन्दी साहित्य सदन
www.hindisahityasadan.com
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110 005. फोन : 23553624, 23551344
ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com, hindisahityasadan@gmail.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar